प्रकाशक

मार्तण्ड उपाध्याय, मंत्री

सस्ता साहित्य मंडल

नई दिल्ली

पहली बार : जनवरी १९४९

मूल्य

अजिल्द २) : सजिल्द २॥)

मुद्रक

जे० के० शर्मा

इलाहाबाद लॉ जर्नल प्रेस

इलाहाबाद

प्रकाशककी ओरसे

पूज्य गांधीजी आगा खां-महलके कारावाससे मुक्त होनेके बादसे संध्याकी प्रार्थना-सभामे नियमित-रूपसे प्रवचन किया करते थे। यह परपरा उनके महानिर्वाणके एक दिन पहले यानी २९ जनवरी १९४८ तक बराबर चलती रही।

दिल्लीकी सभाओमे दिये गये १ अप्रैल १९४७ से २६ अक्तूबर १९४७ तकके प्रवचन पहले खडमे प्रकाशित हो चुके है। २७ अक्तूबर १९४७ से २९ जनवरी १९४८ तकके प्रवचन इस सग्रहमे दिये जा रहे है।

ये गाधीजीके अतिम उद्गार हैं और जिन समस्याओंपर व्यक्त किये गये है, उनमेसे बहुत-सी आज भी मौजूद है। इन प्रवचनोमे गाधीजीने सक्षेपमे सर्वसाधारणके समझने-योग्य भाषामे बहुत कामकी बातें कही है और बहुत जगह तो अपनी हार्दिक वेदना जनताके सामने रखी है। गांधीजीके अन्य लेखों और भाषणोसे इनका एक अलग और महत्त्वका स्थान है।

अधिकाश प्रवचन गाधीजीकी भाषामे ही है। 'हिंदुस्तान'के उप-सपादकोने समय-समयपर 'हिंदुस्तान'के लिए उनकी रिपोर्ट ली थी। बादके प्रवचनोके रेकार्ड 'आल इडिया रेडियो'ने लिये थे। उनमेंसे कुछ प्रवचन 'भाइयो और बहनो'के नामसे चार छोटी-छोटी पुस्तिकाओमे सरकारकी ओरसे छपे है। इस सग्रहमें इन तथा जिन अन्य आधारोकी सहायता ली गई है, उनके हम विशेष कृतज्ञ है।

(वापूके प्रार्थना-प्रवचनकी आवृत्ति, जो आपने प्रकाशितकी है, देखी । अल्प मोली और वहुगुणी है । वापूके विचार लोगोमे फैलानेका उत्तम उपाय उनके साहित्यको, उन्हीकी भाषामे और विना किमी भाज्यके, प्रगट करना है । और वही आपने किया है । यह आपने एक भगवद् उपासना की है ।)

प्रार्थना-प्रवचन

दूसरा खंड

: १३० :

मौनवार, २७ अक्तूबर १९४७

(लिखित सदेश)

मेरे पास वरावर इस वातकी शिकायते आ रही है कि यूनियनके मुसलमानोको अपने वाप-दादाओके घरोको छोड़नेपर और पाकिस्तान जानेके लिए मजवूर किया जा रहा है। यह कहा जाता है कि उनको तरह-तरहकी तरकीवोसे अपने घरोको छुडवाकर कैंपोमे रहनेपर मजवूर किया जा रहा है, जहांसे उन्हे रेलद्वारा अथवा पैदल भेज दिया जाय। मुझे विश्वास है कि मन्त्रिमडलकी यह नीति नही है। जव मैं शिकायत करनेवालोको यह वात सुनाता हू तो वह हँसते है और जवावमे कहते है कि या तो मेरी जानकारी गलत है या कर्मचारी उस नीतिके अनुसार चलते नही है। मै जानता हू कि मेरी जानकारी विलकुल सही है। तव क्या कर्मचारी वेवफा है? मुझे उम्मीद है कि ऐसा नही है। फिर भी यह शिकायत आम है। कही जानेवाली वेवफाईके मुख्तलिफ कारण दिये जाते है। जो कारण सवसे सभव हो सकता है वह यह है कि फौज और पुलिसका अधिकाश रूपमे फिर्केवाराना वटवारा किया गया है और वह मौजूदा द्वेपभावमे वह जाते है। मैने अपनी राय दे दी है कि अगर ये कर्मचारी जिनपर शान्ति और कानूनको कायम रखनेका भार निर्भर है, फिर्केवाराना प्रभावमे पड जाय तो सुसगठित हकूमतकी जगह वदअमनी आ जाना लाजमी है

और यदि यह चलती रहे तो समाज नष्टप्राय हो जायगा। यह उच्च कर्मचारियोंका कर्तव्य है कि वह फिर्केवाराना जहनियतसे ऊपर उठें और फिर अपनेसे नीचे तबकेके कर्मचारियोंको भी उसी सद्भावनासे प्रभावित करें।

यह जोरके साथ कहा जाता है कि देशमें जनताद्वारा सरकारें कायम की गई हैं उनको वह वकार[1] हासिल नहीं हुआ है जो विदेशी हकूमतको अपनी तलवारके जरिये हिंदुस्तानी कर्मचारियोंको डराकर अपने काबूमें रखनेके लिए हासिल था। यह कुछ हदतक ही ठीक है। क्योंकि अवाम[2] की हकूमतके हाथमें एक नैतिक शक्ति है जो विदेशी हकूमतके शक्ति-बलसे, जिसे वह अपनी मददके लिए बरत सकती थी, निस्संदेह ऊंचे दर्जेकी है। इस नैतिक शक्तिके लिए यह पहलेसे माना जाता है कि अवामकी राय हकूमतके साथ है।

आज इसकी कमी हो सकती है। हमारे पास इसकी परीक्षाका और कोई साधन नहीं है सिवा इसके कि केंद्रीय सरकार इस्तीफा दे दे। इस जगह हम खास तौरपर यह जांच रहे हैं कि केंद्रीय शासनकी क्या हालत है। इसे किसी हालतमें भी कमजोर न बनना चाहिए और न कभी कमजोर लगना चाहिए। उसे तो अपनी शक्तिका अहसास[3] होना चाहिए। इसलिए यदि इसमें कुछ भी सचाई है कि कर्मचारी पूरी तरह आज्ञाका पालन नहीं करते हैं तो ऐसे नाफरमाबरदारोंको[4] तुरंत निकल जाना चाहिए या मिनिस्ट्री अथवा संबंधित मंत्रीको त्यागपत्र देकर ऐसी शक्तिको स्थान देना चाहिए जो सफलताके साथ कर्मचारियोंकी नाफरमाबरदारीको दूर कर सके। जब कि मैं उन शिकायतोंको, जो मेरे पास आती रहती हैं, सकोचके साथ आपको सुनाता हूं, मुझे यह आशा रखनी चाहिए कि इसकी तहमें कुछ नहीं है और यदि कुछ है भी तो उच्च अधिकारी यथाशक्ति कामयाबीके साथ उनको ठीक कर लेंगे।

यूनियनके उन नागरिकोंका, जो इसके प्रभावमें आते हैं, क्या फर्ज है? यह साफ बात है कि ऐसा कोई कानून नहीं है जो किसी नागरिकको अपना मकान छोड़नेपर मजबूर करे।

---

[1] प्रभाव [2] जनता [3] अनुभव [4] आज्ञा न पालनेवाले।

अधिकारीवर्गको खास अधिकार अपने हाथमे लेने पडेगे ताकि वह ऐसे हुक्म निकाल सके, जैसा कि कहा जाता है, वे निकालते है। जहा-तक मुझे पता है, किसीको कोई लिखित हुक्म नही दिया गया है। कहा जाता है कि मौजूदा मामलेमे हजारोको जवानी हुक्म दिया गया है। ऐसे लोगोकी मदद करनेका कोई साधन नही है जो डरके मारे किसी भी वावरदी[१] व्यक्तिके हुक्मके सामने अपना सर झुका दे। ऐसे सब लोगोको मेरी जोरके साथ यह सलाह है कि वह लिखित हुक्म मागे और यदि सबसे उच्च अमलदार भी उसको सतोष न दे सके तो शककी हालतमे वह अदालतसे उस हुक्मकी सचाई मालूम करे। आम जनताको, जो इस मामलेमे बहुसख्यावाली है, अपनेको सख्तीके साथ कानूनको हाथमे लेनेसे रोकना चाहिए। अगर वह ऐसा नही करेंगे तो वह अपने पैरोमे खुद कुल्हाडी मारेगे। यह ऐसी गिरावट होगी जिससे उठना कठिन हो जायगा। ईश्वर करे जल्द-से-जल्द उनको समझ आ जाय। उनको बुरी घटनाओकी खबरसे, चाहे वह सच ही हो, प्रभावित न होना चाहिए। उनको अपने चुने हुए मन्त्रियोपर भरोसा रखना चाहिए कि वह इन्साफके लिए, जो जरूरी होगा वह सब करेंगे।

: १३१ :

२८ अक्तूबर १९४७

भाइयो और बहनो,

दिल्लीके एक भाई खतमे लिखते है, "मैने शरणार्थियोके लिए थोडे खेमे और कनात वगैरा एक मुसलमान भाईसे लिये थे। वह तो यहासे चले गए। अब उनको कहा रखना चाहिए?" ये कोई शरीफ आदमी है, इसीलिए पूछते है कि उनका क्या करना है। और बात भी ठीक है कि वह अगर यहासे चले गए, तो क्या हम इनको हज्म

---

[१] वरदी वाले।

करके बैठ जाए ? लेकिन मेरे पास तो कोई इतजाम है नही कि जो मै रख सकू। यह तो होम डिपार्टमेंट[1] की बात है। सरदारजीसे पूछ लेना चाहिए या और कोई जो इस कामको करता है, उससे या नियोगी साहब जो नियुक्त हो गये है, उनसे पूछ लेना चाहिए। अगर उनको उस मुसलमान भाईका पता लग जायगा तो यह या इसकी कीमत उसको पहुचा देनी होगी।

अलीगढमे जो यूनिवर्सिटी है उसका एक लडका मेरे पास आया था। वहा पश्चिमी पजाब और सरहदी सूबेके भी कुछ विद्यार्थी पढते है। वे वहासे वापस नही पहुच पाए और जो यहा है वे जा नही सकते। वे क्यो न वहा जाए और आए ? आखिर जो पाकिस्तान होना था वह तो हो गया। फिर आपस-आपसमे झगडा कैसा ? क्यो यहाके इतने मुसलमान पाकिस्तानमे जाय और वहाके हिंदू और सिख यहा आए ? लेकिन उनका यह इरादा है कि हम मुसलमानोके पाससे कबल वगैरा लेकर उन हिंदू और सिख शरणार्थियोको दे जो परेशान होकर कैंपोमे रह रहे है। अच्छा है, उनको इसकी दरकार भी है और अगर उनको मिल जाय तो इससे उनकी मोहब्बत तो प्रकट होगी। लेकिन सच्चा काम तो यह है कि वे पाकिस्तानमे मुसलमानोसे जाकर कहे कि हिंदू और सिखोको वहासे आना ही क्यो पडता है ? मेरे पास तो ढेर पडा है कागजोका, जिनमे शिकायते ही भरी है। वे झूठी तो है नही। हा, उनमे कुछ अतिशयोक्ति हो सकती है, ऐसा मुझको लगता है। लेकिन अतिशयोक्ति होने पर भी, उसमे जो मूल है, वह तो ठीक है। वे क्यो वहासे भागे, उनको वापस बुलाओ, वे क्यो न अपने घरोमे आकर रहे ? ऐसा अगर वे कर सके तो हम सारी दुनियाको यह बता सकेंगे कि हम आपस-आपसमे कभी लडे ही नही। पीछे जो आज हमारी नाक कट गई है, वह कल फिर साबुत हो जायगी। ऐसा मैने उन लडकोको कहा है। उन्होने उसको मान भी लिया और पीछे कैसा वे करते है, यह तो ईश्वर ही जानता है।

लेकिन आज जो बात मै कहना चाहता हू, वह तो एक बडी बात है। मेरा ख्याल है कि मै जब बिहारमे बैठा था तब वहा ऐसा

---

[1] गृह-विभाग।

चलता था कि लोगोने यह सोच लिया कि चलो, स्वराज्य तो अब मिल ही गया, तो फिर रेलमे बैठकर जानेमें टिकटकी क्या दरकार है? यही नही, वे कभी-कभी तो बड़ी ज्यादती और जबर्दस्ती भी करते हैं। उस जमानेमे हम आपस-आपसमे तो नही लडते थे, लेकिन ऐसा मान लिया कि जब स्वराज्य मिल गया तो पीछे और क्या चाहिए? उसपर मैंने काफी लिखा, उसका असर हुआ और बादमें वहा वह बद भी हो गया। लेकिन अभी कुछ दिनोसे तो ऐसा हो गया है कि सारे हिंदुस्तानमे या कहो कि सारी यूनियनमे काफी लोग रेलोमे बगैर टिकट चलते है। बड़े-बड़े लोग भी यह सोचते हैं कि चलो, अब तो रेले हमारी हो गई हैं। रेले तो हमारी हो गई है, इसमे तो कोई शक नही, लेकिन इस तरहसे करनेका नतीजा यह हुआ है कि हमारा ८ करोड़ रुपया बर्बाद हो गया है। ८ करोड़ रुपया किसको कहते हैं? एक करोड भी किसको कहते हैं? जब काग्रेसमे हमे एक करोड रुपया इकट्ठा करना था तो कितनी परेशानी हम लोगोको हुई थी और कितने लोगोंको निकलना पडा था। मैं भी घर-घर घूमकर इकट्ठा करता था, और लोगोंको भी अपने साथ ले जाता था। तब जाकर बड़ी मुश्किलसे वह हुआ था। ऐसे हम गरीब लोग इस देशमे है। आज तो हम एक करोड रुपया खर्च कर लेते है और मिल गया है तो कुछ पता भी नही चलता। किस तरहसे हम उसको खर्च करे यह तो हम अभी जानते ही नही। लेकिन चूंकि काम ऊपर आ पड़ा है इसलिए कर रहे है। लोग अगर यह सोच ले कि चलो, रेलोंमे मुफ्त सैर करे या कही कामसे भी जाय तो उसमे किराया क्या देना, तो यह बड़ी ज्यादती है। मेरे हिसाबसे तो यह बिलकुल लूट है। इस तरहसे तो हिंदुस्तान कंगाल हो जायगा और न हमारे पास रेलगाडियां रहेगी और न कुछ और होगा। पीछे हम लोग रोएंगे कि अब कैसे कही जाय। आठ करोड रुपया कोई कम थोड़े ही होता है। पहले जो हमे रेलोसे मिलता था उससे तो रेलवे कंपनीको अपने रुपयेका ब्याज भी मिल जाता था। करोड़ों लोग रेलोमे सफर करते है। अगर सब पैसा दे तो खासी कमाई हो सकती है। बिना टिकट तो लोग उस जमानेमे भी जाते थे, लेकिन आजकी तरह कोई हजारोंकी तादादमे

नही जाते थे। गाड़ियोमे इस्पेक्टर रहते थे और बाकायदा सारा हिसाब चलता था। आज तो ऐसा हो गया है कि गार्ड है तो उसको मारो और ड्राइवर आता है तो उसको मारो। रोज बरोज पैसेका खर्च बढता ही जाता है। कोई रेलगाडिया तो मुफ्त चल नही सकती। उनमे जो नौकर लोग काम करते है वे ऐसा थोडे ही मान लेगे कि मुसाफिर विना पैसा दिये सफर करते है तो वे भी अपने वेतन न ले; अगर वे ऐसा सोचे तो खाएगे क्या? इसलिए रेलोमे करोडो रुपएका खर्च है और करोडोकी कमाई है। पहले तो इसमे नुक्सान होता नही था। तीसरे दर्जे-के मुसाफिरोसे काफी पैसे मिल जाते थे, क्योकि उनपर खर्च तो कम होता था और आमदनी अधिक थी। इसलिए कुछ पैसे नफेमे बच जाते थे। लेकिन कल जो मैने ८ करोड़ रुपएका घाटा सुना तो मुझको बडा दर्द हुआ। इस तरहसे अगर हर तरफसे लूट-ही-लूट रही तो हमारा भला नही हो सकता। इसपर भी हम आपस-आपसमे लडे, एक-दूसरेको कत्ल करे और लूटे, क्योकि इसमे भी तो हमे कोई फायदा तो होता नही, करोडोका खर्च ही होता है। जब लोगोको उनके घर छुडवाकर पाकिस्तान भेजनेके लिए कहा जाता है तो वे कोई मुफ्त थोडे ही चले जाते है। उनको खाना खिलाना और पहननेके लिए कपडा देना पडता है। यह सब खर्च मुफ्तमे हमे करना पडता है। हिंदुस्तान कोई धनिकोका मुल्क तो है नही कि जो यह सब करता ही चला जाय। वह तो हो नही सकता। इसलिए अगर एक भी आदमी रेलमे मुसाफिरी करता है तो बिना पैसा दिये न करे। उसको पैसे देने ही चाहिए। जब अग्रेजी हकूमत चलती थी तब पुलिसके सिपाही या दूसरे अमलदार भी काफी पैसे खा जाते थे। मै चूकि तीसरे दर्जेमे मुसाफिरी करता हू इसलिए मुझको इसका पता तो चल जाता था। हरिद्वारमे कुभ-मेलेके समय जब मै गया था तो उस जमानेमे वहाके स्टेशनमास्टरको, पीछे तो बदलते रहते है, ऊपरके पैसे दिये बिना कोई जा नही सकता था। इस तरहसे हजारो रुपए रिश्वतमे उठ जाते थे। अब तो मेरे दिलमे ऐसा है कि हम सब शरीफ बन गए है। जो स्टेशनमास्टर, सिगनलर, इन्स्पेक्टर या गार्ड लोग है, उन सबको अपने हक और सचाईमे जो

पैसा मिलता है, वही खाकर अपना जीवन बसर करना चाहिए। उन्हे लोगोके पाससे पैसे नही छीनने चाहिए। जो मुसाफिर है, उन्हे रेलोको अपनी चीज समझकर इस्तेमाल करना चाहिए। वे रेलोको साफ-सुथरी रखे, उनमे थूके नही, बीडी न फूके, बिना जरूरत जजीर न खीचे और पैसे दिये बिना एक भी मुसाफिर न चले। तब तो मै कह सकता हूं कि हमे सच्ची आजादी मिली है। मेरी बातको सुननेवाले कोई हजारो लोग तो यहा है नही और फिर रेलोमे तो लाखो लोग सफर करते है, तो उनको कौन सुनाएगा? अगर मै रेलवे मैनेजर या रेलवे मिनिस्टर होता तो मेरे मातहत जितने लोग काम करते, उनको यह हुक्म देता कि जितने लोग रेलोमे तुम्हारे सामने चलते है उनको यह कह दो कि हम मारपीट तो करेगे नही, रेल आपकी है, हम आपके नौकर है, लेकिन बिना पैसा दिये हम आपको ले जा नही सकते। अगर रेल जगलमे भी जा रही है तो उसे रोककर वही खडी कर दे। अगर फिर भी वे न माने तो एजिन ड्राइवरको यह हुक्म देना चाहिए कि वह एजिनको गाडीसे अलग करके ले जाय। तब न किसीको गाली देना है और न किसीको मजबूर करना है, सिर्फ गाडीको वही खडी रहने दे। जबतक लोग मुफ्तमे सफर करे तबतक यही करना चाहिए। आखिर यह कोई शराफत नही है कि आप मुफ्त गाडीमे बैठ जाए, मारपीट करे और जहा चाहा वही उसको रोक ले। यह तो मैने आपको यहाकी बात सुनाई। लेकिन मैने सुना है कि पाकिस्तानमे भी लोग ऐसे ही मुफ्त रेलोमे घूमते है। वहा भी क्यो न लोग मुफ्त चले? आखिर हम एक ही हवामे पैदा हुए है, एक ही-जैसा नमक खाते है, तो पीछे वहा भी क्यो न वही हो जो यहां होता है। अगर यही हाल जारी रहा तो दोनो दिवालिया हो जायगे। इस तरहसे किराया न देकर रेलोमे सफर करे, जहा रिश्वत खाना है वहां रिश्वत खाए और जिसको मारना है उसको मारे, तो पीछे हम बिल्कुल लुटेरे लोग बन जायेगे। आजादीके आनेसे हमारी जो कीमत बढ़ गई थी, वह कीमत बिलकुल चली जायगी। इसलिए जितने लोग सुन सकते है, वे सुने और मिनिस्टर भी सुन ले, क्योकि एक जानकार आदमीकी हैसियतसे मै कह रहा हूं कि अगर यह सिलसिला न रुका तो आपको गाडियां बंद करनी होगी। गाडियां चलेंगी नही और जो चलेगी उसमें कोई आदमी मुफ्त जा नही सकता।

उनके काफी भक्त है, हिंदू क्या, मुसलमान क्या किसीके लिए वहा घृणा तो है ही नही। सर अकबर हैदरी, अब तो वह मर गए, प्रतिवर्ष वहा जाते थे, उसका तो मै गवाह हू। श्रीअरविंद तो दीनभक्त है, किसीसे मिलते नही है। ऊपरसे उनका दर्शन हुआ तो हुआ, नही हुआ तो नही, लेकिन लोग जाते थे। उनके पास यह रहते है। इनके दिलमे भी ऐसी कोई घृणा नही है। तो इतना तो हम सीख ले कि हमारे दिलमे क्यो घृणा होनी चाहिए।

लेकिन मै तो आज काश्मीरमे जो हो रहा है उसके बारेमे कहना चाहता हू। और कहना भी चाहिए। अखबारोमे तो आप देख ही रहे है। वह तो एक अजीब बात है। तीन दिनकी बात है। किसीको पता नही था। मुझको भी पता नही था कि क्या होने वाला था। लेकिन वह एक युगकी बात हो गई ऐसा हम कह सकते है। अभी कहते तो ऐसा है कि वहा अफ्रीदी और दूसरे लोग बदूकोके साथ घुस गए है और कोई तो यह भी कहते है कि यह तो पाकिस्तानकी कारस्तानी है। वह हो, उससे तो मुझे कोई वास्ता नही है। मै तो जो वहा हो रहा है उसको देख रहा हू। एक तरफ तो वे पुछ तक चले गए और वहासे भी आगे, श्रीनगरसे २२ मीलतक के फासलेतक पहुच गए। वहासे तो सीधी सडक पडी है। कोई रुकावट हो नही सकती है।

जब काश्मीरके महाराजाने यह देखा तो उन्होने कहा कि मै भारतीय सघमे आ जाता हू। महाराजाने लार्ड माउटबैटनको खत लिखा, जिसका उन्होने जवाब दिया कि आप आ सकते है। पीछे जब आ गए तो शरणागत बने और उनकी रक्षा होनी चाहिए। लेकिन रक्षा करे कहासे? रास्तेसे तो जा नही सकते, हवाई जहाजसे ही जा सकते है। लेकिन हवाई जहाजसे कितना लश्कर जा सकता है, चद आदमी आ-जा सकते है। उनको अपने हथियार ले जाने है, खुराक ले जानी है, कपडे भी ले जाने है और मोटे कपडे भी होने चाहिए। एक रतल वजन हो गया तो वजन बढ गया। ऊपर पक्षीके माफिक चलना है तो कितने लोग जा सकते है। शायद आज भी कुछ गये है। कुल १००० गये होगे, ज्यादा-

से-ज्यादा १५०० गये होंगे। एक ओर तो ये १५०० आदमी और दूसरी तरफ कबाइली इलाकेसे बहुतसे लोग आ गये हैं। वे भी तो लड़नेवाले हैं, वे लड़ते हैं। उसमें आप क्या सोचें और मैं क्या सोचूं। आखिर मेरा जीवन तो ऐसे ही काममें चला गया है। मैं तो शस्त्र-युद्धको माननेवाला नहीं हूं, लेकिन मुझको समझना तो चाहिए कि वह क्या बात है। एक ओर तो वे १५०० आदमी और दूसरी तरफ इतने अफरीदी और दूसरे लोग। फिर वहां शेख अब्दुल्ला साहब हैं। शेरे काश्मीर उनको कहते हैं। याने शेर हैं, सिंह हैं। वह बड़ा तगड़ा है। आपने उसका चित्र तो देखा ही होगा। मैं तो उसको पहचानता भी हूं। उसकी बेगमको भी पहचानता हूं। बेगम तो आज यहां पड़ी है। तो एक आदमीसे जितना हो सकता है वह वे कर रहे हैं। वे कोई लड़नेवाले तो हैं नहीं। यों तो काश्मीरमें तगड़े मुसलमान पड़े हैं, तगड़े हिंदू भी पड़े हैं, राजपूत और सिख भी पड़े हैं। तो उसने तय कर लिया है कि जितना हो सकता है वह करूंगा। वह तो मुसलमान है। काश्मीरमें मुसलमानोंकी बड़ी आबादी है। यहांसे तो ये लोग बंदूक लेकर जाते हैं, लेकिन वहांके मुसलमान क्या करें और क्या न करें। मान लो कि हम तो यहां जाहिल बन गए हैं, यहां कहो या पाकिस्तानमें कहो, कोई पागलपन बाकी नहीं रखा है। क्या वहां वे लोग भी जाहिल बन जायं और जिनको काटना है उनको काटें, औरतोंको काटें, बच्चोंको काटें, इस बुरे हालमें मरें, यह हाल काश्मीरका हो। तो पं० जवाहरलाल नेहरू और मंत्रिमंडलके सभी सदस्योंने सोचा कि कुछ-न-कुछ तो किया जाय, तो इतने आदमी भेज दिये। वे क्या करें? इतना ही करें कि आखिरी दमतक लड़ते रहें और लड़ते-लड़ते मर जायं। जो लड़नेवाले या तलवारी होते हैं उनका यही काम होता है कि वे आगे बढ़ते हैं और हमला करने-वालोंको रोक लेते हैं। वे मर जाते हैं, लेकिन पीछे तो कभी हटते नहीं हैं। इसका क्या परिणाम होगा, वह तो ईश्वर ही जानता है। जैसा भजनमें बताया गया है। हमारा धन तो मुरारी ही है। करोड़ोंकी दौलत हमारा धन नहीं है। मकान हैं, वह भी हमारी दौलत नहीं है। जो कुछ करता है वह मुरारी ही करता है, लेकिन पुरुषार्थ करना तो

हमारा काम है। वह हम करे। तो इन १५०० आदमियोने पुरुषार्थ किया। लेकिन कब, जब वे श्रीनगरके बचानेमे सारे-के-सारे कट जाते है। पीछे श्रीनगरके साथ काश्मीर भी बच जायगा। इसके बाद क्या होगा ?

यही होगा न, कि काश्मीर काश्मीरियोका होगा। शेख अब्दुल्ला जो कहते है वह तो मै सपूर्णतया मानता हू कि काश्मीर काश्मीरियोका है, महाराजाका नही। लेकिन महाराजाने इतना तो कर लिया है कि उन्होने शेख अब्दुल्लाको सब कुछ दे दिया और कह दिया है कि तुमको जो कुछ करना है सो करो। काश्मीरको बचाना है तो बचाओ। आखिर महाराजा तो काश्मीरको बचा नही सकते। अगर काश्मीरको कोई बचा सकता है, तो वहा जो मुसलमान है, काश्मीरी पडित है, राजपूत है और सिख है, वे ही बचा सकते है। उन सबके साथ शेख अब्दुल्लाकी मोहब्बत है, दोस्ती है। हो सकता है कि शेख अब्दुल्ला काश्मीरका बचाव करते-करते मर जाते है, उनकी जो बेगम है वह मर जाती है, उनकी लडकी भी मर जाती है और आखिरमे काश्मीरमे जितनी औरते पडी है वे सब मर जाती है, तो एक भी बूद पानी मेरी आखोमेसे आनेवाला नही है। अगर लडाई होना ही हमारे नसीबमे है तो लडाई होगी। दोनोको ही लडना है या किस-किसके बीच होगी, यह तो भगवान ही जानता है, हमलावरोकी पीठपर अगर पाकिस्तानका बल नही है या पाकिस्तानका उसमे कोई उत्तेजन नही है, तो वे वहा कैसे टिक सकते है, यह मै नही जानता। लेकिन माना कि पाकिस्तानकी उत्तेजना नही है, तो नही होगी। जब काश्मीरके लोग लडते-लडते सब मर जायगे तो काश्मीरमे कौन रह जायगा? शेख अब्दुल्ला भी चले गए, क्योकि उनका सिहपन, बाघपन तो इसीमे है कि वे लड़ते-लड़ते मर जाते है और मरते दमतक उन्होने काश्मीरको बचाया, वहाके मुसलमानोको तो बचाया ही, उसके साथ वहाके सिख और हिंदुओंको भी। वे ठेठ मुसलमान है। उनकी बीबी भी नमाज पढ़ती है। उन्होने मधुर कठसे मुझे 'ओज अबिल्ला' सुनाया था। मै तो उनके घरपर भी गया हू। वे मानते है कि जो हिंदू और सिख यहां है वे पहले मरे और मुसलमान पीछे, यह हो नही सकता। वहा हिंदू और सिखकी तादाद कम है,

तो भी क्या हुआ। अगर शेख अब्दुल्ला ऐसे हैं और उनका असर मुसलमानोंपर है तो हमारा सबका क्षेम है। आज जो जहर हममें फैल गया है वह होना नहीं चाहिए और काश्मीरके मारफत हमारा यह जहर भी चला जायगा। अगर उस जहरको मिटानेके खातिर काश्मीरमें इतनी कुरबानी हो जाती है तो उससे पीछे उनकी आंखें भी खुल जायंगी। जो कबाइली लोग हैं, उनका काम तो मारना ही है। वे चले तो गए वहां अपनी शक्ति भी बता दी। वहां उनके साथ कौन-कौन हैं, उसका तो मुझे पता है, लेकिन उसका नतीजा तो यह आता है कि काश्मीरमें जितने हिंदू-मुसलमान पड़े हैं अगर वे सब-के-सब शहीद हो जाते हैं तो हमारी भी आंखें खुल जाती हैं। हम समझेंगे कि सब मुसलमान पाखंडी और पाजी नहीं हैं, उनमें भले भी रहते हैं। इसी प्रकार हिंदू और सिखों में भी सब अच्छे या फरिश्ते हैं, यह भी झूठ है, या सब निकम्मे हैं या काफिर हैं, वह भी गलत बात है। इसीपर मेरा तो खयाल है कि जो लोग भले हैं वे हिंदू-मुसलमान-सिख सभीमें हैं और इन्हीं भले आदमियोंपर दुनिया चलती है, न कि हथियार रखनेवालों पर।

यह जो मधुर कंठमें हमने भजन सुना है उसका भी निचोड़ यही है। काश्मीरमें अगर सारे लोग भी रक्षा करते-करते मर जायं तो मैं नाचनेवाला हूं। मेरे दिलमें तो कोई रंज नहीं होनेवाला है। दुनियाका काम चलता ही रहता है। यह तो सब ईश्वरका खेल है। लेकिन पुरुषार्थ तो है और वह यही कि हम सच्चा काम करते हुए मर जायं।

: १३३ :

३० अक्तूबर १९४७

(आज सायंकाल प्रार्थना-सभाके समय कुरान-शरीफकी आयत पढ़े जानेपर एक व्यक्तिद्वारा आपत्ति की गई जिसके कारण प्रार्थना न हो सकी। लोगोंने आपत्ति करनेवालेको अपना विरोध वापस ले लेनेको समझाया, लेकिन बाहर जाकर वह फिर भीतर आ जाया करता

था। इसलिए गांधीजीको प्रार्थना-सभाके लिए आते समय तीन बार लौटना पडा। अतमे जब वह आदमी चला गया तब लोगोके अनुरोध करनेपर गाधीजीने थोडे समयके लिए भाषण करते हुए कहा—)

भाइयो और बहनो,

यहा क्या हो रहा था यह मुझे पता चलता रहता था। इससे मुझे दु ख हुआ। मैं आज तो यह बता देना चाहता हू कि यह एक निजी आदमीका घर[1] है। यहा गोलमाल नही होना चाहिए। जो लोग बाहरसे यहा आ जाते है वे आए, लेकिन आनेके बाद शिकायत करना यह सभ्यता नही है। आज एक भाई कहते है कि आज प्रार्थना नही होने दूगा। तब मुझे विचार करना पड़ा कि इस हालतमे मुझे प्रार्थना करनी चाहिए या नही। शिकायत करनेवालेको आपने कहा तो वे चले गए, फिर आए, फिर चले गए, फिर आए। यह मेरे लिए अच्छा नही है। इसका मतलब यह है कि उसका दिल दु.खित होता है। यों तो मैं समझता हू कि आप लोगोमेसे काफी लोग दु खित होगे कि प्रार्थनामे कुरान-का एक टुकडा होता है। लेकिन मैं लाचार हू, क्योकि वह मेरी प्रार्थना-का एक अविभाज्य अग है। यहा प्रार्थना नही होगी, तो क्या मै प्रार्थना नही करूगा? एक तरफ धर्म बताता है कि मै प्रार्थना करू। मै यहा प्रार्थना नही करूगा, इसलिए घरमे प्रार्थना न करू ऐसी बात नही है। दुनियामे मेरे साथ कोई भी न रहे तो भी प्रार्थना करूगा। दिलमे ही प्रार्थना हो सकती है। मुझको यहा अहिंसाकी दृष्टिसे सोचना पडता है। उसी निगाहसे देखना चाहिए कि मेरा धर्म क्या है? यदि वह भाई चला जाता है तो मै प्रार्थना करू, यह मुझे अच्छा नही लगता। मै आज प्रार्थना तो करना नही चाहता हू, बहस भी नही करना चाहता हू, तो भी करूगा, क्योकि समय भी नाजुक पडा है। इसलिए लोग सुनना चाहते है कि गाधी क्या कहता है। मै भी कहना चाहता हू कि लोग मुझे समझ तो ले कि मै क्या कहना चाहता हू। लेकिन मै लाचार बन गया, इसलिए बहस नही करूगा।

---

[1] बिड़ला-भवन।

मुझे सोचना है कि मै जो प्रार्थना करता हू उसे बद कर दू और क्या बहसमे ही रहू ? यह बडा प्रश्न है। इस प्रश्नपर मुझे सोचना पडेगा। आज मै कहना नही चाहता और बहस भी नही करना चाहता। बहस ही करू तो प्रार्थना छोड़ दू। मै इसके बारेमे एक प्रेस-वक्तव्य निकाल दूंगा।

जब देखा कि आप लोग हैं तो मै आ गया। मेरी सभ्यता और अहिंसा बताती है कि मै अपना दिल खोलकर आपके सामने रख दू और बता दू कि मै कौन हू। मेरे पास इस जगतमे सत्य और अहिंसाके सिवा कोई दूसरी चीज नही है। आप सत्य और अहिंसाको पहचान लें तो दुनियामें बड़े-बड़े काम हो सकते है। मै कोई लबी-चौडी बात नही करना चाहता। दुनियामे बडी-बड़ी बातें होती है, लेकिन ईश्वरका जो नियम है उसे कौन फेर सकता है और दुनियामे जो बडे-बडे नियम है उन्हे ईश्वर फेर नही सकता। मै समझता हू कि हम अभिमानमे पडे है, अज्ञानमे पड़े है, इसलिए यह मान लेते है कि सत्य तो इतनी बडी चीज है कि वह व्यापारमे कैसे चल सकती है ? व्यवहारमे कैसे चल सकती है ? अहिंसा चलेगी कैसे ? मुझे लोग गाली देते है तो लोग कहते है कि जब कोई मुझे दो गाली देता है तो मै एक गाली तो दू। गालीके सामने थप्पड क्यो न लगा दू। इसके पीछे क्या होता है कि हम आगे नही बढते है। लेकिन हमको तो आगे बढना ही है, यही मै समझता हू कि जन्म लेनेके मानी है। मैं स्थिर रह नही सकता हू। स्थिर तो एक ईश्वर है; लेकिन स्थिर होते हुए उपनिषदमे बताया गया है कि वह स्थिर भी है और गतिमान भी है। हमेशा गति करता है—ऐसा जो गति करना है वह स्थिर है, ऐसा लगता है। हम कहा जानते थे कि सूर्य स्थिर है और पृथ्वी अस्थिर है; लेकिन अब हम सीख गए कि गति-सी जो लगती है वह स्थिर है। ईश्वरकी ऐसी माया बन गई है। जो स्थिर और अस्थिर है, वह ईश्वर ही है। हममे स्थिरता-जैसी कोई चीज नही है, गति है, गति है तो हमको बढना है। हम माके पेटसे निकले और बढे। आगे जाते-जाते वृद्ध होते है। ऐसा काम दुनियामे चलता है। जो जन्मता है उसको आगे बढना है, वह बढता ही है। कुछ

लोग वृद्धावस्थाको गिरना मानते हैं। लेकिन मैं वैसा नही मानता। वृद्धा-वस्था पका हुआ फल है। तो शरीर छूटता है, आत्मा थोड़े छूटता है। वह न मरता है और न गिरता है। आत्माकी गति बढती ही रहती है लेकिन दुनियामे सत्य और अहिंसाके बिना काम नही चलता। मै अब भी दावेके साथ कहता हूं कि सत्य और अहिसा ऐसी चीज है जिसे बच्चेको भी सीखना चाहिए। इसे अगर माता सीख लेती है तो अपने बच्चेको सिखा सकती है। माता आज-के-आज तो सीख नही सकती है, लेकिन कहते हैं कि हम तो आदिकालसे, करोडो सालसे है तो उस विकासको देखना है। इसके लिए हममे धैर्य तो होना ही चाहिए। मैं इसके बारेमे अधिक तो कहना नही चाहता; लेकिन सिवा सत्य और अहिंसाके कुछ नही हो सकता। हम विकास नही कर सकते।

मैं आज बहस तो करना नही चाहता। आप कल भी आएंगे। यदि कल भी किसीको कुरानकी आयत पढे जानेपर आपत्ति होगी तो उसपर मै सोचूंगा कि मुझको बहस करना है या नही। यदि किसीको शिकायत होगी तो बोलेगा कि शिकायत है, नही तो बोलेगे कि हम प्रार्थना सुनना चाहते है और बहस भी। लोगोको समझ लेना चाहिए कि हम गुस्सेमें नही आयंगे। हां, पीछे कोई ठान ले कि हम किसीको सुनने न देगे और चीखें तो मैं कहूंगा कि आपकी हिंसाकी कसौटी हो जायगी और मेरी अहिंसाकी परीक्षा हो जायगी ? यह भी मालूम हो जायगा कि आप कहांतक जाते है ? यदि आप मेरे साथ रहेगे और अहिं-साका साथ देंगे तो अहिंसाके सामने हिंसा रह नही सकती, ऐसा मैं दावेके साथ कह सकता हू। लेकिन शर्त यह है कि मै जैसा कहूं वैसा आप करे। आप कहे कि हम अकुशमे रहनेवाले है, निग्रहमे रहेगे और दिलमे गुस्सा न करेंगे। वह भाई अज्ञानी है जो कुरानकी आयतपर आपत्ति करता है। कुरानशरीफने क्या गुनाह किया है ? यहांके मुसलमान बिगडे, इसलिए कुरान बिगड़े यह बात नही है। वह तो बुलद है, सनातन है, अरबीमें है। जो उससे घृणा करता है उससे अधिक अज्ञानी मैं और किसीको नही समझता। इसी तरहसे शिकायत करनेवालेको आप समझा दे। हां, अगर कोई कहे कि वह प्रार्थना सुनना ही नही चाहता तो मैं प्रार्थना

करूगा और बहस भी। लेकिन मै प्रार्थना बद करता हू, इसके लिए किसीको आप मारे यह मै बर्दाश्त नही कर सकता। यदि मै अकेला रहूं और पांच आदमी आवे और कहे कि हम आपको मार डालेगे तो मै कहूगा कि मेरा सिर आपके सामने है। मै कहूगा कि पाच क्यों मारे, एक ही आदमी गला काट सकता है। लेकिन तो भी मै प्रार्थना करूगा। जब आपका दिल ऐसा हो जायगा तब आप न किसीको मारेंगे और न किसीपर गुस्सा करेगे। शिकायत करनेवाला, जिसे हम असभ्य कह सकते है, अगर चीख-चीखकर भी शिकायत करेगा तो भी हम प्रार्थना करेगे। कल प्रार्थना होगी और बहस भी। यदि कल कोई शिकायत करे तो वह शिकायत करके चला जाय। उसके पीछे मै ख्वार नही होना चाहता। मै गुस्सेको काबूमे रखू, धीरज रखू तब मेरी गाडी आगे चल सकती है। मै आज इतना ही सुनाना चाहता हू। अब आप शातिसे घर जाइए और बहस न करे। घर जाकर इसपर विचार कीजिए।

: १३४ :

३१ अक्तूबर १९४७

(आज सायकाल भी गाधीजीकी प्रार्थना-सभामें कुरानकी आयत पढी जानेपर दो आदमियोंने आपत्ति की। फलस्वरूप प्रार्थना आरभ करनेसे पहल गाधीजीने इस बारेमे कहा--)

भाइयो और बहनो,

मेरे विचारसे दो या तीन आदमियोकी खातिर बाकी करीब ३०० आदमियोंको निराश करना भी एक तरहकी हिंसा है। इन आदमियोंको विरोध करनेका तो हक है, लेकिन सभ्यता और शिष्टाचार कहता है कि उन्हे अपने इस हकको इस जगहपर, जो कि बिडलाजीकी निजी मिल्कियत है, इस्तेमाल नही करना चाहिए। लेकिन अगर वे करते है तो कौन रोक सकता है? तो फिर सभाके शेष लोगोंको चाहिए कि वे बर्दाश्त करे, अपने दिलोंमे गुस्सा न करे और जो लोग विरोध करते

है, उनको यहा और बाहर भी कुछ न कहे। अगर आप लोग ऐसा करेंगे तो मै अपनी प्रार्थना करूंगा और उसमे कुरानशरीफकी आयत भी रहेगी। आप लोग, जो बहुमतमे है, ऐसा न सोचे कि चूकि हम इतनी बड़ी तादादमे है, इसलिए विरोध करनेवालोकी दरकार ही नही है। यदि आप ऐसा सोचे तो वह हिंसा हो जाती है। जो अल्पमतमे है उनकी हमे ज्यादा दरकार होनी चाहिए, यही तालीम मै अबतक देता आया हू। आगे भी मै ज्यादा-से-ज्यादा यही तालीम दूगा कि अहिंसा किस तरहसे काम करती है।

सत्य और हिंसाके जो मौलिक सिद्धांत है उनमे कोई खास गुत्थी नही रहती। उनको सीखनेके लिए कोई खास डिग्री लेनेकी जरूरत नही होगी। अंग्रेजी तो क्या उसके लिए मादरी जवान[1] भी सीखनेकी जरूरत नही होगी। उनको जानने लायक चीज तो हम बचपनमे अपने मां-बापसे सीख लेते है। उसपर अमल करना तो इससे भी आसान है। इसलिए अगर आप लोगोमे उनका विरोध वर्दाश्त करनेकी शक्ति है तो मै उनका विरोध होते हुए भी प्रार्थना करूंगा। सभ्यताका नियम तो यह है कि जिन लोगोको कुरानशरीफकी आयतपर आपत्ति है वे अपना विरोध प्रकट करके चले जाएं और बादमे मुझको समझाएं कि मै इससे किस प्रकारसे हिंदू-धर्मको नुकसान पहुचाता हू। मै समझदार आदमी हू। इसलिए अगर वे मुझे समझा सकेंगे तो मै उनकी बात मान लूगा। मै तो समझता हू कि मैने इससे हिंदू-धर्मको फायदा ही पहुचाया है। यह मै आजसे थोड़े ही करता हू—एक अर्सेसे मै ऐसा कर रहा हू और मै समझता हू कि उससे हिंदू-धर्मको कोई धब्बा नही लगा। उसके द्वारा जो मुसलमान मेरे दोस्त है उनको मै और अधिक अपना सका हू। यह तो मैने कोई बुरा नही किया। इसी तरहसे मै अगर सारी दुनियाको अपना सकू और कोई मेरा दुश्मन या विरोधी न हो तो कितना अच्छा हो। लेकिन ऐसा तो कहांसे मै परिपूर्ण आदमी हू कि जिससे मेरा कोई विरोध न कर सके; लेकिन जो विरोध करते है उनको

---

[1] मातृभाषा।

मैं बर्दाश्त करना तो सीख लू। अगर आप लोग भी उनका विरोध बर्दाश्त कर ले तो वे लोग भी सोचेगे कि ये तो सब शरीफ आदमी है—हमको कोई कुछ कहता ही नही, सब सद्भावनासे हमको अपनाते है। अगर हम सब ऐसा कर सके तो हिंदुस्तानकी शक्ल बदलनेवाली है, इसमे कुछ शक नही है। इसलिए मै आपको पूछता हू कि क्या आप इसे बर्दाश्त कर लेगे? पुलिस भी उनको कुछ न कहे।

(गाधीजीके यह पूछनेपर सब लोगोने रजामदी प्रकट की। तब प्रार्थना हुई। प्रार्थनाके बाद गाधीजीने भाषण करते हुए सबसे पहले शांति रखनेके लिए हार्दिक धन्यवाद दिया और उन्होंने सभाके बाकी लोगोको भी उन दो व्यक्तियोके विरोधको बर्दाश्त करनेपर बधाई दी।)

अगर ऐसा ही चलता रहा तो उसका परिणाम हमको अच्छा ही मिलनेवाला है। 'मन-मदिरमे प्रीति बसा ले'—श्रीदिलीपकुमार रायक, जिन्होने इस भजनको आजकी प्रार्थना-सभामे गाया है, कठमे जो माधुर्य है और उनके गानेमे जो कला है, वह मुझको मीठे लगे। वैसे तो यह मामूली चीज है, लेकिन उसे जिस ढगसे सुदर बनाया गया, उसीका नाम कला है। इस भजनमे यह चीज है कि अपने मनको मदिर बनाओ और उस मदिरमें प्रीति बसाओ। तो इसमे भी अहिंसाका शिक्षण है। इस भजनका कवि आदमीको कहता है कि तू मूर्ख और भोलाभाला क्यो बनता है। अगर तू केवल अपने मन-मदिरमें ज्योति जगा लेगा तो तेरा सारा काम बन जायगा। उसके बाद तो सारी दुनियामें ज्योति या प्रकाश ही दीखेगा। अधेरा कही रहेगा ही नही। इसी तरहका चमत्कार सत्य और अहिंसामें भरा है। यह बडी सीधी-सादी चीज है; लेकिन अगर हम इतनी चीज भी सीख लें तो दुनियामें हमारा सारा व्यवहार सरल हो जाता है।

नवाखालीमे मैंने देखा कि वहांके अमीर लोग गरीबोको वही छोडकर भाग गए। वहाके देहातोंमें वे लोग, जिनको कि हम मूर्खता-वश अछूत कहते है भरे पडे है। क्योकि मै उधर घूमा हू, इसलिए मैंने देखा कि वे लोग बडे परेशान थे। वहाकी स्त्रियां चूड़िया पहनना तथा माथेपर सिंदूर लगानातक भूल गई थी। पजाब या दूसरे स्थानोंसे जो लोग

यहा आ रहे हैं उनमें भी मैं देखता हू कि धनी लोग तो कुछ-न-कुछ अपना धधा कर ही लेते हैं। उनके पास पैसे होते हैं और दोस्त भी मिल जाते हैं। लेकिन गरीब क्या करे ? वे कहा जाय ? नवाखालीमें तो हिंदू ही थे, लेकिन बिहारमे मैंने देखा कि मुसलमान परेशान पडे थे। मैंने उनको कहा कि आपमेसे जो मर गए, वे मर गए और बाकी जो धनी है और वे जो बाहर जाना चाहते हैं वे चले जाय, लेकिन गरीबोका बेली[1] परमेश्वर ही है। परतु ईश्वरको अपने हाथ या मुहसे तो काम करना नही है, वह तो दूसरोको प्रेरणा देता है और उनकी मारफत अपना काम करा लेता है। लेकिन क्या धनिक लोग इतने कठोर और नास्तिक बन जाय कि ईश्वरको भी भूल जाय और अपने धनको ही परमेश्वर मानकर बैठ जाय ? लेकिन धनिक लोग तो वहासे भाग गए और वहा जो गरीब लोग रह गए वे मुझको लिखते हैं कि हमारा कुछ तो करो। चूकि मैं कई वर्षोंसे गरीबोका काम करता आया हू, इसलिए वे मेरी ओर देखते हैं। लेकिन मैं क्या कर सकता हू ? मेरे पास न तो कोई ताकत है और न सत्ता है। चूकि वे मुझे लिखते हैं, इसलिए मुझे उनका ज्ञान तो हो जाता है।

अभी हमारे यहा दिल्लीमें जो शिविर चलते है उनमें भी काफी गरीब लोग पडे है। धनी भी है और उन धनी व्यक्तियोमे कुछ अच्छे भी हैं जो गरीबोको खाना खिलाकर खाना खाते है। इसलिए मैं कहता हू कि जो लोग यहा आ गए है वे अपने अदर धनी और गरीबका भेद नही करे। अगर अमीर गरीबोको घृणासे देखेगे तो वह धर्म नही अधर्म हो जायगा। इसलिए मैं साफ कहूगा कि जो धनी लोग हैं वे गरीबोको अपने साथ लेकर चले। तभी हम सगठित रूपमें रह सकते है।

अभी हालमे दो यूरोपियनोने, जो पति-पत्नी थे, हमारे कुछ शिविरो-को देखा। वे उनको देखकर खुश हुए। उन्होने कहा कि गरीब और अमीरके विभाग तो है, लेकिन फिर भी सब लोग अच्छी

---

[1] सहायक।

तरहसे रहने हैं। वे यहां सेवा करनेके ही उद्देश्यसे आये हैं। अगर हम सब लोग ईश्वरका नाम लेकर काम करे तो जैसे दूधमे शक्कर मिल जाती है वैसे ही पंजाबके शरणार्थी भी दिल्लीके लोगोंमे मिल जायगे।

दिल्लीमे अभी काफी मुसलमान पड़े है। मैंने आज एक फेहरिस्त देखी है, जिसमे अगर अतिशयोक्ति नही है तो मालूम होता है कि यहा सैकड़ो मुसलमानोको जबरन हिंदू या सिख बनाया गया है। जिन लोगोंका इस तरहसे धर्म-परिवर्तन किया गया है, उनको मै कहना चाहता हू कि अगरचे आपकी मुसलमानी शक्ल बदल दी है, लेकिन अगर खुदा सचमुच आपके दिलमे बैठा है तो आपको न तो दाढी मुडानेकी जरूरत है न चोटी रखनेकी। जो लोग स्वेच्छासे गीताजीको पढ़ना चाहे खुशीसे पढ़ सकते है, जैसे मै कुरानशरीफ को पढ़ता हूं और मेरी आत्मा खुश होती है। लेकिन अगर कोई मुझको हुक्म करे कि तुम्हे कुरानशरीफ पढनी ही होगी, नही तो हम मार डालेगे तो मै कहूगा कि मुझे आपकी कुरानशरीफ नही चाहिए, भले ही उसमे रत्न भरे हो। इसलिए जो मुसलमान हिंदू या सिख बन गए है उनसे कहूंगा कि उन्हें अपने धर्मपर कायम रहना है। अगर हम उनके साथ जबरदस्ती करते हैं तो हम हिंदू-धर्मका नाश करते है। हिंदुस्तानमें ऐसा हमेशा हो नही सकता है और अगर होता है तो हम गिर जाएगे और जो आजादी हमने ली है उसको हम खो देंगे। वह स्वप्नकी तरह हो जायगी, इसमें मुझे कोई शक नही है। इसलिए जितने मुसलमान यहां है उनको निडर होकर रहना चाहिए। जिन्होने धर्म-परिवर्तन कर लिया है वे कहें कि तब तो हम डर गये थे, लेकिन अब हम समझ गये है कि जो खुदापरस्त या ईश्वर-भक्त होते है वे किसीसे नही डरते, अगर किसीसे डरते है तो केवल ईश्वरसे। ईश्वरसे डरना तो अच्छी बात है, क्योंकि वह प्रेमका धाम है, दयाका सागर है। उससे डरनेसे तो हम कृतार्थ हो जाते है। लेकिन इन्सानसे कभी नही डरना है। इसलिए वे कह देगे कि हम धर्म-परिवर्तन करनेसे तो मरना अच्छा समझेगे। चाहे तो आप हमें पाकिस्तान भेज दे,

लेकिन पाकिस्तानके जानेके लिए भी कोई मजबूर नही कर सकता।

लियाकतअली साहब और हमारे प्रधान मंत्रीमें भी यही समझौता हुआ है न, कि जो पाकिस्तान जाना चाहे वे पाकिस्तान चले जाय; लेकिन लियाकतअली साहब, सरदार और जवाहरलाल भी किसीको मजबूर नही कर सकते। कोई कानून नही है। इसलिए जो मुसलमान यहा रहते है उनको हमे प्रेमसे रखना चाहिए। अगर मैं जिंदा रहू तो इसके सिवा कोई दूसरा दृश्य देखना नही चाहता। पहले मैं १२५ वर्ष जिंदा रहनेकी बात सोचता था, लेकिन अब वह भूल गया हूं। अगर हिंदुस्तानके नसीब खराब है तो मुझको तो ईश्वर उठा ले। और अगर उसका नसीब बुलद है और पल्टा होनेवाला है और होना तो चाहिए तो तू मुसलमानके दिलको बदल दे और उनका दिल तेरेसे ही भर दे। खुदाका नाम तो वे लेते है, लेकिन खुदाका काम नही करते। इसी तरहसे हिंदू भी अगर कृष्ण या रामका नाम तो ले, लेकिन पीछे कत्ल करें और एक दूसरेको काटे तो वह रामका काम नही कहा जा सकता।

कुछ लोग कहते है कि लड़ाई तो छिड़ गई है, काश्मीरमें क्या होगा? मै कहता हू कि कुछ नही होगा। काश्मीरमे जो लोग है वे बहादुर है। वहा हिंदू, मुसलमान और सिख सब एक-सा रहते है। जो हमला करने गये है उनको वे कह दे कि अपने घर वापस जाओ, अगर हमला करोगे तो हमारी लाशपर खड़ा होना है, श्रीनगर आपको वैसे नही मिल सकता। पीछे हमारा जो लश्कर वहा गया है उसको कोई छूएगा नही। अगर वे मर जाते है तो वे अमर हो जायगे तब हम नाचकर गा सकते है और अगर किसी वक्त यहा भी ऐसा मौका आ गया तो श्रीदिलीपकुमार रायसे कहूंगा कि ऐसा भजन सुनाओ कि जिससे लोग नाचने लगें; क्योकि जो लोग मर गये वे तो अमर हो गये और जो बचे है वे तो मृतप्राय है। मुझको तो इसका कोई दर्द नही होगा। हां, दर्द तब होगा जब लोग पागल बनें और पाकिस्तान भी पागल बने। जो अफ्रीदी लोग है वे भी तो हमारे भाई है और जो कबायली इलाका है वह भी हमारा ही है, तो वे

क्यो ऐसा काम करे ? उनको इमदाद[1] कौन देता है यह समझनेकी बात है। मै तो कहूगा कि उन सबमें ईश्वरका वास हो और मन-मंदिरमें प्रीतिकी ज्योति हो। तो हमारा अधेरा मिट जाता है और सब जगह प्रकाश-ही-प्रकाश दिखता है। यही मेरी प्रार्थना है और आप लोग भी मेरी इस प्रार्थनामे शामिल हों कि सारे हिंदुस्तान और पाकिस्तानमे ऐसा प्रकाश पैदा हो जाय जिससे आपस-आपसमे मोहब्बतसे रहें। पीछे हम खुराक और कपडा पैदा करनेमें लग जाय, जिसकी आज देशमें कमी है। और हम भूल जाय कि हममे दुश्मनी थी, और दोस्त बन जाय। बस यही मै चाहता हू कि हम सब इस काममे लग जाय।

: १३५ :

१ नवबर १९४७

(आज भी गाधीजीकी प्रार्थना-सभामे उसी व्यक्तिने कुरानशरीफकी आयत पढनेपर आपत्ति की जिसने कल और परसो की थी। इसलिए प्रार्थना आरंभ करनेसे पहले गांधीजीने कहा—)

भाइयो और बहनो,

मुझको ब्रजकिशनजी कहते है कि जिस भाईने कल विरोध किया था उसीका आज भी विरोध है। उनका विरोध तो मुझे अच्छा लगता है और बुरा भी। अच्छा तो इसलिए कि कल जिस शाति और सभ्यतासे उन्होने विरोध किया वैसा विरोध तो बराबर रह सकता है। जब उनके दिलमें विरोध है तब उसे बाहर क्यो न प्रकट कर दे। आप लोग भी यहा और बाहर, दोनों जगह शांत रहे और उनको कुछ नही कहा। इस लिहाजमे तो मुझे अच्छा लगा, लेकिन दुःख इसलिए होता है कि जिस विनय और दृढतासे मैने कल समझाया था उसको उन्होने नही समझा। वह कोई गंभीर बात तो थी नही,

---

[1] मदद।

एक साधारण बुद्धि भी उसे ग्रहण कर सकती थी। मगर जब आदमीके दिलमे रोष हो जाता है तो मुझे प्रिय लगता है कि वे उस रोषको शांतिसे जाहिर करते हैं। इसलिए मुझे दु:ख होता है और सुख भी। मैं समझ लेता हूं कि जैसे आप लोगोने कल उत्साह बताया था और दिलमें उनके प्रति कोई रोष न रखते हुए मोहब्बत ही बताई, वैसे ही मुझको उम्मीद है कि आज भी आप वही करेंगे। तब तो मैं अपनी प्रार्थना शुरू करूंगा। अगर इस सभ्यतासे विरोध करे तब तो उसमे मैं कोई हानि नही समझता हूं। उससे तो हमें शातिका ही पाठ मिलेगा और बुलद अहिंसा कैसे काम करती है उसे हम सीख लेंगे। अगर ऐसा ही करते रहे तो हम समझ जायगे कि इसमे कितना चमत्कार भरा है।

(इसके बाद प्रार्थना शातिपूर्वक हुई और श्रीदिलीपकुमार रायने यह भजन गाया—'हम ऐसे देशके वासी हैं जहा शोक नही और आह नही।' बादमे गाधीजीने कहा—)

आज भी आपने उसी मधुर कठसे मधुर भजन सुना। उसमें तो यही कहा गया है न कि 'हम ऐसे देशके वासी हैं, जहा शोक नही और आह नही।' पीछे उसमें और भी कहा है कि 'वहा मोह नही, लोभ नही' और भी हमारे जो इस प्रकारके रिपु है वे वहा नही हैं। लेकिन वैसा देश कहा हो सकता है? पहले जब सुचेतादेवीने यह भजन सुनाया था तब मैंने उस प्रार्थना-सभामें उसके दो अर्थ समझाए थे। एक तो मैंने यह बताया कि वह देश कविने हिंदुस्तानको कहा। उसकी एक इच्छा थी, स्वप्न था कि हमारा देश ऐसा हो, लेकिन आज तो वैसा है नही। वह भजन तो १५ अगस्तके पहलेका लिखा हुआ है, लेकिन उस वक्त भी देश तो ऐसा नही था। वहा शोक, लोभ, राग, मद, मोह, मत्सर, ये जो ६ हमारे दुश्मन माने गये है, सब वहां थे। इन छहोमें और भी सब दुश्मन आ जाते हैं। तब तो उसमें भूख भी थी, भीख भी थी, कपडे भी नही थे—ये सब विपत्तिया उस समय भरी हुई थी, लेकिन कविको तो ऐसी आशा थी न, कि हमारा देश ऐसा बने। कैसे बने, इसमे दूसरा अर्थ आ जाता है। यह भी तो देश है न, कि भगवद्गीतामें जिसको कुरुक्षेत्र

भी कहा गया है और धर्मक्षेत्र भी। अगर मनमे भगवानका मदिर है तब तो वह धर्मक्षेत्र हुआ और अगर मन स्वेच्छाचारी हो जाता है तब वह कुरुका धाम बन जाता है। कौरवरूपी दुश्मन तो कितने ही है, जिनके पिता अधे है, लेकिन धर्मक्षेत्र तो युधिष्ठिरके रूपमे ही है न, इसलिए युधिष्ठिरका नाम धर्मराज हुआ। ऐसा जो हमारा देश है उसमे न आह है, न शोक है। वैसे हम सब हो सकते है, लेकिन शर्त भी बताई है न! तब हमारा देश कौन-सा है, जिसमे भगवान भरा है। कविने उसे पीछे स्वदेश भी कहा और स्वराज भी कहा। ठीक कहा उसने। जब हम स्वराज पा लेते है तब पीछे हिंदुस्तान ऐसा बन जायगा जिसमे न आह होगी, न शोक होगा। लेकिन देश आज जितना कगाल है उतना तो मैने कभी नही पाया। मैने जो बचपनसे कुछ इतिहास पढ़ा है उसमे भी उसको ऐसा नही बताया गया है जैसा आज है। उस चीजको मिटानेके लिए ही यह भजन है। उसमे बताया गया है कि अगर हम अपने मनको मदिर बना लें और उसमे भगवानकी प्रतिष्ठा कर ले तो सब खैर हो जाती है।

आज एक तरफ तो लोग भूखों मर रहे है और नगे है। यहां तो हम सब कपडे पहने हुए बैठे है। ठंड न लगे इसलिए मैने भी चादर ओढ लिया। आज मेरे पास बेचारी एक डाक्टरनी आ गई। वह आज कुरुक्षेत्रसे आई थी। वह पजाबमे बड़ा काम कर रही थी। वहां वह हिंदू, मुसलमान, सिख सबकी शुश्रूषा करती थी। वहासे उसको भागना पडा। वहांसे निराश्रित होकर आ गई थी। सुशीलाजीने उनको कहा कि जब और कोई काम नही तब कुरुक्षेत्रमें काम करो तो वह उनको वहा अपने साथ ले गई। आज थोड़ा वहाका हाल सुनानेके लिए यहा आ गई थी। आज हमारे मुशीजी यहां है। उनकी लड़की भी डाक्टर बन गई है। वह कहती है कि मै कुछ तो करूं, खामखा यहा खाली बैठे क्या करूगी। वह भी वहां चली गई। उस डाक्टरनीने आज मुझे यह भी सुनाया कि वहा लोगोकी शुश्रूषा तो होती है, लेकिन डाक्टर काफी नही है। वहा इतने लोग भरे है, इतनी आपत्ति और व्याधि भरी है की जो दो-तीन महिला डाक्टर है वे काफी नही है। वहां

काफी डाक्टरोंकी जरूरत है। अगर डाक्टर जाते है तो वे सेवा कर सकते है—कोई मेरे-जैसे नीम-हकीम तो है नही, उनके पास तो विलायती दवा होनी चाहिए, क्योकि वे विलायती डाक्टर होते है। उनके पास पूरी दवा नही है, लेकिन वह उन्हे मिल जानी चाहिए। औरते पड़ी है, बच्चे पडे है। वे हमेशा भिखारिन तो थी नही। ऐसी भी औरते है कि उनका एक बच्चा भीतर है और एक गोदमे। ऐसे हमारे हाल है।

इसमे हम किसको क्या दोष दे? कोई ऐसा कहे कि हकूमत नालायक है, लेकिन हकूमत क्या जानती थी कि इतनी परेशानी होगी। हमने तो कभी हकूमत चलाई नही थी। अभी तो हकूमतको चलाते दो ही महीने हुए। जब ऐसी आपत्ति आ पड़ती है तो हम कैसे उसको पहुच सकते थे। इसको तो हमें बर्दाश्त करना ही है, लेकिन इसे बर्दाश्त करते हुए हम पागल बन जाय, रोषको कम न करे और कहें कि वहां उन्होने एक मुक्का मारा तो हम दो मारेंगे, दो मारे तो हम चार लगायंगे, चार मारे तो आठ मारेंगे। तब तो यह सिलसिला कही मिटना ही नही है। पीछे हमको यह भजन गानेका अधिकार नही रहता है। अगर गाय तो सच्चे दिलसे गाना चाहिए। अगर हमारा मधुर कंठ है तो वह केवल मधुर गानेके लिए नही होना चाहिए। उसको भगवानकी भक्तिके लिए इस्तेमाल किया जाय। अगर उस माधुर्यमे किसीके दिलमे भगवान बैठ जाय और वहां उसकी प्रतिष्ठा हो जाती है तो ठीक है।

एक तरफ तो हमारा यह हाल है और दूसरी तरफ काश्मीरका मामला है। यहासे जितने हवाई जहाज जा रहे है, उनमे मुझको ऐसा लगता है कि फौजके आदमी ले जा रहे है। वहासे कुछ लोग जो डरपोक है, भाग-कर आ रहे है। उनको भागना क्या था! और भाग कर जायंगे कहा? वे क्यों न वही बहादुरीसे मर जायं? इस तरहसे सारा काश्मीर भी जमींदोज[1] हो जाय तो मुझपर कुछ असर होनेवाला नही है। मैं तो हँसते-हँसते आपको यही सुनानेवाला हूं कि उसपर आप

---

[1] धराशायी।

सब नाचे। लेकिन शर्त यह है कि वहां सब लोग बहादुरीसे मर जाते है—बूढे और बच्चे भी। अगर कोई कहे कि बच्चे क्यो, तो मैं कहूगा कि वे बच्चे कहां जाएगे? आखिर वे अपने मा-बापके साथ रहते है। तो वे सब वहां पड़े है, लेकिन उन सबको हथियार कहासे दें? मेरे-जैसेको तो हथियारकी दरकार नही रहती। आखिर जान है तो सब चीजपर फिदा करना है। तब तो हम कह सकते है कि हमारी जो आत्मा है वह अमर है। अगर हम ऐसा नही करते तो उसका मतलब यह है कि हम शरीरको ही आत्मा मान लेते है। और उसकी पूजा करते है; लेकिन शरीरको भी एक दिन तो मरना है ही। चूंकि बच्चा मांकी गोदमें रहता है, इसलिए अगर मा मर जाती है, तो बच्चेको भी मर जाना है। मरना ही है तब खुशीसे मरना चाहिए। वे कहें कि अगर अफरीदी लोग तबाह करने आए है तो हम खुद अपने-आप तबाह हो जाते है। जितने लश्करके लोग वहा गए है वे भी नाचते-नाचते मरेंगे। मरनेके लिए तो वे वहां गये ही है। जिंदा कब रहेंगे? तब जब कि यह मालूम हो जाय कि अब यहा खैर है, काश्मीरपर कोई चढाई नही करता है, पूर्ण शाति हो गई है। अब तो काश्मीर शेख अब्दुल्लाके हाथमें पडा है। वह हिंदू, मुसलमान, सिख, सबको भाई-जैसा समझता है। बाहरसे भी जो लोग काश्मीरमें आकर रहते है, और अंग्रेज भी जो वहा जाते है, उन सबका वह दोस्त है। वह तो सबको बुलाता है कि आओ, और यहाकी खूबिया देखो, यहांके फल खाओ। वहांकी कारीगरी तो बहुत ही सुदर है। लोग हाथसे बहुत खूबसूरत कपड़ा बुनते है और पेट भरके उसका दाम लेते है। ले क्यो नही, क्योकि काश्मीर तो आखिर इसीपर जिंदा है। तो अब शेख अब्दुल्ला काश्मीरका मालिक बन गया है। महाराजा तो है, लेकिन उनके नामपर ही वह मालिक बना है। महाराजाने ही उनको कहा है कि कुछ करना है तो करो, अगर काश्मीरको रहना है तो रहेगा, और जाता है तो जायगा।

एक तरफ तो कुरुक्षेत्रमें, दूसरी तरफ काश्मीरमे क्या हो रहा है और तीसरी तरफ देखो तो हमको यहां इन चीजोको भी बर्दाश्त करना

पड रहा है। पाकिस्तानमें इतने मुसलमान भाग गए हैं; जो बिना सबब भागते है वे जाय, उनको कौन रोक सकता है। लेकिन कुछ हमारे डरसे भी जाते हैं। कुछ मुसलमान भाई मेरे पास आते हैं तो मुझे शर्म आती है। वे कहते है कि हम अब खडे नही रह सकते, पता नही कब मार दिये जायगे। डरने उनके हृदयमे इस तरहमे प्रवेश कर लिया है। मुझको यह बुरा लगता है। इसी तरहसे एक औरत आती हैं और कहती है कि मुझे डर लगता है, वहां पठान मेरे पीछे पड़ा है। यह सुन कर मेरा हृदय रोता है। मै कहता हू कि जिसके पीछे भगवान है तो पठान या कोई भी हो, उसकी उसको परवाह क्या? लेकिन यह तभी हो सकता है जब उसको यह पता हो कि मेरे पास भगवान है। अगर कोई बदमाश आता है, चाहे वह पठान हो, हिंदू हो या सिख हो, क्योंकि बदमाशी पठानका ही क्षेत्र हो ऐसा थोड़ा ही है, बदमाश तो सब जगह पडे है, वे भी ऐसे बदमाश और व्यभिचारी हो सकते है तो पतिव्रता स्त्री उसे देखकर कांप उठेगी। लेकिन वह क्यो कांप उठे? आप तो यह मानते ही है कि सीताजी कभी नही डरी। रावणके कब्जेपर रहते हुए भी वह नही डरी। तब भी उसको सुनाती थीं कि राम मेरा पति है, वह मेरे पास पड़ा है। तो राम तो भगवान ही था न, इसलिए वह सुनाती थी कि खबरदार, यदि तूने मुझे छुआ तो भस्म हो जायगा। वह छोटी-सी लडकी थी, लेकिन उसमें पवित्रता थी, जिसकी वजहसे वह डरी नही। पवित्रता सबसे बडा हथियार होता है। अगर हम इस बलासे मुक्ति पाना चाहते है तो जैसा कि अभी भजनमें कहा है वैसा हम सब बन जायं। हर एक स्त्री और पुरुष जो प्रार्थनामें आते है वे अगर सब ऐसे बन जायं तो वह गुलाबकी खुशबू-की मानिंद सारे हिंदुस्तानमें फैल जायगा। तो आज जो हम पागल-से बन गये है और जो विपत्ति आ गई है, वह पवित्रताके आनेसे कचरेकी तरहसे साफ हो जायगी। मै तो ईश्वरसे यही प्रार्थना करूंगा कि हम अच्छे बनें, काश्मीरमे जो हो रहा है उस भयसे मुक्त हो जाय और लोग जो निराधार होकर आ गये है, उनका भी भला हो।

कुरुक्षेत्रमे तो, जैसे डाक्टरनी मुझे बताती है, कुछ बदमाश आदि

भी आ गये है। जब एक दफा एक आदमीको कम्बल मिल गया तो वही आदमी दूसरी तरहसे कम्बल लेने आता है। वे इतना नही जानते कि सब लोगोको ओढ़ने और पहननेको तो मिला ही नही। बहुत-सी औरते ऐसी है जो वहासे जो कपड़े पहनकर आई है वही उनके शरीरपर अबतक है। मुझको तो सुनकर भी यह बर्दाश्त नही होता—देखनेके पीछे न जाने क्या होगा? तो वे डाक्टरनी कहती है, अतिशयोक्ति तो वे कर नही सकती, कि मैंने अपनी आखोसे देखा है] कि यह सब इसी तरहसे चलता है। इतनी वाते उसने मुझको सुनाईं।

मै तो इतना ही कहता हू कि हम समझ जाय कि हमारा अधर्म हमे कहां ले जा रहा है? हम कहीपर स्थिर होते है या नही और तब हम पीछे सोचे कि हम ऐसे देशके वासी है या नही कि जहा न आह है, न शोक है।

: १३६ :

२ नवबर १९४७

(प्रार्थना-सभामे आज कई लोगोने कुरानशरीफकी आयत पढे जाने-पर आपत्ति की'। फलस्वरूप गाधीजीने प्रार्थना आरभ करनेसे पहले कहा—)

भाइयो और बहनो,

कुरानशरीफके कुछ टीकाकारोने जो अर्थ लगाए है वे सही नही है। मै तो उसे पढकर हिंदू-धर्मसे नीचे नही गिरता हू; ऊचा ही जाता हू। मै दावा करता हू कि हिंदुस्तानमे या उससे बाहर भी सबसे आला दर्जेका जो हिंदू है उससे मै कम नही हू; क्योकि मैं वेदको माननेवाला हू, गीताको पढता हू और उसमे जो लिखा है उसपर अमल करता हू। मुझको तो बचपनसे ही यह सिखाया गया है कि दुनियामें कोई ऐसी जगह नही है जहा ईश्वर न हो।

ब्रजकिशनजी सुनाते है कि विरोध करनेवालोका सघ आज कुछ

वड़ा है। वे कहते है कि हमको विरोव तो है, किंतु चूंकि मुझको सुनना चाहते हैं, इसलिए वर्दाश्त कर लेते हैं। मै कहता हूं कि इसको वर्दाश्त क्या करना था। इससे न तो आपको फायदा होगा, न मुझको। अगर आपको मेरे साथ वैठकर प्रार्थना करना है तव तो उस विरोधको वर्दाश्त करना ठीक है। आप इसलिए वर्दाश्त न करें कि मै महात्मा हूं या मैने हिंदुस्तानकी सेवा की है। आप मेरा दर्शन करना चाहते है। इसलिए मै पूछता हूं कि क्या आप दिलसे प्रार्थना करना चाहते है।

(सव लोगोद्वारा रजामदी प्रकट करनेपर प्रार्थना आरंभ हुई और प्रार्थना शातिसे हुई। प्रार्थनाके वाद गांधीजीने भाषण करते हुए कहा—)

आप लोगोंने तो अखवारोमे देखा ही होगा, लेकिन मुझको भी कुछ पता चल जाता है कि काश्मीरमे क्या हो रहा है। अव तो वहा खैर है, यही कहना चाहिए। खैरके माने यह कि काश्मीरमे श्रीनगर अवतक सावित पड़ा है। लुटेरे लोग अवतक उसपर कब्जा नही ले पाए और पीछे तो दिन-प्रतिदिन कब्जा करना उनके लिए मुश्किल ही होना चाहिए। लुटेरे जो होते है वे लड़ाकू तो होते नही। क्योकि वे कोई हकसे तो वहां गये नही। इसलिए जगतमे उनकी निंदा ही होनेवाली है। ज्यों-ज्यो दिन जाते है त्यों-त्यों उनका दवदवा क्षीण होता जाता है। जो लश्कर जाता है उसको सुभीता रहता है, वक्त मिल जाता है। और वह वक्त मिल रहा है। हवाई जहाजसे अधिक लश्कर तो जा नही सकता, वहुत मुसीवत होती है, लेकिन हकूमतकी सव मदद कर रहे हैं ऐसा मै सुनता हूं। वे सव शौकसे मदद करते है, इसलिए आरामसे सव हवाई जहाज जाते है। हवाई जहाज हकूमतके तो है नही, वे सव अपनी-अपनी निजी कंपनियोके है और अच्छा काम समझकर अपने हवाई जहाज हकूमतको दे देते है।

एक वात और है—वह यह है कि जो आजाद हिंद फौज सुभाष वावूने वनाई थी और उसके लिए हम सव सुभाष वावूकी होशियारी, वहादुरीकी तारीफ करते है और तारीफ करनेकी वात है; क्योकि जव वह हिंदुस्तानसे वाहर था तव उसने सोचा कि चलो,

थोडा फौजी काम भी कर लू। वह कोई लडवैया तो था नही। एक मामूली हिंदुस्तानी था। जैसे दूसरे वकील, बैरिस्टर रहते हैं वैसे सुभाष बाबू भी थे। फौजकी कोई तालीम तो पाई नही थी, हा, सिविल सर्विसमें जैसा आमतौरपर होता है, थोडी घुड़सवारी सीख ली होगी। लेकिन पीछे उन्होने फौजी-शास्त्र थोडा पढ लिया होगा। इस प्रकार उनके मातहत जो सेना बनी थी, मैं सुनता हू कि उसके दो बड़े अफसर, जिनसे मैं जेलमे तथा उसके बाहर भी मिला था, काश्मीरपर हमला करनेवालोसे मिले हुए है; यह मुझको बहुत चुभता है। ये सुभाष बाबूके मातहत खास काम करनेवाले थे और हमेशा उनके साथ रहा करते थे। सुभाष बाबू लश्करसे कोई बात छिपाकर रख तो सकते नही थे क्योकि उन्हें उनके मारफत काम लेना पडता था। वे आज लुटेरोंके सरदार होकर जाते है तो मुझको चुभता है। अगर उनको अखबार मिलते हैं या जो मैं कहता हू उसको वे सुन लें तो मैं अपनी यह नाकिस[1] आवाज उनको पहुचाता हूं कि आप इसमे क्यो पडते है और सुभाष बाबूके नामको क्यों डुबाते है ? आप ऐसा क्यो करते है कि हिंदूका पक्ष ले या मुसलमानका पक्ष ले, आपको तो जातिभेद करना नही चाहिए। सुभाष बाबू तो ऐसे थे नही, उनके साथ हिंदू, मुसलमान, सिख, पारसी, ईसाई, हरिजन आदि सब रहते थे। वहा न हरिजनका भेद था न इतर जनका। वहा तो हिंदुस्तानियोमें जातपातका कोई भेदभाव था ही नही। यो तो सब अपने धर्मपर कायम थे, कोई धर्म तो छोड बैठे थे नही। लेकिन सुभाष बाबूने कब्जा कर लिया था, उनके चित्तका हरण कर लिया था, शरीरका हरण नही किया था। ऐसा तो चलता नही था कि अगर आजाद हिंद फौजमे शामिल नही होता है तो काटो। लोगोको इस तरह काटकर वे हिंदुस्तानको रिहाई दिलानेवाले नही थे। इस तरहसे बड़े हुए और बडप्पन पाया। तब आप इतने छोटे क्यो बनते हैं, और इस छोटे काममे क्यो पडते है। अगर कुछ करना ही है तो सारे हिंदुस्तानके लिए करो। वहा जो मुसलमान हैं, अफरीदी हैं उनको

---

[1] अकिंचन।

कहें कि यह जाहिलपन क्यों करना ? लोगोंको लूटना और देहातोंको जलाना क्या ? चलो महाराजासे मिलें, शेख अब्दुल्लासे मिले, उनको चिट्ठी लिखें कि हम आपसे मिलना चाहते है, हम यहां कोई लूट करने तो आए नही है। आप इस्लामको दबाते हैं, इसलिए आपको बताने आए है, यह तो मै समझ सकता हूं। तब तो आप सुभाष बाबूका नाम उज्ज्वल करेंगे और उन अफरीदी लोगोके सच्चे शिक्षक बनेंगे। अफरीदी लोग कैसे रहते है, उनमें भी लुटेरे है या नही है, यह मै नही जानता हू। लेकिन मेरी निगाहमे वे भी इन्सान हैं। उनके दिलमें भी वही ईश्वर या खुदा है, इसलिए वे सब मेरे भाई है। अगर मै उनमे रहूं तो उनसे कहूंगा कि लूट क्या करना, एक दूसरेपर गुस्सा क्या करना। मै यह तो कहता नही कि तुम्हारे पास जो बदूकें या तलवारे हैं, उन्हे छोड दो। उनको रखो, लेकिन जो दूसरे लोग डरे हुए हैं, मुफलिस है, औरते है, बच्चे है उनको बचानेके लिए। उसमे क्या है, चाहे वे हिंदू हो या मुसलमान। तो मै कहूंगा कि ये जो दो अफसर हैं, जिनका नाम मैंने सुन लिया है, वे सुभाष बाबूका नाम याद करे। वे तो मर गए, लेकिन उनका नाम नही मरा, काम तो नही मरा।

अब मेरा दिल आगे बढता है कायदे आजम जिन्नाकी तरफ। उनको मै पहचानता हूं। मैं तो उनके घर जाता था और एक दफा तो १८ बार गया था। मै उसको तपश्चर्या मानता हूं। बादमें भी उन्होने और मैंने एक चीजमें दस्तखत किये थे और उसमें भी हम दोनों हिस्सेदार बन गये थे। तब भी उनके साथ मीठी बातें होती थी। इसलिए मैं तो उनसे, लियाकतअली साहबसे और उनके मंत्रिमडलसे कहूंगा कि यह क्या बात है कि आप जवाहरलाल-जैसे आदमीको कहते है कि आप धोखेबाजी करते है। जवाहरलाल और उनकी सरकारको इसमें धोखेबाजी क्या करनी थी! मैं कहूगा कि जवाहर तो किसीसे भी धोखा करनेवाला नही है, जैसा उसका नाम है वैसा उसका गुण है। उनकी सरकारमे सरदार या जो दूसरे आदमी है उनको भी मैं पहचानता हूं। वे भी कोई धोखेबाज नही है। अगर वे काश्मीरसे मशविरा करना चाहते हैं तो उसका यह मतलब नही है कि वे फुसला रहे हैं। जवाहरलाल

तो पहले भी उनसे बात करता था और अकेला शेख अब्दुल्लाके लिए उनसे लड़ता था। तो उसको इसमे धोखा क्या करना था? धोखेबाजी करनेसे हिंदुस्तान या कोई और मुल्क बच थोड़े सकता है। तब वे ऐसा क्यों कहते है ? तो काश्मीरमे जो अफरीदी लोग चले गये है, उनको कुछ-न-कुछ उत्तेजना तो पाकिस्तानसे मिलती ही होगी तभी तो वे कोई काम कर सकते है, नही तो वे कैसे कर सकते थे? अगर मै पाकिस्तानमें होता तो मै उनको ऐसा काम करनेसे रोक देता। पाकिस्तानके उदासीन रहनेपर तो वे ऐसा काम कर नहीं सकते थे, लेकिन यहां तो उदासीन ही नही उससे ज्यादा है।

मेरे पास दो हिंदू—एक कराचीसे और दूसरे लाहौरसे, आये है। मुझको सुनाते है कि कराचीमे बुरा तो हुआ, लेकिन अब दिन-प्रति-दिन अच्छा होता जाता है। तब क्या तुम वहाके लोगोसे कुछ कहोगे कि वे क्यो घबराते है ? वहा जो सिंधी मुसलमान है, वे हिंदुओंके साथ मिल-जुलकर रहे है, बाज दफा झगड़ा तो हुआ है, लेकिन उसके बाद फिर दोस्त बन गये है, उसका तो मै गवाह हू । वहा सब कुछ ठीक हो गया है, ऐसी बात नही है। लेकिन मन्त्रिगण ऐसा चाहते है। दूसरे सज्जन बताते है कि लाहौरमे जितनी बड़ी-बड़ी हवेलियां थी वे सब बेकार हो गई है। वहा हिंदू तो कोई ज्यादा है नही—केवल मुट्ठीभर रहे है। लेकिन जो मन्त्रिमडल है, वह चाहता है कि हिंदू-सिख सब रहे। हां, सिखोंके रहनेपर तो कुछ एतराज है; लेकिन तो भी वे काफी वहां है। मैने वहा खूबीकी बात यह सुनी कि लाहौरमे एक मुसलमान, जो शरीफ आदमी है, किसी सिखको अपने यहां रखा हुआ है। तो उन्होने जो आंखों देखा है वह सुनाया कि उसी मुसलमानके घरमे एक कमरा है, जहां उन्होने गुरुग्रंथ साहब खोलकर रखा है और बड़ी अदबसे उसको रखता है। चूकि वह मुसलमान उस सिखका दोस्त है, इसलिए उसको बचा लिया। यह मुझको अच्छा लगता है। पीछे एक सिख ही मुझको सुना गये है कि ऐसा बहुत जगह हुआ है, जहां मुसलमान दोस्तोंने हमे अपने घरोमें रखा। दोनो ही जगहोंसे मुझे ऐसी ही खबरे मिली है। तो पीछे क्या वजह है कि यहांसे इतनी बड़ी

सख्यामे मुसलमानोको पाकिस्तान भगाया जाय ? क्या वजह है कि हिंदू और सिख वहासे भागकर यहां आते है ? इसका क्या नतीजा आना है ? यही न कि हम सब बरबाद होते है। जब लोग अपना घर-बार छोडकर जाय तब ऐश-आरामसे तो वे रह नही सकते। ऐश-आराम तो अपने घरमे ही रहकर मिल सकता है। घर छोड़नेके बाद न तो अच्छा खाना मिलता है और न पहननेको मिलता है। अभी शिविरोमे ठडमे पड़े रहकर लोग थरथर कापते है। तो वे कहते है कि हमारे साथ यह क्या हुआ ? हमारी हकूमतने यह क्या किया ? हमने क्या गुनाह किया कि जिस कारणसे हमे इस परेशानीमे पड़ना पडा है। उनको तो ऐसा लगता है कि वहा तो इर्दगिर्दमे मुसलमान पडे है और यहा इर्दगिर्दमे हिंदू पडे है। तब यह बर्बादी कहातक चले और कबतक चले। इसका क्या नतीजा निकलेगा ? नतीजा तो भगवान ही निकाल सकता है, लेकिन मुझको तो यह बुरा ही लगता है।

पाकिस्तानके कायदे आजम ऐसा क्यो कहते है कि हिंदू और सिख तो हमारे दुश्मन है। मैले आदमी तो हिंदू, सिख, मुसलमान सबमे ही पडे है, लेकिन सारी जातिको दुश्मन कहना बहुत बुरी बात है। मै तो बडे अदबसे सारे मत्रिमडल और लोगोको कहूगा कि अगर आप चाहते है कि हिंदुस्तान बर्बाद न हो और वह दूसरोके हाथोमे न चला जाय तो पीछे आपको शरीफ बनना है।

जिन आदमियोने आज कुरानशरीफकी आयत पढनेपर जिस शराफतसे विरोध किया उसके लिए मै उनको जितना धन्यवाद दू उतना कम है। इससे वे भी अहिंसासे काम लेना सीख लेगे। उन्होने ठीक ही कहा कि हमको कुरानशरीफकी आयत तो पसद नही है, लेकिन प्रार्थना निर्विरोध चलने दी, यह मुझे अच्छा लगा। इस तरहसे हम हिंदुस्तानके वास्ते दैवी शक्ति पैदा कर रहे है, आहिस्ता-आहिस्ता हो रहा है, छूमतर करनेसे तो पैदा हो नही जाती, लेकिन आखिरमे यह शक्ति पैदा हो जायगी। मै ईश्वरसे प्रार्थना करता हू कि आजाद हिंद फौजके उन दो बड़े अफसरोको सद्बुद्धि दे। और हिंदुस्तानका जहाज, जो आज डावाडोल हो रहा है, वह सीधे-सादे शांत पानीमे चले।

: १३७ :

३ नवंबर १९४७

(लिखित संदेश)

यदि एक जहर दूसरे जहरसे मिल जाय तो इस बातका निश्चय कौन करेगा कि उनमें पहले कौन-सा डाला गया था। और यदि इस बातका निश्चय हो भी जाय तो इससे फायदा क्या होगा? लेकिन हम यह जानते हैं कि यह जहर तमाम पश्चिमी पाकिस्तानमें फैल गया है, लेकिन वहांकी हुकूमतने शायद इसमें जहर नहीं माना है। ईश्वर करे कि यह जहर महदूद[1] रहे और काबूमें रहे। तब हम इस बातकी आशा कर सकेंगे कि समय आनेपर यह जल्दी ही दोनों हिस्सोंसे निकाल दिया जायगा।

डा० राजेंद्रप्रसादजीने प्रांतीय प्रधानों या उनके प्रतिनिधियों तथा और लोगोंकी जो मीटिंग उनको खुराक-कंट्रोलके मसलेपर मशवरा देनेके लिए बुलाई है, मैं समझता हूं कि आज मुझे उसी बहुत जरूरी मामलेपर कुछ कहना चाहिए।

अबतक जो कुछ मैंने इन दिनोंमें सुना है उससे मैं तिलभर भी अपनी इस रायसे नहीं हटा हूं कि कंट्रोल जल्द बिल्कुल हट जाने चाहिए और यदि वह रहे भी तो छः माहसे अधिक तो हरगिज न रहे। एक दिन भी नहीं गुजरता जो मेरे पास तार या पत्र न आते हों और उनमें बाज-बाजमें तो बहुत प्रतिष्ठित व्यक्तियोंके होते हैं, जो यह बड़े जोरके साथ कहते हैं कि दोनों कंट्रोल हटा देने चाहिए। मैं फिल-हाल दूसरे कंट्रोल अर्थात् कपड़ेके कंट्रोलको छोड़ देना चाहता हूं। कंट्रोलसे धोखा बढ़ता है, सत्यका दमन होता है, काला बाजार बढ़ता रहता है और बनावटी कमी बनी रहती है। सबसे ज्यादा तो यह लोगोंको कमजोर बना देता है, वह निरुत्साही हो जाते हैं, और उनमें अपने पैरोंपर खड़े रहनेकी शिक्षा जिसे एक पीढ़ीसे वह सीखते आये हैं,

---

[1] सीमित।

भुला बैठते है। वह सदा दूसरोके मुहकी ओर ताकते रहते है। इस दुर्घटनासे बढकर, यदि कोई दूसरी हो सकती है तो वह है, मौजूदा भाई-भाईका कतल, जो एक बड़े पैमानेपर चल रहा है, और पागलपनसे तबादला[1]-आबादी, जिसके कारण बिला जरूरत मौते, भूखो मरना, रिहायश[2] और कपड़ेका न मिलना—खासकर इस आनेवाले जाड़ेके मौसममें—हो रहा है शायद कट्रोलकी दुर्घटना इसके बराबर हो।

दूसरी दुर्घटना देखनेमे बढी-चढी मालूम होती है, लेकिन हमे पहलीको भी भूलना नही चाहिए, जो इतनी दिखाई नही देती।

यह खुराकका कट्रोल हमे पिछली बडी लड़ाईकी खतरनाक विरासतमे मिला है। उस वक्त कट्रोल शायद जरूरी था, क्योकि अनाज और दूसरी खुराक बहुत बडी मिकदारमे बाहर देशोमे भेजी जाती थी। इस गैर-कुदरती निर्यातका परिणाम यह आना जरूरी था कि अनाजकी कमी हो जाय, और बहुत-सी बुराइयोके होनेपर भी राशनिंग जारी करना पड़ा। अब अगर हम चाहे तो निर्यातको बद कर सकते है। दुनियाके उन भूखे प्रदेशोकी हम मदद कर सकते है, यदि हम बाहरसे हिंदुस्तानके लिए अनाज आनेकी उम्मीद छोड दे; क्योकि इतना अनाज उनके लिए बच जाता है। मैने अपने जीवनमे, जिसकी दो पीढी गुजर गई, कई कुदरती दुष्काल देखे है; लेकिन मुझे याद नही आता कि कभी राशनिंगका खयाल भी आया हो।

ईश्वरकी कृपा है कि इस वक्त बरसात ठीक-ठीक हुई है। इसलिए खुराककी सच्ची कमी नही है। हिंदुस्तानके देहातोमे काफी अनाज, दाले और तेलके बीज मौजूद है। कीमतोपर जो बनावटी कट्रोल होता है अनाज पैदा करनेवाले उसे समझ ही नही सकते, इसलिए वह खुशीसे अपना अनाज जिसकी कीमत खुले बाजारमे उनको अधिक मिल सकती है, देना पसद नही करते। इस हकीकतको सब लोग जानते है। इसके लिए जरूरी नही है कि कोई ऐदाद-ओ-शुमार[3] जमा किये

[1] परिवर्तन; [2] स्थान; [3] संख्या और अंक।

जाए या इसको साबित करनेके लिए कि अनाजकी कमी है, लबे-लबे लेख और मजमून लिखे जाए। इतनी उम्मीद रहती है कि हमे कोई आबादी बढ़ जानेका भूत दिखाकर नही डरायगा।

हमारे मत्री जनताके है और जनतामेसे है। उनको इस बातका अभिमान नही करना चाहिए कि उनका ज्ञान उन अनुभवी लोगोसे अधिक है जो हकूमतकी गद्दियोपर नही बैठे है, लेकिन जिनका दृढ विश्वास है कि कट्रोल जितनी जल्दी हटे उतना अच्छा होगा। एक वैद्यका कहना है कि खूराकके कट्रोलके कारण, वे लोग जो राशनपर रहते है उनके लिए यह नामुमकिन कर दिया है कि खाने लायक अनाज उनको मिल सके, और इसलिए ये लोग गैर-जरूरी तौरपर ऐसी बीमारियोके शिकार हो रहे है, जो सड़े अनाजके खानेसे पैदा होती है। बजाय कट्रोलवाली खूराकके सरकार बडी आसानीसे उन्ही गोदामोको अच्छा अनाज बेचनेके काममें ला सकती है जिसे वह खुले बाजारमें खरीद सकेगी। ऐसा करनेसे कीमते अपने-आप ठीक हो जाएगी और जो अनाज, दाले तथा तेलके बीज छुपे पडे है सब बाहर निकल आएगे। क्या सरकार अनाज बेचने और पैदा करनेवालोका विश्वास नही करेगी?

जमहूरियतमे[1] अगर लोगोको मध्य हकूमतकी रस्सीमें बांधा जाय तो टूट पडेगे। वे एतबार करनेसे ही बढ सकते है।

अगर लोग इस कारणसे मरने लगेगे कि वे मेहनत नही करना चाहते और एक दूसरेको धोखा देते है तो ऐसे लोगोके मरनेका स्वागत किया जाय। फिर लोग काहिल[2] और खुद-गर्ज रहनेके पापको नही दोहराएगे।

•

---

[1] जनतंत्र; [2] आलसी।

: १३८ :

४ नवंबर १९४७

भाइयो और बहनो,

आज तो सिर्फ हमारे पुराने सभ्य मित्रने ही कुरानकी आयत पढनेपर एतराज उठाया है। इसलिए मै एक पजाबी हिंदू निराश्रितके दर्दभरे खतकी चर्चा करूगा। उन्होंने पंजाबमे बहुत कुछ सहा है। कुरानकी आयत पढनेका उन्होने विरोध किया है। मैं नही जानता कि वे भाई यहा मौजूद है या नही। वे यहा हों या न हो, लेकिन मै उस खतकी उपेक्षा नही कर सकता। वह गहरे दर्दसे लिखा गया है। उसमे काफी अच्छी दलीले दी गई है। लेकिन वह अज्ञानसे भरा हुआ है, जो गुस्सेकी उपज है। उसकी हर लाइनमे गुस्सा भरा हुआ है। आजकल करीब-करीब मेरा सारा समय हिंदू या सिख निराश्रितो या दिल्लीके दु खी मुसलमानोंकी दर्दभरी कहानिया सुननेमे ही जाता है। मेरी आत्माको भी उतना ही दु ख और उतनी ही चोट पहुचती है। लेकिन अगर मै रोने लगू और उदास बन जाऊ, तो वह अहिंसाका सच्चा रूप नही होगा। अगर मैं अहिंसासे इतना कोमल बन जाऊ, तो दिन-रात रोता ही रहू और मुझे ईश्वरकी उपासना करने, खाने-पीने या सोनेका भी समय न मिले। लेकिन मैंने तो वचपनसे ही अहिंसक होनेके नाते दु खोको देख-सुनकर, रोनेकी नही, बल्कि दिलको कठोर बना लेनेकी आदत डाल ली है, ताकि मै दु खोका मुकाबला कर सकू। क्या पुराने ऋषि-मुनियोने हमे यह नही बताया है कि जो आदमी अहिंसाका पुजारी है, उसका दिल फूलसे भी कोमल और पत्थरसे भी कठोर होना चाहिए? मैने इस उपदेशके मुताबिक जीनेकी कोशिश की है। इसलिए जब इस खतकी शिकायतों-जैसी शिकायते मेरे पास आती है, या जब मै अपने मुलाकातियोके मुहसे गुस्से और रजभरी कहानिया सुनता हू, तो मै अपने दिलको कडा बना लेता हूं। सिर्फ इसी तरह मैं मौजूदा सवालोका सामना कर सकता हूं। वह खत उर्दू लिपिमे लिखा है। इसलिए मैंने श्रीब्रजकिशनजीसे कहा कि उस खतकी खासखास बाते मुझे लिख दे।

खतमे पहला इलजाम मुझपर अपना वचन तोडनेका लगाया गया है। उन्होने लिखा है, 'क्या आपने यह नही कहा है कि आपकी प्रार्थना-सभामे अगर एक भी आदमी कुरानकी आयत पढनेपर एतराज उठाएगा, तो आप उसका मान रखेगे और उस शामको प्रार्थना नही करेगे ?' यह आधा सच है, और पूरे झूठसे ज्यादा खतरनाक है। जब मैंने पहले-पहल एतराज उठानेपर अपनी प्रार्थना बद की थी, तब मैंने यह जाहिर किया था कि मै प्रार्थना इस डरसे बद करता हू कि सभाके इतनी बडी तादादवाले लोग विरोध करनेवालेपर गुस्सा होकर उसके साथ मारपीटतक कर सकते है। यह कई महीने पहलेकी बात है। तबसे लोगोने अपनेपर काबू रखनेकी कला सीख ली है। और, जब लोगोने मुझे इस बातका वचन दिया कि विरोध करनेवालेके खिलाफ न तो वे अपने मनमे गुस्सा रखेगे और न किसी तरहका वैर, तो मैंने फिर आम प्रार्थना करनेकी बात मान ली। और जैसा कि मै जानता हू, इसका नतीजा अच्छा ही हुआ है। विरोध करनेवालोका बरताव बिलकुल सभ्यताका होता है और अपना विरोध दर्ज करानेके सिवा वे प्रार्थनामे किसी तरहकी रुकावट नही डालते। इसलिए मै आशा करता हू कि खत लिखनेवाले भाई यह देखेगे कि मैंने अपना वचन भग नही किया है, और विरोध करनेपर भी प्रार्थना चालू रखनेका नतीजा अभीतक बिलकुल अच्छा ही रहा है। मै आप लोगोको यकीन दिलाता हू कि जहातक मै अपने बारेमे जानता हू, मैंने जन-सेवकके नाते अपनी इतनी लबी जिदगीमे दिया हुआ वचन तोडनेका कभी अपराध नही किया है।

खत लिखनेवाले भाईने मुझपर दूसरा यह इलजाम लगाया है कि 'जब आप कुरानकी आयते पढते है और यह भी कहते है कि सब धर्म समान है, तब आप जपजी और बाइबिलमेसे क्यो नही पढते ?' इस बातसे भी लिखनेवाले भाईका अज्ञान जाहिर होता है। वे मेरे उस बयानको नही जानते, जिसमे मैंने बताया था कि पूरी भजनावली किस तरह तैयार हुई। आश्रम-भजनावलीमे बाइबिल और ग्रथसाहिबमेसे भी काफी भजन लिये गए है।

उन भाईकी तीसरी शिकायत यह है कि 'आपके बड़े-बड़े कांग्रेसी नेता पश्चिमी पंजाव या पश्चिमी पाकिस्तानके दूसरे किसी हिस्सेको छोड़कर यहां आए हैं। लेकिन यूनियनमे वे निराश्रितोंकी तरह रहकर दूसरे निराश्रितोकी कठिनाइयों और मुसीवतोमें साथ नही देते। पाकिस्तानमे उनके पास जैसी हवेलियां थी, उनसे ज्यादा अच्छी हवेलिया उन्होने यहा ले ली हैं और उनमें मौजसे रहते है । ये काग्रेसी नेता उन निराश्रितोसे विलकुल अलग रहते है, जिनके पास न तो रहने के मकान है न सर्दीसे वचनेके लिए गरम कपड़े । गरम कपडोकी वात तो दूर रही, वहुतसोके पास वदलनेके दूसरे कपड़े ही नही है ; न उन्हे अच्छा खाना मयस्सर[1] होता है।' अगर यह शिकायत सच है, तो यह हालत शर्मनाक है। मैंने तो अपनी प्रार्थना-सभाओंमें साफ शब्दोमें उन धनी निराश्रितोकी निंदा की है, जो गरीब निराश्रितोके साथ मुसीवतें उठानेके वजाय उनका साथ छोड़कर मौज मारते हैं। यह धर्म नही, अधर्म है। धनियोको अपने गरीव भाइयोके सुख-दु.खमे साथ देना चाहिए।

इसके वाद उन भाईने मुझे यह ताना मारा है कि आप पाकिस्तान जानेका इरादा रखते थे, लेकिन अभीतक गए नही। यहा दिल्लीमें आपका क्या काम है ? आप दु खी हिंदुओं और सिखोकी मदद करनेके लिए पाकिस्तान जानेके वजाय अपने मुसलमान दोस्तोकी मदद करना क्यो ज्यादा पसंद करते हैं? लेकिन शिकायत करनेवाले भाई यह नही जानते कि दिल्लीके अपने फर्जको भुलाकर मै पाकिस्तानके हिंदुओं और सिखोके दु खोको कम करनेकी आशासे पाकिस्तान नही जा सकता। मै कवूल करता हूं कि मै मुसलमानों और दूसरोका दोस्त हू, क्योकि मै हिंदुओ और सिखोका भी वैसा ही दोस्त हूं। अगर मै किसी आदमीकी सेवा करता हूं, तो इसी भावनासे प्रेरित होकर करता हू कि वह सिर्फ हिंदुस्तानका या किसी एक धर्मका ही नही, वल्कि सारी मनुष्य-जातिका अग है। दिल्लीके हिंदू और सिख

---

[1] प्राप्त।

निराश्रितों और दूसरोको यहांके मुसलमानोके दोस्त बनकर यह साबित कर दिखाना है कि दिल्लीमें मेरे रहनेकी कोई जरूरत नही है। तब मै इस पूरे विश्वासके साथ पाकिस्तानकी तरफ दौड जाऊगा कि मेरा वहाका दौरा बेकार नही जायगा।

शिकायत करनेवाले भाईने कस्तूरबा-फडको भी नही छोड़ा। उन्होंने पूछा है कि कस्तूरबा-फडका कैसे इस्तेमाल किया जा रहा है और उसे निराश्रितोको राहत पहुचानेके काममे क्यो नही खर्च किया जा सकता? पहली बात तो यह है कि वह फड एक खास मकसदसे[१], तब इकट्ठा किया गया था जब मै जेलमे था। यानी वह हिंदुस्तानके गांवोकी औरतो और बच्चोकी सेवाके लिए जमा किया गया था। उसका एक ट्रस्टी-मडल है। हमेशा सावधान रहनेवाले ठक्कर बापा उसके सेक्रेटरी है। और उसका पाई-पाईका हिसाब रखा जाता है, जिसे जनता देख सकती है। इसलिए लिखनेवाले भाईके सुझावके मुताबिक वह फड निराश्रितोकी सेवामें नही खर्च किया जा सकता। और ऐसा करनेकी जरूरत भी नही है। निराश्रितोकी राहतके लिए उदारतासे पैसा दिया जा रहा है और सब जानते है कि मेरी कबलोकी अपीलका जनताने कितनी उदारतासे स्वागत किया है। सरदार पटेलने इस बारेमे एक खास अपील निकाली है। लोगोने उदारतासे उसका स्वागत किया और आज भी किया जा रहा है।

खत लिखनेवाले भाईकी आखिरी शिकायत है 'जब पाकिस्तानमे सूअरोंके कत्लपर रोक लगा दी गई है, तब यूनियनमे गो-हत्या क्यों नही बद की जा सकती?' मुझे इसकी जानकारी नही है कि पाकिस्तानमें सूअरके कतलपर कानूनी रोक लगाई गई है। अगर शिकायत करनेवाले भाईकी सूचना सच है, तो मुझे दुःख है। मै जानता हू कि इस्लाममे सूअरका गोश्त खानेकी मनाही है। लेकिन ऐसा होनेपर भी मै इसे ठीक नही मानता कि गैर-मुस्लिमोको भी सूअरका गोश्त खानेसे रोका जाय।

क्या कायदे आजमने यह नही कहा है कि पाकिस्तान ईश्वरशाही

---

[१] उद्देश्य।

राज नही है और उसमे धर्मको कानूनका रूप नही दिया जायगा? लेकिन बदकिस्मतीसे यह बिलकुल सच है कि इस दावेको हमेशा अमलमे सच साबित नही किया जाता। क्या हिंदुस्तानी सघ ईश्वरशाही राज बनेगा और क्या हिंदू-धर्मके उसूल गैर-हिंदुओपर लादे जायगे? मुझे यह आशा नही है। ऐसा हुआ तो हिंदुस्तानी सघ आशा और उजले भविष्यका देश नही रह जायगा। तब वह ऐसा देश नही रह जायगा जिसकी तरफ सारी एशियाई और अफ्रीकी जातिया ही नही, बल्कि सारी दुनिया आशाभरी नजरसे देखती है। दुनिया यूनियन या पाकिस्तानके रूपमे हिंदुस्तानसे ओछेपन और धार्मिक पागलपनकी उम्मीद नही करती। वह हिंदुस्तानसे बडप्पन, भलाई और उदारताकी आशा करती है, जिससे सारी दुनिया सबक ले सके और आजके फैले हुए अधेरेमे प्रकाश पा सके।

मै गायकी भक्ति और पूजामे किसीसे पीछे नही हूं, लेकिन वह भक्ति और श्रद्धा कानूनके जरिये किसीपर लादी नही जा सकती। वह मुसलमानो और दूसरे सारे गैर-हिंदुओके साथ दोस्ती बढ़ाने और सही बरताव करनेसे पैदा हो सकती है। गुजराती और मारवाड़ी लोग गायकी रक्षा करनेमे सबमे आगे माने जाते है। लेकिन वे हिंदू-धर्मके उसूलोको इतने भूल गए है कि दूसरो पर तो वे खुशीसे पाबदिया लगाएगे और खुद गाय और उसकी सतानके साथ बहुत बुरा बरताव करेगे। आज दुनियामे हिंदुस्तानके मवेशी ही सबसे ज्यादा उपेक्षित क्यो है? जैसा कि माना जाता है, वे दुनियामे सबसे कम दूध देनेके कारण देशपर बोझ क्यो बन गए है? बोझ ढोनेवाले जानवरोंके नाते बैलोके साथ इतना बुरा बरताव क्यो किया जाता है?

हिंदुस्तानके पिंजरापोल ऐसे नही है जिनपर गर्व किया जाय। उनमे बहुत पैसा लगाया जाता है, लेकिन वहा पशुओका साइंसी और बुद्धिमानी-भरा पालन-पोषण शायद ही किया जाता हो। ये पिंजरापोल हिंदुस्तानके जानवरोको नया जन्म कभी नही दे सकते। वे मवेशियो-के साथ हमदर्दी और दयाका बरताव करके ही ऐसा कर सकते

है। मेरा यह दावा है कि मुसलमानोंके साथ दोस्ती बढ़ा सकनेके कारण मैंने, कानूनकी मदद लिये बिना, दूसरे किसी हिंदूके बनिस्बत ज्यादा गायोंको कसाईके छुरेसे बचाया है।

: १३६ :

५ नवंबर १६४७

भाइयो और बहनो,

आज तो मुझे आप लोगोंसे कुरानशरीफकी आयतके विरोधके बारेमें कुछ कहना नहीं है। यह मैं हमारी धन्य घड़ी मानता हूं। एक भाईको आपत्ति है ही, लेकिन वे तो हमारे मित्र बन गए हैं। वे विरोध तो करते हैं, लेकिन सभ्यतासे। उसके बाद वे बिलकुल खामोश रहते हैं, इसको मैं विरोध मानता ही नहीं। ऐसा सब लोग भी विरोध करें तो हम कुछ खोते नहीं हैं। विरोध रहते हुए भी वे पीछे प्रार्थनामें मग्न रहते हैं ऐसा मैंने उनकी जबानसे सुना है। तो यह अच्छा ही है।

आज आपने जो भजन सुना है वह एक हरिजन बालकका है। उसका कंठ मधुर है यह तो आपने सुन ही लिया। रामधुन भी उसने अच्छी तरह चलाई। यह मेरा एक ही अनुभव नहीं है। मैं तो हरिजनोंके बीचमें रहता हूं और सारे हिंदुस्तानमें तो मैंने बहुत दफा यात्रा की है और सारे देशके हरिजनोंके संपर्कमें आया हूं। अगर हम खुद नहीं जानते हों और हमको कोई परिचय न दे तब तो हम हरिजनको किसी तरह पहचान नहीं सकते। जो गुण दूसरे इन्सानमें हैं वे सब उनमें भी हैं। कुछ दुर्गुण भी हैं, लेकिन वे उन्हींमें हों ऐसा थोड़ा ही है। और लोगोंमें भी हैं। सद्‌गुण और दुर्गुण आखिर सबमें भरे हैं। लेकिन हरिजनोंमें मुझको एक विशेषता तो लगती है, और वह यह है कि अगर किसी हरिजन बालकको थोड़ा संगीत-शिक्षण देते हैं तो वह आगे बढ़ जाता है। चूंकि हमने उनको अबतक गिराकर रखा है, इसलिए अब अगर उनसे कोई मोहब्बतसे बात करता है और

मोहब्बतसे काम सिखाता है तो पीछे वे ध्यान रखकर मेहनत करते हुए आगे बढ जाते है। धनी लड़के तो गुमानमे पड़े रहते है और यह सोचकर कि हमारे मा-बापके पास काफी पैसा है, अपने काममे ध्यान नही देते। लेकिन चूकि हरिजन लोग आमतौरपर गरीब है और उनको अछूत मानते है, कोई उनको अपने नजदीक नही बैठने देता तब अगर कोई उनको अपने पास बिठाते है, साथ ही खाते-पीते है और सब कुछ करते है तब उनका हृदय भर जाता है। सब तो ऐसे नही है—मैंने ऐसे लापरवाह हरिजनोको भी पाया है कि उनके लिए चाहे जितना करो, उसकी कोई कीमत ही नही करते। ऐसे दूसरे भी पडे है—सब कोई ऐसे हरिजन थोड़े है। उनको हिंदू-धर्मने सैकडो वर्षोसे गिरानेकी कोशिश की है, लेकिन तो भी वे अपने धर्मपर कायम रहते है और दूसरोकी निस्बत[1] उनमे अधिक गुण पाये जाते है।

पढरपुरका नाम तो आपने नही सुना होगा। महाराष्ट्रमे वह यात्राका एक स्थान है। वहां जो मूर्तिया है उनके लिए इतनी दंत-कथा भरी है कि मै उन सबको सुनाना नही चाहता हूं। तो वहांका मदिर हरिजनोके लिए खुलता नही था। इसपर साने गुरुजी वहां जाकर बैठ गए और मदिरके ट्रस्टियोसे कहा कि जब सब जगहके मदिर खुल गए है तो यह क्यो न खुले ? जब नही खुला तब उन्होने उपवास शुरू कर दिया। साने गुरुजी तो भक्त पुरुष था, तो वे उसको कैसे मरने देते ? उनके दिलमे ज्ञान आया, रहम आया; लेकिन कहा कि हम क्या करे, कैसे खोले, उसमे काफी टेकनिकल रुकावटें है, जिन्हें दूर करना होगा। पीछे मावलकरजी वहां पहुंचे और उनके कहने-सुनने-पर उन्होने उपवास छोड़ दिया, लेकिन इस शर्तपर कि अगर वह नही खुला तो उनका फाका फिर चलेगा। अब मेरे पास तार आया कि जो बिल बननेवाला था वह बना लिया और वह मंदिर हरि-जनोंके लिए खुल गया। सबने राजी होकर खोला और हजारोकी

---

[1] अपेक्षा।

तादादमे लोग वहा गए—कोई विरोध नही हुआ—एक-दोका रहा होगा शायद हजारोमे। तो पढरपुरका इतना भारी मदिर इतनी मेहनतके बाद आखिर खुलकर रहा। जितनी ज्यादतिया हमने हरिजनोपर की है अगर वे हट जायं तो सारा हिंदुस्तान बहुत ऊचे चला जाता है। लेकिन आज तो हम गिरते जा रहे है, क्योकि हममे वैमनस्य भर गया है। हिंदुस्तान कोई हमेशाके लिए तो दीवाना बना नही रहेगा, ऐसी उम्मीद करके मै बैठा हू—आगे भगवान जाने।

मेरे पास दो-चार प्रश्न आ गए है—वैसे तो वे अलग-अलग खतोमे है, लेकिन उनको इकट्ठा कर लिया गया है। पहले प्रश्नमे तो एक मुसलमान भाई पूछते है। जैसा कि कल बताया था कि हम गोमांस छुडवानेके वास्ते किसीको मजबूर नही कर सकते, उनसे विनय कर सकते है और समझा सकते है। अगर उनकी समझमे आ जाय और उसको छोड दे, फिर चाहे वे हमारे प्रति मोहब्बत दिखानेके लिए करते हो तो वह बडी अच्छी बात है। लेकिन ऐसे भी हिंदू बहुतसे है जो मास खाते है चाहे वह मछली हो या और कोई दूसरा मास हो। ऐसे तो बहुत थोडे हिंदू है जो धर्म समझकर मास नही खाते। तो क्या आप उनको मजबूर करेगे और कहेगे कि अगर मास खाना नही छोडते तो हिंदुस्तानको छोडो नही तो मार डाले जाओगे? अगर ऐसा नही हो सकता तो मुसलमानोने क्या गुनाह किया? उनको क्यो मजबूर किया जाय? मै जानता हू कि ऐसे पागल हिंदू भी पडे है जो मुसलमानोको मजबूर करते है। मै तो कहूगा कि यह अत्याचार है जिससे हमे बचना चाहिए।

दूसरा प्रश्न एक और है जिसमे एक हिंदू लिखते है कि यह तो ठीक है कि सब हिंदू तो वैमनस्यसे नही भरे है लेकिन तुम बात तो करते हो कि मुसलमानोको अपने घर नही छोडने चाहिए, अगर मरना है तो मर जाय। ऐसी ज्ञान-वार्ता तो तुम सुनाते हो, लेकिन इससे सबको ज्ञान तो नही मिल जाता है। एक तरफ तो यह ज्ञान-वार्ता चलती रहे और दूसरी तरफ मुसलमानोको यहातक परेशान किया जाय कि वे अपने घरोसे बाहर कही जा नही सकते—उनको ये धमकिया

दी जाय कि यहांसे भागते हो या नही, नही तो मार डाले जाओगे। मुसलमान जिस मुहल्लेमें रहते है वहासे अगर बाहर जायं तो कट जाय, लेकिन अगर मुहल्लेमे ही रहें तो खायं कहासे? उनमे कारीगर या मजदूर लोग होते है। मान लीजिए कि एक जुलाहा है और वह कपडा बुनता है तो पीछे हिंदू कहे कि हम तो उसका कपड़ा नही लेंगे और अगर कोई लेनेकी जुर्रत[1] करे तो उसको भी काट डालेगे तो फिर आपने अगर उसे यहा रहने भी दिया तो उसका कोई अर्थ नही रह जाता। मजदूरी करनेवाला अपने मुहल्लेके अदर ही कैसे सीमित रह सकता है? वह तो गुलामसे भी बदतर हो जाता है। छोटा-सा तो मुहल्ला है और उसमेसे बाहर नही जा सकता तो गुजारा कैसे करे? कोई धनी मुसलमान तो ऐसे छोटे मुहल्लेमें रहता नही है और गरीब लोग अगर बाहर न जायं तो गुजारा कैसे करे। एक ओर तो उनपर ऐसी ज्यादतियां करे और दूसरी ओर मेरे-जैसे आदमी कहे कि मर जाओ तो वह निकम्मी बात हो जाती है।

हम लोग गुमानसे ऐसा कहते हैं कि दिल्लीमे तो सब कुछ ठीक हो गया, कोई बड़ी घटनाए तो होतीं नही; लेकिन मैं तो कहूंगा कि अगर थोडा-सा भी है तो वह हमे चुभना चाहिए। मुझे तो बार-बार यह कहना और सुनाना होगा कि जब हिंदुस्तानमें ऐसी बातें हो रही है तो हम किस मुहसे मुसलमानोको हिंदुस्तानमे रहनेको कहे। जितने मुसलमान है वे पाकिस्तान चले जायं और वहां जितने हिंदू और सिख है वे यहां आ जायं, तब तो हम हमेशाके लिए एक दूसरेके दुश्मन बन गए। और पीछे पेट भरकर हमको लड़ना है। ऐसी वाहियात चीजसे तो हम बच जाय।

एक तीसरा प्रश्न है—वह थोड़ा पेचीदा है। है भी और नही भी है। मुझको एक मुसलमान भाई लिखते हैं कि बता दो तो मुझको और सब मुसलमानोको अच्छा लगेगा। इसी बीचमें ब्रजकिशनजीने कहा कि यह तो हिंदूका प्रश्न है। किंतु किसीने भी किया हो, प्रश्न

---

[1] हिम्मत।

तो वह है न। पूछने लायक है और नही भी। "तुमने तो अपनी यह अहिंसा अंग्रेजोको भी बताई थी जब वे हार रहे थे और उनको हथियारोसे लड़ाई न लड़कर अहिंसक होनेकी सलाह दी थी। वहा तो तुमने इतनी जुर्रत की, लेकिन यहाकी हकूमतको अहिंसाकी लड़ाई लडनेको क्यो नही कहते !" मैने तो बता दिया कि मै हू कहा, और कौन मेरी मानता है। कहते तो है कि सरदारजी तो तुम्हारे है, पंडितजी तुम्हारे नही है तो कौन है, मौलाना भी तुम्हारे है। मेरे है भी और नही भी है। मैने तो अपनी अहिंसा छोड़ी नही है। मै तो उसको सीखता ही आया हू और वह तबतक चली जबतक आजादी नही मिली थी। अब वे कहते है कि अहिंसासे कारोबार कैसे चला सकते है, तो पीछे लश्कर तो है ही, और उस लश्करको लेकर बैठ गए है। अब मेरी कीमत नही रही है। जब मेरी कीमत ही नही है तब मै लोगोमे क्यो पड़ा हू। लेकिन इसी आशासे कि शायद लोग मेरी सुन ले। आखिर आप-जैसे थोडेसे लोग तो आते ही है और सभ्यतासे बैठकर मेरे साथ प्रार्थना करते है। जैसे आप है ऐसे शायद दूसरे भी हो जायं और पीछे सबमे ज्ञान हो जाय। मेरी बातका कुछ असर हो जाय। इसी लालचके वशमे पडा हू और इतना कर रहा हू। मै नही जानता कि कहातक ईश्वर मुझसे काम कराना चाहता है। वह चाहे तो आज भी मुझको बद कर सकता है। अब अगर यहा बैठे-बैठे सांस उडा दे तो मै खत्म हो जाता हू। इसलिए जो चीज मैने हिटलर-मुसोलिनी, चर्चिल तथा जापानको कही थी उसी चीज़पर मै आज भी कायम हू और अपनी हकूमतको भी वही कहता हू। लेकिन काश्मीरमे तो शेख अब्दुल्ला है जो बड़ी बहादुरीसे लड़ रहे है—बहादुरीकी मैने हमेशा तरीफ की है। यह ठीक है कि वे हिंसा करते है, लेकिन उसमे बहादुरी तो है, उसकी तारीफ तो मै करूगा। मै तो सुभाष बाबूकी भी तारीफ करता हू, कोई इसलिए थोडे करता हू कि मुझे उनकी हिंसा पसद थी। जो आजाद हिंद फौज बनाई वह मेरेसे थोड़े बन सकती थी। जब मै अच्छी चीज देखता हू और अच्छीको अच्छी न बताऊ तो मै अहिंसक नही हो सकता। अगर शेख अब्दुल्ला वहां आखिर-

तक लड़ता रहे और हिंदुओ और सिखोको साथ रखे तो वह बुलद काम हो जायगा। जो लोग यहां पड़े है उनपर भी इसका वडा असर होनेवाला है इसमे मुझे जरा भी शक नही है। लेकिन अगर मेरी अहिंसा चले और सब मेरी बात मानें तो जो लश्कर हम भेजते है वे भी न भेजे। अगर भेजे तो वे भी अहिंसक लश्कर भेजे। वे वहां जाते है, अगर अफरीदी लोग मार डालते है और वे खुशीसे मर जाय तो वह अहिंसक युद्ध हो जायगा, क्योकि वे अहिंसक होकर मरते है। शेख अब्दुल्ला भी उन अफरीदियोसे कहेगा कि आप श्रीनगर ले सकते है, लेकिन तब, जब हम सब मर जायं। किंतु वे तो हथियारोसे लडनेवाले है और बहादुरीसे लड़ते है। तब वे भी अहिंसक बन सकते है, हाला कि वह अहिंसाका रूप नही होता। मान लीजिए कि एक लाख अफरीदियोका दल यहा आ जाता है और उन सबके पास हथियार है और मुट्ठीभर लोग मासूम बच्चो और स्त्रियोकी रक्षाके लिए हथियार लेकर उनसे लडते है और लड़ते-लड़ते मर जाते है तब हथियारबद होते हुए भी अहिंसक-जैसे बन जाते है। लेकिन मैं किसको बताऊ? आज तो आपस-आपसमे जहर फैल गया है और एक-दूसरेको बुरी तरहसे वहशियाना तौरसे काटते है। उसमे भी मै यह अहिंसाका सरल पाठ नही बता सकता हू। उस वक्त चर्चिल साहब तो नही कह सकते थे लेकिन आज शेख अब्दुल्ला तो कह सकते है और जो लश्कर गया है वह भी कह सकता है कि अगर तुम्हारी अहिंसा दिल्लीमे काम नही कर सकती, वहा तो वहशियाना काम हो रहा है; लेकिन हम जो करते है वह वहशियाना भी नही है तब उनको यह कहनेका हक मिल जाता है और मै उसको कबूल करता हू। अगर मै यहांके सब हिंदू, मुसलमान, सिखोको अपनी अहिंसा समझा दूं तो पीछे वे मुझको कुछ कह नही सकते। तब तो मैं खुद एक अहिंसक सेना लेकर काश्मीरमे या कहो पाकिस्तानमे या हर जगह जा सकता हूं और मेरा काम बहुत सरल हो जाता है और उस अहिंसाका प्रभाव इतना पडे कि वह देखने लायक हो। लेकिन ऐसा अवसर कहांसे आए? मेरी अगर आप लोग सुने और

जो कहता हू उसपर अमल करे, मेरे शब्दोमे ज्यादा शक्ति, हृदयमे ज्यादा बल हो, मेरी तपश्चर्या चाहे वह कितनी भी है और उससे भी आगे बढ जाय, और मेरे एक-एक शब्दोमे इतनी शक्ति हो कि वह सारे हिंदुस्तानको पकड ले तो मेरा काम बन जाय। लेकिन आज तो मै लाचार-सा हू। अगर आप लोग भी ईश्वरसे प्रार्थना करे कि वे मेरे शब्दोमे प्रभाव डाले और जहातक मुझे लाया है उससे भी आगे ले जाय और इस शरीरसे और भी ज्यादा काम करा ले तो हिंदुस्तानका प्रभाव सारे जगतपर पड़ सकता है।

इन दिनो जो एशियाई प्रादेशिक श्रम-सम्मेलन हो रहा है उसमे इग्लैड, चीन, अमरीका तथा पाकिस्तानके प्रतिनिधि आए थे और कहते थे कि तुमने तो बडा काम किया है। उनकी यह तारीफ मुझे चुभती थी। आज तो मै दिवालिया बन गया हू—आज तो मै कुछ सुना नही सकता और कल सुनाया था उसकी अब कोई कीमत नही। आज तो मै तारीफके लायक तभी बन सकता हू जब लोगोपर मेरा प्रभाव पडे, लेकिन वह दिन तो आज है ही नही, मै तो आज लाचारीका प्रदर्शन आपके सामने कर रहा हू।

: १४० :

६ नवबर १९४७

(प्रार्थनाके बाद गाधीजीने एक दोस्तद्वारा भेजी हुई अखबारोकी दो कतरनोका जिक्र करते हुए कहा—)

भाइयो और बहनो,

मै लेखकका नाम जानता हू। लेकिन मै न तो उनका नाम बताना चाहता और न उन लेखोका ब्योरा ही देना चाहता हू। मै सिर्फ इतना ही कहना चाहता हू कि वे लेख हिंदू-धर्मकी सेवा करनेके ख्यालसे लिखे गए है। लेकिन उनमे जान-बूझकर झूठी बाते कही गई है। जब नई बाते नही कही जाती, तो हकीकतोको तोड़-मरोड़-

कर पेश /किया जाता है। लेकिन मैं यह कहनेकी हिम्मत करता हू कि ऐसा करनेसे कोई मकसद पूरा नही होता—धर्मका तो बिलकुल नही। जब इलजामोकी बुनियाद सचाईपर नही बल्कि झूठपर होती है, तब जिनपर इलजाम लगाया जाता है उन्हे कोई चोट नही पहुचती। इसलिए मैं जनताको चेतावनी देता हू कि वह ऐसे अखबारोंका समर्थन न करे, भले उसके लेखक कितने ही मशहूर क्यो न हो।

खुराक-मत्रीने गैर-सरकारी लोगोकी जो कमेटी बनाई थी, उसने अपनी रिपोर्ट उनके सामने पेश कर दी है। उस कमेटीकी सिफारिशोपर कोई फैसला करनेमे डा० राजेद्रप्रसादको मदद देनेके लिए सूबोके जो मत्री या उनके प्रतिनिधि दिल्ली आए थे, उनसे मैं मिला था। जब मैंने इस मीटिंगके बारेमे सुना, तो मैंने डा० राजेद्रप्रसादसे कहा कि वे मुझे उन लोगोंके सामने अपनी बात रखनेका मौका दे, ताकि मै उनके शकोको दूर कर सकू। क्योकि मुझे इसका पूरा यकीन है कि अनाजका कट्रोल हटानेकी मेरी राय बिलकुल ठीक है। डा० राजेद्रप्रसादने तुरत मेरा प्रस्ताव मान लिया और मुझे मत्रियों या उनके प्रतिनिधियोके सामने अपने विचार रखनेका मौका मिला। मुझे अपने पुराने दोस्तोसे मिलकर बडी खुशी हुई। मैं यह कहता रहा हू कि जहांतक सांप्रदायिक झगडोके बारेमे मेरी रायका संबध है, आज उसे कोई नही मानता। लेकिन यह कह सकनेमे मुझे खुशी होती है कि खुराकके सवालपर मेरी रायके बारेमे ऐसी बात नही है। जब बगालके गवर्नर मि० कैसीसे मेरी कई मुलाकाते हुई थी, तभीसे मेरी यह राय रही है कि हिंदुस्तानमे अनाज या कपडेपर कट्रोल रखनेकी बिलकुल जरूरत नही है। उस समय यह मालूम नही था कि मुझे लोगोका समर्थन प्राप्त है या नही। लेकिन हालकी चर्चाओमे यह जानकर अचरज हुआ कि मुझे जनताके जाने और अनजाने मेंबरोका बहुत बडा समर्थन प्राप्त है। अनाजकी समस्याके बारेमे मेरे पास जो बेशुमार खत आते है, उनमे मुझे एक भी खत ऐसा याद नही आता जिसके लेखकने मेरी रायसे अलग राय जाहिर की हो। मै श्री घनश्यामदास बिड़ला और लाला श्रीराम-जैसे बडे-बड़े लोगोकी राय नही जानता, न मैं यही

जानता हूं कि इस बारेमे मुझे समाजवादी पार्टीका समर्थन मिलेगा या नही। हा, जब डा० राममनोहर लोहिया मुझसे मिले, तो उन्होने अनाजका कट्रोल हटा देनेकी मेरी रायका पूरा-पूरा समर्थन किया। मुझे यह कहनेमे कोई हिचकिचाहट नही होती कि आज देशको अनाजकी जिस तंगीका सामना करना पड रहा है, उसमे डा० राजेंद्रप्रसादकी रहनुमाई[1] उनकी कमेटीके एक या ज्यादा मेबर करे न कि उनका पूरा स्टाफ।

अब मै कपडेके कट्रोलकी चर्चा करूगा। हाला कि अनाजके कट्रोलको हटानेके बनिस्बत कपडेके कट्रोलको हटानेके बारेमे मेरा ज्यादा पक्का विश्वास है, फिर भी मुझे डर है कि कपडेके कट्रोलके बारेमे मुझे उतना समर्थन प्राप्त नही है जितना कि अनाजके कट्रोलके बारेमे है। काग्रेसने मेरी इस रायका खुशीसे समर्थन किया था कि खादी देशी या विदेशी मिलके कपडेकी पूरी जगह ले सकती है। उसने स्व० जमनालालजीके मातहत एक खादी-बोर्ड कायम किया था, जिसे मेरे यरवदा जेलसे रिहा होनेके बाद अखिल भारत-चरखा-सघका विशाल रूप दे दिया गया था। हिंदुस्तानमे ४० करोड लोग रहते है। अगर पाकिस्तानका हिस्सा उससे अलग कर दिया जाय, तो भी उसमे ३० करोडसे ऊपर लोग बचेगे। उनकी ज़रूरतकी सारी कपास देशमे पैदा होती है। उनकी कपासको बुनने लायक सूतमें बदलनेके लिए देशमे काफी कातनेवाले मौजूद है। और उनके हाथकते सूतको बुननेके लिए हिंदुस्तानमे जरूरतसे ज्यादा जुलाहे भी है। बहुत बडी पूजी लगाए बिना भी हम देशमे अपनी ज़रूरतके चरखे, करघे और दूसरा जरूरी सामान आसानीसे बना सकते है। इसलिए ज़रूरत सिर्फ इस बातकी है कि हम अपने-आपमे पक्का विश्वास रखे और खादीके सिवा दूसरा कोई कपडा न इस्तेमाल करनेका इरादा कर ले। आप जानते है कि देशमे महीन-से-महीन खादी तैयार की जा सकती है और मिलोसे भी ज्यादा अच्छे डिजाइन बनाए जा सकते है। अब चूकि

---

[1] पथ-प्रदर्शन।

हिंदुस्तान विदेशी जुएसे आजाद हो गया है, इसलिए खादीका ऐसा विरोध नही हो सकता, जैसा कि विदेशी शासकोके नुमाइदे किया करते थे। इसलिए मुझे यह देखकर सबसे ज्यादा ताज्जुब होता है कि जब हम अपनी मरजीका काम करनेके लिए पूरी तरह आजाद है, तब न तो कोई खादीके बारेमे चर्चा करते है, न खादीकी सभावनाओमे श्रद्धा रखते है। और, हम हिंदुस्तानको कपड़ा पुरानेके लिए मिलके कपडेके सिवा दूसरी बात ही नही सोच सकते। इसलिए मुझे रत्तीभर शक नही कि खादीका अर्थ-शास्त्र ही हिंदुस्तानका सच्चा और फायदेमद अर्थशास्त्र हो सकता है।

: १४१ :

७ नवबर १९४७

(गाधीजी दिल्लीके पास तिहाड़ नामक गावके मुसलमानोसे मिलने गए थे। वहा उन्हे उम्मीदसे ज्यादा समयतक रुकना पड़ा। इसलिए वे लौटनेपर सीधे प्रार्थना-सभामें चले गए। प्रार्थनाके बाद गांधीजीने अपने दौरेका जिक्र करते हुए कहा—)

भाइयो और बहनो,

मुझे दु ख होता है कि तिहाड और उसके आसपासके मुसलमानोको बिला जरूरत मुसीबते झेलनी पडती है। उनमेसे बहुतसे जमीनोके मालिक है, लेकिन सताए जानेके डरसे वे अपनी जमीनें जोत नही पाते। उन्होने अपने मवेशी, हल और दूसरा सामान बेच डाला है। फौज उनकी रक्षा कर रही है। दो हजारसे ऊपरकी तादादमे जो दु.खी लोग मेरे आसपास इकट्ठे हुए थे, उन्होने अपने अगुआकी मारफत मुझसे कहा कि 'हम पाकिस्तान जाना चाहते है, क्योकि यहा जीना असंभव हो गया है। हमारे बहुतसे दोस्त और रिश्तेदार पाकिस्तान जा भी चुके है। इसलिए, अगर सरकार हमें जल्दी-से-जल्दी लाहौर भेज दे, तो बडी दया होगी। हमे फौजके लोगोके खिलाफ कोई शिकायत नही है।'

लेकिन आजका समय मै तिहाड़की सभाका पूरा बयान करनेमे नहीं दूगा। मैने उन लोगोसे कहा कि मेरे हाथमे कोई सत्ता नही है, लेकिन मै आपका सदेशा खुशीसे प्रधान मंत्री और उप-प्रधान मत्री तक, जो गृहमत्री भी है, पहुचा दूगा।

मुझसे कहा गया है कि निराश्रित लोग दिल्लीमे एक समस्या बन गए है। मुझे बताया गया है कि चूकि पाकिस्तानमे निराश्रितोके साथ जुल्म किये गए है इसलिए वे यह मानते है कि उन्हे कुछ खास हक हासिल है। जब वे दुकानपर कोई सामान खरीदने जाते है तो यह आशा करते है कि दुकानदार कभी उन्हे जरूरतकी चीजे मुफ्त दे दिया करे और कभी काफी कम दामोमे बेचा करे। कभी-कभी तो एक-एक आदमी सैकडो रुपएका सौदा खरीद लेता है। कुछ निराश्रित तागेवालोसे यह उम्मीद करते है कि वे उनसे बिलकुल भाडा न ले या मामूलीसे कम भाडा ले। अगर यह रिपोर्ट सच है, तो यह कहना मेरा फर्ज है कि निराश्रित लोग वह सबक नही सीख रहे है, जो मुसीबते दुखियोको आम तौरपर सिखाती है। ऐसा करके वे अपने-आपको और देशको नुकसान पहुचाते है और काफी पेचीदा बने हुए सवालको और भी पेचीदा बना रहे है। अगर उनका ऐसा बरताव जारी रहा, तो वे दिल्लीके दुकानदारोकी हमदर्दी जरूर खो देगे।

साथ ही, मै यह नही समझ पाता कि निराश्रित लोग, जिनके बारेमे यह कहा जाता है कि वे पाकिस्तानमे अपना सब कुछ खो-कर यहा आए है, सैकडो रुपयोका सामान कैसे खरीद सकते है। मै यह भी चाहूगा कि कोई निराश्रित विरले और जरूरी मौकोको छोड-कर घूमनेके लिए भगवानके दिये हुए पांवोके सिवा दूसरी किसी चीजका-उपयोग न करे। इसके अलावा मुझे यह बताया गया है कि दिल्लीमे जबसे लाखो निराश्रित आए है, तबसे तेज शराबोसे होनेवाली आमदनी बहुत ज्यादा बढ गई है। दरअसल उन्हे यह समझना चाहिए कि जब केंद्र और सूबोकी सरकारे काग्रेसकी मागोको पूरा करेगी, तो हिंदुस्तानी संघमे न तो तेज शराबे मिलेगी और न अफीम-गांजे-जैसी दूसरी नशीली चीजे देखनेको मिलेगी। यही हाल पाकिस्तानका भी हो सकता

है। क्योंकि हमारे मुसलमान दोस्तोको पूरी शराब-बदीका ऐलान करनेके लिए काग्रेसके ठहरावकी जरूरत नही पड़ेगी। क्या निराश्रित लोग, जिन्होने बडी-बडी मुसीबते सही है, शराब और दूसरी नशीली चीजोके इस्तेमालमे या ऐश-आराममे डूबनेसे अपने-आपको रोक नही सकते? मुझे आशा है कि निराश्रित भाई और बहन मेरी उस सलाहको मानेंगे, जो मैंने अपने पिछले भाषणोमे उन्हें दी है। वह सलाह यह है कि निराश्रित जहा कही जाय, वहाके लोगोमे दूधमे शक्करकी तरह घुल-मिल जाय और उनपर बोझ न बननेका पक्का निश्चय कर ले। धनी और गरीब निराश्रित एक ही अहाते या कैंपमे साथ-साथ रहे और पूरे सहयोगसे काम करे, ताकि वे आदर्श और स्वावलबी नागरिक बन सके।

: १४२ :

८ नवबर १९४७

(आज हमेशाके विरोध करनेवाले सज्जनके सिवा दूसरे तीन भाइयोने कुरानकी आयत पढ़नेका विरोध किया। इसलिए प्रार्थना शुरू करनेसे पहले गाधीजीने सभाके लोगोसे पूछा—)

भाइयो और बहनो,

क्या आप लोग इस पहली शर्तको पूरा करेंगे कि आप अपने मनमें विरोध करनेवालोके खिलाफ कोई गुस्सा या वैर नही रखेंगे और प्रार्थना खत्म होनेतक शांति और खामोशीके साथ एकाग्र मनसे बैठेंगे?

(लोगोने तुरत एक आवाजसे कहा कि हम उस शर्तको पूरा करेंगे। विरोध करनेवाले पूरी प्रार्थनामे चुप रहे। प्रार्थना बिना किसी रुकावटके हुई। इसपर गाधीजीने अतमे सबको बधाई दी। गाधीजीने बादमे कहा—)

मुझे एक सिख दोस्तका खत मिला है। उन्होने लिखा है कि वे हमेशा प्रार्थना-सभामे आते है और उसे पसद करते

है। वे प्रार्थनाके पीछे रही रवादारीकी[1] भावनाकी तारीफ करते है। खास तौरपर उन्होने मेरी ग्रथ साहब, सुखमणि, जपजी वगैराके बारेमे कही गई बातोंकी तारीफ की है। उन्होने लिखा है कि 'अगर आप भजनावलीमे इकट्ठे किये गये सिख-धर्मग्रथके हिस्सोमेसे कुछ चुन ले और अपनी प्रार्थना-सभामे रोज पढे, तो इसका सिखोपर बडा असर पडेगा। मुझे लगता है कि मै यह बात सारी सिख-जातिकी तरफसे कह सकता हू। वे चुने हुए हिस्से मै आपके सामने पढकर सुना सकता हू।' मुझे खत लिखनेवाले भाईकी वह बात मजूर है। लेकिन इस बात पर मै कोई फैसला तभी करूगा, जब मै खुद उन भाईके मुहसे कुछ भजन सुन लू। इसके लिए उन्हे श्री ब्रजकिशनजीसे समय ले लेना चाहिए।

मैने एक बार यह बात कही थी कि निराश्रितोको रूई, केलिको (छपा हुआ कपडा) और सुइया मिलनी चाहिए, ताकि वे खुद अपने इस्तेमालके लिए रजाइया बना सके। इससे लाखो रुपए बच सकते है और निराश्रितोको आसानीसे ओढनेके कपडे मिल सकते है। मेरी इस अपीलके जवाबमे बबईके रूईके व्यापारियोने लिखा है कि वे ये चीजे देनेके लिए तैयार है। इस तरीकेसे निराश्रित खुद अपनी नजरमे ऊचे उठेगे और वे सुदर सहकारका पहला सबक सीखेगे। लेकिन दिल्लीमे ही कपडेकी मिलोकी कमी नही है। शहरमे कई मिले चलती है, फिर भी मै बबईकी भेटका स्वागत करता हू, क्योकि मै मरजीसे दान देनेवालोपर गैर-जरूरी बोझ नही डालना चाहता। दान देनेवाले जितने ज्यादा होंगे, उतना ही निराश्रितो और देशको फायदा होगा। इसलिए मुझे आशा है कि बबईके रूईके व्यापारी जितनी भी गाठे भेज सकेगे जल्दी-से-जल्दी भेजेगे। धनी लोगोंका ऐसा सहयोग सरकारके बोझको कम करेगा। जब हम आजाद हो गए है तब तो हर शख्स अपनी इच्छासे देशकी सरकारके काममे भागीदार बन सकता है, बशर्ते वह आजाद देशके नागरिककी पूरी-पूरी जिम्मेदारियोको समझकर अपना फर्ज अदा करे।

---

[1] शुभचिंतना।

मुझे इसमे कोई शक नही कि जब रूईकी गाठे आ जायगी, तो मैं मिल-मालिकोको रजाइयोके लिए काफी छीट देनेके लिए राजी कर सकूगा। रूईकी गाठोकी बातपरसे कपड़ेका कट्रोल याद आ गया। मेरी रायमे हिंदुस्तानके सारे लोगोके लिए हाथसे काफी खादी तैयार करना सभव है और आसान भी है। इसकी एक शर्त यही है कि देशमें काफी रूई मिल जाय। मैं नही जानता कि हिंदुस्तानमे कभी रूईका अकाल पडा हो। हमारे यहा रूईकी तगी हो ही नही सकती, क्योकि हम देशकी जरूरत से हमेशा ज्यादा रूई पैदा करते है। देशके वाहर हजारों-लाखों गांठे भेजी जाती है, फिर भी हिंदुस्तानकी मिलोके लिए कभी रूईकी कमी नही होती। मै पहले ही इस सचाईकी तरफ आप लोगोंका ध्यान खीच चुका हू कि हिंदुस्तानमे हाथसे धुनने, कातने और बुननेके सारे ज़रूरी औजार मिल सकते है। साथ ही, काम करनेवाले भी बड़ी भारी तादादमे मौजूद है। इसलिए, मै तो यही कह सकता हू कि लोगोके आलसके सिवा दूसरी कोई ऐसी बात नही है जो उन्हें यह सोचनेपर मजबूर करती हो कि देशमे कपड़ेकी तगी है। आज देशमे कोई भी कपड़ेका कट्रोल नही चाहता। न मिलें, न मिल-मजदूर और न खरीदार जनता। कंट्रोल आलसी लोगोकी फौजको वढाकर देशको वरबाद कर रहे है। ऐसे लोग कोई काम न होनेसे हमेशा दगे-फसादकी जड बने रहते है।

अगर निराश्रितोने अपने-आपको फायदेमद कामोमे लगानेका इरादा कर लिया है, तो पहले वे अपने लिए रजाइयां तैयार करेंगे, और वादमे सव औरत और मर्द अपना एक-एक पल कपाससे विनौले निकालने, रूई धुनने, कातने-बुनने वगैरामे खर्च करेंगे। लाखो निराश्रितों-द्वारा इस सहकारी काममें लगाई गई ताकत सारे देशमे विजली-सी पैदा कर देगी। वे लोगोको अपने पीछे चलनेकी और हर फालतू वक्तको ज्यादा अनाज पैदा करने और अपने ही घरोमे खादी वनानेमे खर्च करनेकी प्रेरणा देगे। यह याद रहे कि अगर गाठे वनानेके वजाय कपास सीधे खेतोसे ही पडोसके कातनेवालोके घर पहुंचे, तो एक काम कम हो जायगा, रूई विगडेगी नही, धुननेका काम आसान होगा

और गावोंमे बिनौले भी बच रहेगे।

लेडी माउटबैटेन मुझसे मिलने आई थी। वह दयाकी देवी बन गई है। वह हमेशा दोनो उपनिवेशोंका दौरा किया करती है, अलग-अलग छावनियोंमे निराश्रितोसे मिलती है, बीमारो और दु.खियोको देखती है और इस तरह जितना भी ढाढस उन्हें बधा सकती है बधानेकी कोशिश करती है। जब वह कुरुक्षेत्र-छावनी देखने गई , तो उनसे लोगोने पूछा कि गाधीजी कब आएगे। लेडी माउटबैटेनके सामने इतने लोगोने मुझे देखनेकी इच्छा जाहिर की कि उन्हे पूरी उम्मीद हो गई कि मै कुरुक्षेत्र-छावनीका मुआइना करने जरूर जाऊगा। मैंने उन्हे यकीन दिलाया कि आपका ऐसी उम्मीद रखना बिलकुल ठीक है। सच पूछा जाय तो मैंने पानीपत जानेका बदोबस्त कर लिया है, जहाके हिंदू और मुसलमान दोनों मुझसे मिलनेके लिए बडे उत्सुक है। उसी दौरेमे मैंने कुरुक्षेत्रके दौरेको भी शामिल करनेकी बात सोची थी। लेकिन मुझे पता चला है कि पानीपतके दौरेमें कुरुक्षेत्र-छावनीको शामिल नही किया जा सकता। इसलिए ए० आई० सी० सी० (अखिल भारतीय काग्रेस-कमेटी) की अगली मीटिंगके खत्म होनेतक कुरुक्षेत्रका दौरा मुलतबी रखना जरूरी हो गया है। फिर भी मुझे यह सुझाया गया है कि कुरुक्षेत्र-जैसे बडे भारी कैपमे लाउड स्पीकरका बदोबस्त करना कठिन काम है, लेकिन कैपके लोगोसे रेडियोपर बोलनेमे कोई कठिनाई नही होगी, बशर्ते जरूरी सबध जोडनेवाली मशीन कैपमे लगा दी जाय। ऐसा बदोबस्त हो जानेपर मै मगल या बुधको कुरुक्षेत्र-छावनीके लोगोको अपनी बात सुना सकूगा और बादमे उनसे मिलने भी जा सकूगा। इसी बीच उम्मीद है कि मै अपना पानीपतका दौरा खत्म कर लूगा।

: १४३ :

मौनवार, ६ नवबर १९४७

(लिखित संदेश)

"मुझे खेद है कि चूकि मुझे कल पानीपत जाना है, इसलिए मुझे आज मौन जल्दी लेना पड़ा, ताकि मै वहा पहुचकर हिंदू और मुसलमानोसे वात कर सकू। मेरी आशा है कि मैं कल शामकी प्रार्थनाके समयतक वापस लौट आऊगा और आकर बोल सकूगा। अखवारोमे यह समाचार गलत छपा है कि मै कल कुरुक्षेत्र जा रहा हू। मैंने यह साफ-साफ बताया था कि मेरा इरादा कुरक्षेत्र जानेका है लेकिन ए० आई० सी० सी० की मीटिंगके समाप्त होनेसे पहले नही। मेरी उम्मीद है कि मै वहाके शरणार्थियोसे बुधके दिन रेडियोपर बोलूगा। समयकी सूचना दे दी जायगी।

कुछ दिनो पीछे दीवाली आ रही है। एक वहन, जो स्वयं शरणार्थिन है, लिखती है—

"सविनय निवेदन है कि इस वर्ष दीपावली मनाई जाय या नही? मै इस विषयमे आपके समुख टूटे-फूटे शब्दोमे अपना विचार प्रकट करना चाहती हू। मै भी पाकिस्तान[1]से आई हुई हू। और हमारा भी सब कुछ वहांपर नष्ट हो चुका है, परंतु फिर भी हमारे हृदयोंमें इस बातका महान् हर्ष है कि हम स्वतत्र है और यह दीपावली स्वतत्र हिंदुस्तानकी पहली दीपावली है। अत· इस वर्ष हमे सव कष्टोको भूलकर उत्साह और समारोहके साथ अपनी स्वाधीन मातृभूमिको दीपमालासे अवश्य ही अलकृत करना चाहिए। आपके हम शरणार्थियोके प्रति जो उदार भाव है कि हम दु खित है, इसलिए स्वतत्र भारतकी सब खुशिया हमारे लिए पीछे रख दी जाए इसके लिए हम हृदयसे कोटि कोटि धन्यवाद देते है। अब आप भी सब शरणार्थियोको और यहाके निवासियोको आज्ञा दे कि समस्त इडियामे

---

[1] गुजरांवाला।

दीपमाला अवश्य मनाई जाय और जो लोग समर्थ हैं, वे शरणार्थियोंकी सहायता करे। ईश्वर हमें शक्ति दे कि स्वाधीनताका प्रत्येक त्यौहार हम उत्साहके साथ मनाकर अपनी स्वतंत्र माताकी शोभा बढ़ाएं।"

यद्यपि मैं इस बहन और उन-जैसे दूसरोंकी प्रशंसा करता हूं, लेकिन मैं यह कहे बिना नहीं रह सकता कि वह बहन और दूसरे जो उनके-जैसा विचार रखते है, गलतीपर है। इस बातको हर एक जानता है कि जब किसी घरमें मातम[1] हो जाता है तो जहांतक होता है वे लोग किसी मेले-तमाशेमें शरीक नही होते। यह इस बातका एक छोटा-सा नमूना है कि हम सब एक हैं। कूप-मडूक बनना छोड़ो तो हिंदुस्तान एक कुटुंब बन जाता है; अगर सब बंधन गायब हो जाते हैं तो सारा संसार एक कुटुंब बन जाता है, जो वास्तवमे है। इन बधनोको पार न करनेका मतलब यह है कि हम उन सद्भावनाओंकी ओरसे, जो मनुष्यको मनुष्य बनाती है, कठोर बन जाते है। हमें अपना ही विचार नही करते रहना चाहिए, नहीं हमे भावुक बनकर असलियतको भुलाना चाहिए। मैं जो खुशी न मनानेकी राय देता हूं, उसका मूल कई पक्के विचारोपर निर्भर है। यहां शरणार्थियोंकी समस्या हमारे सामने है जिसका प्रभाव लाखों हिंदू, मुसलमान और सिखोपर पड़ रहा है। इसके अलावा खुराक और कपड़ेकी कमी, अगरचे यह मनुष्यकी बनाई हुई है, मूल कारण है। उन लोगोंकी बेईमानी जो जनताकी रायको निर्माण कर सकते हैं, पीड़ितोकी जिद कि अपने कष्टोंसे पाठ नही सीखते और इन्सानकी इन्सानके साथ बेरहमी—मैं इस मुसीबतमें खुशी मनानेका कोई कारण नहीं देखता। यदि हम दृढ़ता और अक्लमंदीके साथ इस बातका निश्चय कर लें कि हम खुशी नही मनाएगे तो इससे हमे प्रेरणा मिलेगी कि हम अंतर्मुख और पवित्र बने। हमें कोई ऐसा काम नही करना चाहिए जिससे हम उस आशीर्वादको फेंक दें, जिसे

---

[1] शोक।

हमने इतनी मेहनत और मुसीबतके बाद प्राप्त किया है।

अब मैं अपने उन चंद मित्रोका जिक्र करना चाहता हू जो फ्रेंच भारतसे इस सप्ताह मुझसे मिलने आए थे। उनकी यह शिकायत थी कि मैंने चद्रनगरके सत्याग्रहके सबधमे जो कुछ कहा था उसका फ्रेच भारतकी इन भावनाओको कि वह हिंद यूनियनके नीचे रहते हुए और फ्रेच सस्कृतिका प्रभाव रखते हुए अपनी स्वतंत्रता प्राप्त कर सके, दबानेके लिए गलत इस्तेमाल किया गया है।

उन्होने मुझे यह भी बताया कि अग्रेजी राज्यकी तरह फ्रेच भारतमे भी पचम स्तभवाले मौजूद है, जो अपने स्वार्थ-साधनके लिए फ्रेच हकूमतका साथ दे रहे है और वहाकी हकूमत लोगोकी कुदरती भावनाओको दबानेका प्रयत्न कर रही है। यदि फ्रेच भारतसे आए हुए मित्रोका कहना सही है तो मुझे बडा दु.ख है। ताहम,[1] मेरी राय साफ है। छोटे-छोटे विदेशी उपनिवेशोके रहनेवालोंके लिए यह नामुमकिन है कि उनके करोड़ो देशवासी ब्रिटिश हकूमतसे आजाद हो जाए और वह गुलाम बने रहे। मुझे आश्चर्य है कि चंद्रनगरकी ओर मेरा जो मित्र-भाव है उसका यह गलत अर्थ किया जाय कि मै यह कभी बरदाश्त कर सकता हू कि भारतके इन छोटेसे विदेशी उपनिवेशोंका नीचा दर्जा रहे। इसलिए मेरी यह उम्मीद है कि जो खबर मुझे दी गई है उसकी वास्तवमे कोई बुनियाद नही है। और महान् फ्रांसीसी जाति इस बातकी कभी हिमायत न करेगी कि लोगोको चाहे वह काले हो या भूरे, हिंदमे हो या और कही, दबाकर रखा जाय।

---

[1] तथापि।

: १४४ :

१० नवबर १६४७

(आज शामकी प्रार्थनामे गाये गए भजन का जिक्र करते हुए गाधीजीने कहा—)

भाइयो और बहनो,

अगर मीराबाईकी तरह हम सिर्फ भगवानके ही सेवक बन जाय, तो हमारी सारी तकलीफोका खात्मा हो जाय। इसके बाद जो कुछ मै कहनेवाला हू उसे सुननेपर आप इस सकेतको समझेगे। आपने अखबारोमे जूनागढके बारेमे सारी बाते पढी होगी। राजकोटसे मेरे पास आए हुए दो तारोसे मुझे सतोष हो गया कि अखबारोमे छपी हुई खबर बिलकुल ठीक है। जूनागढके प्रधान मत्री भूटो साहब और वहाके नवाब साहब कराचीमे है। उप-प्रधान मत्री मेजर हारवे जोन्स जूनागढमे है। जूनागढके हिंदुस्तानी सघमें शामिल होनेके काममे इन सबका हाथ है। इसपरसे आप लोगोको यह नतीजा निकालनेका अधिकार है कि इस काममे कायदे आजम जिनाकी भी सम्मति है। अगर यह ठीक है तो आप इस नतीजेपर पहुच सकते है कि काश्मीर और हैदराबादकी मुश्किले भी खत्म हो जायगी। और अगर मै आगे बढू, तो कहूगा कि अब सारी बाते शातिकी तरफ झुकेगी, दोनों उपनिवेश दोस्त बन जायगे और सारे काम मिल-जुलकर करेगे। मैं कायदे आजमके बारेमे गवर्नर जनरलकी हैसियतसे नही सोच रहा हू। गवर्नर जनरलके नाते कायदे आजमको पाकिस्तानके कामोमे दखल देनेका कोई कानूनी हक नही है। इस नाते उनकी वही स्थिति है, जो लॉर्ड माउटबेटनकी है, जो सिर्फ एक वैधानिक गवर्नर जनरल है। लॉर्ड माउटबेटन उस व्यक्तिकी शादीमे शामिल होनेके लिए गए है, जो उनके लिए अपने लडकेसे बढ़कर है और जिसकी इग्लैंडकी भावी महारानीसे शादी हो रही है। वे अपनी कैबिनेटकी इजाजत लेकर ही वहा जा सके है, और २४ नवबर १६४७ तक यहा वापस आ जाएगे। इसलिए जिना साहबके बारेमे मेरा खयाल है कि वे

मौजूदा मुस्लिम लीगके बनानेवाले है और उनकी जानकारी और इजाजतके बगैर पाकिस्तानके बारेमे कुछ नही किया जा सकता। इसलिए मै सोचता हू कि अगर जूनागढके हिंदुस्तानी सघमे शामिल होनेके पीछे जिना साहबका हाथ है, तो यह एक अच्छा शकुन है।

आप लोगोंको मै पानीपतके अपने मुआइनेके बारेमे कुछ कहना चाहता हू। इस मुआइनेमे मौलाना अबुल कलाम आजाद मेरे साथ थे। राजकुमारी भी मेरे साथ जानेवाली थी, मगर वह गवर्नमेंट हाउसमे थी और मै अपनी घडीके मुताबिक साढे दस बजेके बाद नही ठहर सकता था। मुझे खुशी है कि मै पानीपत गया था। वहा मैने अस्पतालमे मुसलमान मरीजोंको देखा। उनमेसे कुछको बहुत गहरे घाव लगे है, मगर उनपर जहातक मुमकिन है, पूरा ध्यान दिया जाता है, क्योकि राजकुमारीने चार डॉक्टर, नर्स और तबीबी[1] सहायक वहा भेजे है। इसके बाद हम मुसलमानो, मुकामी हिंदुओ और निराश्रितोंके नुमाइदोसे मिले। वहा निराश्रितोकी तादाद २० हजारसे ऊपर बताई जाती है। हमसे कहा गया कि वे रोजाना ज्यादा-ज्यादा तादादमे आते जा रहे हैं, जिससे वहाके डिप्टी कमिश्नर और पुलिस सुपरिटेंडेटको भय मालूम होता है। मुझे यह बतलानेमे खुशी होती है कि इन अफसरोकी हिंदू और मुसलमान दोनों बहुत तारीफ करते है, और निराश्रितोका तो कुछ कहना ही नही। वे तो उनसे सतुष्ट है ही।

म्युनिसिपल भवनके पास जमा हुए निराश्रितोसे भी हम लोग मिल सके। पाकिस्तानमे और पानीपतके अव्यवस्थित जीवनमे निराश्रितोको भयानक मुसीबते उठानी पडी और उठानी पड रही है—उनमेसे कुछको रेलवे स्टेशनके प्लेटफार्मपर रहना पडता है और बहुतोको आसमानके नीचे बिलकुल खुलेमे रहना पड़ रहा है,—फिर भी उनके मनमे और चेहरोपर जरा भी गुस्सा न देखकर मुझे बडी खुशी हुई। हमारे वहां जानेसे वे लोग बड़े प्रसन्न हुए। पानीपतके डिप्टी कमिश्नर या दूसरे लोगोको पहलेसे सूचना किये बिना इतने

---

[1] चिकित्सक।

निराश्रितोंको पानीपतमे इकट्ठे कर देना मुझे अधिकारियोंकी वेरहमी मालूम हुई। पानीपतके अफसरोको निराश्रितोकी सच्ची तादाद तव मालूम हुई जव ट्रेने स्टेशनके प्लेटफार्मपर आकर रुकीं। यह सवसे वड़ी वदकिस्मतीकी वात है। पानीपतके निराश्रितोंमे औरते, वच्चे और वूढ़े भी है। मुझे यह वताया गया कि निराश्रितोमे ऐसी औरतें भी है, जिन्हे स्टेशनके प्लेटफार्मो पर वच्चे पैदा हुए है।

यह सव पूरवी पजावमे हो रहा है, जिसके प्रधान मंत्री डॉ० गोपीचद है। डॉ० गोपीचद मेरे साथी कार्यकर्ता है। मै उन्हे वहुत मानता हूं। मै वरसोसे उन्हे एक योग्य संयोजकके नाते जानता हूं, जिनका पजावियोपर वड़ा प्रभाव है। उन्होने हरिजन-सेवक-सघ, अखिल भारत-चरखा-सघ और अखिल भारत-ग्रामोद्योग-संघके लिए काफी काम किया है। मुझे यह नही सोचना चाहिए कि पूरवी पजावका काम उनकी ताकतके वाहर है। लेकिन अगर पानीपत उनकी कार्य-कुशलताका नमूना हो, तो यह उनकी सरकारके लिए वड़ी वदनामीकी वात है। पहलेसे विना सूचना दिये इतने निराश्रित पानीपतमे क्यों उतारे गए? उन्हे ठहरानेके लिए वहा नाकाफी वंदोवस्त क्यो है? अफसरोको पहलेसे ही यह सूचना क्यो नही दी जानी चाहिए कि कौन और कितने निराश्रित पानीपत भेजे जा रहे है? उसके साथ ही कल मुझे यह भी सूचना मिली है कि गुडगांव जिलेमे तीन लाख ऐसे मुसलमान है, जिन्होने डरकर अपना घर-वार छोड दिया है। आम सड़कके दोनो तरफ खुलेमे इस आशासे पड़े है कि उन्हे अपने औरत-वच्चों और मवेशियोके साथ पजावकी कड़ी सर्दीमे ३०० मीलका रास्ता तय करना है। मै इस वातमे विश्वास नही करता। मेरा खयाल है कि मुझे दोस्तोंने जो वात सुनाई है उसमे कुछ गलती है। अभी भी मै आशा करता हूं कि यह वात गलत है या वढ़ा-चढ़ाकर कही गई है। लेकिन पानीपतमें मैने जो कुछ देखा, उससे मेरा यह अविश्वास डिग गया है। फिर भी मुझे आशा है कि डॉ० गोपीचंद और उनकी कैविनेट समय रहते चेत जायंगे और तवतक चैन नही लेंगे, जवतक सारे निराश्रितोकी अच्छी देखभालका पूरा इंतजाम

नही हो जाता । यह वदोवस्त दूरदेशी[1] और हद दरजेकी सावधानीसे ही किया जा सकता है।

: १४५ :

११ नवबर १९४७

भाइयो और वहनो,

कल मैंने आपको यह खवर सुनाई थी कि जूनागढके प्रधान मत्री और उप-प्रधान मत्रीकी विनतीपर वहाकी आरजी सरकारने जूनागढ रियासतमे प्रवेश किया है। यह खबर सुनाते हुए मुझे अचरज भी हुआ और खुशी भी हुई, क्योकि जूनागढके लोगोकी और उनके तरफसे लड़ी जानेवाली लड़ाईके इतने सुख दिखाई देनेवाले अतकी मैंने आशा नही की थी। मैंने यह डर भी जाहिर किया था कि अगर जूनागढ़के अधिकारियोकी विनतीके पीछे कायदे आजम जिनाकी मजूरी न हुई, तो अभीसे खुशी मनाना ठीक न होगा। इसलिए आपको यह जानकर दुख और अचरज हुए विना न रहेगा कि पाकिस्तानके अधिकारियोने जूनागढकी जनताकी तरफसे आरजी सरकारके जूनागढपर अधिकार करनेका विरोध किया है और यह माग की है कि "हिंदुस्तानी फौजे रियासतकी सीमासे हटा ली जाय, जूनागढका राजकाज वहाकी अधिकारी सरकारको सौप दिया जाय और हिंदुस्तानी सघकी जनताद्वारा रियासतपर किये गए हमले और हिंसाको रोका जाय।" उनका यह भी कहना है कि जूनागढके नवाव या वहाके दीवानको हिंदुस्तानी सघके साथ किसी तरहका अस्थायी या स्थायी समझौता करनेका कानूनी हक नही है। पाकिस्तानकी नजरमे हिंद-सरकारने यह कार्रवाई करके "पाकिस्तानकी सीमाको साफ-साफ लाघा है और इस तरह अतरराष्ट्रीय कानून का भग किया है।"

---

[1] दूरदर्शिता।

कल अखबारोमें जो बयान निकले है, उनको देखते हुए इस मामलेमे न तो मुझे अतरराष्ट्रीय कानूनका भंग मालूम होता और न यूनियन सरकारकी रियासतपर कब्जा करनेकी कार्रवाई दिखाई देती है। जहांतक मै समझ सकता हूं, जूनागढकी जनताकी तरफसे वहाकी आरजी हुकूमतने जो आदोलन किया, उसमे मुझे कोई गैर-कानूनी चीज नही दिखाई देती। यह जरूर है कि काठियावाडके राजाओकी विनतीपर सारे काठियावाडकी सलामतीके लिए यूनियन सरकारने अपनी फौजकी मदद भेजी। इसलिए मुझे इस सारी कार्रवाईमे कोई गैर-कानूनीपन नही दिखाई देता। इसके खिलाफ जूनागढके दीवानने जाहिरा तौरपर अपनी राय बदलकर जो कुछ किया वह गैर-कानूनी था। इस सारे मामलेको मै इस नजरसे देखता हू—जूनागढ़के नवाब साहबको अपनी प्रजाकी मजूरीके बिना, जिसमें मुझे बताया गया है कि ८५ फीसदी हिंदू है, पाकिस्तानमे शामिल होनेका कोई हक नही था। गिरनारका पवित्र पहाड और उसके सारे मदिर जूनागढका एक हिस्सा है। उसपर हिंदुओंने बहुत पैसा खर्च किया है और सारे हिंदुस्तानसे हजारो यात्री गिरनारकी यात्राके लिए वहां जाते है। आजाद हिदुस्तानमें सारे देशपर जनताका अधिकार है। उसका जरा-सा भी हिस्सा खानगी तौरपर राजाओका नही है। जनताके ट्रस्टी बनकर ही वे अपना दावा कायम रख सकते है, और इसलिए उन्हें अपने हर एक कामके लिए जनताके समर्थनका सबूत पेश करना होगा। यह सच है कि अभी राजा-नवाबोने यह महसूस नही किया है कि वे प्रजाके ट्रस्टी और प्रतिनिधि है और यह भी सच है कि कुछ रियासतोकी जाग्रत प्रजाको छोडकर बाकी रियासती प्रजाने, कुल मिलाकर, अभीतक यह महसूस नही किया है कि अपने राजकी सच्ची मालिक वही है। लेकिन इससे मेरेद्वारा बताए गए उसूलकी[1] कीमत कम नही होती।

इसलिए अगर दो उपनिवेशोमेंसे किसी एकमे शामिल होनेका

---

[1] सिद्धान्त।

किसीको कानूनी हक है, तो वह किसी खास रियासतकी प्रजाको ही है और अगर आरज़ी[1] सरकार किसी भी स्टेजपर जूनागढ़की रैयतकी नुमाइंदगी[2] नही करती, तो वह अन्यायसे रियासतपर कब्जा करनेवालोंकी टोलीमात्र है और उसे दोनो उपनिवेशोद्वारा निकाल दिया जाना चाहिए। अगर कोई राजा अपनी ज़ाती[3] हैसियतसे किसी उपनिवेशमें शामिल होता है, तो वह उपनिवेश दुनियाके सामने इस चीज़को न्यायोचित साबित करनेके लिए खड़ा नही हो सकता। इस अर्थमें मेरा मत है कि जबतक यह साबित न हो जाय कि जूनागढकी प्रजाने नवाबके संघमे शामिल होनेके फैसलेपर अपनी स्वीकृतिकी मोहर लगा दी है, तबतक नवाब साहबका संघमे शामिल होना शुरूसे ही बेबुनियाद है। जूनागढ आखिर किस उपनिवेशमे शामिल हो, इस मामलेमें झगड़ा खडा होनेपर उसे सिर्फ सारी प्रजाकी रायसे यानी रेफरेंडमके जरिए ही सुलझाया जा सकता है। यह काम ठीक तरहसे किया जाय और उसमे कही भी हिंसाका या हिंसाके दिखावेका उपयोग न किया जाय। पाकिस्तानकी सरकारने और अब जूनागढके प्रधान मत्रीने भी जो रुख अख्तियार किया है, उससे एक अजीब हालत पैदा हो गई है। पाकिस्तान और संघ-सरकारमे से कौन सही और कौन गलत रास्तेपर है इसका फैसला कौन करेगा ? तलवारके जोरसे कोई फैसला करनेकी बात सोची भी नही जा सकती। एकमात्र सम्मानपूर्ण तरीका तो पचोके जरिए फैसला करनेका है। देशमे बहुतसे गैर-तरफदार व्यक्ति मिल सकते है, और अगर संबधित पार्टियां हिंदुस्तानियोको पच मुकर्रर करनेकी बातपर राज़ी न हो सके, तो कम-से-कम मुझे तो दुनियाके किसी भी हिस्सेके किसी गैर-तरफदार आदमीके चुनावपर कोई एतराज नही होगा।

जो कुछ मैंने जूनागढके बारेमे कहा है, वह काश्मीर और हैदराबादपर भी उसी रूपमे लागू होता है। न तो काश्मीरके महाराजा साहब और न हैदराबादके निजामको अपनी प्रजाकी सम्मतिके

---

[1] तात्कालिक; [2] प्रतिनिधित्व; [3] निजी।

बगैर किसी भी उपनिवेशमे शामिल होनेका अधिकार है। जहातक मै जानता हू, यह बात काश्मीरके मामलेमे साफ कर दी गई थी। अगर अकेले महाराजा सघमे शामिल होना चाहते, तो मैं उनके ऐसे कामकी कभी ताईद नही कर सकता था। सघ-सरकार काश्मीरको थोडे समयके लिए सघमे शामिल करनेपर सिर्फ इस वजहसे राजी हुई कि महाराजा, और काश्मीर व जम्मूकी जनताकी नुमाइदगी करनेवाले शेख अब्दुल्ला—दोनो यह बात चाहते थे। शेख अब्दुल्ला इसलिए सामने आये कि वे काश्मीर और जम्मूके सिर्फ मुसलमानोंके ही नही बल्कि सारी जनताके नुमाइदे होनेका दावा करते है।

मैने लोगोको यह कानाफूसी करते सुना है कि काश्मीरको दो हिस्सोमें बाटा जा सकता है। इनमेसे जम्मू हिंदुओके हिस्से आएगा और काश्मीर मुसलमानोके हिस्से। मै ऐसी बटी हुई वफादारी और हिंदुस्तानी रियासतोके कई हिस्सोमे बटनेकी कल्पना नही कर सकता। इसलिए मुझे उम्मीद है कि सारा हिंदुस्तान समझदारीसे काम लेगा और कम-से-कम उन लाखो हिंदुस्तानियोके लिए, जो लाचार निराश्रित बननेके लिए बाध्य हुए है, तुरत ही इस गदी हालतको टाला जायगा।

: १४६ :

१२ नवबर १९४७

भाइयो और बहनो,

आज दीवालीका दिन है, इसलिए मै आप सबको बधाई देता हू। हमारे हिंदू सालका यह बहुत बड़ा दिन है। विक्रम-सवत्के मुताबिक नया साल कल गुरुवारसे शुरू होगा। आपको यह समझना चाहिए कि दीवालीका दिन हमेशा रोशनी करके क्यो मनाया जाता है। राम और रावणके बीचकी भारी लड़ाईमे राम भलाईकी ताकतोके प्रतीक

थे और रावण बुराईकी ताकतोका। रामने रावणपर विजय पाई, और इस विजयसे हिंदुस्तानमे रामराज्य कायम हुआ।

लेकिन अफसोस है कि आज हिंदुस्तानमे रामराज्य नही है। इसलिए हम दीवाली कैसे मना सकते है? वही आदमी इस विजयकी खुशी मना सकता है, जिसके दिलमे राम है। क्योकि भगवान ही हमारी आत्मा को रोशनी दे सकता है, और ऐसी ही रोशनी सच्ची रोशनी है। आज जो भजन गाया गया, उसमे कविकी भगवान-को देखनेकी इच्छापर जोर दिया गया है। लोगोकी भीड दिखावटी रोशनी देखने जाती है, लेकिन आज हमे जिस रोशनीकी जरूरत है वह तो प्रेमकी रोशनी है। हमारे दिलोमे प्रेमकी रोशनी पैदा होनी चाहिए। तभी सब लोग बधाइया पाने लायक बन सकते है। आज हजारो-लाखो लोग भयानक दुख भोग रहे है। क्या आप लोगोमेसे हर एक अपने दिलपर हाथ रखकर यह कह सकता है कि हर दुःखी आदमी या औरत—फिर वह हिंदू, सिख या मुसलमान कोई भी हो—मेरा सगा भाई या बहन है? यही आपकी कसौटी है। राम और रावण भलाई और बुराईकी ताकतोके बीच हमेशा चलनेवाली लड़ाईके प्रतीक है। सच्ची रोशनी भीतरसे पैदा होती है।

पडित जवाहरलाल नेहरू जख्मी काश्मीरको देखकर कैसे दुखी मनसे अभी-अभी लौटे है। वे कल और आज तीसरे पहरकी वर्किंग कमेटीकी बैठकोमे शामिल नही हो सके। वे मेरे लिए बारामूलासे कुछ फूल लाये है। कुदरतकी यह भेट मुझे हमेशा सुदर मालूम होती है। लेकिन आज लूट-पाट और खूरेजीने[1] उस सुहावनी धरतीकी सारी सुदरता बिगाड़ दी है। जवाहरलालजी जम्मू भी गए थे। वहाकी हालत भी बहुत अच्छी नही है।

सरदार पटेलको श्री शामलदास गाधी और ढेबरभाईकी विनती-पर जूनागढ जाना पडा, जो उनकी रहनुमाई चाहते थे। जिना साहब और भूटो साहब दोनो नाराज है, क्योकि उन्हे लगता है कि

---

[1] रक्तपात।

हिंद-सरकारने उन्हे धोखा दिया है और वह जूनागढ़को यूनियनमे शामिल होनेके लिए दवा रही है।

सारे देशमे शांति और सद्भावना कायम करनेके लिए हर एकका यह फर्ज है कि वह अपने दिलसे नफरत और शकको निकाल दे। अगर आप अपनेमें भगवानकी हस्ती[1] महसूस नहीं करेंगे और अपने सारे छोटे-छोटे आपसी झगड़ोको नही भूलेंगे, तो काश्मीर या जूनागढ़की विजय बेकार साबित होगी। जबतक आप डरके मारे यहांसे भागे हुए सारे मुसलमानोंको वापस हिंदुस्तान नही लाते, तबतक सच्ची दिवाली नही मनाई जा सकती। अगर पाकिस्तानने वहांसे भागे हुए हिंदुओं और सिखोंके साथ ऐसा ही नही किया, तो वह भी जिंदा नही रह सकेगा।

(इसके बाद गांधीजीने अपने ब्राडकास्ट-भवन जानेका जिक्र किया, जहांसे उन्होंने रेडियोपर कुरुक्षेत्रके निराश्रितोको संदेश दिया था। कांग्रेस वर्किंग कमेटीकी बैठकोंके बारेमें गांधीजीने कहा—)

कल मैं इनके बारेमें जो मुमकिन होगा, कहूंगा। मुझे उम्मीद है कि अगले साल, जो गुरुवारसे शुरू होनेवाला है, आप और हिंदुस्तान, सुखी रहेंगे और भगवान आपके दिलोको प्रकाशित करेगा; ताकि आप आपसमे एक दूसरेकी और हिंदुस्तानकी ही नही, बल्कि उसके जरिए सारी दुनियाकी सेवा कर सकें।

: १४७ :

१३ नवंबर १९४७

भाइयो और बहनो,

कल दिवाली थी और आज नए वर्षका पहला दिन है। मैंने सुना है और कल रातको तो और भी ज्यादा सुना कि दिल्लीमें

[1] अस्तित्व।

दिवालीके रोज बहुत रोशनी होती है, जैसी बबईमे होती है और शायद उससे भी ज्यादा होती है। बबईमे तो बहुत बडी रोशनी होती है। लेकिन कल मै यह सुनकर खुश हुआ कि लोग समझ गए है कि आज दिवालीका उत्सव मनानेका दिन है ही नही। मगर तो भी एक भ्रमणा[1] पैदा हो गई है कि दिवालीपर कुछ-न-कुछ बत्तिया तो जलानी ही चाहिए, इसलिए किसी-किसी जगहपर थोडे तेलके दीपक जल रहे थे और बिजलीकी बत्तिया भी थी; लेकिन बहुत कम। मै घरसे बाहर तो कही जाता नही, मगर पता तो चल ही जाता है।

आजसे नया वर्ष आरंभ होता है। मैने कल इशारा तो किया था, लेकिन अच्छा है कि मै आज फिर दुहरा दू। नए वर्षके दिनमें कोई शुभ-चिंतन या कोई शुभ इरादा कर लेते है और पीछे ईश्वरकी कृपा बनी रहे तो सारे वर्षभर उसपर चलनेकी कोशिश करते है। ऐसा अगर हम करे और आज जो फिजा[2] है, वह बदल जाय और हिंदू-मुसलमान सब भाई-भाई बनकर रहते है, तब दूसरी जो दिवाली हमारे सामने आती है, उस वक्त हमें दिये-बत्तियां जलानेका अधिकार हो जाता है। अगर हम एक-दूसरेको दुश्मन मानकर बैठ जाते है तो पीछे कोई काम बनता नही है। इसलिए मैंने कहा कि आज तो बाहरकी दिवाली मनानेका अवसर है ही नही। लेकिन दिलमे जो ज्योति होनी चाहिए उसको प्रकट करनेकी कोशिश हमे करनी है। हमारे दिलमे राम विराजमान है और वहा भी युद्ध चलता है राम और रावणके बीचमे। अगर हृदयमे, उसके बाहर नही, रामपर रावणकी जीत होती है तो उसका मतलब है कि हृदयमे ज्योति नही है, अंधेरा है। अगर रामकी रावणपर जय होती है और रावण बेकार हो जाता है या परास्त हो जाता है, तब हमारे भीतर तो ज्योति है ही, बाहर भी दिये-बत्ती जलानेका हमको हक हो जाता है। इसलिए अगर बाहरकी रोशनी भीतरकी ज्योतिका ही नमूना

---

[1] भ्रमधारण; [2] हालत।

है तब तो खैर है और अगर भीतर अधेरा है और बाहर हम दिये-बत्ती जलाते है और ऐसा मान लेते है कि यह तो सब चलता है, तब हम पाखडी और झूठे बनते है। मेरी उम्मीद है कि हम झूठे तो कभी न बनें।

मैंने कल आपसे कहा था कि काग्रेस-कार्य-समितिकी जो बैठके हो रही है, उस बारेमे कुछ तो मै आपसे कह सकूगा। कल तो समय नही रहा था, क्योकि १५ मिनटसे ज्यादा तो मै लेना नही चाहता। आज कार्यसमितिकी बैठकका तीसरा दिन है और अभी भी वह बैठी हुई है। एक बात तो जो बहुत बडी मुझको आपसे कहनेका अधिकार है, वह यह कि आज तीन दिनसे काग्रेसके ये लोग, जो कि कार्य-समितिमे है और दूसरे भी जिनको कि आचार्य कृपलानीने विशेष रूपसे बुलाया है, सब बैठे है। यह अच्छी बात है कि सब ऐसा मानते है कि काग्रेसकी, जबसे वह बनी है तबसे, अर्थात् ६० वर्षसे, यही एक नीति रही है कि काग्रेस कोई धर्मका प्रचार करनेवाली सस्था नही है। काग्रेसमे सब धर्मोके माननेवाले है या ऐसा कहो कि सब धर्मियोकी है, इसलिए किसी एक धर्मकी नही है। वह आम लोगोकी सस्था है और जो राज्य-प्रकरण है उसको मद्दे-नजर रखकर ही काग्रेसको चलना है। ऐसे अगर वह चलती है तो पीछे वह धार्मिक सस्था नही रहती। मान लीजिए, राज्य-प्रकरणमें एक चीज यह है कि हमे सबको खाना देना है, तब अगर काग्रेस सच्ची है तो उसे जितने इन्सान यहा रहते है उन सबको खाना देना चाहिए। अगर काग्रेस ऐसा करे कि जो लोग उसके साथ है या ऐसा कहो कि हिंदुओ और सिखोको ही खाना दे, क्योकि वे उसमे बडी तादादमें है और बाकी लोग भूखों मरें और ऐसा कहे कि हमको उनकी क्या पर्वाह पडी है, तब वह कहनेमे तो धार्मिक सस्था होगी, लेकिन असलमे अधर्मकी सस्था बन जायगी। अगर वह यह कहे कि जो लोग इसके पीछे है उनकी सेवा करो और दूसरोको काटो, तो वह कोई धर्म नही, बल्कि धर्मके नामपर अधर्म करना हुआ।

लेकिन अगर मै रामका नाम लेता हूं, और कोई दूसरा नाम नही

लेना, तो मुझे कोई कानून उसके लिए मजबूर नही कर सकता। यह बात दूसरी है कि मै खुद अपनेको मजबूर करू या अपनेको ऐसा बुज-दिल मानू कि अरे, फला आदमी है, उसके हाथमे तलवार है, अगर मैंने ऐसा नही किया तो वह मेरा गला काट देगा। अगर मै बुजदिल नही हू, तो जो यह कहता है कि खबरदार, तू रामका नाम इस जगहपर लेता है, तुझे अल्लाका ही नाम लेना होगा, तब मुझको यह हक होना चाहिए और हक है कि उसको यह कह दू कि मै अल्लाका नही, रामका ही नाम लूगा। तब वह इतना ही कर सकता है न, कि मेरा गला काटे, तो काट डाले। वह धर्मकी बात हो गई, जिसे हम निजी धर्म या व्यक्तिगत धर्म कहते है। इस धर्मको मिटानेवाली कोई ताकत दुनियामे है ही नही। हां, आदमी अपने आप मिटाना चाहे तो मिट सकता है या तब मिटता है जब दिलमे ज्योति न होकर अधेरा-ही-अधेरा होता है। उस हालतमे उसे अपने दिलसे तो कुछ सूझता नही, किसी दूसरेका सहारा ले लेता है, या कोई दूसरा उसको कहता है कि ऐसे चल, इस वक्त चल, तो वैसे ही वह चलता है, क्योकि वह अधेरेमे पड़ा हुआ होता है। लेकिन जो आदमी धर्मको पकडकर बैठा है, वह तो ईश्वरका ही आदेश मानेगा, किसी दूसरेका नही। ऐसे ही जब कोई सस्था चलती है और लोगोकी भलाईके लिए चलती है तो वह चीज सबके लिए लागू हो सकती है जो धर्म-सगत होती है, कोई दूसरी चीज नही। इस तरहसे वह एक अधर्मकी सस्था नही, धर्मकी सस्था बन जाती है। यही राज्य-प्रकरणका मेरी निगाहमे सच्चा अर्थ है और जबसे काग्रेसका जन्म हुआ है तबसे ही वह ऐसे चली है। इसलिए आपको खुश होना चाहिए, चाहे आप काग्रेस-मे है या नही। मै भी तो काग्रेसमे नही हू, उससे क्या हुआ? आखिर मै काग्रेसका खिदमतगार रहा हूं, उसकी सेवा की है। तब चवन्नी नही देता हू तो क्या? मुझको अगर प्रेसिडेट बनना है तो चवन्नी देनी चाहिए, लेकिन वह भी नही। ऐसे अगर आप सब मेरी तरहसे है तो बड़ी भारी बात है। अगर आपने काग्रेसके दफ्तरमे रजिस्टर करा लिया है तो भी ठीक है, अगर बाहर है, और फिर भी काग्रेसके भक्त है

और उसकी सेवा करते है तो भी ठीक है। तीन दिनसे मै कांग्रेस-कार्य-समितिमें बैठा हूं। उसमे इख्तलाफ[1] राय है और काफी है। आखिर वे इन्सान है, कोई पत्थर तो है नही; एक एक बात कहता है तो दूसरा दूसरी। विचारका विरोध तो हो सकता है, लेकिन आचारमे विरोध नही होना चाहिए। इसलिए इस विचार-विरोधमें ही उन्होने तीन दिन काटे। लेकिन इतना तो सब चाहते है कि कांग्रेस जैसी आज-तक रही है, ऐसी ही रहनी चाहिए। ऐसा करनेमे अगर वह मिट भी जाती है, तो मिट जाय। मिट तो नही सकती, हा, अल्पमतमे हो सकती है, और आज वह बहुमतमे है, इसमे मुझको तो शक है। क्योंकि अगर वह बहुमतमे होती तो हिंदुस्तानमे जो पाकिस्तान-जैसी चीज बनी, बननी नही चाहिए थी। यहा हिंदुस्तानमे मुसलमानोपर कितनी ज्यादतिया हुई है, उनके मै तो आपको बहुतसे उदाहरण बता सकता हूं, लेकिन मै क्या बताऊं ? मुझसे ज्यादा आप खुद जानते है। पाकिस्तानमे हिंदू और सिखोंपर क्या कम ज्यादतिया हुई है, इस बातको छोड दो। यह देखना हमारा काम नही है। दुनियाके दूसरे लोग धर्मका पालन नही करते, इसलिए क्या मै भी अपने धर्मका पालन न करू? इसलिए कांग्रेसको जो उसका मौलिक धर्म है, उसपर कायम रहना है, चाहे वह बहुमतमें रहे या अल्पमतमें। उसी निगाहसे वह अपना प्रस्ताव बना रही है। वह सीधी और सच्ची तरहसे बात करना चाहती है। तब सच्ची बात और क्या हो सकती है सिवा इसके, कि हम एक भी मुसलमानको मजबूर करके यहासे बाहर नही भेजना चाहते। मुसलमान भले है या बुरे है, यह बात इसमें नही आती। क्या हम ऐसा कहते है कि हिंदुस्तानमे सब फरिश्ते[2] ही रह सकते है, या फरिश्ते भी न सही, तो क्या जो अच्छे और भले लोग है, केवल वही रह सकते है, तब क्या हिंदुओ और सिखोमें कोई बुरे या बदमाश आदमी है ही नही और अगर है तो उनको आप क्या कहेगे? क्या यह कहोगे कि यहांसे चले जाओ,

---

[1] भिन्नता; [2] देवदूत।

नही तो तलवारसे गला कट जायगा। किसी आदमीको वदमाश मानने या उसका गला काटनेका आपको कोई हक नही है। हमने मुसलमानो-पर ज्यादतिया की। रोज-ब-रोज मेरे पास ऐसी चीजे आती रहती है, उनमे अतिशयोक्ति हो सकती है, लेकिन आखिर निचोड मै यही पाता हू कि वे सव सच्ची वाते है। काग्रेसकी तरफसे जव कोई चीज की जाती है तो फिर काग्रेस महासमितिको वुलाना पड़ता है। काग्रेसका आम अधिवेशन तो वर्षमे एक बार हुआ करता है। वह तो एक तमाशा-सा होता है, क्योकि वह इतना हजूम[1] होता है कि कोई आदमी ठीक तरहसे सोच भी नही सकता। लेकिन वे लोग जानते है कि काग्रेसकी जो महासमिति वनी है, वह सव सोच-विचारकर ठीक काम ही करती है, इसलिए वे सव उसपर दस्तखत दे देते है। सो काग्रेस महासमिति हमेशा तैयार रहती है और वह परसों यहा मिलनेवाली है। उसके सामने जो कुछ सामान रखना है वह आपकी इस कार्यसमितिको ही रखना है। वह काग्रेस महासमितिकी नौकर है। अगर वह कोई चीज वनाकर उनके सामने नही रखती है तो पीछे वे कह सकते है कि तुमने अच्छा काम नही किया है और तव उसको इस्तीफा देना पड़ता है। काग्रेस महासमिति कार्य-समितिको वना सकती है और मिटा भी सकती है। अगर वह कार्य-समितिकी चीजको वहाल न करे या उसमे कोई वड़ी तव्दीली[2] कर दे तव भी उसको इस्तीफा देना चाहिए। इसलिए कार्य-समिति कहती है कि हम जो कुछ करना चाहते है वह आपके नामसे ही करना है। अगर अपने नामसे ही वह कुछ कहती है तो उसका उतना असर नही होता। क्योकि १५ आदमी जमा होकर यह कहते है कि किसी मुसलमानको कत्ल नही करना है तो १५ आद-मियोके माननेसे क्या हुआ? अगर महासमितिके नामसे कहते है तो उसका असर वहुत वढता है। इसलिए तीन दिनसे मै तो काग्रेस-कार्यसमिति-को यही सलाह दे रहा हू कि वह विलकुल साफ-साफ कह दे कि हमको यही करना है। लोग इसमे राजी रहते है या नाराज, इसकी हम

---

[1] भीड़; [2] परिवर्तन।

कोई फिक्र न करे। अगर हम कांग्रेसके सच्चे सेवक है तो हमको यही करना चाहिए। अगर कांग्रेस महासमिति उसको फेकना चाहे तो फेक दे। आखिर हमको जगतके सामने खडा होना है और पाकिस्तानको भी। हम बहुत-सी बाते इसलिए करते है कि हमको जगत क्या कहेगा। मैं तो कहता हू कि जिस बातको आप सच मानते हैं वही करे और पीछे जगत भी उसको सच ही कहेगा। जो पच कहता है वह परमेश्वरकी आवाज होती है, ऐसा कहते है। जो जगत है, वह पचके समान है। इसलिए जो जगत कहता है, वही सही तरीकेसे ईश्वर-का न्याय है।

आज कार्यसमिति बैठी हुई है और कल भी बैठनेवाली है। मेरी तो यही प्रार्थना है कि वह कांग्रेस महासमितिके सामने ऐसा प्रस्ताव रखे जिससे हिंदुस्तानकी जय हो और सब लोग यहा आरामसे रह सके। इसके यह मानी नही है कि जो देशद्रोही हो उनको भी हम कुछ न कहे। लेकिन हम किसीको देशद्रोही मानकर ही न बैठ जायं। अगर कोई वास्तवमे देशद्रोही सिद्ध होता है तो उसको चाहे कत्ल कर दो, फासीपर चढा दो, गोली मार दो। पर मुसलमान वफादार हो नही सकता और केवल हिंदू व सिखोने ही वफादारीका इजारा ले लिया है, तो मै कहता हू कि यह बडी गुनाहकी बात होगी। कांग्रेस तो ऐसा काम नही करेगी, मुझको ऐसा पूरा विश्वास है। आप भी यही प्रार्थना करें कि कांग्रेस जो हिदायत करे उससे हम भी ऊचे जाय, सारा हिंदुस्तान ऊचा जाय और उसके साथ दूसरे हिस्सों-को भी ऊचा जाना है। कांग्रेस हिंदुस्तानको ऊचा उठानेके लिए ही बनी है, लेकिन कांग्रेस किसीसे कुछ छीनकर या किसीका धन लूटकर ऊचे नही जाना चाहती। सारे जगतके लिए कांग्रेस मरेगी, मगर वह किसीको मारेगी नही। मै कांग्रेसमे आया तबसे ही नही, कई वर्षोसे कांग्रेसका यह उद्देश्य रहा है। कांग्रेसने हमेशा इस बातकी कोशिश की है कि यूरोपसे जो लोग धन लूटनेके लिए इधर आते है, वह लूट बद हो, ताकि एशिया और अफ्रीकाके लोग चैनसे रह सके। यह काम करनेके लिए ही हिंदुस्तानको जिंदा रहना है और

इसी कामके लिए हिंदुस्तानकी आजादी है, किसी दूसरे कामके लिए नही है।

: १४८ :

१४ नवंबर १९४७

(आज शामके भजनको ही गांधीजीने अपनी चर्चाका विषय बनाते हुए कहा—)

भाइयो और वहनो,

जब मै आगाखान महलमे, जिसे मुझे, देवी सरोजिनी नायडू, मीराबेन और महादेवभाईको बद रखनेके लिए कैदखानेका रूप दे दिया गया था, उपवास कर रहा था, तब इस भजनने मुझपर अपना अधिकार कर लिया था। यहा मै उपवासके कारणोमें नही जाना चाहता।

उसके बारेमे मै सिर्फ इतना ही कहना चाहता हू कि उन २१ दिनोतक मै जो टिका रहा, उसकी वजह वह पानी नही था, जो मै पीता था, न वह सतरेका रस ही था जो कुछ दिनोतक मैने लिया था, जो मेरी गैरमामूली डाक्टरी देखरेख हो रही थी, वह भी उसका कारण नही थी, मगर मैने अपने भगवानको, जिसे मै राम कहता हू, अपने दिलमे बसा रखा था, उसी वजहसे मै टिका रहा। मै इस भजन-की लकीरोपर इतना मोहित था कि मैने सबधित लोगोसे कहा कि वे तारके जरिए इसके ठीक-ठीक शब्द भेजें, जिन्हे मै उस वक्त भूल गया था। मुझे जवाबी तारसे जब वह पूरा भजन मिला तो बड़ी खुशी हुई। भजनका भाव यह है कि रामनाम ही सब कुछ है और उसके सामने दूसरे देवताओका कोई महत्त्व नही है। अपने जीवनकी यह उपदेश भरी कहानी मै आप लोगोको इसलिए सुनाना चाहता हू कि अगले दिन यानी शनिवारको नई दिल्लीमे ए० आई० सी० सी० का जो महत्त्वपूर्ण अधिवेशन होनेवाला है, उसमे उसके मेंबर अपने दिलोमे

भगवानको रखकर सारे विचार और सारी चर्चाए करें। यह उन्हे करना ही होगा, क्योकि वे काग्रेसियोके नुमाइदे है। और इसलिए अगर उनके मुखिया कांग्रेसी अपने दिलोमे भगवानके बजाय शैतानको रखते है, तो वे अपने नमकके प्रति इन्साफ नही करते।

ए० आई० सी० सी० के सामने रखे जानेवाले प्रस्तावोंपर वर्किग कमेटीने पूरे तीन घंटोंतक चर्चा की। चर्चामे यह सवाल उठा कि किस तरह ऐसा वातावरण तैयार किया जाय जिससे सारे हिंदू और सिख निराश्रित इज्जत और हिफाजतके साथ पश्चिमी पजाबमे अपने-अपने घरोको लौटाये जा सके। वे इस नतीजेपर पहुचे कि बुराई पाकिस्तानसे ही शुरू हुई, मगर उन्होने यह भी महसूस किया कि जब बड़े पैमानेपर उस बुराईकी नकल की गई और हिंदुओं और सिखोने पूरबी पजाब और उसके नजदीकके यूनियनके हिस्सोंमे भयकर बदले लिये, तो बुराईकी शुरूआत करनेका वह सवाल फीका पड गया। अगर ए० आई० सी० सी० विश्वासके साथ यह कह सकती कि जहातक यूनियनका ताल्लुक है, पागलपनके दिन बीत गए और यूनियनके एक सिरेसे दूसरे सिरेतक सब लोग समझदार बन गए है, तो कमेटी पूरे विश्वास-के साथ यह भी कह सकती थी कि पाकिस्तान डोमिनियनको हिंदू और सिख निराश्रितोको इज्जत और पूरी हिफाजतके साथ अपने यहा वापस बुलानेके लिए लाचार होना पडेगा। यह हालत सिर्फ तभी पैदा की जा सकती है जब आप लोग और दूसरे हिंदू और सिख रावण या शैतानके बदले राम यानी भगवानको अपने दिलोमें स्थापित करे। क्योकि जब आप शैतानको अपने दिलोंसे हटा देगे और मौजूदा पागलपनको छोड़ देगे, तब हर एक मुसलमान बच्चा भी यहां उतनी ही आजादीसे घूम-फिर सकेगा, जितनी आजादीसे एक हिंदू या सिखका बच्चा घूमता है। इसमें मुझे कोई शक नही है कि तब जो मुसलमान निराश्रित लाचार होकर अपने घर छोड़ गए है, वे खुशीसे लौटेंगे और तब हर एक हिंदू और सिख निराश्रितके हिफाजत और इज्जतके साथ पाकिस्तानमे अपने घर लौटनेका रास्ता साफ हो जायगा।

क्या मेरे शब्द आप लोगोके दिलोमें गूज सकेंगे और ए० आई० सी० सी० समझदारी और इन्साफभरा फैसला कर सकेगी ?

: १४६ :

१५ नववर १९४७

भाइयो और वहनो,

मै महसूस करता हू कि आप लोग स्वभावत. यह उम्मीद करेंगे कि दोपहरको ए० आई० सी० सी० की बैठकमे मैंने जो कुछ कहा है वह आप लोगोको वतलाऊ। मगर मेरी उसे दोहरानेकी इच्छा नही होती। दर असल मैंने वहांपर वही बात कही थी, जो मै आप लोगोको इतने दिनोंसे कहता रहा हूं। अगर मुझे पूरी ईमानदारीसे राष्ट्रका पिता कहा जाता है, तो सिर्फ इसी अर्थमे सच है कि सन् १९१५ मे मेरे दक्खिन अफ्रीकासे लौटनेके वाद काग्रेसका जो स्वरूप वना, उसके वनानेमे मेरा वडा हाथ था। इसका मतलव यह है कि देशपर मेरा वडा असर था। मगर आज मै ऐसे असरका दावा नही कर सकता। इससे मुझे चिंता नही है, कम-से-कम वह होनी नही चाहिए। सवको सिर्फ अपना फर्ज अदा करना चाहिए और नतीजेको भगवानके हाथोमे छोड़ देना चाहिए। भगवानकी मर्जीके वगैर कुछ भी नही होता। हमारा फर्ज सिर्फ कोशिश करना है। इसलिए मै तो ए० आई० सी० सी०की वैठकोमे इस फर्जको ध्यानमे रखकर गया था कि अगर वैठककी कार्रवाई शुरू होनेसे पहले मेम्वरोसे कुछ कहनेकी मुझे इजाजत मिल गई, तो मै उनके सामने वह वात रख दू जिसे मै सच मानता हूं।

आप लोगोसे मै कट्रोलके वारेमे कुछ कहना चाहता हू। ए० आई० सी० सी०की वैठकमे चूकि मै मौजूदा अहमियत[1] रखनेवाले दूसरे

---

[1] महत्त्व।

मामलोपर ज्यादा देरतक बोला, इसलिए कंट्रोलके विषयका सिर्फ इशाराभर कर सका।

मै महसूस करता हू कि कट्रोल रखना गुनाह है। कंट्रोलका तरीका लडाईके दिनोमे अच्छा रहा होगा। एक फौजी देशके लिए वह आज भी अच्छा हो सकता है। मगर हिंदुस्तानके लिए वह नुकसानदेह है। मुझे विश्वास है कि देशमे अनाज या कपडेकी कोई कमी नही है। इस साल बरसातने हमे धोखा नही दिया है। हमारे देशमे काफी कपास है और चरखे और करघेपर काम करनेवाले काफी लोग है। इसके अलावा, देशमे मिले है। इसलिए मुझे लगता है कि ये दोनो कंट्रोल बुरे है। हमारे यहा दूसरे कट्रोल भी है, जैसे पेट्रोल, शक्कर वगैराका कट्रोल। इन चीजोपर कट्रोल रखनेमे मै कोई मौजू[1] कारण नही देखता। इससे लोग आलसी और पराधीन बनते है। आलस और पराधीनता देशके लिए किसी भी दिन बुरी चीजे है। इन कट्रोलोके बारेमें मेरे पास रोजाना शिकायते आती है। मुझे उम्मीद है कि देशके नुमाइंदे समझदारी-भरा फैसला करेगे और सरकारको इन घूसखोरी, पाखड और काले बाजारको बढ़ावा देनेवाले कट्रोलोको हटानेकी सलाह देगे।

: १५० :

१६ नवबर १९४७

भाइयो और बहनो,

आज शामको गाये गए भजनमे कहा गया है कि इन्सानका बड़े-से-बड़ा उद्योग भगवानको पानेकी कोशिश करनेमे है। वह मदिरों, मूर्तियों या इन्सानके हाथो बनाई हुई पूजाकी जगहोंमे नही मिल सकता और न उसे व्रतों और उपवासोके जरिए ही पाया जा सकता है। ईश्वर सिर्फ प्यारके ज़रिए मिल सकता है, और वह प्यार लौकिक नही अलौकिक

---

[1] उचित।

होना चाहिए। मीराबाई, जो हर चीजमे भगवानको देखती थी, ऐसे प्यारकी जिदगी बिताती थी। उनके लिए भगवान ही सब कुछ था।

रामपुर स्टेटके शासक मुसलमान है, मगर इसका यह मतलब नही है कि वह एक मुस्लिम स्टेट है। कई साल पहले मरहूम[1] अलीभाई मुझे वहा ले गए थे और मै वहा उनके घरमे ठहरा था। मुझे उस वक्तके नवाब साहबसे भी मिलनेका मौका मिला था। क्योकि वे उस जमानेके मशहूर राष्ट्रीय मुसलमान मरहूम हकीम साहब अजमलखान और मरहूम डॉक्टर असारीके दोस्त थे। तब वहा हिंदू और मुसलमान आजके बनिस्बत ज्यादा शाति और मेल-जोलसे रहते थे। मगर पिछले इतवारको जो हिंदू दोस्त वहासे मुझे मिलनेके लिए आए थे, उन्होने दूसरी ही कहानी सुनाई। उन्होने कहा कि अगरचे वह स्टेट हिंदुस्तानी सघमे शामिल हो गई है, फिर भी मुस्लिम लीगका छल-कपटभरा असर वहां है। अगर वही एक रुकावट होती, तो उसपर आसानीसे काबू पाया जा सकता था। मगर वहा हिंदू महासभा भी है, जिसे राष्ट्रीय स्वयसेवक-सघके आदमियोसे मदद मिलती है, जिनकी इच्छा यह है कि सारे मुसलमानोको हिंदुस्तानी सघसे निकाल दिया जाय।

सवाल यह है कि जो काग्रेस-जन अपने काग्रेसके मकसदके प्रति वफादार है, वे अपनी हालत कैसे अच्छी बनावे ? क्या वे कामयाबीकी आशासे सत्याग्रह कर सकते है ? यह जानकर उन लोगोंको खुशी हुई कि काग्रेस महासमिति काग्रेसके मकसदपर मजबूतीसे जमी हुई है और ऐसे हिंदुस्तानके बननेसे इन्कार करती है, जिसमे सिर्फ हिंदू ही मालिको-जैसे रह सके। काग्रेसके उसूल और मकसद इतने उदार है कि उसमे देशकी सारी जातियां शामिल हो जाती है। उसमे ओछी सांप्रदायिकताके लिए कोई जगह नही है। वह सियासी सस्थाओमे सबसे पुरानी है। लोगोकी सेवा ही उसका एकमात्र आदर्श है। ए० आई० सी० सी० मे जो कुछ हो रहा है, उससे उन्हे अपनी लड़ाईके लिए बल

[1] स्वर्गीय।

मिला हूं। फिर भी, इसके बारेमें वे मेरी राय चाहते थे। मैंने कहा कि मै आपके वहांकी हालत नही जानता, इसलिए कोई नियम तो नही बना सकता। न मुझे उन सब बातोंका अध्ययन करनेका समय है। लेकिन इतना तो मैं विश्वासके साथ कह सकता हूं कि सत्याग्रह दुनियामें सबसे बड़ी ताकत है, जिसके सामने आपका बताया हुआ विरोधी सगठन लबे समयतक टिक नही सकता।

आजकल हथियारबंद या दूसरी तरहके किसी भी विरोधको सत्याग्रहका नाम देना एक फैशन-सा हो गया है। इससे समाजको नुकसान होता है। इसलिए अगर आप लोग सत्याग्रहके पूरे अर्थको समझ ले और यह जान ले कि सत्य और प्रेमके रूपमें जीता-जागता भगवान सत्याग्रहीके साथ रहता है, तो आपको यह माननेमें कोई हिचकिचाहट नही होगी कि सत्याग्रहपर कोई विजय नही पा सकता। हिंदू-महासभा और राष्ट्रीय स्वयंसेवक-संघके बारेमे मुझे जो कहना पड़ा है उसका मुझे दु.ख है। मुझे अपनी गलती जानकर खुशी होगी। मैं राष्ट्रीय स्वयसेवक-सघके मुखियासे मिला हूं। मै इस संघकी एक बैठकमें भी शामिल हुआ था। तबसे मुझे उसकी बैठकमे जानेके लिए डांटा जाता रहा है और मेरे पास राष्ट्रीय स्वयसेवक-सघके बारेमें शिकायतोके कई खत आए है।

हालांकि हम सब अपने देशमे सांप्रदायिक झगड़ेकी आगको बुझानेमें लगे है, तो भी हमे हिंदुस्तानके बाहर रहनेवाले अपने भाइयोको नही भूलना चाहिए। आप जानते है कि सयुक्त-राष्ट्र-संघके सामने हमारा हिंदुस्तानी प्रतिनिधि-मडल दक्षिण अफ्रीकाके हिंदुस्तानियोके अधिकारोंके लिए कितनी बहादुरी और एकतासे लड़ रहा है। आप सब श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडितको जानते है। वह हिंदुस्तानी नुमाइंदा-मंडलकी मुखिया इसलिए नही है कि पंडित जवाहरलालकी बहन हैं, बल्कि इसलिए हैं कि वह इसके लायक है और अपना काम होशियारीसे करती है। उनके साथ बडे अच्छे-अच्छे लोग है और वे सब एक रायसे वहां बोलते है। मुझे सबसे बड़ी खुशी जफरुल्ला साहब और इस्पहानी साहबके भाषणोसे हुई, जो आजके अखबारोमे छपे

है। उन्होने सयुक्त राष्ट्र-संघके लोगोके सामने साफ-साफ शब्दोंमें यह कह दिया कि दक्षिण अफ्रीकामे हिंदुस्तानियोके साथ वही वरताव नही किया जाता जो गोरोके साथ किया जाता है। वहा उनकी वेइज्जती की जाती है और उनके साथ अछूतोकी तरह वरताव करके उनका बहिष्कार किया जाता है। यह सच है कि दक्षिण अफ्रीकाके हिंदुस्तानी कगाल और भूखे नही है। लेकिन आदमी सिर्फ रोटीसे ही नही जी सकता। मानव-अधिकारोके सामने पैसा कोई चीज नही है। और ये हक दक्षिण अफ्रीकाकी सरकार हिंदुस्तानियोको नही देती। हिंदुस्तानके हिंदू और मुसलमान विदेशोमे रहनेवाले हिंदुस्तानियोके सवालोपर दो-राय नही है, जो यह साबित करता है कि दो राष्ट्रोका उसूल गलत है। इससे मैंने जो सबक सीखा है, और आप लोगोंको मेरे कहनेसे जो सबक सीखना चाहिए, वह यह है कि दुनियामे प्रेम सबसे ऊची चीज है। अगर हिंदुस्तानके बाहर हिंदू और मुसलमान एक आवाजसे बोल सकते है, तो यहा भी वे जरूर ऐसा कर सकते है, वशर्ते उनके दिलोमे प्रेम हो। गलती इन्सानसे होती ही है। लेकिन वह चाहे तो अपनी गलतियोको सुधार भी सकता है। यह भी इन्सानके स्वभावमे है। माफ करना और भूल जाना हमेशा सभव है। अगर आज हम ऐसा कर सके और बाहरकी तरह हिंदुस्तानमे भी एक आवाजसे बोल सके, तो हम आजकी मुसीवतोसे पार हो जायगे। जहां-तक दक्षिण अफ्रीकाका सबध है, मुझे आशा है कि वहाकी सरकार और वहाके गोरे उस बातसे फायदा उठाएगे जो इस मामलेमे मशहूर हिंदू और मुसलमान एक रायसे साफ-साफ कह रहे है।

: १५१ :

मौनवार, १७ नवबर १९४७

(लिखित सदेश)

कल मै रामपुर और अपने उन भाइयोके बारेमे बोला था जो

दक्षिणी अफ्रीकामे है। मुझे लगता है कि आज मुझे इस विषयपर ज्यादा खुलकर कहना चाहिए। मै १८९३ से १९१३ तक, २० साल दक्षिण अफ्रीकामे रहा हू। उस लबे अर्सेमे, जब कि मेरा जीवन घुल रहा था, शायद एक ही साल छूटा होगा, मै हिंदुस्तानियोंके साथ ही गहरे सबधमे नही आया, बल्कि उन सफेद लोगोके साथ भी, जो कि इस बड़े देशमे आकर बस गए है। तबसे अबतक अगर दक्षिण अफ्रीका आगे बढा है तो हिंदुस्तानने दिन दुगुनी और रात चौगुनी तरक्की की है। जो कल नामुमकिन मालूम होता था वह आज हो गया है। इसके कारणोमे जानेकी आवश्यकता नही। हकीकत यह है कि हिंदुस्तान बर्तानवी[1] कामनवेल्थ (राष्ट्रसमूह) मे आ गया है, याने इसका दर्जा वही है जो दक्षिणी अफ्रीकाका। क्या एक उपनिवेशके लोगोको दूसरे उपनिवेशमे गुलाम माना जाना चाहिए? एक एशियाई कौम बर्तानवी राष्ट्रसमूहके इतिहासमे पहली दफा सब सदस्योकी मर्जीसे शामिल होती है। अब देखिए कि आरेंजियाकी हकूमत या वहाके डाक्टर एस० पी० बर्नार्डने हिंदुस्तानके बर्तानवी राष्ट्रसमूहमे दाखलेके पांच दिन बाद डरबनकी नेटाल इडियन काग्रेसको क्या सदेश भेजा। उन्होंने लिखा—"क्योंकि आप नए, उपनिवेशकी नई आजादी मना रहे है जो आपके नजदीक हिंदुस्तानके इतिहासमे एक बडा दिन है, इसलिए मै आशा करता हूं कि दक्षिणी अफ्रीकाके सब हिंदुस्तानी अपने आप नए उपनिवेशमे चले जायगे और वहा जाकर उस सदेश का प्रचार करेगे जो उन्हे दक्षिणी अफ्रीकामें दिया गया है, याने शांति और अनुशासनसे रहना और उन मजहबी झगडोसे बचना जिनकी वजहसे आज हिंदुस्तानमे हजारो मारे जा रहे है।" यह बात खास देखनेकी है। साफ जाहिर है कि डाक्टर बर्नार्डको इसमे शक है कि यह दाखिला एक बडा दिन था और फिर वह नेटाल काग्रेसको बिन-मागी सलाह देते है कि दक्षिणी अफ्रीकाके हिंदुस्तानियोको हिंदुस्तान चला जाना

---

[1] ब्रिटिश।

चाहिए और उस संदेशका प्रचार करना चाहिए जो उन्होने दक्षिणी अफ्रीकामे सीखा है, याने शांति और जब्तसे रहना और मज-हबी दंगोमे न पड़ना। मुझे बहुत डर है कि दक्षिणी अफ्रीकाका आम सफेद आदमी इसी तरह सोचता है, इसलिए हमारे देशवालोके रास्तेमें तरह-तरहके अडगे लगाए जाते है। उनका दोष यही है कि वे एशियाके है और उनका रग काला है।

दक्षिणी अफ्रीकाके सबसे आला पश्चिमी लोगोसे मै प्रार्थना करता हूं कि वे अपने इस तास्सुबपर[1] फिरसे सोचें जो उन्हे एशिया और काले रगके वरखिलाफ बनाता है। उनके बीचमे हब्शियोकी बहुत बड़ी आबादी पड़ी है। कुछ लिहाजसे उनके साथ वर्ताव एशियावालोके साथके वर्तावसे भी बदतर है। मै उन यूरोपियनोसे, जो वहां जाकर बस गए है, जोरसे कहूगा कि वे जमानेको पहचाने। या तो यह तास्सुब हर लिहाजसे गलत है या अग्रेजोने और वर्तानियाके बड़े राष्ट्रसमूहके दूसरे सदस्योंने एशियाई कौमोको सदस्य बनाकर ऐसी गलती की है, जो माफ नही की जा सकती। बर्मा आजाद होनेको है और लका भी राष्ट्रसमूहका जल्द सदस्य बन जायगा। इसका मतलब क्या है?

मुझे सिखाया जाता है कि राष्ट्रसमूहका सदस्य होना अगर आजादीसे ज्यादा अच्छा नही तो कम-से-कम उसके बराबर है। इन आजाद हकूमतोके जिम्मेदार मर्द और औरतोको इस बातपर खूब सोचना होगा कि आजादी लेनेके बाद वे क्या करेंगे। आज बहुत-सी आजाद हकूमते बनानेका आदोलन चल रहा है। यह ठीक और अच्छी चीज है, लेकिन क्या इसका अंत यह होगा कि एक और लड़ाई होगी जो पिछली दो लड़ाइयोंसे, अगर मुमकिन हुआ तो, ज्यादा खतरनाक होगी, या इसका नतीजा यह होगा, जैसा कि होना चाहिए, कि मनुष्य-जातिका भाई-चारा बढ़ेगा? एक उपनिषदका श्लोक है—"मनुष्य जैसा सोचता है वैसा ही बन जाता है।" सियाने

---

[1] पक्षपात पर।

कंट्रोलोंकी जो फेहरिस्त मेरे सामने है उससे मेरे-जैसा सादा आदमी तो हैरान हो जाता है। मैं तो केवल इतना ही कहता हूं कि अगर कंट्रोलोंके साइन्स नामकी कोई चीज है तो उसको ठंढे दिलसे जांचना होगा। इसके बाद लोगोंको इस बातकी तालीम देनी होगी कि सब चीजोंपर कंट्रोलका क्या मतलब है और खास-खास चीजोंपर कंट्रोलका क्या अर्थ है। जो फेहरिस्त मुझे मिली है उसमेंसे ऐसे ही कुछ नमूने निकालकर नीचे देता हूं—एक्सचेंजपर, रुपया लगानेपर, कैपिटल, इंश्योरेंस, बैंकोंकी शाखाएं खोलनेपर, इंश्योरेंसमें पैसा लगानेपर, मुल्कसे बाहर जाने और अंदर आनेवाली हर किस्मकी चीजोंपर, अनाजपर, चीनीपर, गुड़, गन्ने और शर्बतपर, वनस्पतिपर, पेट्रोल और मिट्टीके तेलपर, सीमेंटपर, फौलादपर, अभ्रकपर, कोयलेपर, चीजोंके इधर-उधर ढोनेपर, मशीनरी लगाने और फैक्टरी खोलनेपर, कुछ सूबोंमें मोटरें बेचनेपर, चायकी खेतीपर, कपड़ेपर, जिनमें गरम कपड़े भी शामिल हैं, पावरपर, अल्कोहलपर, कागजपर।

: १५२ :

१८ नवंबर १९४७

भाइयो और बहनो,

आप लोगोंने तो वे सब प्रस्ताव पढ़े ही होंगे जो अखिल भारतीय कांग्रेस-कमेटीमें पास हो गए हैं। उनमें काफी प्रस्ताव तो ऐसे हैं जो हमारे जीवनमें—और जीवनके बड़े हिस्सेमें, ऐसा कहो—हर एक आदमीके कामके हैं। वे ऐसे नहीं हैं जिनपर सिर्फ हकूमतको अमल करना है। उनपर जवाहरलाल, राजेंद्रप्रसाद—अब तो राजेंद्रबाबू निकल गए—और दूसरोंको भी अमल करना है; जैसे कि कंट्रोल। खानेपर, पहननेपर, हर चीजपर जिनपर कंट्रोल हैं उन्हें अमल करना है। ऐसे ही हमको भी करना है। अगर हम दगाबाजी करें और कानूनकी पाबंदी न करें तो इसका नतीजा खतरनाक होगा। जब हम एक

गज कपड़ेसे काम चला सकते है तो क्यों दस गज जमा कर रखे और सोचे कि ले तो ले, घरमे पड़ा ही रहेगा? जब हम ऐसे बन जायंगे कि हम अपना ही देखे और हिंदुस्तानके न हों तो हम बद-माश हो जायगे ।

अखिल भारतीय काग्रेस-कमेटीके अभीके प्रस्ताव ऐसे है कि मै चाहता था कि एक-एक प्रस्ताव सबको समझाऊ। अभी तो यहीं हू, मौका मिल गया तो सुना दूगा। लेकिन उनका क्या मतलब है यह तो आज कह दू। जो लोग डरके मारे घर छोड़कर दूसरी जगह चले गए है उनको फिर उनके घरोमे बसानेका जो प्रस्ताव है वह हर एक आदमीपर लागू होता है। हम कन्याकुमारीसे लेकर काश्मीरतक जितने रहनेवाले है वे सब हिंदुस्तानके है। हिंदुस्तानके दो टुकड़े हो गए तो क्या, हम सब भाई-भाई है, इसलिए हम सबपर जिम्मेदारी आ जाती है। अगर एक ही आदमी अपना पेट भरता जाता है और गरीबीकी परवाह नही करता है, चाहे वह स्वादके लिए ही खाता हो, तो वह चोरी करता है और हिंदुस्तानका गुनहगार बन जाता है। हिंदुस्तानको जितना अनाज चाहिए उतना उसके पास नही है तो क्या हुआ? गरीबोको भी तो अनाज मिलना ही चाहिए। धनी लोगोंको अगर एक, दो, चार व छः छटाक मिले और तो भी वे उसीसे ही गुजर करे तब तो मै समझूगा कि धनी और गरीब सब एक हो गए। दूसरोको छोड़कर मै जिस धनीके घर पडा हू उसकी बात तो कहू। आप मुझसे पूछे कि घनश्यामदासको उनका जितना हिस्सा मिलता है, क्या उतनेसे ही उनका गुजर हो जाता है, तो मै कहूगा कि नही होता। आखिर मुझे सच्ची बात तो कहना ही है। वह धनवान है तो उन्हे हर तरहसे सब मिल जाता है। मुझको पता नही चलता कि जितने लोग यहां आते है उन्हे दूध मिलता है या नही। मुझको दूध मिल जाता है, वह कहासे आता है, कैसे आता है यह मै थोडे देखता हूं। एक बकरी रखो, दो बकरी रखो; वह महात्मा है न, तो उसे दूध दो, जितना गेहू चाहिए उतना अच्छा-से-अच्छा गेहू दो; क्योंकि वह महात्मा है न! मै यह थोड़े पूछता हू कि यह

कहांसे आता है—महात्माको भाजी चाहिए तो भाजी दो, फल चाहिए तो फल दो। कार्य-समितिके जितने सदस्य आते है उनको कुछ तो देना ही है तो फलका रस दो। करोडोकी जायदाद लेकर बैठे है। ये तो धनी लोगोके हाल है। यह सब करोड़पतियोको मिल सकता है। लेकिन तव भी वे भूखे रहे तभी तो कुछ हो सकता है, नही तो गरीव कहासे लाए ? धनी लोग तथा जो तिजारत करते है वे अनुचित मुनाफा न लें और सच्चे व्यापारी वनें। वे मुनाफा ले; लेकिन कितना ? जितना पेट भरनेको चाहिए उतना ही ले। अगर सब एक ही तरह मुनाफा लें तो फिर क्या! अनाजपर कंट्रोल क्या ? कोई कंट्रोल नही चाहिए। इसी तरहसे सव हो जायं तो अच्छा है।

आला दर्जेकी चीज यह है कि हम तवतक शातिसे नही बैठ सकते जवतक सव शरणार्थी अपने-अपने घर नही लौट जाते। मुसलमान आया तो उसको काट डाले; वह पाकिस्तानसे डरके मारे जायदाद छोडकर भागकर आया है, इसलिए यहासे उसे हटा दे, ऐसा करना पागलपन है। अव तो अखिल भारतीय काग्रेस-कमेटीने हुक्म दिया है कि जो भाई जहा पड़े है उनको वही रखना है और आरामसे रखना है और जो लोग खुशीसे घर लौटना चाहते है उन्हे लौटाना है। लोग खूवसूरत घर छोडकर आ गए, लखपति, करोडपति सैकडों और हजारो थे वे घरवार छोडकर आ गए, लेकिन जो वेचारे गरीव थे वे तो अव भी पड़े हुए है। मै आज तो सव सुनाना नही चाहता; लेकिन हमारा फर्ज क्या है, वह हमारा प्रस्ताव वताता है। वही आला दर्जेकी चीज है। वे जो मुसलमान रहते है वे निकम्मे है, ऐसा मानकर बैठे तो वह वडा गुनाह हो जाता है। यह सवका परमधर्म हो जाता है कि हम किसीको न निकालें। तीन-चार दिन पहले कार्य-समितिका प्रस्ताव भी लोगोने देखा और अखवारोमे जो इशारा आया था उसे भी देखा। तो भी मुसलमान जा रहे है। लोग कहते है कि तुमने जोर दिया तो काग्रेस महासमितिने उसे मान लिया। उन्हे—मुसलमानोको—तो यहासे चला ही जाना चाहिए, नही तो वे मारे जाएगे। लोग पूछते है कि क्या तुम उन्हे मरने दोगे ? मै क्या करूगा, यह

तो मैंने बता दिया है; मैं करूंगा या मरूंगा। जब मैं मरनेको तैयार हूं तो अगर मुसलमानोंको मरना पड़े तो वे भी मरें। वे जाड़ेके दिनोंमें ३०० मील चलकर जाएं. हम ऐसे निष्ठुर बन गए हैं! लोग कहते हैं कि कैंपोंमें ज्यादा आदमी नहीं मरते हैं—रोज दस-बीस मरते हैं। अब अगर मानो कि पांच हजार, दस हजार, पचास हजारमें इतने मरें तो इस हिसाबसे हिंदुस्तानमें कितने मरते हैं, क्या इसकी परवाह नहीं कि वे कैसे मरते हैं? किसीको खाना नहीं मिलता, किसीको हैजा हो जाता है, किसीको पेचिश हो जाती है, किसीको कुछ हो जाता है, इस तरहसे वे मरते हैं। लेकिन क्यों मरते हैं, क्या इसकी किसीको परवाह है? हम परवाह करते हैं कि हमारे लिए खाना है कि नहीं और सब कुछ है कि नहीं। हम देखते रहते हैं कि जहांसे मुसलमान भाग गया वहां हिंदू और सिखको बसाना है। हां, हर जगह तो ऐसा हुआ नहीं, तो भी हुआ तो है। इससे मुझको बहुत दुःख पहुंचा और मैंने कई बार आप लोगोंको बताया भी है। अब तो कांग्रेस महासमितिने भी कह दिया कि ऐसा जो हुआ है वह बहुत बुरा हुआ। यह बात करोड़ोंतक पहुंचाना है तो वह एक दिनमें तो हो नहीं सकता। हकूमतमें बड़े-बड़े पड़े हैं—जवाहर, सरदार, राजेंद्रबाबू. लेकिन अब तो राजेंद्रबाबू नहीं रहे—उनको क्या मालूम करना! इसलिए कह दिया कि हां, करेंगे। मैंने सुना है कि अब तो कांग्रेसमैन भी ऐसे ही बन गए हैं कि वे समझते हैं कि यहां अब मुसलमानोंको रहना ही नहीं चाहिए। वे समझते हैं कि तभी हिंदू-धर्मका भला हो सकता है, हिंदू-धर्म ऊंचा जा सकता है। लेकिन वे जानते नहीं हैं कि दिन-ब-दिन हिंदू-धर्म नीचे जा रहा है। अगर वे दिलको नहीं बदलते हैं तो यह बहुत खतरनाक बात है। कांग्रेस-कमेटीमें जितने प्रतिनिधि आए हैं वे सारे हिंदुस्तानके प्रतिनिधि हैं। वे अगर सब एक ही दिलके हैं, और होना चाहिए. तो हिंदुस्तानकी शक्ल बदल जायगी। उनका यह धर्म हो जाता है कि वे दूसरा होने ही नहीं देंगे। हिंदुस्तानसे जितने चले गए हैं, उनको किस तरह लायें यही उनका बड़ा काम है। हम तबतक परेशान रहेंगे जबतक हिंदुस्तानसे जितने मुसलमान

गए हैं उन्हे यहा ले न आए। ऐसा वातावरण पैदा करना है और यह मुश्किल काम नही है। यह तो खूबीकी बात है कि यहा अभी ३।। करोड मुसलमान हैं—कोई जानता नही है कि कितने गए और कितने आनेवाले है। मान लो कि जितने गए है वे सब आ गए तो वे अपने घरमे रहें, उनका घर पड़ा है, उसमे हमको कोई खर्च तो करना नही पडेगा। उनका जो घर है वह हम दे दें, इतना ही हमारा काम है। लेकिन सब घर खाली कहा है? उनमे तो शरणार्थी घुस गए है। तो भी उनको बसाना तो होगा ही। अगर हम ऊटपटाग बातें कर लेते है, लेकिन दिल साफ नहीं रखते तो बाहरवाले कहेगे कि जो हिंदुस्तानके नुमाइदे आये थे वे क्या ऐसे खोटे थे? मै समझता हू कि वे ऐसे नही है। वे दिन चले गए जब हम गुस्सा रखते थे कि वे चले जाए। आज हम सबको भाई-भाई समझते है।

मै समझ लू कि दिल्लीके लोग अच्छे हो गए है, गुडगावके लोग अच्छे हो गए है। मै हालहीमे जब पानीपत गया था तब वहा सब ठीक रहते थे, लेकिन अब सुनता हू कि वहा जो शरणार्थी आए है वे मुसलमानोके घरमे चले गए है और अब मुसलमान पाकिस्तान जाना चाहते है। वे कह सकते है कि हम खुशीसे पाकिस्तान तो जाना नही चाहते, क्योंकि वहा खीर या पकवान तो पड़ा नही है, पहननेको अच्छा कपडा भी नही है और यह हो भी कैसे सकता है, जैसे हम यहां है वैसे वे वहा है। और आखिर वहा बहुत इतजाम है और यहा नही, ऐसी बात तो है नही। वहा जो गए है वे लिखते है कि अगर हम हिंदुस्तानमे रहते तो अच्छा था। अब घरबार छोड़ दिया—कैंपोमे पड़े है, बडे परेशान है। ऐसा तो होगा ही। तो फिर क्या वजह है कि पानीपतके मुसलमान पाकिस्तान जाना चाहते है? अगर ऐसी बात है तो पानीपत मेरे लिए कसौटी बन जाती है और मुझे भी शायद वहा जाना पड जाय। वह यहांसे ५० मील दूर-पर तो है। वह दूर नही कहा जा सकता, वह दिल्ली ही-जैसा है। अब अगर वहाके एक भी मुसलमानको पाकिस्तान जाना पड़ेगा तो मुझे चुभेगा और आपको भी चुभेगा। हां, जब वे रहते है तो उन्हे

और सिखोकी वहुत वडी भीड़ इकट्ठी हुई थी। वह दुकान थी तो मुसलमानकी लेकिन उसका मालिक उसे छोड़कर चला गया था। वह इस शर्तपर एक निराश्रितको दी गई थी कि मालिकके लौट आनेपर उसे दुकान छोड़ देनी होगी। खुशीकी वात है कि दुकानका मालिक लौट आया। वह हमेशाके लिए अपना व्यापार नही छोडना चाहता था। जिस अफसरके हाथमे यह काम था, वह दुकानमे रहनेवाले निराश्रितके पास गया और उसे असल मालिकके लिए दुकान खाली कर देनेको कहा। पहले तो वह निराश्रित कुछ हिचकिचाया, लेकिन वादमे उसने कहा कि आप जव शामको दुकानका कब्जा लेनेके लिए आएगे, तो मै जरूर खाली कर दूगा। अफसर जब शामको दुकान-पर लौटा, तो उसे पता चला कि वहां रहनेवाले निराश्रितने दुकानका कब्जा उसके मालिकको सौपनेके वजाय अपने साथियों और दोस्तोंको इस वातकी सूचना कर दी, जो, कहा जाता है कि वहा धमकी दिखाने-के लिए इकट्ठे हो गए थे। चादनी चौकके थोड़ेसे पुलिसवाले उस भीडको कावूमे न रख सके। इसलिए उन्होने ज्यादा मदद बुलाई। पुलिस या फौजके सिपाही आए और उन्होने हवामे गोली चलाई। डरी हुई भीड़ विखर तो गई, लेकिन साथ ही एक राहगीरको छुरेसे घायल भी करती गई। तकदीरसे वह घाव जानलेवा साबित न हुआ। लेकिन फिसादी लोगोके प्रदर्शनका अजीब नतीजा हुआ! वह दुकान खाली नही की गई। मै नही जानता कि आखिरमे उस अफ-सरके आदेशको ठुकरा दिया गया या इस वक्ततक वह दुकान खाली कर दी गई है। फिर भी, मुझे आशा है कि हिंदुस्तानको जो वहुमूल्य आजादी मिली है, उसमे अगर सरकारी सत्ताको सच्ची सत्ता वने रहना है, तो वह अपराधीको अपराधकी सजा दिये विना न रहेगी। वर्ना सरकारकी सत्ता सत्ता ही न रह जायगी। मुझसे कहा गया है कि हिंदुओ और सिखोकी वह भीड़ दो हजारसे कम न रही होगी।

यह खवर जिस तरह मुझे मिली, उसे कुछ कम करके ही मैंने सुनाया है। अगर फिर भी उसमे सुधारकी कोई गुंजाइश हुई और वह मेरे ध्यानमे लाई गई, तो मै खुशीसे आपको वता दूगा।

यही सब कुछ नहीं है। दिल्लीके दूसरे हिस्सेमें मुसलमानोंको अपने घरोसे जबरन निकालनेकी कोशिश की जा रही है, ताकि वहां हिंदू और सिख निराश्रितोको जगह दी जा सके। इसका तरीक़ा यह है कि सिख लोग अपनी तलवारें म्यानसे निकालकर घुमाते हैं और मुसलमानोंको अपने घर न छोड़नेपर भयानक बदला लेनेकी धमकी देकर डराते है। मुझसे यह भी कहा गया है कि सिख शराब पीते है, जिसके नतीजोका आसानीसे अंदाज़ा लगाया जा सकता है। वे नंगी तलवारे लेकर नाचते है, जिससे रास्ता चलनेवाले लोग डर जाते हैं। मुझसे यह भी कहा गया है कि चांदनी चौकमे और उसके आसपास यह रिवाज है कि मुसलमान कबाब या गोश्तकी बनी दूसरी खानेकी चीजे नही बेचते, लेकिन सिख और शायद दूसरे निराश्रित भी बंद की हुई ये चीजे वहां आजादीसे बेचते है। इससे उस मोहल्लेके हिंदुओंको बडा दु.ख होता है। यह बुराई यहांतक बढ़ गई है कि लोगोंको चांदनी चौकमे खड़ी भीड़मेंसे निकलना मुश्किल मालूम होता है। उन्हें डर लगता है कि कहीं उनके साथ बुरा या असभ्य बरताव न किया जाय। मैं अपने निराश्रित दोस्तोसे अपील करता हूं कि वे अपने खातिर और अपने देशके खातिर इस तरहकी बातें न करे।

कृपाणोके बारेमे थोड़े समयके लिए यह कानून बना दिया गया है कि सिख एक खास नापसे बड़ी कृपाण नही रख सकते। इस पाबंदीके दरमियान बहुतसे सिख दोस्त मेरे पास आते है और मुझसे कहते हैं कि मै अपना असर डालकर एक खास नापसे बड़ी कृपाण रखनेपर लगाई पाबंदीको हटानेकी कोशिश करू। उन्होंने कुछ साल पहले दिया हुआ, प्रिवी कौंसिलका वह फैसला मुझे कह सुनाया जिसमे कहा गया है कि कोई सिख किसी भी नापकी कृपाण अपने साथ रख सकता है। मैंने वह फैसला नही पढ़ा हैं। मैं समझता हूं कि जजोने कृपाणका अर्थ किसी भी नापकी 'तलवार' लगाया है। उस समयकी पंजाब-सरकारने प्रिवी कौंसिलके फैसलेपर अमल करनेके लिए यह ऐलान किया कि हर आदमी तलवार रख सकता है। इसलिए पंजाबमे कोई भी आदमी किसी भी नापकी तलवार रख सकता है।

मुझे पंजाब-सरकार या सिखोकी इस बातसे कोई हमदर्दी नही है। कुछ सिख दोस्तोने मेरे सामने ग्रंथ साहबके ऐसे हिस्से पेश किये है, जो मेरी इस रायका समर्थन करते है कि कृपाण बेगुनाहो-पर हमला करने या किसी भी तरह इस्तेमाल करनेका हथियार नही है। सिर्फ ग्रथ साहबके आदेशोको माननेवाला सिख ही विरले मौकोंपर बेगुनाह औरतो, मासूम बच्चो, बूढे और दूसरे असहाय लोगोकी रक्षाके लिए कृपाणका उपयोग कर सकता है। इसी कारणसे एक सिख सवा लाख विरोधियोंके बराबर माना जाता है। इसलिए जो सिख नशा करता है, जुआ खेलता है और दूसरी बुराइयोंका शिकार है, उसे पवित्रता और संयमके धार्मिक प्रतीक कृपाणको रखनेका कोई हक नही है, जो सिर्फ बताए हुए ढग और मौकोपर ही काममे लाई जा सकती है।

मेरी रायमें कृपाणके मनमाने उपयोगको सही साबित करनेके लिए प्रिवी कौंसिलके गए-गुजरे फैसलोकी मदद चाहना बेकार और नुकसानदेह भी है। हम हालमे ही गुलामीके बधनसे छूटे है। आजादीकी हालतमे सारी अच्छी पाबदियोको तोड़ना बिलकुल गैर मुनासिब है। क्योकि उनके बिना समाज आगे नही बढ सकता। इसलिए मै अपने सिख दोस्तोंसे कहूगा कि वे किसी भी ऐसे काममे, जिसके सही और मुनासिब होनेमे शक हो, कृपाणका उपयोग करके महान् सिख-पथके नामपर धब्बा न लगावे। जिस पथको ऐसे कई शहीदोने, जिनकी बहादुरीपर सारी दुनियाको गर्व है, बनाया उसे वे मिटा न दे।

मै एक दूसरी बातकी तरफ आपका ध्यान खीचना चाहता हूं। मुझे एक छावनीकी कहानी सुनाई गई, जिसमे फौजपर असभ्य बरतावका इलजाम लगाया गया है। छावनीका सारा जीवन भीतरी और बाहरी शुद्धता और सफाईका नमूना होना चाहिए। इसकी रक्षाके लिए दोनोको एक-दूसरेसे बढ़कर कोशिश करनी चाहिए। इसलिए मुझे आशा है कि जो सूचना मुझे दी गई है, वह कानून और व्यवस्था-के इन रक्षकोपर आम तौरपर लागू नही की जा सकती—वह एक अपवाद ही है। फौज और पुलिसको सचमुच सबसे पहले आजादीकी

चमक और उत्साह महसूस करना चाहिए। उनके बारेमें लोगोंको यह कहनेका मौका न मिले कि ऊपरसे लादे हुए भयानक संयम और पाबंदियोंमें ही उनसे अच्छा बरताव कराया जा सकता है। उन्हें अपने सही बरतावसे यह साबित कर देना है कि वे भी दूसरोंकी तरह हिंदुस्तानके योग्य और आदर्श नागरिक हो सकते हैं। अगर ये कानूनके रक्षक ही कानूनको ठुकराएंगे, तब तो राज चलाना भी नामुमकिन हो सकता है। और अखिल भारत-कांग्रेस कमेटीके ठहरावोंको ठीक तरहसे अमलमें लाना सबसे ज्यादा मुश्किल हो जायगा।

तस्वीरका धुंधला पहलू बतानेके बाद अब मैं आप लोगोंको उसका चमकीला पहलू भी खुशीसे बताऊंगा। मुझे आदर्श बहादुरीकी एक आंखोदेखी कहानीका जो वर्णन मिला है, वह मैं आपको सुनाता हूं।

"मीर मकबूल शेरवानी बारामूलामें नेशनल कान्फरेंसका एक नौजवान बहादुर नेता था। उसने अभी तीसवें बरसमें प्रवेश ही किया था।

"यह जानकर कि वह नेशनल कान्फरेंसका बड़ा नेता है, हमलावरोंने उसे निशात टॉकीजके पास दो खंभोंसे बांध दिया। पहले उन्होंने उसे पीटा और बादमें कहा कि वह नेशनल कान्फरेंस और उसके नेता शेरे काश्मीर शेख अब्दुल्लाको छोड़ दे। उन्होंने शेरवानीसे कहा कि वह आजाद काश्मीरकी आरज़ी हकूमतकी, जिसका हेडक्वार्टर पालन्द्रीमें है, वफादारीकी सौगंध ले।

"शेरवानीने मजबूतीसे नेशनल कान्फरेंसको छोड़नेसे इन्कार कर दिया। हमलावरोंसे साफ कह दिया कि शेरे काश्मीर अब राजके प्रधान मंत्री हैं। हिंदुस्तानी संघकी फौज काश्मीरमें आ पहुंची है और वह थोड़े ही दिनोंमें हमलावरोंको काश्मीरसे निकाल बाहर करेगी।"

"यह सुनकर हमलावर गुस्सा हुए और डर गए। और उन्होंने १४ गोलियोंसे उसका शरीर छलनी बना डाला। उन्होंने उसकी नाक काट ली, उसके चेहरेको बिगाड़ दिया, और उसके शरीरपर एक इश्तहार लगा दिया, जिसपर लिखा था—'यह गद्दार है। इसका नाम शेरवानी है। सारे गद्दारोंका यही हाल किया जायगा।'

"मगर इस बेरहमीभरे खून और आतकके वाद ४८ घटोके भीतर ही शेरवानीकी भविष्यवाणी सच साबित हुई। हमलावर घवडाकर वारा-मूलासे भागे और हिंदुस्तानी फौजने जोरोसे उनका पीछा किया।"

यह ऐसी शहादत है जिसपर कोई भी अभिमान कर सकता है, फिर वह हिंदू, सिख, मुसलमान या दूसरा कोई भी क्यो न हो।

एक दोस्तने मुझे फख्रकी एक ऐसी मिसाल सुनाई है, जिसका तेज दु खदायी परिस्थितियोमे भी कम नही होता, और दोस्तीका ऐसा उदाहरण वताया है, जो कड़े-से-कडे वक्तमे भी खरी उतरती है। यह नारायणसिंह नामके एक पुराने अफसरकी कहानी है। उन्होने पच्छिमी पजावमे अपनी बहुत वड़ी मिल्कियत खो दी है। अव वह दिल्लीमे है। उनके पास कुछ भी नही वचा है। इसलिए या तो उन्हे अव भीख मागनेपर लाचार होना पड़े या मौतका शिकार होना पड़े। वह अपने एक पुराने दोस्तसे मिले, जिसे वह अपने साथ दु खी नही होने देना चाहते थे, क्योकि अपनेपर आए हुए दुर्भाग्यकी उन्हे विलकुल परवाह नही थी। वह सिख अफसर अपने दोस्त और साथी अफसर अली-शाहसे मिलकर वेहद खुश हुए। अलीशाह भी अपना सव कुछ खो वैठे है। वे फिरकेवाराना पागलपनकी वजहसे नही, वल्कि किसी और कारणसे वदकिस्मतीके शिकार हुए है। वह भी नारायणसिंहकी तरह ही वहादुर है, और दोनोको एक-दूसरेकी दोस्तीका अभिमान है। वे दोनो अपनी पच्चीस सालकी जुदाईके वाद जव मिले, तो इतने खुश हुए कि अपने दुर्भाग्यको भूल गए।

: १५४ :

२० नवंबर १९४७

भाइयो और वहनो,

मुझे एक ही शख्सकी तरफसे दो चिटे मिली हैं, जिनमेसे एकमे लिखनेवाले भाईने कहा है कि उन्होने अपनी नौकरी छोड़ दी है और

वे मेरे मातहत काम करना चाहते है। दूसरी चिटमे उन्होंने प्रार्थनामें एक भजन गानेकी अपनी इच्छा जाहिर की है। उनकी पहली इच्छाके बारेमें मुझे कहना पड़ता है कि उन्होने अपनी नौकरी छोड़कर गलती की है। यह सच है कि अग्रेजी हकूमतके दिनोमे मैंने लोगोको सरकार-से असहयोग करनेकी सलाह दी थी, मगर अब ऐसी बात नही है। अगर कोई आदमी चाहे, तो वह अपनी रोजी कमानेके लिए कहीपर नौकरी करते हुए भी अपने देशकी सेवा कर सकता है। हर रोजी कमानेवाले शख्स, अगर वह ईमानदारीसे और किसी भी क़िस्मकी हिंसा किये वगैर ऐसा करता है, देशसेवा ही करता है। लेखकको यह भी महसूस करना चाहिए कि मेरे पास उनके लिए कुछ काम नही है। अगर वे कुछ सेवा करना चाहते है, तो उन्हे उस गोशालामे अपनी सेवाएं देनी चाहिए जिसका मै अभी जिक्र करूगा।

प्रार्थनामे भजन गानेके वारेमे तो यह है कि हर किसीको उसमें गाने नही दिया जा सकता। सिर्फ वे ही लोग पहलेसे इजाजत लेकर गा सकते हैं, जो भगवानके सेवक कहे जाते है।

(इसके बाद गाधीजीने सुचेतादेवी और उनके साथी कार्यकर्ताओके साथ किये गए ओखला छावनीके अपने मुआइनेका जिक्र किया। उन्होंने कहा—)

उस छावनीकी तारीफके लायक़ सफाईको देखकर मुझे खुशी हुई। वहांपर जगह-जगह यात्रियोके लिए धर्मशालाएं वनी है, जो मेलोके वक्त वहा आते है। ये मेले एक निश्चित समयके बाद वहा भरते रहते है। ये धर्मशालाए अब निराश्रितोके काममे लाई जाती है। वहां पानीकी कुछ दिक्कत है, जिसे अधिकारी लोग दूर करनेकी कोशिश कर रहे है। इसमे मुझे कोई शक नही कि आज वहां जितने निराश्रित है उनसे कही ज्यादा निराश्रितोको, अगर पानी पुरानेकी गारटी दी जा सके, उस जगहमे आसरा दिया जा सकता है।

जब मै निराश्रितोके वारेमे वोल रहा हू, तव कुछ ऐसे दोषोके वारेमें उनका ध्यान खीचना चाहूंगा जो मुझे वताए गए है। मुझसे यह कहा गया है कि निराश्रितोमे आपसमे ही काला वाजार चल रहा है। जिन अफ़सरोके जिम्मे निराश्रितोकी देखभालका काम है, वे भी

दोषी बताए जाते हैं। मुझसे कहा गया है कि जिन अफसरोके हाथमें छावनियोंका इंतजाम है, उन्हे घूस दिये बिना वहां जगह पाना मुमकिन नही है। दूसरी तरहसे भी उनका बरताव दोषसे परे नही माना जाता। यह ठीक है कि सभी अफसर दोषी नही हो सकते, लेकिन एक पापी सारी नावको डुबो देता है।

इसके बाद मुझसे कहा गया है कि निराश्रित लोग छोटी-मोटी चोरिया भी करते है। मै उनसे पूरी ईमानदारी और खरे बरतावकी आशा रखता हूं। मुझे यह रिपोर्ट दी गई है कि निराश्रितोको जाड़ेसे बचनेके लिए जो रजाइयां दी जाती हैं, उनमेंसे कुछ चीर दी जाती है, उनकी रूई फेक दी जाती है और छीटके कमीज वगैरा बना लिये जाते है। मुझे इसी तरहकी दूसरी बहुत-सी बाते बताई गई है, लेकिन मै निराश्रितोंके सारे बुरे कामोका वर्णन करके आपका वक्त नही बरबाद करना चाहता। मै आज शामके विषयपर जल्दी ही आना चाहता हू।

दिल्लीकी किशनगंज नामकी बस्तीमें एक गोशालाका सालाना जलसा हो रहा है। कल आचार्य कृपलानी उस जलसेके सभापति बननेवाले हैं और मुझपर यह जोर डाला गया कि मै कम-से-कम १० मिनटके लिए तो भी जलसेमे जाऊ। मुझे लगा कि मुझे किसी जलसे या उत्सवमे सिर्फ शोभाके लिए नही जाना चाहिए। १० मिनटमे न तो वहां मै कुछ कर सकता हूं और न देख सकता हूँ। और, मै सांप्रदायिक सवालोंमे ही इतना उलझा रहता हूं कि मुझे दूसरी बातोंकी तरफ ध्यान देनेका समय नही मिलता। इसलिए मैंने अपनी मजबूरी जाहिर की। जलसेका इतजाम करनेवाले लोगोंने मेरी लाचारीको महसूस करके मुझे माफ कर दिया और कहा कि अगर आप गोसेवाके बारेमे—खास कर गोशालाओंके बारेमें—अपनी बात प्रार्थना-सभामे कह देंगे, तो हमे सतोष हो जायगा। मैंने उनकी यह बात खुशीसे मान ली। मै साफ शब्दोमे यह कह चुका हू कि हिंदुस्तानके पशु-धनको सभालने व बढानेका काम और गाय और उसकी सतानके साथ उचित बरताव करनेका काम सियासी[1]

---

[1] राजनीतिक।

आज़ादी लेनेके कामसे कही ज्यादा कठिन है। मै इस मामलेमें श्रद्धा और लगनसे काम करनेका दावा करता हूं। मेरा यह भी दावा है कि मुझे इस बातका सच्चा ज्ञान है कि गाय कैसे बचाई जा सकती है। लेकिन मै यह कबूल करता हूं कि अभीतक मै आम लोगोपर किसी तरह ऐसा असर नही डाल सका जिससे वे इस सवालपर उचित ध्यान दे सकें। जो लोग गोशालाओका इंतजाम करते है वे उनके लिए पैसा लगाना या फड जमा करना तो जानते है, लेकिन हिंदुस्तानके पशु-धनका वैज्ञानिक ढगसे पालन-पोषण करनेका उन्हे बिलकुल ज्ञान नही होता। वे यह नही जानते कि गायको कैसे पाला जाय कि वह ज़्यादा दूध दे। उन्हें यह भी नही मालूम कि गायके दिये हुए बैलोका कैसे विकास किया जाय, या उनकी नसल कैसे सुधारी जाय।

इसलिए हिंदुस्तानभरमें गोशालाएं ऐसी संस्थाएं होनेके बजाय—जहा कोई शख्स हिंदुस्तानके ढोरोंको ठीक तरहसे पालनेकी कला सीख सके, जो आदर्श डेरिया हों, और जहांसे लोग अच्छा दूध, अच्छी गायें, अच्छी नसलके सांड और मज़बूत बैल खरीद सके—सिर्फ ऐसी जगहे है, जहां ढोरोंको बुरी तरह रखा जाता है। इसका नतीजा यह हुआ है कि हिंदुस्तान दुनियामे ऐसा खास देश होनेके बजाय, जहां बड़े अच्छे ढोर हो, और जहां सस्ते-से-सस्ते दामोपर जितना चाहो उतना शुद्ध दूध मिल सके, आज इस मामलेमें शायद दुनियाके सारे देशोसे नीचे है। गोशालावाले इतना भी नही जानते कि गोबर और गोमूत्रका अच्छे-से-अच्छा क्या उपयोग किया जाय; न वे यही जानते है कि मरे हुए जानवरका कैसे उपयोग किया जाय। नतीजा यह हुआ है कि अपने अज्ञानकी वजहसे उन्होंने करोड़ों रुपए गँवा दिये हैं। किसी माहिरने कहा है कि हमारा पशुधन देशके लिए बोझ है और वह सिर्फ़ नष्ट कर देनेके ही काबिल है। मै इससे सहमत नही हूं। मगर यदि आम अज्ञान इसी तरह कुछ दिनोंतक और बना रहा, तो मुझे यह जानकर ताज्जुब नही होगा कि पशु देशके लिए बोझ बन गए है। इसलिए मुझे उम्मीद है कि इस गोशालाके प्रबध करनेवाले इसे हर दृष्टिकोणसे एक आदर्श संस्था बनानेकी पूरी-पूरी कोशिश करेंगे।

: १५५ :

२१ नवंबर १९४७

भाइयो और बहनो,

जब मै आप लोगोके सामने अपना भाषण दे रहा हूं, तब शायद जिस गोशालाके बारेमे मैने कल शामको आपसे कुछ कहा था, उसका सालाना जलसा अभी हो रहा है। मै एक बात कहना चाहूंगा। कल शामके अपने भाषणोंमे मैने फौजियोके लिए हिंदुस्तानमे चलाई जानेवाली विभिन्न डेरियोका जिक्र नहीं किया था। डॉ० राजेंद्रप्रसाद-ने मुझे बतलाया है कि वे डेरियां अभी भी चल रही है। बरसों पहले मै बगलोरकी सेंट्रल डेरी देखने गया था। तब कर्नल स्मिथकी देख-रेखमे वह चल रही थी। मैने वहा कुछ सुदर ढोर देखे थे। उनमे एक इनाम पाई हुई गाय थी। वे लोग मानते थे कि एशियाभरमे वह सबमे अच्छी गाय है। वह हर रोज ७५ पौंड दूध देती थी या एक ही बारमे इतना दूध देती थी, यह मुझे बराबर याद नही है। वह गाय बिना किसी रोक-टोकके चाहे जहां घूम-फिर सकती थी। उसके लिए जहा-तहा चारा रखा रहता था, जिसे वह चाहे तब खा सकती थी। यह इस तसवीरका अच्छा पहलू है।

दूसरा पहलू मैने नही देखा, मगर मुझे प्रामाणिक तौरपर कहा गया है कि बहुतसे नर बछड़ोको मार डाला जाता है, क्योकि उन सबको बोझ ढोने लायक बैल नही बनाया जा सकता। ये डेरिया, बहुत ज्यादा नही, तो सैकड़ों एकड ज़मीन घेरे हुए है। ये सब खास तौरपर यूरोपियन सिपाहियोके लिए हैं। इनमे कई करोड रुपया लगा है। अब चूंकि ब्रिटिश सिपाही हिंदुस्तानमे नही है, इसलिए मै इनकी और ज्यादा जरूरत नहीं समझता। मुझे पूरा विश्वास है कि अगर हिंदुस्तानी सिपाहीको यह मालूम हो कि ये खर्चीली डेरियां उसके लिए चलाई जा रही है, तो उसे शर्म मालूम होगी। मुझे यह भी विश्वास है कि हिंदुस्तानी सिपाही ऐसे किसी खास बरताव का दावा नही करेगा जिसका मामूली नागरिक भी उतना ही हक़दार न हो।

गाय और भैंसके बारेमें सबसे ज़्यादा प्रामाणिक और शायद पूर्ण साहित्य, खादी-प्रतिष्ठानके श्री सतीशचंद्रदास गुप्तद्वारा लिखे हुए एक बड़े भारी ग्रंथमें पाया जा सकता है। जहां-तहांके साहित्यके अवतरणोंसे इस ग्रंथको नही भरा गया है, बल्कि उसे निजी अनुभवके आधारपर, जब वे एक बार जेलमें थे, तब लिखा गया है। बंगाली और हिंदुस्तानीमें उसका अनुवाद हो चुका है। पुस्तकको ध्यानसे पढ़ने-वाले लोग इसे हिंदुस्तानके पशुधनको अच्छा बनाने और दूधकी पैदावारको बढ़ानेके काममे बहुत उपयोगी पाएंगे। इस किताबमे गाय और भैंसकी तुलना भी की गई है।

(इसके बाद गांधीजीने एक सवालका ज़िक्र किया, जो उनके पास श्रोताओंमेंसे किसीने भेजा था। सवाल यह था—हिंदू क्या है? इस शब्दकी उत्पत्ति कैसे हुई? क्या हिंदुत्व नामकी कोई चीज़ है? इसका जवाब देते हुए गांधीजीने कहा—) ये सब इस वक्तके लिए योग्य सवाल है। मै इतिहासका कोई बड़ा जानकार नहीं हूं। मैं विद्वान होनेका दावा भी नही करता। मगर हिंदुत्वपर लिखी हुई किसी प्रामाणिक किताबमे मैंने पढ़ा है कि हिंदू शब्द वेदोंमे नही है। जब सिकंदर महान्ने हिंदुस्तानपर चढाई की, तब सिंधु नदीके पूरबके देशमे रहनेवाले लोग, जिसे अंग्रेजीदां हिंदुस्तानी 'इंडस' कहते हैं, हिंदूके नामसे पुकारे गए। सिंधुका 'स' ग्रीक भाषामें 'ह' हो गया। इस देशके रहनेवालोंका धर्म हिंदू-धर्म कहलाया, और जैसा कि आप लोग जानते है, यह सबसे ज्यादा सहिष्णु (रवादार) धर्म है। इसने उन ईसाइयोंको आसरा दिया जो विधर्मियोसे सताए जाकर भागे थे। इसके सिवा इसने उन यहूदियोंको, जो बेनिइज़राइल कहे जाते है, और पारसियोको भी आसरा दिया। मै इस हिंदू-धर्मका सदस्य होनेमें अभिमान महसूस करता हूं, जिसमे सभी धर्म शामिल है और जो बड़ा सहनशील है। आर्य विद्वान वैदिक धर्मको मानते थे और हिंदुस्तान पहले आर्यावर्त कहा जाता था। वह फिरसे आर्यावर्त कहलाए ऐसी मेरी कोई इच्छा नही है। मेरी कल्पनाका हिंदू-धर्म मेरे लिए अपने आपमें पूर्ण है। बेशक, उसमें वेद शामिल है, मगर उसमें

और भी वहुत कुछ शामिल है! यह कहनेमे मुझे कोई नामुनासिव वात नही मालूम होती कि हिंदू-धर्मकी महत्ताको किसी भी तरह कम किये वगैर मैं मुसलमान, ईसाई, पारसी और यहूदी-धर्ममे जो महत्ता है उसके प्रति हिंदू-धर्मके वरावर ही श्रद्धा जाहिर कर सकता हूं। ऐसा हिंदू-धर्म तवतक जिंदा रहेगा, जवतक आकाशमें सूरज चमकता है। इस वातको तुलसीदासने एक दोहेमे रख दिया है—

दया धरमको मूल है, पाप मूल अभिमान।
तुलसी दया न छोड़िए, जव लगि घटमे प्रान॥

मेरे ओखला छावनीके मुआइनेके वक्त जो वहन मेरे साथ थी, वे इस खयालसे घवडा गई कि निराश्रितोंकी कुछ छावनियोमे वुरा आचरण होनेकी मैंने जो वात कही थी, उसका सवध कही ओखला छावनीसे तो नही है। ओखला छावनीको मैंने वहुत जल्दीमे देखा है, इसलिए उसके वारेमे ऐसी कोई वात कहना मेरे लिए नामुमकिन है। अपने भाषणमे मैंने आम छावनियोमे होनेवाले वुरे आचरणका ही जिक्र किया है।

मैं इस वातका जिक्र किये विना नही रह सकता कि मुझे जो सूचना मिली है उसके मुताविक दिल्लीकी करीव १३७ मसजिदे हालके दगोमे वरवाद-सी कर दी गई है। उनमेसे कुछको मदिरोमे वदल डाला गया है। ऐसी एक मसजिद कनॉट प्लेसके पास है, जिसकी तरफ किसीका भी ध्यान गए विना नही रह सकता। आज उसपर तिरंगा झंडा फहरा रहा है। उसे मदिरका रूप देकर, उसमे एक मूर्ति रख दी गई है। मसजिदोको इस तरह विगाडना हिंदू और सिख-धर्मपर कालिख पोतना है। मेरी रायमे यह विलकुल अधर्म है। जिस कलकका मैंने जिक्र किया है, उसे यह कहकर कम नही किया जा सकता कि पाकिस्तानमे मुसलमानोंने भी हिंदू-मदिरोंको विगाडा या उन्हे मसजिदोका रूप दे दिया है। मेरी रायमे ऐसा कोई भी काम हिंदू-धर्म, सिख-धर्म या इस्लामको वरवाद करनेवाला काम है।

(गाधीजीने इस वारेमे अखिल भारत-काग्रेस-कमेटीका हालका ठहराव लोगोको सुनाया।)

आज हमेशासे ज्यादा समयके लिए प्रार्थना-सभामें ठहरनेका खतरा उठाकर भी मै अतमे एक बात कह देना अपना फर्ज समझता हू। मुझसे यह कहा गया है कि गुडगावके पास रोमन कैथोलिकोको सताया जाता है। जिस गांवमे यह हुआ है, उसका नाम कन्हाई है। वह दिल्लीसे करीब २५ मीलपर है। एक हिंदुस्तानी रोमन कैथोलिक पादरी और एक गावके ईसाईप्रचारक मुझसे मिलने आए थे। उन्होने मुझे वह खत दिखाया जिसमें कन्हाई गावके रोमन कैथोलिकोंने हिंदुओद्वारा अपने सताए जानेकी कहानी बयान की थी। ताज्जुब यह है कि वह खत उर्दूमे लिखा था। मै समझता हू कि उस हिस्सेके रहनेवाले हिंदू, सिख या दूसरे लोग केवल हिंदुस्तानी ही बोल सकते और उर्दू-लिपिमें ही लिख सकते है। सूचना देनेवाले लोगोंने मुझे बताया कि वहाके रोमन कैथोलिकोको यह धमकी दी गई है कि अगर वे गाव छोड़कर चले नही जायगे, तो उन्हे नुकसान उठाना पडेगा। मुझे आशा है कि यह धमकी झूठी है और वहाके ईसाई भाई-बहनोको बिना किसी रुकावटके अपना धर्म पालने और काम करने दिया जायगा। अब हमे सियासी गुलामीसे आजादी मिल गई है। इसलिए आज भी उन्हे धर्म और कामकी वही आजादी भोगनेका हक है, जो वे ब्रिटिश हकूमतके दिनोमे भोगते थे। मिली हुई आजादीपर यूनियनमे सिर्फ हिंदुओंका और पाकिस्तानमे सिर्फ मुसलमानोका ही हक नही है। मै अपने एक भाषणमे आप लोगोंसे कह चुका हू कि जब यूनियनमे हिंदुओ और सिखोंका मुसलमानोके खिलाफ भड़का हुआ गुस्सा कम हो जायगा, तो सभव है वह दूसरोपर उतरे। लेकिन जब मैंने यह बात कही थी तब मुझे यह आशा नही थी कि मेरी भविष्यवाणी इतनी जल्दी सच साबित होने लगेगी। अभीतक मुसलमानोके खिलाफ बढा हुआ गुस्सा पूरी तरह शात नहीं हुआ है। जहांतक मै जानता हू, ये ईसाई बिलकुल निर्दोष हैं। मुझे सुझाया गया कि उनका गुनाह यही है कि वे ईसाई है। इससे भी ज्यादा बडा गुनाह यह है कि वे गाय और सूअरका गोश्त खाते है। मैंने उत्सुकतासे मिलने आए हुए पादरीसे पूछा कि इस बातमें कोई सचाई है? तब उन्होने कहा कि इन रोमन कैथोलिकोने अपनी मरजीसे बहुत पहले ही

गाय और सूअरका मांस खाना छोड़ दिया है। अगर इस तरहका नादानीभरा द्वेष चालू रहा तो आजाद हिंदुस्तानका भविष्य अंधेरा ही समझिए। वह पादरी जब रेवाड़ीमे थे, तब उनकी खुदकी साइकिल उनसे छीन ली गई और वह मौतसे बालबाल बचे। क्या यह दुःख सारे गैर-हिंदुओ और गैर-सिखोको मिटाकर ही मिटेगा?

: १५६ :

२२ नवबर १९४७

(गुडगावके नज़दीक एक गावमे ईसाइयोंके साथ होनेवाले बुरे बरताव-का फिरसे ज़िक्र करते हुए गांधीजीने अपने आजके शामके भाषणमे कहा—)

भाइयो और बहनो,

मुझे खबर मिली है कि कुछ-कुछ ऐसा ही बरताव सोनीपतके ईसाइयोके साथ हुआ है। मुझसे कहा गया है कि पहले तो वहां ईसाइयोसे प्रार्थना की गई कि वे निराश्रितोको अपने मकानोका उपयोग करने दे। ईसाइयोंने खुशीसे इसकी इजाज़त दे दी और इसके लिए उन्हे धन्यवाद भी दिया गया। मगर यह धन्यवाद अभिशापमे बदल गया; क्योकि उनके दूसरे मकान भी जबरदस्ती निराश्रितोके काममे ले लिये गए और उनसे कह दिया गया कि अगर वे सोनीपतमे अपनी जिंदगीको बहुत दुखी नही देखना चाहते, तो वहांसे चले जायं। अगर यह बात ऐसी ही हो, जैसी कि वह कही गई है, तो साफ जान पड़ता है कि यह बीमारी बढ रही है और कोई नही बता सकता कि यह बीमारी हिंदुस्तानको कहा ले जानेवाली है।

जब मै कुछ दोस्तोसे चर्चा कर रहा था, तब मुझसे कहा गया कि जबतक पाकिस्तानमें होनेवाली इसी किस्मकी बुराइयां कम नही होती, तबतक हिंदुस्तानी सघमे ज्यादा सुधारकी उम्मीद नही की जा सकती। इस बातके समर्थनमे मेरे सामने लाहौरके बारेमे जो कुछ अखबारोमे छपा है, उसका उदाहरण रखा गया। मै खुद अखबारोकी

खबरोंको सोलह आने सच नही मानता और मै अखबार पढनेवालोंको भी चेतावनी दूगा कि वे उनमे छपी कहानियोका अपने ऊपर आसानीसे असर न पड़ने दे। अच्छे-से-अच्छे अखबार भी खबरोंको बढा-चढाकर कहने और उन्हे रंगनेसे बरी नही है। मगर मान लीजिए कि जो कुछ आपने अखबारोंमे पढ़ा वह सब सच है, तो भी एक बुरे नमूनेकी कभी नकल नही की जानी चाहिए।

एक ऐसे समकोण चौखटकी कल्पना कीजिए, जिसमे स्लेट नही लगी है। अगर उस चौखटको ज़रा भी बेढगे तरीक़ेसे पकड़ा जाय, तो उसके समकोण न्यूनकोण और अधिककोणमें बदल जायगे और अगर चौखटको एक कोनेपर फिरसे ठीक ढगसे पकड़ा जाय, तो दूसरे तीन कोने अपने आप समकोण बन जायगे। इसी तरह अगर हिंदुस्तानी सघकी सरकार और लोग, सही बरताव करे, तो मुझे इसमें ज़रा भी शक नही कि पाकिस्तान भी ऐसा ही करने लगेगा और सारा हिंदुस्तान फिरसे समझदार बन जायगा। ईसाइयोके साथ किय गए बुरे बरतावको, जिन्होने, जहातक मै जानता हू, कोई अपराध नहीं किया है, इस बातका सकेत समझा जाय कि इस पागलपनको और ज्यादा बढ़ने देना ठीक नही है। और अगर हिंदुस्तानको दुनियाके सामने अपना अच्छा लेखा-जोखा रखना है, तो एकदम और तेजीके साथ इस पागलपनका मुकाबला किया जाय।

(इसके बाद निराश्रितोकी समस्यापर बोलते हुए गाधीजीने कहा—)

उनमे डाक्टर, वकील, विद्यार्थी, शिक्षक, नर्से वगैरा है। अगर उन्होने गरीब निराश्रितोंसे अपने आपको अलग कर लिया, तो वे अपने ऊपर पडे हुए एकसे दुर्भाग्यसे कोई सबक नही ले पायगे। मेरी राय है कि सब व्यवसायी और ग़ैर-व्यवसायी, धनवान और गरीब निराश्रित एक साथ रहें और जिस तरह लाहौरके धनवान लोगोने लाहौरको आदर्श शहर बनाया—और जिसे हिंदुओं और सिखोको लाचार होकर खाली करना पड़ा—उस तरह वे भी आदर्श शहर बसाएं। ये शहर, दिल्ली-जैसी घनी आबादीवाले शहरोका बोझ हलका करेगे और इनमें रहनेवाले लोगोंकी तदुरुस्ती बढेगी और उनकी तरक्की होगी। अगर कुरुक्षेत्रकी

बड़ी छावनीमे रहनेवाले दो लाखसे ऊपर निराश्रित बाहरी और भीतरी सफाईके मामलेमे आदर्श वन गए, अगर व्यवसायी और धनवान ग़रीब निराश्रितोंके साथ बराबरीके आधारपर रहे, अगर उन्होने तंबुओंकी इस बस्तीमें अच्छी सड़के बनाकर संतोषकी जिंदगी बिताई, अगर वे सफाईसे लगाकर सारे काम खुद करते रहे और दिनभर किसी-न-किसी उपयोगी काममे लगे रहे, तो वे सरकारी बजटपर बोझ नही रह जायंगे। और उनकी सादगी और सहयोगको देखकर शहरोमे रहनेवाले लोग सिर्फ उनकी तारीफ करके ही नही रह जायंगे, बल्कि उन्हे अपने जीवनपर शर्म मालूम होगी और वे निराश्रितोंकी सारी अच्छी बातोंकी नकल करेंगे। तब मौजूदा कड़ुवाहट और आपसी जलन एक मिनटमे गायब हो जायगी। तब निराश्रित लोग, चाहे वे कितनी ही बडी तादादमें क्यों न हों, केंद्रीय और मुकामी सरकारोके लिए चिंताके विषय नही रह जायगे। लाखो निराश्रितोद्वारा बिताई गई ऐसी आदर्श जिंदगीकी दु खी दुनिया तारीफ करेगी।

अतमें मै कट्रोलोंको हटानेके बारेमे, खासकर अनाज और कपड़ेका कट्रोल हटानेके बारेमे चर्चा करूंगा। सरकार कंट्रोल हटानेमे हिचकिचाती है, क्योकि उसका खयाल है कि देशमे अनाज और कपड़ेकी सच्ची तगी है। इसलिए अगर कट्रोल हटा दिया गया तो इन चीजोंके दाम बहुत बढ़ जायंगे। इससे गरीबोको बड़ा नुकसान होगा। गरीब जनताके बारेमें सरकारका यह खयाल है कि वह कंट्रोलोंके जरिए ही भुखमरीसे बच सकती है और तन ढकनेको कपड़ा पा सकती है। सरकारको व्यापारियो, अनाज पैदा करनेवालो और दलालोंपर शक है। उसे डर है कि ये लोग कंट्रोलोंके हटनेका बाजकी तरह रास्ता देख रहे है, ताकि गरीबोको अपना शिकार बनाकर बेईमानीसे कमाये हुए पैसेसे अपनी जेबें भर सके। सरकारके सामने दो बुराइयोमेसे किसी एकको चुननेका सवाल है। और उसका खयाल है कि मौजूदा कंट्रोलोको हटानेके बदले बनाए रखना कम बुरा है।

इसलिए मै व्यापारियों, दलालों और अनाज पैदा करनेवालोसे अपील करता हू कि वे अपने प्रति किये जानेवाले इस शकको मिटा दे

और सरकारको यह यकीन दिला दें कि अनाज और कपड़ेका कंट्रोल हटनेसे कीमतें ऊंची नही चढेगी। कंट्रोल हटानेमे काला बाजार और बेईमानी जडसे भले ही न उखाडी जा सकें, लेकिन इससे गरीबोंको आजसे ज्यादा सुख और आराम मिलेगा।

: १५७ :

२३ नवंबर १९४७

भाइयो और बहनो,

एक भाई लिखते है कि अगर हक नही मिले तो क्या हिंसाका मार्ग नही लेना चाहिए? हिंसासे हम हक लें नही सकते। मै तो कहूंगा कि हिंसासे कुछ मिल ही नही सकता। लगता तो है कि मिल सकता है, लेकिन कैसे? हां, एक बच्चा है, उसके हाथमे रुपया है, उसको दो-चार तमाचा मार दू और रुपया लें लूं, तो मीठा तो लगेगा कि रुपया तो ले लिया लेकिन मैने गुमाया कितना! बच्चा बेचारा करे क्या? लेकिन मेरा दिल चुभेगा कि बेचारे बच्चेका रुपया ले लिया, मारपीट करके। लेकिन ऐसे पाजी दुनियामे भरे पड़े है। मै तो ऐसा कर नही सकता। ऐसा छीननेका मेरा हक नही है। छीन लिया तो नतीजा बुरा होगा। इसलिए मैं कहता हूं कि हिंसामे हक ले नही सकते। हक लेनेका एक ही तरीका है और वह मैने प्रकट कर दिया है। वह सबको पसंद पड़ा। उसमें लिखा है कि लोगोंका हक क्या है और कैसे मिल सकता है। मै तो कहूगा कि हक है ही नही। जिसके पास फर्ज नही है तो उसका हक नहीं है, अर्थात् सब हक अपने फर्जमेसे निकलता है—फर्ज नही तो हक नही। मै फर्ज अदा करता हू तो उसका नतीजा मिलता है, वही हक है। जैसे मै खाता हू, खानेका धर्म है तो खाता हूं, शौकसे लिया तो कुछ-न-कुछ रोग पैदा होगा। अगर खाता हू धर्म समझकर, ईश्वरका नाम लेता हू, दुनियाकी सेवा करता हू तो मुझे हक मिल जाता है। क्या मिलता है? सेवा

करनेका हक मिलता है। आप कहेंगे कि इसको हक कैसे कहेंगे ? आप विचार करेंगे तो यह मालूम हो जायगा। मैं तो कहूंगा कि वही हक हो जाता है। मानों कि मैं दिनभर काम करता हूं तो आठ आना कमा लेता हूं—वह आठ आना हकसे मिलता है। हक कैसे आया? काम किया तब। काम न करूं और आठ आना पैसा लूं तो हकसे नहीं लिया, छीन लिया। हक तो तभी होता है जब मजदूरी करनेका इकरार कर दिया और वह दिलसे किया अर्थात् मनसे, वचनसे, कर्मसे किया। लेकिन अगर दिलसे काम नहीं करता हूं, सरदारका बिगाड़ता हूं, सरदार देखता नहीं है, इसलिए धोखा दूं तो वह पाप है। और जब देखता हूं कि दूसरेको तो एक रुपया मिल रहा है तो मैं भी एक रुपया ले सकता हूं, लेकिन कब? सरदारको कह-कर। उनको कहूं सबको तो एक रुपया मिलता है तो मैं कैसे आठ आनेमें काम करूं—एक रुपया नहीं तो पंद्रह आने तो दे दो। वह कहे कि आठ आनेमें काम करो तो करो नहीं तो चले जाओ। तब मैं क्या करूं? क्या माल जला दूं, उसका काम रोक दूं, धरना दूं, फाका करूं, क्या करूं? मैं कहूंगा कि मैं इस्तीफा दे सकता हूं, लेकिन आठ आनेमें तो मजदूरी नहीं कर सकता हूं—यह तो शराफत हुई। मैं तो कहूंगा कि जो कुछ करना चाहो वह शराफतसे करो। शराफतमें यही आता है कि हम धर्मका पालन करें, फर्जको अदा करें और फर्ज-करके अहिंसासे हक पैदा करें। हिंसाके मारफत कुछ भी लेनेकी कोशिश न करें—इसीसे दुनिया चलती है, नहीं तो दुनिया बिगड़ती है।

तो स्त्रियोंके बारेमें तो कह दिया था। आज मैं आप लोगोंको हरिजनोंके बारेमें कहूंगा। वह तो हमारे लिए शर्मकी बात है कि रोह-तकमें, रोहतक जिलेमें कहो, हर जगह हरिजन पड़े हैं—पहले भी थे, अब भी हैं। तो वहां भी हरिजन पड़े हैं। वहां तो जाट लोग पड़े हैं, शायद अहीर भी पड़े हैं। उनके दिलमें ऐसा हुआ कि हरिजन हैं, वे हमारे गुलाम हैं, जो कुछ काम लेना है लेंगे—वहां फिर हककी बात आ गई—वे तो जन्मसे गुलाम पैदा हुए हैं। पानी चाहिए तो दे, खाना खाए तो ठीक है, नहीं तो हकसे ले नहीं सकते।

इसको मैं तकवरी[1] मानता हू। जब अंग्रेजी सल्तनत थी तब चलती थी और अब वह चीज ज्यादा बन गई। बेचारे हरिजन गरीब हैं तो मेरे पास आए और कहा कि हमपर ऐसी गुजर रही है तो क्या हम गुलामीमे रहें, कि मर जायं या रोहतक छोड़ दे या क्या करें? अभी वे छोड़ भी नही सकते, यह समझने लायक बात है। यदि वे रोहतक छोड़ते है तो दूसरे लोग मरेंगे, क्योंकि उनका काम बिगड़ता है; लेकिन हरिजनको गुलामी ही करना है तो ऐसा हो जाता है। तो वे बेचारे आ गए—मदरसेमें पढते हैं, कोई आगे पढ़ता है, कोई पीछे है, उद्योग भी सीखते है; लेकिन वे लोग जो नाराज कर रहे है उनको क्या कहे। अब तो हम ऐसे हो गए है कि हम सोचते नही कि हम कहां जा रहे है। अंग्रेजी सल्तनत चलती थी तब डरते थे कि हमको मारपीट डालेगे। अब वह सल्तनत चली गई तो कौन क्या कर सकता है! जजके सामने पेश किये जाएगे तो जजको भी डरा सकेंगे। जज क्या कर सकता है? अब ऐसी तकवरी पैदा हो गई है। इसका नतीजा यही आता है कि हरिजन तबाह हो जाता है। तो मैंने उन लोगोंसे कहा कि आप बापा साहब[2]के पास जाइए—उन्होंने तो हरिजनों और आदिवासियोंकी सेवा करनेके लिए जन्म लिया है, वे हरिजनोके लिए सब कुछ करते है। तो वे गए और पीछे मेरे पास आए और मुझको सुनाया कि बापा साहब कुछ नही करते है। मै तो समझ गया कि वे क्या चाहते है। वे यही बैठे है। मैंने कहा कि आप डाक्टर गोपीचंदके पास जाइए। वे प्रधान मंत्री बन गए है तो क्या, पहले तो हरिजन-सेवक-संघका सब काम करते थे। आज आनेवाले थे तो मैंने कहा कि उनसे मिलू। मिला। लेकिन वहां जो लोग जालिम बन गए है, मजबूर करते है, हठीले बन गए है तो क्या करना? आज अंग्रेजी सल्तनत तो है नही, वैसा कर भी नही सकते है, तो वे करे क्या? तो मैंने सोचा कि आज मै हरिजनोंकी करुण कथा सुनाऊं। हम इतना भी नही कर सकते है? आज हमारा धर्म क्या है?

---

[1] तकब्बुर=अभिमान। [2] श्री ठक्कर बापा।

आजतक हम उन्हे अछूत, गुलाम मानते आए है, वह अधर्म किया। गलती की और पाप किया, उसके प्रायश्चित्तके रूपमे हरिजन-सेवक संघ बना, संघने बहुत काम भी किया है। सब हिंदूने ऐसा नही किया—करोड़ोंकी संख्यामे हिंदू, सब हिंदूने तो उसे अपनाया भी नही है। अगर सब हिंदुओंने अपना लिया होता तो मुझे यह करुण कथा क्यों सुनानी पड़ती। अंग्रेजोके राज्यमे तो करते थे—उनको गाली देते थे कि अगर ये नही होते तो हम अच्छे हो जाते, लेकिन अब तो वे चले गए—हम अब अच्छे है या बुरे? मै तो कहूगा कि पहलेसे ज्यादा बुराइया आ गईं। हम ज्यादतिया तब करते थे और अब भी करते है, पहले तो मुसलमानोपर ज्यादतियां की, यह भी पाप किया—पाकिस्तान है यह भूल जाओ, उसका खयाल मत करो। समझो कि अगर एक आदमी पाप करता है तो क्या हम भी करे। सोचोगे तो मालूम होगा कि वह बुरा है—एक बुराईसे दूसरी बुराई पैदा होती है। हमने काफी लोगोको मार डाला है, हमारे दिलमे झूठी हिम्मत आ गई है कि मारो क्रिस्तियोको, पीछे हम जाटिस्तान, अहीरिस्तान, हर एक अपना-अपना स्थान बनाएगे; लेकिन हिंदुस्तान कोई नही बनाएगा। हरिजनोको तो अपनाना ही चाहिए—वे तो हम जैसे हिंदू है, वह पंचम जाति तो है नही। पंचम वर्ण तो हिंदूमे है नही, चार वर्ण है—उनमे एक नीचा और दूसरा ऊंचा तो है ही नहीं। इन चारोमे ऐसा है कि एक धर्म सिखाता है, दूसरा रक्षा करता है, तीसरा तिजारत करता है—घर भरनेके लिए नही, अपने लिए करोडो रुपया पैदा करनेके लिए नही, प्रजाके लिए भले ही पैदा करे—और चौथा प्रजाकी सेवा करता है। लेकिन चारों साथ-साथ खड़े रह सकते है, बैठ सकते है। अगर शूद्र है, वह बैरिस्टर बन जाय तो वह बैरिस्टरी नही कर सकता, ऐसी बात नही है। वह बैरिस्टर होकर भी सेवा कर सकता है। जो धर्म सिखाता है वह भी सेवा करता है, तिजारत करता है, नौकरी करता है वह सेवा करता है और झाड़ू लगाता है वह भी सेवा करता है—ये चारों सेवा है, सेवाक्षेत्र बन गया है। पीछे जो धर्म सिखाता है उसको ज्यादा सीखना पड़ता है—इसका मतलब

यह नही है कि वह अगर उस कामको छोडकर दूसरा काम करता है तो पाप करता है। वह उस कामको नही कर सकता ऐसी बात नही है। इसी तरह हमने अनेक जातिया पैदा की और अब पंचम वर्ण पैदा करते है तो हमारी गलती है, दुष्टता है। अगर हम अपने-अपने धर्मके मुताबिक चले तब तो हो सकता है। आज हमारे हाथमे बागडोर आ गई है तो हिंदू-सिख सब अपने-अपने धर्मके अनुसार चले तो मैं समझता हूं कि सबका काम चल सकता है। मैंने भी समाप्त कर दिया और वह भी समाप्त हो गई।

: १५८ :

२४ नवंबर १९४७

भाइयो और बहनो,

जब मैं प्रार्थनामे आता हू आप लोग मेहरबानी करके मेरे और मेरी लड़कियोके लिए काफी जगह गुजरनेके लिए छोड़ देते हैं, मगर जानेके समय लोग चरण छूनेके लिए मेरे इर्द-गिर्द भीड़ कर देते हैं। वह अच्छा नही लगता। मेरी प्रार्थना है कि जानेके समय भी आप लोग मुझे शातिसे रास्ता दे। आपकी मुहब्बत मैं समझता हूं, और उसकी मुझे कदर है। मगर मैं चाहता हू कि यह मुहब्बत बाह्य उभारकी जगह किसी रचनात्मक कार्यका रूप ले। इस बारेमे मैं बहुत बार कह चुका हू और लिख चुका हू। रचनात्मक कार्यक्रममेंसे मुख्य तो आज कौमी मेल-जोल है। पहले भी झगड़ा होता था मगर उसमे किसीको बर्बाद करनेकी बात नही होती थी। अब तो मारनेकी ही बात है। जहर फैल गया है। एक तरफसे हिंदू और सिख, दूसरी तरफसे मुसलमान एक दूसरेके दुश्मन बन गए हैं। इसका शर्मनाक नतीजा आप देख ही चुके हैं।

प्रार्थनामे आनेवालोंका अपना हृदय वैरभावसे खाली हो, यह बस नही। उन्हे सांप्रदायिक मेलजोल फिरसे कायम करनेमे सक्रिय

भाग लेना है। खिलाफतके जमानेमे हिंदू-मुस्लिम-ऐक्यका हमें गर्व था। उन दिनोमे मिली-जुली बड़ी-बड़ी सभाओंमे जाना मै भूला नही। उस ऐक्यको देखकर मेरा हृदय आनदसे उछलता था। क्या वे दिन फिर कभी वापिस नही आवेगे ?

हिंदुस्तानकी राजधानीमे कल ही जो दु.खद घटना हुई उसका विचार कीजिए। कहा जाता है कुछ हिंदू और सिखोने एक खाली मुस्लिम घरका कानूनके विरुद्ध कब्जा लेनेकी कोशिश की। उसपरसे झगड़ा हुआ और कुछ लोगोको चोट पहुची। मगर किसीकी मृत्यु नही हुई। यह घटना बुरी थी। मगर उसे और भी बढ़ाया-चढ़ाया गया। पहली खबर यह थी कि चार सिख मारे गए है। नतीजा वही हुआ जो ऐसी चीजोमे होता है। बदलेकी भावना भड़की और कई लोग छुरेसे घायल हुए।

सुनता हू कि अब एक नया तरीका इस्तेमाल होने लगा है। छोटी कृपाणकी जगह सिख लोग बडी तलवार रखने लगे है। तलवार खीचकर हिंदुओके साथ या अकेले मुसलमानके घरोंमे जाते है, और उन्हे मकान खाली करनेको धमकाते है। अगर यह खबर सच्ची है तो राजधानीमे ऐसी चीज असह्य पशुपन है। अगर यह सही नही है तो इसकी तरफ और ध्यान देनेकी जरूरत नही। सही है तो न सिर्फ सत्ताधारियोको, बल्कि जनताको भी फौरन इसकी तरफ ध्यान देना चाहिए। जनताके पीठ-बलके बिना सत्ताधीश कुछ नही कर सकते।

मै नही जानता कि ऐसी हालतमे मेरा धर्म क्या है ? इतनी बात स्पष्ट है कि हालत ज्यादा बिगड़ रही है। जल्दी ही कातिककी पूर्णिमा आनेवाली है। मेरे पास तरह-तरहकी अफवाहे आती है। मै उम्मीद रखता हू कि जैसे दशहरा और बकरीदके समय हुआ, उसी तरह अब भी ये अफवाहें झूठी सिद्ध होगी।

इन अफवाहोसे एक पाठ तो हम सीख ही सकते है। आज हमारे पास शातिकी कोई मिल्कियत जमा नही। हमे रोजकी कमाई रोज करना है। यह स्थिति किसी राष्ट्र या राज्यके लिए अच्छी नही। देशके हरेक सेवकको ध्यानपूर्वक सोचना है कि वह इस खा जानेवाले

जहरको मिटानेके लिए क्या कर सकता है और उसे क्या करना चाहिए।

यहांपर लायलपुरके सरदार संतसिंहजीके एक लंबे पत्रकी चर्चा करना अच्छा होगा। वे पहले सेंट्रल असेम्बलीके सदस्य थे। उन्होने सिखों-का जबर्दस्त बचाव किया है। उन्होने मेरे पिछले बुधवारके भाषणका जो अर्थ किया है, वह उस भाषणके शब्दोमेंसे नही निकलता। मेरे मनमे तो वह था ही नही। शायद सरदार साहब जानते होगे कि १९१५ मे दक्षिण अफ्रीकासे लौटनेके बाद मेरा सिख मित्रोंके साथ घनिष्ट संबंध रहा है। एक समय था कि, जब सिख, हिंदुओं और मुसलमानों-की तरह मेरे वचनोको वेद-वाक्य मानते थे। अब समय बदल गया है, उसके साथ लोगोंके ढग बदल गए है। मगर मै जानता हू कि मै नही बदला। शायद सरदार साहब नहीं जानते, सिख आज किस तरफ बहे जा रहे है। मै उनका पक्का मित्र हू। मुझे अपना कोई स्वार्थ नही साधना। सो मै सब चीज देख सकता हू। मै उनसे साफ-साफ दिल खोलकर बात कर सकता हू, क्योकि मै उनका सच्चा मित्र हूं। मै यह कहनेकी हिम्मत करता हू कि कई बार सिख भाई मेरी सलाहको मानकर कठिनाइयोमेंसे बच निकले है। इसलिए मुझे कभी यह ख़याल भी नही आया कि मुझे सिखोंके बारेमें, या तो किसीके भी बारेमे, सोच-समझकर बोलना चाहिए। सर-दार साहब और हरेक सिख जो सिख-जातिका भला चाहता है और आजके प्रवाहमें बह नही गया, इस बहादुर और महान् जातिको पागलपन, शराबखोरी और उसमेंसे निकलनेवाली बदियोसे बचानेमें मदद करे। जिस तलवारका वे काफी प्रदर्शन कर चुके है, और बुरी तरह इस्तेमाल कर चुके है, उसे अब वापस म्यानमें रख दें। अगर प्रिवी कौसिलके फैसलेका यह अर्थ है कि कृपाणका मतलब है किसी भी मापकी तलवार, तो भी, वह उससे मूर्ख न बने। किसी भी बेउसूल शराबी आदमीके हाथमे जानेसे, या उसका मनमाना इस्तेमाल करनेसे कृपाणकी पवित्रता जाती रहती है। पवित्र चीजका पवित्र और बाकानून मौकेपर ही इस्तेमाल हो सकता है। इसमे शक नही कि कृपाण शक्तिका

प्रतीक है। कृपाण रखनेवालेको वह तभी शोभा देती है जब वह अपने आपपर आश्चर्यजनक काबू रखे और बहुत ही भारी विरोधी ताकतके सामने उसका इस्तेमाल करे।

सरदार साहब मुझे यह कहनेके लिए माफ करेंगे कि मैंने सिख-इतिहासका ध्यानपूर्वक अध्ययन किया है और ग्रंथ साहबके तत्त्वोका अमृतपान किया है। उन वचनोके हिसाबसे देखा जाय तो जो सिखोने किया बताया जाता है, उसका कोई बचाव नही हो सकता। वह अपने आपको बर्बाद करनेका रास्ता है। किसी भी हालतमे सिखोकी बहादुरी और ईमानदारीका इस तरह नाश नही होना चाहिए। वे सारे हिंदुस्तानके लिए भारी संपत्ति हो सकते है, आज तो वे भयरूप बन गए है। सो नही होना चाहिए।

यह कहना कि सिख इस्लामके पहले नंबरके दुश्मन है, बिल्कुल वाहियात बात है। मुझे भी तो यही अल्काब[1] दिया जा चुका है न! क्या यह अल्काब मुझे सिखोंके साथ बाटना पड़ेगा? मेरा सारा जीवन इस इल्जामको गलत सिद्ध करनेवाला है। सिखोपर यह इल्जाम लगाया जा सकता है क्या? शेरे-काश्मीरको जो सिख आज मदद दे रहे है, उनसे तो वे पाठ सीखे। उनके नामसे जो मूर्खताके कारनामे किये जा रहे है, उसका वे पश्चात्ताप करें।

मैं जानता हू कि एक बुरी और भयानक बात यह चलती है कि हिंदू सिखोको छोड दे तो उन्हे पाकिस्तानमें कोई खतरा नही। सिखोंको पाकिस्तानमे कभी बर्दाश्त नही किया जाएगा। ऐसे भाई-भाईको मारनेवाले सौदेमे मैं तो कभी हिस्सेदार नही बन सकता। जबतक हरेक हिंदू और सिख बाइज्जत और सुरक्षित रूपसे पश्चिमी पजाबमे अपने घर वापस नही जाता, और हरेक मुसलमान यूनियनमे अपने घर उसी तरह नही लौट आता, तबतक इस बदकिस्मत देशमे शाति होनेवाली नही। जो लोग अपनी खुशीसे खास कारणोसे अपने घरोको न लौटना चाहे उनकी बात अलग है। अगर हमे शांतिसे, एक-दूसरेको

---

[1] उपाधि।

मदद देनेवाले पडोसी बनकर रहना है तो जनताके तबादलेके पापको धोना होगा।

पाकिस्तानकी बुराइयोको यहा दुहरानेकी जरूरत नही, उससे हिंदू और सिख दुखियोको कोई फायदा पहुचनेवाला नही। पाकिस्तानको अपने पापोका बोझ उठाना है। और मै जानता हू वह भयानक है। मेरी क्या राय है, यह जानना सबके लिए काफी होना चाहिए। अगर उस रायकी कोई कीमत है तो वह यह है कि १५ अगस्तमे बहुत पहले मुस्लिम लीगने शरारत शुरू की थी। मै यह भी नही कह सकता कि १५ अगस्तको उन्होने नई जिंदगी शुरू कर दी और शरारतको भूल गए। मगर मेरी यह राय आपकी कोई मदद नही कर सकती। महत्त्वकी बात यह है कि यूनियनमे हमने उनके पापोकी नकल की, और उनके साथ हम भी पापी बन गए। तराजूके पलडे करीब-करीब बराबर हो गए। क्या अब भी हमारी मूर्च्छा छूटेगी और हम अपने पापोका प्रायश्चित्त करेगे ? या फिर हमे गिरना ही है ?

: १५६ :

२५ नवबर १९४७

भाइयो और बहनो,

आज मै आपसे पाकिस्तानसे आए हुए शरणार्थियोके बारेमे कुछ कहना चाहता हू, लेकिन अभी मुश्किलकी बात यह है कि उनको शरणार्थी कहना चाहिए कि नही। कल चद भाई मुझको कहते थे कि आप हमको शरणार्थी क्यो कहते है ? एक तरहसे तो उनकी बात सच्ची है, क्योकि शरणार्थी तो उनको कहते है जो शरण चाहते है। वे वहांसे कष्टके मारे आ तो गए, लेकिन यहां किसीकी शरण क्यों चाहे ? और शरण भी किसकी, जब सारा हिंदुस्तान है और वह सबका है ! यहां तो मै पाकिस्तानको भी उसमे मानता हू। लेकिन आज अगर वह नही है और

ऐसा कहो कि हमारे दो टुकडे हो गए है, तो भी यूनियन तो सबका है और होना भी चाहिए। तब वे यहां आते है तो अपने हकसे आते है। इसलिए उनकी बात मुझको सच्ची लगी। जब आदमीको किसी जगह कष्ट होता है और वह वहांसे भागता है और आकर अपनी मांकी गोदमे छिप जाता है, तब उसको हम शरणार्थी कहेगे या हकसे आया है, ऐसा कहेगे ? मैंने उनको कहा कि आप यह तो मानेगे कि मुझे कोई द्वेष-भाव तो हो नही सकता कि जो मै इस कटु भाषाका इस्तेमाल करू। हकीकतमें यह पहले अग्रेजीका शब्द 'रिफ्यूजी' था, और हम तो अग्रेजी भाषाके अबतक ऐसे गुलाम रहे है कि गुलामीमेंसे छूट नही सकते हैं। इसलिए 'रिफ्यूजी' शब्द तो पहले बना और उसका एक ही मानी हो सकता था जो कि पीछे अखबारवालोने शरणार्थी या निराश्रित किया। तब उन्होने कहा कि अग्रेजीमें और भी तो शब्द बहुत है, जैसे 'सफरर्स'[१] है कि नहीं, तो फिर उनको 'सफरर्स' क्यो नही कहते ? मै तो अग्रेजी इतनी जानता हू, इसलिए 'सफरर्स' कैसे कहूं ! तो फिर क्या कहूं उनको ? पीछे मेरे दिलमें ऐसा हुआ कि दुखी तो वे है ही, इसलिए दुखी कहो। वैसे तो हम सभी यहां दुखी पडे है, लेकिन जो लोग लाखोकी तादादमे अपने घरबार छोड़कर यहां आए है, वे दरअसल दुखी है। इसलिए उनके बारेमे मै आज कुछ कहना चाहता हू।

मेरे पास आज तीन किस्मके लोग मिलने आए। एक किस्मको तो मैं छोड़ देना चाहता हू। लाहौरमे उसका एक बडा सारा कबीला था। कुछ होटल वगैरह उसका चलता था, तो वहां उसका सब घरबार और मालमता छूट गया और अपनी बीबी-बच्चोको लेकर यहा आ गए। सबको तो यहां नही लाए। लेकिन मुझको सब हाल सुनाया और पीछे कहने लगे कि मुझको यहां कही घर दिलवा दो। मैंने कहा कि मेरे हाथमे कोई हकूमत तो है नही, और अगर हकूमत भी होती तब भी मैं घर दिलवानेवाला नही था। एक तो दिल्ली शहरमे वैसे ही घर कम है और यहांके लोग ही काफी परेशानीमे पड़े है, इसपर भी उनसे हकूमत घर छुडवा लेती है।

---

[१] पीड़ित।

जब कोई अमलदार या राजदूत आ गया तो उनको तो तंबूमे नही रख सकते है। इसलिए उनको किसीका घर या कोठी खाली कराकर दे देते है। जो लोग उसमे पहलेसे रहते है, वे जब कहते है कि हम कहां जाए तो कहा जाता है कि कही भी जाओ। हकूमत यहांतक तो नही जाती, लेकिन जा सकती है, और कई लोगोको इस तरहके नोटिस मिले है कि तुम्हे अपना घर खाली करना पडेगा। जब यह हालत है तो जो ये लाखो लोग दु:खी पड़े है, उनको घर कहांसे दिया जाय ? उसने कहा कि हम सत्रह आदमी खोकर यहां आए है। मैने कहा कि आप सत्रह आदमी खोने लायक तो थे। ऐसे भी कबीले है जिनमे एक मर्द और औरतके सिवा दूसरे कोई है ही नही। अगर आप यह माने कि यह सारा हिंदुस्तान हमारा है तो जो सत्रह गए वे तो गए, लेकिन बाकी हिंदुस्तानके लोग तो है। खैर, यह तो एक ज्ञान-वार्ता हो गई, उसको तो छोड़ो। तब मैने उनको कहा कि जो कैंप यहां चल रहे है उनमे आपको चले जाना चाहिए। वहां सब किस्मके लोग रहते है और वहां रहना कोई बुरी बात नही है। उसने कहा कि क्या मै कोई भिक्षार्थी हू। मैने कहा, हर्गिज नही। अगर मै कैंप चलानेवाला बनू तो किसी भिक्षुकको अन्न दूगा ही नही। आप सब लोग तगड़े है, काम करो और खाओ, कपड़े बनाओ और पहनो। हां, रातमे कुछ कपडा ऊपर तान लो जिससे कि ऊपरसे जो ओस गिरती है, उससे बच जाओ। दिनमे उसकी भी कोई जरूरत नही होती। आकाश साफ होता है और सूर्यनारायण जो गर्मी देता है वह गर्मी लेनी चाहिए। मै तो दिनके समय घरमे रहता नही। बाहर सूर्यनारायणकी धूप मुझको अच्छी लगती है। उसने कहा कि हम तो ऐसे नही है, हमारे तो छोटे-छोटे बच्चे है, हमे तो रहनेके लिए मकान ही चाहिए। मैने कहा कि क्या आपके ही बच्चे है और किसीके है ही नही ? मै तो जिस कैंपमे गया वही देखा कि माताए और उनके बच्चे सभी वहां रहते है। कोई उनमे गर्भवती भी है और वही बच्चे पैदा करती है। तब आपको वहां रहनेमे क्या आपत्ति है ? वहां जो दूसरे लोग खाते है वह खाओ और वे जो मेहनत करते है वही करो। तुम तो काफी चुस्त और तगड़े हो, होटल वगैरह भी चला सकते हो। तो फिर क्यो नही ऐसा काम करते जिससे दूसरोंको भी राहत मिले ?

उन्होने कहा कि यहां जो मुसलमान रहते हैं वे खाली करके क्यों नही जाते ? वे अबतक क्यो यहां बैठे है ? यह सुनकर मुझे काफी चोट लगी। मुसलमान एक तो पहलेसे ही डरके मारे हट रहे है और जो बाकी रहे हैं उनमेंसे भी रोज कुछ-न-कुछ हलाक[१] हो जाते है। हर कोई जाकर उनको कहता है—यहासे हटो, हमको तुम्हारे घरमे रहना है। इस तरह हरेक आदमी अगर हाकिम बन जाए तो फिर रैयत कौन रहेगा और देश किसका होगा ? हर आदमी तो हकूमत चलानेवाला हो नही सकता। दुनियामे किसी जगहपर भी ऐसा नही होता। हां, जहां बिल्कुल जगली लोग रहते है वहां कहते है कि कोई हाकिम नही होता। लेकिन लुटेरोंका भी कोई हाकिम रहता ही है। जैसे अलीबाबा और चालीस चोरकी वार्ता चलती है तो वहां भी उनका एक सरदार तो था ही। इस तरहसे दुनियामें कोई जगह नही जहां सब आदमी हाकिम हो या कोई भी हाकिम न हो। हम हाकिम बनना और अपने ऊपर हकूमत चलाना तो जानते ही नही। तभी तो आज इस झझटमे पड़े है। आप उन लोगोंके घरोपर, जो कि डरके मारे उन्हें छोड़ गए है या मारे गए है या पुलिसने पकड लिए हैं, ऐसी नजर करे, यह बहुत बुरी बात है। यह बात आपके लायक नही। आप अगर कह सकते हैं तो मुझसे कह सकते हैं, क्योकि मै जहा रहता हू वह एक महल-जैसा घर है। मुझे कह सकते हो कि तू यहांसे हट जा और किसी कैंपमे चला जा। तुझको क्या है ? न तेरे पास पत्नी है, न लड़के है और न लड़की है, ये कोई दूसरी-तीसरी लड़कियां लेकर बैठ गया है और कहता है कि मेरी लड़कियां है। वहां कैंपमे जा। वे भी तेरी ही लड़कियां है। मैं तुम्हारी यह बात सुनूगा। हां, हँसूगा तो सही, क्योकि अगर मै भाग भी गया तब क्या आप यहां रह जायंगे ? यह घर तो दूसरेका है, मेरा नही है। हां, इस घरका मालिक ऐसा है कि उसने मुझको ही मालिक बना रखा है और यह कह रखा है कि जिसको तुझे रखना है रख और न रखना हो मत रख। मुसलमान तो अपने घरोसे हटने लायक है कहां, उनसे बहुत लायक तो गाधी है। उसको यहांसे उठाकर कही भी पटक देगे

---

[१] माराजाना।

तो उसको तो इस तरहसे कोई पड़ने देगा नही। उसे तो कोई दूध देगा, कोई फल देगा और कोई खजूर दे देगा, इस तरह उसका निर्वाह तो हो ही जाएगा। नंगा वह रहनेवाला नही है, कपड़े भी उसको मिल जायंगे। जब इस तरहसे मैंने उनको कहा तो वे शर्मिंदा बन गए।

इसके पीछे मेरे पास जो लोग आए वे सिख भाई थे। उन्होंने कहा कि हम ऐसे सिख नही है जैसे यहां है। खूबीकी बात यह थी कि उनके पास कृपाण नही थी। मैंने पूछा तो नही कि उनके पास कृपाण क्यो नही है, लेकिन हाथोंमे कड़ा पहना हुआ था और मेरा खयाल है कि दाढ़ी भी थी। उन्होने कहा कि हम बहुत परेशानीमें पड़े है। हम हजारा जिलेके है। मैंने पूछा कि वहां आप क्या करते थे? उन्होंने कहा कि वहां हमारे खेत थे और उनमे खेती किया करते थे। यहां भी हम खेती चला सकते है, अगर हमे जमीन और खेती करनेका सामान दे दिया जाय। मुझको दर्द हुआ कि वे बात तो ठीक ही कहते है। मैंने कहा कि आप पूर्वी पजाबमे क्यों नही जाते? उन्होने बताया कि पूर्वी पंजाबकी हकूमत हमें कहती है कि जो लोग पश्चिमी पंजाबसे आए है उन्हींको हम ले सकते है। सब जगहसे अगर लोग आए तो उतनी जगह हम कहासे दे सकते है? चूंकि तुम लोग सरहदी सूबेके हो इसलिए केंद्रीय सरकारके पास जाओ। यह जवाब हमको वहांसे मिलता है।

केंद्रीय सरकारके पास तो जमीन रहती नही है, लेकिन वह अगर इन लोगोको जमीन दे दे और खेतीका काम ये करने लगे तो बहुत ही अच्छा हो। उनके लिए बैल, हल और बीज वगैरहका भी प्रबंध सरकारको करना चाहिए। दिल्ली प्रांतमे इतनी जमीन है या नहीं, इसका मुझको पता नहीं है। लेकिन जो लोग हल जोतना चाहते है उनको कही भी बसा देना चाहिए। अगर हकूमत मेरे हाथमें होती तो मैंने उनके लिए एक अलग कैंप खोल दिया होता। वहांपर वे सब अपने लिए खानापीना पैदा करे। अगर वैसे नही तो हकूमत उनके खातेमे लिखकर इस कामके लायक पैसा दे दे। वे कहते है कि आज तो पैसे हमारे पास नही है, लेकिन हम मेहनती आदमी है और अगर हमे खेतीका काम मिल गया तो हम सब कुछ पैदा कर लेंगे, हम कोई शौकसे तो बैठेंगे नही। मुझको ऐसा लगता है कि ऐसे खेतिहर-

लोग जो इधर-उधर पडे है उससे हमारे मुल्कका नुक्सान होता है। वे हमारे ही भाई है, इसलिए उनके लिए कुछ-न-कुछ करना चाहिए। हकूमत-मे मै किससे मिलू, मुझको पता नही। मगर मै आपकी मार्फत हकूमतको सुनाना चाहता हू कि ऐसे लोगोकी मदद करना हमारा काम हो जाता है। वे कहते है कि हम कहा रहे और क्या खाए ? मै तो कहूगा कि उनके लिए कोई अलग कैप होना चाहिए और जबतक वह न हो तबतक वे इन्ही कैपोमे रहकर अपना गुजारा करे। अगर यहा उनको जगह नही मिलती है तो सारे हिंदुस्तानमे कही कोई खाली जगह मिलती हो वह हमारी ही जगह है। वे यह नही कहते कि हमे इसी जगहपर रखो, वे यह भी नही कहते कि हमे किसी मुसलमानका घर दिलवा दो। वे कहते है कि हमने जो मुसीबत भुगती वह हम दूसरोको देना नही चाहते। हम तो गरीब लोग है। वैसे तो तगडे है, लेकिन हमारा तगड़ापन किसीको डरानेको नही है। हमे तो यहां ईश्वरसे डरकर बैठना है और जिस तरहसे जीवन बसर हो सकता है वैसे करना है। लेकिन मैने कहा कि ये सब चीजे केवल चद दिनोके लिए है। उन्होने पूछा कि यह कैसे ? जैसा कि यहां भी एक भाईने पूछा है कि आप कहते है कि पाकिस्तानसे आनेवालोको वही जाना होगा और यहासे गए हुए मुसलमानोको यहा आना होगा, यह कैसे होगा ? मैने कहा कि यह आज नही तो कल होकर रहेगा। लेकिन उसकी शर्त यह है कि पहले हम लोग यहा अच्छे बने। हम ऐसा मान लें कि हमारा कोई दुश्मन ही नही है, मुसलमान भी हमारे दुश्मन नही है। कुछ लोग कहते है कि मुसलमान यहां भी फिफ्थकालम[1] है। बेचारे क्या 'फिफ्थकालम' हो सकते है ! हम यहां ऐसे पडे है कि हमको कोई सता नही सकता और अगर सताएगा भी तो भगवान उसको देखेगा या हमारी हकूमत ही उसको मार डालेगी। आज अगर हम यहा ठीक हो जाते है तो कल सब काम ठीक हो सकता है। तब तो मै भी आजाद हो जाऊगा। आज तो मै परेशान पडा हू, मेरे लिए अब जीना भाररूप बन गया है। मै सोचता हू कि क्यो मै यहा पडा हू। अगर दिल्ली मान जाए तो मै तगडा

---

[1] पचम स्तंभ।

बन जाता हूं और तब मैं भागता हुआ चला जाऊंगा पश्चिमी पजाबमे, और जो मुसलमान यहासे गए हैं उनको कहूगा कि मैं तुम्हारे लिए सब सामान तैयार करके यहां आया हू, आप अब जहा चाहे और जब चाहे तब वापिस जा सकते है । अगर ऐसा मौका आ गया, और कभी-न-कभी तो यह मौका आना ही है, क्योकि करोड़ों आदमी कैसे एक दूसरेके दुश्मन बनकर रह सकते है ? हमारे यहां जो ३॥ या ४ करोड मुसलमान है, उनको मारो या यहासे भेज दो, यह कोई बननेवाली बात नही है । यह तो ख्वाबमें भी नही आ सकता और न मैं ऐसा ख्वाब चाहता हू । लेकिन आज तो मै भारस्वरूप पड़ा हू । एक दिन वह था जब मेरी चलती थी, मगर आज नही चलती । तो क्या मैं भाग जाऊ ? मै जिंदा रहू या मर जाऊं, लेकिन जितने ये दु'खी लोग है उनको कभी-न-कभी अवश्य अपने-अपने घरोको वापिस लौटना है और पूरी शान तथा मर्दानगीके साथ, किसीसे लड़नेके लिए नही, बल्कि अपने भाइयोसे भेट करनेके लिए। उसी तरहसे, मुसलमानोंको यहा आना है । केवल वही चीज हमको जिंदा रख सकती है और दूसरी तरहसे हम जिंदा रह नही सकते ।

: १६० :

२६ नवबर १९४७

भाइयो और बहनो,

एक भाईने मुझे खत लिखा है। उसमे बबईके एक अखबारकी कतरन भेजी है। उस कतरनमे लिखा है, गाँधी तो काग्रेसका ही बाजा बजाता है। लोग वह सुनना भी नही चाहते। इस तरहसे काग्रेस रेडियो वगैराका अपने ही प्रचारके लिए इस्तेमाल करेगी तो आखिरमे यहा हिटलरशाही कायम हो जायगी। मै काग्रेसका बाजा बजाता हू, यह बात सर्वथा गलत है। मै तो किसीका बाजा बजाता ही नही या फिर सारे जगतका बजाता हूं। उस कतरनमें यह भी कहा है कि अहिंसाकी बात तो यो ही ले आते हैं, हेतु तो यही है कि हकूमतको अपना ही गान

करना है। मै यह कहता हूं कि जो हकूमत अपना गान करती है वह चल नही सकती। और, मैं तो धर्मकी ही सेवा करना चाहता हूं। धर्मसे सबंध रखनेवाली बाते ही आप लोगोंको सुनाता हूं। हो सकता है कि कुछ लोग मेरी बाते सुनना पसद न करते हों, मगर, दूसरे लोग मुझे लिखते है कि मेरी बातोसे उनका कितना हौसला बढ़ता है। जिन्हे मेरी बातें नापसद हो उन्हे कोई सुननेके लिए मजबूर नही करता। और, अगर आपका मन कही और है तो यहा बैठकर भी आप मेरी बात बिना सुने जा सकते है। आप लोग मुझे छोड़ देंगे, तो मै यहां प्रार्थना भी नही कराऊंगा और भाषण भी नही होगा। मै खास तौरसे रेडियोपर बोलने जानेवाला नही, मुझे वह पसद नही है। यहापर भी मुझे क्या कहना है, यह मैं सोचकर नही आता।

हमारी काफी औरते पाकिस्तानमे पड़ी है, लोग उन्हे बिगाड़ते है। वे बेचारी ऐसी बनी है कि उसके लिए शर्मिंदा होती है, मेरी समझमे उन्हे शर्मिंदा होनेका कोई कारण नही। किसी औरतको मुसलमान जबर्दस्ती पकड़ लें और समाज उसको निकम्मी मानने लगे और भाई, मा, बाप, पति सब छोड़ दें तो यह घोर निर्दयता है। मै मानता हू कि जिस औरतमे सीताका तेज रहे उसे कोई छू नही सकता। मगर आज सीता कहासे लावे? और सब औरते तो सीता बन नही सकती। जिसे जबर्दस्ती पकडा गया, जिसपर अत्याचार हुआ, उससे हम घृणा करें क्या? वह थोडे ही व्यभिचारिणी है। मेरी लड़की या बीबीको भी पकडा जा सकता है, उसपर बलात्कार हो सकता है, लेकिन मै कभी उससे घृणा नही करूंगा। ऐसी कई औरते मेरे पास नोआखालीमे आ गई थी। मुसलमान औरते भी आई है। हम सब बदमाश बन गए है। मैने उन्हे दिलासा दिया। शर्मिंदा तो बलात्कार करनेवालेको होना है, उन बेचारी बहनोको नही।

एक भाई कहते है कि मान लीजिए कि कट्रोल मिट जाय, देहातोमे लोग अपने लिए अनाज पैदा करने लगे, गावके लोग फसल वगैरा काटनेके लिए एक दूसरेकी अपने आप मदद करे तो अनाज सस्ता होगा; लेकिन अगर किसानको दाम देकर मजदूर लगाने पड़ेगे तो दाम बढेगा। पहले तो यह रिवाज था ही, एक किसान दूसरे किसानोको निमत्रण देता था

मैं वहा उनके पास भी चला गया था। जैसे जवाहरलालजी यहांके प्रधान मत्री हैं वैसे वे पाकिस्तानके प्रधान मत्री हैं। तो वे, और वहाका जो अर्थमंत्री है उनका नाम मैं भूल गया हूं, सरदार पटेल और पीछे दो और, ये सब एक साथ मिले और उन्होने कुछ-न-कुछ कर भी लिया है। पूरा-पूरा तो उसका बयान मैं नही दे सकता हू। अगर वह सब हो जाय तो मुमकिन है कि आज इतनी भीडमे जो हम लोग पड़े है और जिस परेशानीमेंसे हम गुजर रहे है उसमेंसे कुछ तो निकल पाए। लेकिन सब तो ईश्वरके हाथमे है कि क्या होनेवाला है और क्या नही। आखिर इन्सान तो सिर्फ कोशिश ही कर सकता है।

आपने यह भी देख लिया होगा कि शेख अब्दुल्ला साहब भी यहां आ गए है। जितने काश्मीरके लोग है वे तो सब उनको 'शेरे काश्मीर' कहते है। और वह है भी ऐसा ही। बहुत काम उन्होने कर लिया है और सबसे आला दर्जेका काम तो उन्होने यह किया कि काश्मीरमे जितने हिंदू, मुसलमान और सिख रहते है उन सबको अपने साथ ले लिया है। तादादमे तो मुसलमान बहुत अधिक है और हिंदू और सिख तो मुट्ठीभर है, ऐसा हम कह सकते है, लेकिन तो भी उनको अपने साथ लेकर वे चलते है। वे खुश न रहें ऐसा कोई काम वे नही करते। पीछे हमने देखा कि वे यहां आते हुए जम्मू भी चले गए थे। जम्मूमें हिंदुओकी तरफसे ज्यादतिया हुई है और काफी ज्यादतियां हुई है। उनका पूरा-पूरा बयान तो हमारे अखबारोमे नही आया। महाराजा साहब भी वहा चले गए थे और उनके नए प्रधान मत्री भी। तब वहा दो प्रधान मत्री है क्या, या कुछ और है, मजाकमें मै उनसे पूछ रहा था। उन्होने कहा कि मुझको भी यह पता नही, मगर इतना तो है कि मै वहाका इतजाम कर रहा हू। दो हों या एक हो। तो वे भी जम्मूमे चले गए थे। जम्मूमें जो कुछ हुआ वह महाराजाने करवाया या उनके जो नए प्रधान मंत्री है उन्होने करवाया, इसका तो मुझको पता नही। लेकिन वहा हुआ और हमारे लिए यह बडी शर्मनाक बात है कि हम ऐसा करे। शेख अब्दुल्लाने यह सब देखकर भी अपना दिमाग बिगड़ने नही दिया और जम्मूमे जो हिंदू पडे है उन्होने भी उनका साथ दिया। पीछे उसमे उनको कहना भी क्या था? यह होते हुए भी

उनको तो बताना है, काश्मीरको, और सारे हिंदुस्तानको भी, कि यही तरीका है जिससे हिंदू, मुसलमान और सिख सब मिलकर रह सकते हैं और एक दूसरेपर एतबार कर सकते है। तभी काश्मीर और हिंद दोनों एक साथ रह सकते है। उनकी तरफसे कोशिश तो ऐसी ही हो रही है; लेकिन उसमे एक रुकावट है। वह पहाड़ी मुल्क तो है ही, चौदह हजार फुट तो शायद नही, लेकिन दस हजार फुट ऊचा तो है। बहुत बर्फ वहा पड़ती है। इसीलिए एक जगहसे दूसरी जगह आना-जाना आरामसे नही हो सकता। आरामसे तो पाकिस्तानमेसे ही होकर जा सकते है। लेकिन कौन कह सकता है कि वे जाने दे या न जाने दे। इसके अलावा जो अफरीदी हमलावर हैं, या उनको पाकिस्तानके कहो, उनके साथ कुछ लड़ाई तो चल ही रही है। तब इस हालतमे काश्मीरके लोग वहासे होकर कैसे आवें ? यो तो हिंद सरकारने उनको मदद भी भेज दी है। तब उनको सीधा रास्ता तो यूनियनमेंसे ही मिल सकता है। काश्मीरमे वैसे कोई बड़ी तिजारत[१] तो नही है, लेकिन वहाके लोग उद्यमशील है और हाथके कारीगर है। फलोका तो काश्मीर एक बड़ा बगीचा है। लेकिन ये सब चीजे कौन वहासे यहा लाए और कैसे लाए ? हवाई जहाजसे तो सब चीजे आ नही सकती, और जो बेचनेवाले हैं वे भी कैसे हवाई जहाजसे आए ? ऐसे तो काम नही बन सकता। इसलिए वहा एक ही रास्ता है जो पूर्वी पजाबमे पठानकोटकी तरफसे है। है तो वह छोटा-सा ही रास्ता, लेकिन है। तब पूर्वी पजाबमे जो हिंदू रहते है, वे इतने बदमाश हो गए है कि उस रास्तेसे कोई मुसलमान आ नही सकता। शेख साहब कहते है कि यही सबसे बड़ा खतरा है। शेख अब्दुल्ला तो एक बड़ा आदमी है, लेकिन वह कहते है कि हम भी अगर उधरसे जाते है, तो हमको भी बहुत दुश्वारी होती है। यह जरूरी नही कि कोई सिपाही ही हो, बल्कि आम लोग भी वहाके, यह पूछ लेते है कि तुम कौन हो, लाओ, तुम्हारी पगडी उतारकर देखें तो कि चोटी भी है कि नही, और इसके बाद दूसरी-तीसरी चीजे भी पूछ लेते है। अगर वह हिंदू या सिख है तो खैर है और अगर

[१] व्यवसाय।

मुसलमान निकला तो बस फिर खत्म हुआ। ऐसी हालत है वहां !

तब गवर्नर जनरल और ये जो चार लोग इकट्ठे बैठ गए है वे अगर कुछ कर ले तो अच्छा ही है, और कुछ कर भी लिया है। मगर उनके करनेसे क्या ? जब जनता बिगड़ी हुई है तो फिर कोई काम बनता नही है। मै तो पूर्वी पजाबकी जनताको यह कहूगा कि अब बहुत हो चुका, हमने कितनी खराबिया की, मगर अब तो भूल जाओ। या हमेशाके लिए यही होनेवाला है ? मै कहता हू कि यह रास्ता बिल्कुल साफ हो जाना चाहिए। उसमे हकूमतको भी पूरा काम करना है। अगर यह काम न कर सकी और हवाई जहाजोसे थोड़ा-बहुत लश्कर वहा भेज दिया तो उससे क्या हुआ ? उससे क्या काश्मीरका व्यापार चलनेवाला है ? अगर नही तो क्या हिंद यूनियन काश्मीरियोका पेट भरता रहेगा ? यह तो हो नही सकता है। आज अगर हमारी हकूमतके पास करोड़ रुपये आ गए है तो क्या वह उनको इधर-उधर उड़ाती रहेगी ? सुनता हू कि अब हकूमतमे हरएक आदमीको एक-एक सेक्रेटरी मिलनेवाला है। क्या होगा उसका, और क्या दरमाहा[1] उस सेक्रेटरीको मिलनेवाला है, मुझको तो कुछ पता नही चलता। अगर इस तरहसे हम पैसे उडाते रहे तो हमारा जल्दी ही खात्मा होनेवाला है। हमारा मुल्क करोड़पतियोका नही है, एक गरीब मुल्क है, जहा लोग तांबेके पैसे भी बड़ी मुश्किलसे पैदा करते है। यहा जो करोड़पति या ताजिर[2] लोग है, वे तो केवल मुट्ठीभर है। उनके पास भी जितना पैसा पडा है वही क्या है ? इस तरह अगर पैसा उड़ाया जाय तो वह भी एक मिनट-मे खत्म हो सकता है। पीछे तो सारा हिंदुस्तान पड़ा है, उसका खर्च भी हमे चलाना है। हम पैसेका दुरुपयोग तो कर ही नही सकते। तब हकूमतको यह देखना होगा कि किस तरहसे यह रास्ता सुरक्षित हो सकता है जिससे कि कोई भी आदमी उस रास्तेसे आ-जा सके। काश्मीरमे बहुत खूबसूरत कपड़े बनते है, वे आ सकते है, शाल आ सकते है, और भी जो चीजे कारीगर लोग बनाते है वे सब उस रास्तेसे आ सकती है। काश्मीरकी मेवा यहा आ सकती है। आज तो अगर काश्मीरका सेब खाना हो तो बहुत मुश्किल-

---

[1] मासिक; [2] व्यापारी।

से ही मिलेगा। काश्मीर भारतीय यूनियनमें आ तो गया; लेकिन इस तरह-से वह कहातक हमारे साथ रह सकता है ? अगर काश्मीरको सुरक्षित रास्ता न मिले तो फिर क्या होगा यह मुझको भी पता नही है। अब एक तीसरी बात और कहकर आजका मामला तो मै खत्म करता हू ।

अभी मेरे पास पाकिस्तानके 'डान' और 'पाकिस्तान टाइम्स' दोनों अखबार आ गए है। ये दोनो पाकिस्तानके अच्छे बडे अखबार है। जब 'डान' मे या 'पाकिस्तान टाइम्स' मे कुछ निकलता है तो हम यह नही कह सकते कि अरे, यह तो कुछ अखबार नही है। तब तो वहाके लोग भी कह सकते है कि 'हिंदुस्तान टाइम्स' मे जो लिखा है, वह क्या है, 'बबई क्रानिकल' मे जो लिखा है वही क्या है ? यह तो एक निकम्मी बात हो जाती है। मैं तो यह मानता हू कि वे भी अच्छे अखबार है, उनको मुसलमान लोग पढते है और अच्छे-अच्छे मुसलमान उनको चलाते है। तो उनमें वे काठियावाड़के मुसलमानोके बारेमे लिखते है। जब सरदार जूनागढ़में चले गए थे तब तो मुझको बहुत अच्छा लगता था यह देखकर कि वहाके मुसलमानोने भी उनका इस्तकबाल[1] किया। वे कहने लगे, आप तो भले आए, हम सब परेशान हो रहे थे, अब शायद आराम-से रह सकेंगे। जब काठियावाडके सब राजा और प्रजा एक तरफ मिल गए है तब जूनागढ़ कहातक अलग जा सकता था ! इसलिए मुझको अच्छा लगा कि कुछ मारपीट भी न हुई और सारा मामला निपट गया। वे बिल्कुल अहिंसापर तो कायम नही रहे, मगर जो हिंसा उन्होने अख्तियार की थी उसमे उन्होने बहुत सोच-विचारकर काम लिया। मै तो यह सब देखकर खुश हुआ था। लेकिन अभी सुनता हू और 'डान' अखबारमे भी है कि काठियावाड़मे मुसलमान आज आरामसे नही बैठ सकते है। ठीक मौकेपर एक मुसलमानका भेजा हुआ मुझको तार भी मिल गया है। काठियावाड ऐसा मुल्क है जहा मुसलमान बहुत आरामसे रहते थे और उनको कोई छूता भी नही था। वहा अच्छे और तगड़े मुसलमान भी थे और बलवाखोर भी थे। बलवा वे कोई आपस-आपसमे नही करते थे, बल्कि

---

[1] स्वागत।

जीविकाके लिए कुछ कर लेते थे। आज उसी काठियावाड़मे उनको ऐसा लग रहा है कि वे वहां रह सकेंगे कि नही। तब क्या काठियावाड़से सारे-के-सारे मुसलमान चले जाएं या उनको हिंदू लोग काट डालें ? हैरान है वे सब-के-सब और मेरे लिए तो यह एक बहुत बड़ी दुश्वारी है, क्योकि मैं काठियावाड़में पैदा हुआ हू, वहाके सब राजाओको जानता हू और हजारो लोगोको भी मै वहा जानता हू। वहापर तो जो मेरा लड़का-सा ही सांवलदास गाधी है वही जूनागढ़का सब कुछ होकर बैठ गया है। उसने एक आरजी[1] हकूमत भी बना रखी है। इन लोगोकी हकूमतके होते हुए काठियावाडमें ऐसा हो कि जिस मुसलमानने कुछ भी नही किया है उसको भी लोग मार डाले तो फिर यह आरजी हकूमत क्या हुई ? जब लोग इस तरहसे कानूनको अपने हाथमे ले लेते है तो फिर मुसलमान कैसे वहा सही-सलामत रह सकते है ? अगर यह पीछे सब जगह फैल जाए तब क्या हो, मै जानता नही। यह सब वहां हुआ है या नही यह भी नही जानता, लेकिन 'डान' मे जो लिखा है वह मैंने पढ़ा है और तार भी मेरे पास आ गए है। बादमे मैंने चद हिंदुओसे भी पूछा और उन्होने भी कहा कि हां, कुछ आग लगानेके मामले तो हुए है, कुछ लूट भी हो गई है, मगर किसीका खून भी हुआ कि नही यह हम नही जानते और मुसलमानोकी औरते भी छीनी गई है कि नही यह भी हम नही कह सकते। लेकिन 'डान' तो लिखता है कि ये चारों बाते हुई है और अच्छे बड़े पैमानेपर हुई है। बहुत-से तार मेरे पास आ गए थे, लेकिन मुझको एक ही तार बताया गया और दूसरे तार गफलतसे नही बताए गए। शायद ऐसे पचास तो आ गए होगे, मुसलमानोने इधर-उधरसे भेजे होगे। और उनको हक है मुझसे यह कहनेका, कि तुम्हारा लड़का वहाका सब कुछ बना हुआ है। लडका जो कुछ करे उसकी जिम्मेदारी मैं कैसे लू ? लेकिन इससे तो मै दुनियाको या उन मुसलमानोको क्या समझा सकता हू ? वे तो ठीक ही मुझको लिखते है। लेकिन मैं लडकेको सुनाता भी कब ? आज ही तो मैने यह सब पढा है। इसलिए मैं आपकी मार्फत,

---

[1] तात्कालिक।

अपने लड़केको ही नही, सारे काठियावाड़को सुनाना चाहता हू कि अगर हिंदू वहाके ऐसे पाजी हो गए है— हिंदू ही हो सकते है, क्योकि सिख तो वहां है ही नही, क्या हुआ अगर एक-दो वैसे काम करनेके लिए चले गए हो—तब काठियावाड सही-सलामत नही रह सकता। हमने जूनागढ़ लिया तो सही, मगर इस तरहसे हम उसको खोनेवाले है, ऐसे ही, जैसे कि हमने अपने मुल्ककी आजादी ली तो सही; लेकिन खोनेके लिए ली। पीछे वे सुनाते है कि याद है सरदारने जूनागढ़मे क्या कहा था? उसने कहा था कि अगर मुसलमानका एक बच्चा भी होगा तो उसके एक बालको भी कोई छू नही सकेगा, बशर्ते कि वह काठियावाड, यानी हिंद यूनियनके प्रति वफादार बनकर रहा। अगर मुसलमानकी एक भी छोटी लडकी है और उसको कोई छूता है तो मै देख लूगा। वह तो ऐसा कह सकते थे, क्योकि एक तो सरदार, और दूसरे हिंदुस्तानके गृहमत्री थे। उनको तो कहनेका हक था। उन्होंने कहा तो, लेकिन वह अब कहा गया, मै पूछता हूं। मेरे दिलमे चुभता है कि काठियावाडमे ऐसा हो सकता है और वहाके लोग इस तरह दीवाने बन सकते है। हमारा धर्म गया, कर्म गया और इस तरहसे हमारा मुल्क भी चला जायगा। मेरा तो यही धर्म था कि मै आप लोगोको यह सब बता दूं। हमारे अखबारोमे तो ऐसी चीजे आती नही है। मेरे पास ये सब आ जाती है। मेरा धर्म तो था कि मै इतनी तहकीकात करता, लेकिन मेरे पास कहां इतना वक्त है! इसलिए जैसे मैने सुना वैसे ही मैने आपको कह दिया। मै तो जब लियाकतअली साहबसे मिला तब भी मैने कहा कि अगर आपकी इजाजत हो तो एक बात पूछना चाहता हू। उन्होने कहा कि पूछो। तब मैने कहा कि क्या आप काठियावाड-के बारेमे कुछ जानते है? उन्होने कहा कि मै सब कुछ जानता हू। ऐसा वहा हुआ है और यही चारों बाते हुई है, लेकिन कितने पैमानेपर हुई, यह मै नही कह सकता। वे तो पाकिस्तानके प्रधान मत्री है। इसलिए उन्होंने तो सब साफ-साफ कहा, हालाकि मै तो दबी जबानसे ही बात कर रहा था। तब मैने सोचा कि आज शामको मै इसको जरूर कह दूगा। मेरे दिलको इस बातसे कितनी चोट पहुची है।

काठियावाड मेरा घर है। जब घर ही इस तरहसे जल जाता है

तो फिर किसीको कहनेका क्या मौका रह जाता है ! तब दिल्लीवालोंको मैं क्या सुना सकता हूं ? मेरे पास तो कुछ ऐसा बन गया है कि इर्द-गिर्द चारों ओर यही चलता है। तब फिर उसमें मैं कैसे साबूत[1] रह सकता हूं। जो इन्सान है और समझदार है वह इस तरहके वातावरणमें साबूत रह नही सकता। यह मेरी दुःखकी कथा है या कहो सारे हिंदुस्तानके दुःखकी कथा है, जो मैंने आपके सामने रखी है।

: १६२ :

२८ नवंबर १९४७

भाइयो और बहनो,

आप जानते हैं कि आज गुरु नानक साहबका दिन है। मुझको भी किसीने निमत्रण तो भेज दिया था, मगर उस वक्त तो मैंने कह दिया था कि आनेके लिए तो मुझे आप माफ करेंगे। लेकिन आज बाबा विचित्र-सिंह मेरे पास आ गए और उन्होंने कहा कि आपको तो आना ही चाहिए। वे १० बजे मिले थे और एक घंटेमें ही जाना था। तो फिर मैंने समझा कि अब मुझको जाना ही चाहिए। अपनी ओरसे मैंने तो कुछ किया नही है, लेकिन आज सिख भाई मुझसे नाराज तो हैं। हां, मैंने उनको एक कड़वी घूंट पिलानेकी चेष्टा की है। यह तो है, लेकिन ऐसे ही बनता है दुनियामें। तब उन्होंने कहा कि कुछ भी हो, आपको तो वहां आना ही चाहिए। वहां हजारो सिख भाई-बहनें होंगी और उनमें काफी दुःखी सिख भी पड़े होंगे, जो आपकी बात सुनना चाहते हैं। तब मैंने कहा कि अच्छा, मुझको ११ बजे ले जाइए। ११ बजे शेख अब्दुल्लाको भी अपने साथमें लेकर आए। उनको भी वे वही ले जानेवाले थे। मैंने कहा कि शेख अब्दुल्ला कैसे वहां जा सकता है; क्योंकि आज तो ऐसा बन गया है न कि सिख और मुसलमान तो एक दूसरेको बर्दाश्त ही नही कर सकते ; लेकिन

---

[1] साबित।

कुछ भी हो, शेख अब्दुल्लाने एक बहुत बडा काम कर लिया है। काश्मीर-में उन्होने हिंदू, सिख और मुसलमानको एक साथ रखा है और एक साथ मरना और एक साथ जीना, ऐसा कर लिया है। तब मैंने सोचा कि शेख अब्दुल्लाको भी ले जाना चाहिए। इसलिए मै उनको अपने साथ ले गया। मुझको यह बड़ा अच्छा लगा। हजारो सिख भाई-बहनें वहा थी। मैंने कुछ थोडा-सा ही कहा, लेकिन शेख अब्दुल्ला तो काफी बोला और सब लोगोने बहुत ध्यानसे सुना। आखसे भी कोई कुछ बताता नही था, आवाज तो कौन करनेवाला था! क्योकि हम लोगोको तो निमंत्रण देकर वे ले गए थे। आखिर सिख बहादुर तो है ही, इसलिए यह सब अच्छी तरहसे हो गया। मैंने सोचा कि आपको इतनी खबर तो देनी ही चाहिए।

मेरे पास बगालसे एक खत आ गया है। वहां जो मुस्लिम चेंबर आव कामर्स है उसका वह खत है। जवाब तो मै नही दे सकता हूं, लेकिन सोच लिया है और पीछे घनश्यामदासको भी मैंने पूछा कि आप कुछ इस बारेमें जानते है। उसने बताया कि यह जो मुस्लिम चेंबर आव कामर्स है उसको गवर्नमेंटके साथ ताल्लुक करना है, गवर्नमेंटके साथ खतोकितावत करना है। लेकिन हकूमत तो सबकी है, हिंदू, मुसलमान, पारसी सबकी। तब मुसलमान एक चेंबर बनाए, हिंदू दूसरा, पारसी तीसरा और अंग्रेज चौथा, तो ऐसा कैसे बन सकता है। इसलिए सरकारने इन्कार कर दिया। तब वे लिखते है कि कैसा गोलमाल करते है कि मारवाड़ी चेंबर रह सकता है, यूरोपियन चेंबर रह सकता है, लेकिन मुस्लिम चेंबर है, वह नही रह सकता। मुझको उनकी यह बात अच्छी लगी और मेरे दिलको चोट लगी। अगर सरकार मुस्लिम चेंबरके साथ कोई ताल्लुक नही रखती तो पीछे मारवाड़ी चेंबरके साथ भी नही रख सकती और यूरोपियनके साथ भी नही होना चाहिए। अबतक यह सब था और यूरोपियन चेंबरका तो इसलिए भी बन गया था कि वे लोग हकूमतमें थे। यहा यूरोपियनोकी हकूमत चलती थी, तभी तो वाइसराय उनके प्रेसिडेंट बनते थे। पीछे तो ऐसा बन गया था कि बड़े दिनोके अवसरपर उनको कलकत्ता तो जाना ही होता था, तो वहां यूरोपियन चेंबरमे एक बडा व्याख्यान भी दे देते थे।

लेकिन अब वह सिलसिला रह नही सकता। जो यूरोपियन है वह अलग करे, मुसलमान अलग और मारवाडी अलग, इस तरहसे कैसे हो सकता है! केवल एक इडियन चेवर ही वन सकता है। अगर हिंदू, मुसलमान और पारसी सब अलग-अलग अपने व्यापारिक चेवर बनाने लगे तो फिर हिंदुस्तानकी आजादी किसके लिए होगी? और यूरोपियनोको तो खसूसन[1] आज झुक जाना चाहिए। उनको अलग रहकर कोई चीज करनी ही नही चाहिए। वे कहे कि हमको कोई अलग हक नही चाहिए। जो दूसरोंके हक है वही हमारे हक है। तव आजाद हिंदुस्तानकी यह एक बडी भारी निशानी वन जाती है। यूरोपियन चेबरवाले हर साल वाइसराय साहबको बुला लेते थे, लेकिन आज मेरी निगाहमे तो वे यहाके प्रधान मत्रीको, या उप-प्रधानमत्रीको या ऐसा कहो कि लार्ड माउटवेटन साहबको भी अपने यहा बुला नही सकते है। हा, एक यूरोपियनकी हैसियतसे वे वहां यूरोपियनोसे मिलने जा सकते है। मगर चेबरकी हैसियतसे वे माउटबेटन साहबको नही बुला सकते। मै तो बहुत अदना आदमी हू, लेकिन मेरी राय यह है कि इसमे मुझको कोई शक नही। इसी तरहसे जो मारवाड़ी चेवरके लोग है वे हकूमतमेसे किसी आदमीको बुला नही सकते है, वैसे मारवाडी मारवाडियोकी हैसियतसे किसीको भी बुला सकते है, मगर चेंवरकी तरफसे नही। उन सबकी हस्ती सारे हिंदुस्तानकी हस्तीके साथ है। मुसलमान भी यहा कोई अलग कौमकी हैसियतसे नही रह सकते। हिंदी होकर रहे। इसी तरहसे जो सिख है वे, जो हिंदू है वे, और यूरोपियन है वे भी यहा हिंदी होकर ही रह सकते है। वे सब हिंदुस्तानके वफादार होकर रह सकते है। दूसरा कोई स्थान मै उनके लिए नही पाता हू। इसलिए मैने सोचा कि जो अहम[2] बात है उसको तो मै उनको कह दू। मै यहासे लिखू और पीछे वह उनके पास पहुचे, इससे पहले अच्छा है मेरी आवाज उन तक पहुच जाय। मुसलमान अगर ऐसा कहे कि वे राजनैतिक दृष्टिसे भी अलग रहेगे और दूसरी तरहसे भी, तो यह कोई चलनेवाली वात नही है। जो यूरोपियन है, वे क्रिस्टी वनकर रह सकते है

---

[1] विशेषतः; [2] जरूरी।

और क्रिस्टी धर्ममे जो खूबियां है उनका वे पालन कर सकते है। यह तो उनका सामाजिक या धार्मिक क्षेत्र हुआ। लेकिन जहांतक राज्य-व्यवहार या राज्य-प्रकरणका संबंध है उसमें वे सब एक ही-जैसे माने जा सकते है। उसी तरह व्यापार तो सबके लिए है ही। तब उसमे मारवाड़ी कहे कि हम सब खा जाए, गुजराती कहे हम खा जाए और पंजाबी कहे हम खा जाए, तो पीछे बाकी सारा हिंदुस्तान क्या खाएगा? ऐसे हमारा काम निपटता नही है।

एक चीज तो कहनी मै भूल गया, जो भूलनी नही चाहिए। वहा सिख-सभामें तो मैने कह दिया था, लेकिन यहां भी जो सिख है या हिंदू भी है, क्योकि जो बात एकके लिए सत्य है, वह दूसरोके लिए भी है, तो मै कहूंगा कि आज सिखोका नया दिन है, ऐसा मानना चाहिए। इस-लिए आजसे ही सिखोंका यह धर्म हो जाता है कि वे सब लोगोंको अपना भाई-भाई समझे। गुरु नानक साहबने कोई दूसरी बात सिखाई ही नही। वे तो मक्का शरीफ भी चले गए थे और गुरु ग्रंथ साहबमें भी काफी लिखा है। गुरु गोविंदने क्या किया था? बहुतसे मुसलमान उनके शागिर्द थे और उनको रखनेके लिए या उनकी हिफाजतके लिए उन्होंने कई अन्य लोगोंको मारा भी। ऐसा वह नही करते थे कि एक सिखको बचानेके लिए दूसरोंको मारा हो। तलवार उन्होंने ली तो थी, लेकिन उसमे एक मर्यादा रख दी थी। तब मुसलमानोने चाहे कुछ भी किया हो, लेकिन हमें उनकी नकल नही करनी। हम लोग सब शरीफ रहें और अपने धर्मका पालन करें। आज जब मै वहां सिख-सभामे बोलने गया तो मुझको तो इस बातका बहुत ही दर्द हुआ कि रास्तेमे मुझको एक भी मुसलमान नही दिखाई दिया। चांदनी चौकमे एक भी मुसलमान न दिखाई देता हो, इससे बड़ी शर्मकी बात हमारे लिए और क्या होगी? मैने देखा कि वहां आदमियोंकी बहुत भीड़ थी और मोटरोकी तो लंबी-लंबी कतार चलती थी। लेकिन उनमे कोई मुसलमान नही था। सिर्फ एक मुसलमान शेख अब्दुल्ला मेरे पास बैठे थे। जब ऐसी हालत है तब हमारा काम कैसे निपट सकता है?

एक भाई मुझको लिखते है कि जो सोमनाथ मंदिर था उसका

जीर्णोद्धार होगा। उसके लिए पैसा चाहिए और वहा जूनागढमे जो आरजी हकूमत सांवलदास गाधीने वनाई है, उसमेसे वे ५० हजार रुपया उसके लिए दे रहे हैं। जामनगरने एक लाख रुपया देनेको कहा है। सरदारजी आज जब मेरे पास यहा आए तो मैंने उनसे पूछा कि सरदार होकर क्या तुम वहा ऐसी हकूमत वनाओगे कि जो हिंदू धर्मके लिए अपने खजानेमेंसे जितने पैसे चाहे निकाल कर दे दे। हकूमत तो सव लोगोके लिए वनाई गई है। अंग्रेजी शब्द तो उसके लिए 'सेकुलर' है, अर्थात् वह कोई धार्मिक सरकार नही है, या ऐसी कहो कि वह किसी एक धर्मकी नही है। तव वह यह तो कर नही सकती है कि चलो, हिंदुओके लिए इतना पैसा निकालकर दे दे, सिखोंके लिए इतना और मुसलमानोंके लिए इतना। हमारे पास तो एक ही चीज है और वह यह कि सव लोग हिंदी है। धर्म तो अलग-अलग व्यक्तिका अलग-अलग रह सकता है। मेरे पास मेरा धर्म है और आपके पास आपका।

एक भाईने और लिखा है, एक पर्चेमे, और अच्छा लिखा है। वह कहते है कि अगर जूनागढकी हकूमत सोमनाथके जीर्णोद्धारके लिए पैसा देती है या यहा की मध्यवर्ती हकूमत कुछ देती है तो वह एक वडा अधर्म होगा। मै मानता हू कि वह विलकुल ठीक लिखा है। तव मैंने सरदारजी-से पूछा कि क्या ऐसी ही वात है ? उन्होने कहा कि मेरे जिंदा रहते हुए यह वननेवाली वात नही है। सोमनाथके जीर्णोद्धारके लिए जूनागढ़की तिजोरीसे एक कौडी नही जा सकती। जव मेरे हाथसे यह नही होगा तो सावलदास वेचारा क्या करनेवाला है ! सोमनाथके लिए हिंदू काफी पडे है जो पैसा दे सकते है। अगर वे कजूस वन जाते है और पैसा नही देते तो वह ऐसे ही पडा रहेगा। डेढ़ लाख तो हो गया है और जामसाहवने उसके लिए एक लाख रुपया दे दिया है। रुपयेका इतजाम तो हो जायगा।

एक वात और मेरे पास आ गई है। आपने देखा होगा कि पाकिस्तान-में हमारी लडकियोको मुसलमान छीन ले गए है। उनको छुडानेके लिए कोशिश तो हो रही है, और वह होनी ही चाहिए। हरएक लडकीको जो कि वहा अवतक जिंदा पडी है, वापिस लानेकी कोशिश की जाय। अगर

जुल्म और जवर्दस्ती करके उसे उन्होंने विगाड़ दिया है, तो क्या उसका धर्म और कर्म सब खत्म हुआ ? मैं तो ऐसा मानता नही हूं और कल मैंने आपको इस बारेमें वताया भी था। जवर्दस्तीसे किसीका धर्म नही वदला करता। लेकिन उस लड़कीको लानेके लिए कुछ पैसे दो, ऐसी भी बात आज चलती है। कुछ गुडे आ जाते है और कहते हैं कि लाओ, एक-एक हजार रुपया फी लड़की दे दो, हम उनको ला सकते हैं। तव क्या यह कोई व्यापार बन गया है ? अगर मेरी इन तीन लडकियोंमेंसे एकको कोई उठा ले जाता है और वह पीछे मेरे पास आकर कहे कि एक हजार या एक-सौ ही दे दो, मैं वापस ला दूंगा, तो मैं जवाव दूंगा कि तू उसको मार डाल। अगर ईश्वर उसको बचाना चाहते हैं तो मेरी लड़की मेरे पास आ जायगी। लेकिन क्या तू उसके लिए सौदा करना चाहता है ? एक तो लुटेरा बनता है और फिर दगावाजी करता है। अपने धर्मको तो तूने छोड़ दिया और चूंकि मेरी लडकी है, इसलिए अब मुझको दवानेके लिए आया है। मैं एक कौड़ी नही देनेवाला हू। इसी तरहसे कोई भी मा-वाप अपनी लड़कियोंके लिए ऐसा सौदा न करें। उनकी लड़की खुदाके पास पडी है। ईश्वर सब जगह है। अगर एक लड़कीका पति मर जाता है तो वह लड़की कहां जायगी ? हां, यह बात दूसरी है कि अगर लड़कीको वहांसे आना है और किराया नही है, तो किराया दे देते हैं। लेकिन अगर यह गुडा आता है और कहता है कि इतने पैसे दे दो तो वह कोई वननेवाली वात नही है। इसी तरहका एक दृष्टांत मैं दे देता हू वहाका, और यहाका भी; क्योंकि यहां हमने भी तो ऐसा ही किया और मुसलमान लड़कियां छीनी है। तव पूर्वी पजावकी सरकार या यह मध्यवर्ती सरकार जिन्ना साहवसे कहे कि एक लाख रुपया दे दो, जितनी मुसलमान लडकियां हमारे कब्जेमे है सव दे देंगे, तो क्या हमारी हकूमत ऐसा पाजीपनका काम करेगी ? मैं तो हकूमतको एक कौडी भी नही दूं। एक तो उसके यहां ऐसा नीच काम हुआ है और पीछे उस नीचताके वदलेमे वह पैसा भी मागे ! हकूमतको तो मेरे पास आकर तोवा करनी चाहिए और मुझको लड़की भी वापिस करे और उसके साथ ही कुछ इनाम भी दे। ऐसे अगर हम शुद्ध न रहे और हम बहादुर न बने तो फिर हमारा काम अच्छी तरहसे होनेवाला नही है।

कल काठियावाडकी वात मैने कही थी। मैंने तो जो पाकिस्तानके अखवारोमे पढ़ा और पीछे कुछ हिंदुओने भी सुनाया वही आपको कह दिया था, लेकिन आज जव सरदारजी मेरे पास थे तव मैने उनसे पूछा। मैंने कहा कि जव आप वहा गए थे तव तो आपने बड़े-बड़े व्याख्यान दिए थे कि वहा एक भी मुसलमान लड़के या लड़कीको कोई छू भी नही सकेगा। मगर अव मै सुनता हू कि उनको लूटा गया, मारपीट भी हुई, उनकी जायदाद वगैरा जला दी गई और उनकी लड़कियोको भी उठा ले गए। उन्होने कहा कि जहातक मै जानता हूं और ठीक जानता हूं कि वहां एक भी मुसलमानको मारा नही गया और एक भी मुसलमान-का मकान जलाया नही गया और लूटा भी नही गया। हा, इतना तो कुछ हो गया, लेकिन वह तो उनके पहुचनेसे पहलेकी वात हुई, जब कि वहां यह सव गोलमाल चल रहा था। तव कुछ लूटमार भी हुई और शायद एकाध मकान जलाया भी गया है, लेकिन ये दो वाते तो तव भी नही हुई, न तो किसी-को मारा गया और न किसी लड़कीको उठाया गया। वहा तो मध्यवर्ती सरकारका एजेट या कोई कमिश्नर वगैरा भी रहता है। तो उसको हुक्म चला गया है कि इस तरहकी चीज नही हो सकती, तुमको पूरा वदोवस्त करना है। कोई भी, मुसलमानको वहा छू नही सकता, लूटना और मारना तो दूर रहा। वादमे वहा ऐसा कुछ नही हुआ। मैंने कहा कि क्या मै इस वातको शामकी सभामे कह सकता हू। उसने कहा कि वडी खुशीसे तू कह सकता है, अगर कुछ हुआ है तो मै उसके पीछे पड़ूगा। उसने यह भी कहा कि वहा जो काग्रेसी हिंदू है उन्होने अपनी जान खतरेमे डालकर भी मुसलमानोको और उनकी मिल्कियत वगैराको वचाया। वहां कोई गुडावाजी चल नही सकती। जवतक मै वहा पड़ा हू और गृह-विभाग मेरे हाथमे है तवतक मैं ऐसा कभी भी नही होने दू गा। मै तो यह सव सुनकर राजी हुआ और मैने पूछा कि क्या मै यह सव लोगोंको वता दू। उसने कहा कि वडी खुशीसे, और मेरा नाम लेकर तू कह सकता है। मुझे कितनी खुशी हुई इस वातकी कि कल ही हमने ऐसा कहा था और आज मुझको यह खवर मिल गई।

: १६३ :

२६ नवबर १६४७

भाइयो और बहनो,

मैंने आपसे कल कहा था कि सिखोके लिए तो कलका दिन एक बहुत बड़ा अवसर था, लेकिन हमको भी वह ऐसा ही मानना चाहिए। अगर सचमुच कलसे उन्होंने एक नया जीवन शुरू किया है और जो गुरु नानक सचमुच हमारे सबके लिए रख गए है,' उसके मुताबिक वे चलना चाहते है तो जो चीजे आज दिल्लीमे बन रही है, वे होनी नही चाहिए।

मैंने आज तो अखबारोंमे भी पढ़ लिया है और यो भी मैंने सुन लिया था कि दिल्लीमे काफी लोग शराब पीते है। शराब पीनेवाले क्या-क्या कर सकते है, यह तो हम जानते ही है। तो वे कहते है कि अब तो शराबका मामला बड़ा कठिन हो गया है और दिल्लीमे वह बहुत फैल गया है, यहा-तक कि उसको काबूमे लाना बहुत मुश्किलकी बात हो गई है। अगर कल-से एक नया पन्ना खुल गया है तो यह होना चाहिए कि जो शराबका दौर पहले चलता था वह अब कम हो जाना चाहिए। शराब पीकर तो हम दीवाने ही बन सकते है। तब शराब क्या पीना था! सब चीजे तो मैं आपको बताऊ भी क्या, मेरे पास तो न जाने क्या-क्या आ जाता है।

एक तो यह चीज हुई और दूसरी, उसमे कुछ तो हुआ है, ऐसा कहते है—वह यह कि जिन मस्जिदोमें हमने नुकसान किया था, वह तो है, लेकिन जहा मस्जिदको मदिर बना लिया था, वहा अगर पुलिस या मिलटरी-की चौकी पड़ी है तब तो वह जैसी थी वैसी ही बद रहती है। लेकिन मुझको तो वह भी चुभेगा, क्योकि अगर नया पन्ना हमने कल खोल लिया है तब यह कैसे बन सकता है? जिन मस्जिदोको मदिर बना रखा है, उसमे सिखोका काम तो नही हो सकता। लेकिन सिख एक बडी कौम है, और वे अगर यह निश्चय कर लेते है कि हमको तो आजसे पाक ही बनना है और पाक काम ही करना है तो पीछे उसका हिंदुओपर भी असर पडता है, इसमे मुझे थोडा-सा भी शक नही है। तब सिख लोग तो सचाई और हकके फैलानेवाले बन जाते है और उनका पेशा ही यह बन जाता है कि हम

तो हर जगह अमन[1] चाहते है, दूसरा तो कुछ है ही नही। अगर ऐसा हो जाता है तो फिर शक्ल दूसरी ही बदलनेवाली है। अतः जिन लोगोने मस्जिदोंको मदिर बनाया है उन्हे वहासे मूर्तिया उठा लेनी चाहिए और जो मस्जिद है, उसको मस्जिद-जैसी ही रखना चाहिए। अगर ऐसा बन जाए तो फिर जो पुलिस या मिलटरी हम वहा रखते है उसकी दरकार भी क्यो रहेगी। जब सब लोग भले हो जाते है तो पुलिसकी दरकार ही नही रहती।

एक तीसरी चीज और है और वह यह कि हमारी काफी लडकियोको पाकिस्तानमें लोग उडा ले गए है। कहा ले गए है वे, इसका तो हमे कुछ पता ही नही है। तो कल मैंने कहा था कि एक कौड़ी भी हम किसी लडकीको खरीदनेके लिए न दे। जिन्होने हमारी लड़कियोको उडानेका गुनाह किया है वे उनको वापिस दे दे और उनके साथ-साथ पश्चात्ताप भी करे। हम उसके लिए पैसा दे यह बन नही सकता है। लेकिन एक बयान हमारे लिए भी मेरे सामने आता है और वह तो बहुत खतरनाक बयान है। वे कहते है कि पूर्वी पजाबमें हम जिन मुस्लिम लडकियोंको अपने पास रखकर बैठ गए हें, उनका हम बेहाल करते है। मै नही समझ सकता कि हम इन्सानियतसे यहातक गिर गए है! मुझसे तो यह बर्दाश्त होता नहीं है, यह मै कबूल करता हू। उन लड़कियोको तो हमे अपनी मां या अपनी लडकियो-जैसी ही समझना चाहिए। जो मुसलमानकी लडकी है तो वह मेरी ही लडकी है। तब मेरी जो ये लडकी है, इनका कोई बेहाल करे, और मै मौज उड़ाऊ, जिंदा बना रहू और खूब खाऊ-पीऊ तो यह कैसे कर सकता हू। जिन भाईने यह खबर दी है उसमे मुझको लगता है कि कुछ-न-कुछ अतिशयोक्ति है। लेकिन अतिशयोक्ति मानकर उसे भूलना तो नही चाहिए और पीछे अगर उसमे अतिशयोक्ति है भी तो अच्छा ही है, क्योकि उससे हमको सोचना तो पडेगा कि क्या इन्सान यहातक भी गिर सकता है। वह चीज तो ऐसी है कि जो हमारे अदर कपन पैदा कर दे। तो कलसे हमने एक नया पन्ना खोल दिया है, क्योकि जब सिखोने खोल दिया

---

[1] शांति।

तो हिंदुओंने भी खोला और कहो कि मुसलमानोंने भी। लेकिन मुसलमानों-को तो भूल जाओ, क्योंकि यूनियनमें तो हमने उनको लाचार बना दिया है। लेकिन हिंदू और सिख तो लाचार नहीं हैं। तब उनको बराबर यह सोचना है कि क्या करना चाहिए। हां, यहां तो हम ऐसा करते नहीं हैं। लेकिन कहीं भी अगर कोई गुनाह करता है तो मैं गुनहगार बन जाता हूं, ऐसा मुझको लगता है और आपको भी ऐसा ही लगना चाहिए। मैंने अगर कुछ गुनाह किया है तो आप भी यही सोचें कि गांधीने गुनाह किया तो हम लोग भी गुनहगार हैं। हम ऐसे ओतप्रोत बनें कि जैसे एक समुद्रके बिन्दु होते हैं। अगर समुद्रके बिन्दु अलग-अलग होकर रहें तो वे सूख जाते हैं, मगर जब वे समुद्रमें ही रहते हैं तो वे सब मिल जाते हैं और बड़े-बड़े जहाजों-को भी अपनी छातीपर उठा लेते हैं। जैसे समुद्रका हाल है वैसे हमारा है। आखिर हम भी तो मनुष्योंका समुद्र हैं। अगर एकने बुरा किया है तो सबने किया। पीछे, ऐसा होनेसे वह बुराई मिट जाती है। हम सबको जाग्रत हो जाना चाहिए। इसलिए मैंने आपको इतनी चीजें तो कहीं, लेकिन मैं अब इसके बाद कंट्रोलपर आना चाहता हूं।

चीनीपरसे तो कंट्रोल हट गया और मेरी उम्मीद तो ऐसी रहती है कि कपड़ोंपर और खुराकपर जो दूसरे-तीसरे कंट्रोल हैं, वे भी सब छूटने ही चाहिए। लेकिन वे कैसे छूटें और उनके छूटनेके बाद हमारा धर्म क्या हो जाता है? चीनीका तो कंट्रोल छूट ही गया, इसलिए पहले तो मैं उसकी बात कर लूं। अभी तो चीनीके बड़े-बड़े कारखाने हैं, उनके लोग ऐसा न करें कि चलो, अब तो हमें छुट्टी मिल गई है, इसलिए हम जितने पैसे लोगोंके पाससे छीन सकते हैं उतने छीन लें। अगर वे चीनीका दाम बढा दें तो पीछे सब लोग कंगाल हो जायंगे। यह तो अच्छी बात है कि चीनी खानेवाला सारा हिंदुस्तान तो नहीं है। उनको कुछ खाना है तो गुड़ खाना चाहिए और गुड़पर तो कोई अंकुश वगैरा है ही नहीं। गुड़को तो देहाती लोग आरामसे अपने-अपने घरोंमें बना सकते हैं, लेकिन चीनी तो वे नहीं बना सकते। उसके लिए तो हिंदुस्तानमें बड़े-बड़े यंत्रालय बने हैं और जो लखपति-करोड़पति लोग हैं, वे कुछ मजदूर रखकर उनमें

चीनी बनाते हैं । लेकिन गुड तो जहा भी गन्ना पैदा होता है वहा आम[१] बन सकता है । और फिर गुड तो बडा खाने लायक होता है, अगर वह शुद्ध बना है तो । बचपनमे मेरे पिता मुझको ले जाते थे या पिताके पास जो दूसरे नौकर रहते थे, उनके साथ मैं चला जाता था उन देहातोमे, जहां गन्ना पैदा होता है । तो वहाके लोग हमे बिल्कुल ताजा और स्वच्छ गुड़ खानेके लिए देते थे । तब तो वह एक खुराक जैसा बन गया, मगर चीनी खुराक नही बन सकती । तब गरीब लोग तो गुड खाए, लेकिन आज उनमेसे कुछ चाय पीनेवाले भी तो बन गए है और पीछे चायमे वे गुड नही, बल्कि चीनी डालते हैं । मैं तो लोगोको यह सिखा दू कि उसमे गुड डालो, लेकिन मेरी वे माननेवाले थोडे ही है ! तब अगर चीनीका दाम बढता है तो वे सोचेंगे कि चीनीपर भी अकुश रहता तो ही अच्छा था, हमे इतने दाम तो नही देने पड़ते । ऐसी हालतमे जितने चीनीके व्यापारी या कारखानेदार है उनका यह परम धर्म हो जाता है कि वे आपसमे मिलकर कुछ ऐसी व्यवस्था करे कि जिससे सारा हिंदुस्तान यह देखे कि आज हमको आजादी मिल गई है तो इस आजादीमे हम केवल शुद्ध कौड़ी ही कमाएगे । इस आजादीमें हम लोगोको दगा नही देंगे और धोखाबाजी भी नही करेंगे, जो भी सड़ांद या गदगी है उसको निकाल बाहर करेंगे । अगर वह नही होता है तो मुझको सुनना ही पडेगा, क्योकि आखिर काफी काम मैंने इसपर-से कट्रोल हट जानेके लिए किया है और अभी भी कर रहा हू । चीनीके व्यापारी और कारखानेदार अगर अपने मुनाफेके टके बढा देते है तो फिर चीनीका दाम बढ़ना ही है । अगर वे सौमेंसे पांच लेते है, तब तो वह शुद्ध कमाई ही मानी जायगी और अगर दस या बीस फी सदी अपनी जेबमें डालते है, तो वह शुद्ध कौड़ी नही कही जा सकती । सौमेंसे पाच बहुत काफी है, उससे अधिक तो लेना नही चाहिए । तब जो दूसरे कट्रोल है वे तो अपने आप ही उड जाते है । हकूमतको यह न कहना पडे कि तब तो सब कहते थे कि अकुश उड़ा दो और अब वह उड़ा तो दिया, लेकिन जो गरीब लोग है वे क्या खायगे ? गरीबोको तो वह मिलती ही नही है । ऐसा

---

[१] साधारणतः ।

नही होना चाहिए। जो कारखानेवाले पड़े है उनको स्वच्छ बनना है और आपसमे मिलकर एक मंडल बना लें और एक ही भाव बांध दें। उससे ज्यादा कोई भी कारखानेदार न ले। लेकिन ऐसा भी नही होना चाहिए कि जो गन्ना बोनेवाले किसान लोग है उनको गन्नेका दाम कम दे। अगर किसानोको ज्यादा दाम दें और उसकी वजहसे कुछ भाव बढ़ता है, तब तो वह शुद्ध कौड़ीकी ही बात हो गई। वे सच्चा हिसाब करें और वह हिसाब सबको बता दे कि कल किसानोंके पास इतना जाता था और आज उनको इतना मिलता है जो सीधा किसानोंकी जेबमें जाता है और बीचमें उसे कोई खा नही सकता। हम लोग तो कल जो दो रुपये फी सदी या पांच रुपये फी सदी लेते थे, आज सवा पांच भी नही लेते हैं। मान लीजिए, मिलवालोने तो पाचसे ज्यादा नही लिए, लेकिन जो बीचमे छोटे-छोटे ताजिर लोग आ जाते है, वे अगर ज्यादा दाम लेते है तो फिर चीनीके खानेवाले तो मर जाते हैं। तब कारखाने-दारोको चाहिए कि वे चीनी सीधी खानेवालोंको ही बेच डाले। अगर यह हो जाता है तब तो काम सीधा-सीधा चलता है, इसमे मुझको शक नही है ।

एक भाईने लिखा है कि देखो तो सही, जो लोग तीसरे दर्जेमें सफर करते है उनके रेल-किराये भी बढ़ा दिए है, हालाकि दूसरे और पहले दर्जेके कियायोंसे तो वे कुछ कम बढे है। लेकिन वह लिखते है और ठीक लिखते है कि तीसरे दर्जेके किरायेमें इतनी-सी वृद्धि भी हमको क्यों करनी पड़ी ? माना कि हमको अब ज्यादा काम करना है और उसके लिए हमको पैसे चाहिए, लेकिन ऐसी बहुत-सी चीजे है, जैसे तबाकू है, बाहरसे कई चीजे ऐसी आती है और यहा भी बनती है कि जो हरएक आदमीके जीवन-निर्वाहके लिए आवश्यक नही है। इन चीजोपर चाहो तो कुछ कर बढ़ा दो। उसमेंसे कुछ बन सकता है। तब जो हकूमतमें हमारे बड़े-बड़े लोग पड़े है उनको देखना और हिसाब करना है कि इस तरहकी वृद्धिसे क्या कुछ निकल सकता है। लेकिन यह समझने लायक बात तो है ही, और हकूमतको भी यह देखना है कि ऐसे लिखनेवाले भी मेरे पास पडे हैं। वे कोई निकम्मे नही, बहुत समझदार आदमी है। आज अगर करोड़ों

रुपये हमारे हाथमे आ गए है तो करोडो ही हम खर्च कर डाले, ऐसा नही है। करोडमेसे एक-एक कौडी लेकर भी हम आहिस्ता-आहिस्ता और फूक-फूककर चले। एक कौड़ी हम खर्च तो करे, लेकिन वह हिंदुस्तानकी झोपडियोमे जाती है कि नही, मेरे लिए तो यही हिसाब काफी रहता है। जो करोडों रुपये हिंदुस्तानकी झोपडियोंमेंसे खिचकर आते है, उनमेसे कितना हम उनको वापिस भेज सकते है? जो सच्चा पचायती राज्य या लोकराज्य होता है उसे लोगोके पाससे पैसा तो लेना पड़ता है, लेकिन उसका दाम दस गुना उनके घरोंमे चला जाना चाहिए। जैसा कि मै तालीमके लिए लोगोसे पैसा लेता हू तो मै ऐसी तालीम उनके लड़कोको दू और इस तरहसे खर्चका अदाजा करू कि जिससे दस गुना पैसा उनको वापिस मिल जाय। मान लीजिए, मै देहातोमे सफाईका काम करू, लोगोके लिए सड़के और रास्ते बनवाता हू तो देहातके लोग यही सोचेगे कि जो पैसा हम देते है वह हमारे ऊपर ही खर्च होता है। नतीजा यह होगा कि आज मिलिटरीके पीछे हम जो इतने दीवाने बन गए है, तब उतने नही रहेगे। हमारे दिलमे पीछे यही विचार पैदा होगा कि मिलिटरीपर तो कम-से-कम खर्च करे और आम लोगोंपर ज्यादा-से-ज्यादा। तब तो लोग मिलिटरी भी खुद ही बन जाते है और उसका काम सीख लेते है। इस तरहसे जब वह अपनी और अपने पडोसीकी भी रक्षा कर लेते है तो फिर हिंदुस्तानकी रक्षा तो अपने आप हो जाती है। ऐसे तो हिंदुस्तानपर कोई गदी नजर डाल भी नही सकते है।

आज तो ऐसा है कि अग्रेजी राज तो यहासे गया, लेकिन अग्रेजी हवा अभी नही गई है। हम उस हवाको बदल दे। वे तो यहा एक बडे पैमानेपर खर्च करते थे और ऐसा खर्च कि जो लोगोके पास वापिस नही आता था; लेकिन आज तो सब-का-सब खर्च हमको वापिस आना चाहिए, तब तो हमारे लिए खैर हो जाती है। बस, आज तो इतना ही मै आपसे कहूगा।

: १६४ :

३० नववर १९४७

भाइयो और वहनो,

कल ही मै तो आपसे कहना चाहता था, लेकिन चूकि और वहुत कुछ कहना था, इसलिए रह गया। आपने देखा होगा कि ये लडकियां जो वैठती है तो फर्शपर ही वैठ जाती है और उससे ठड लगती है। मैने तो कह दिया था कि हमारे पास इतने कागज पडे है या अखवार है जिनका हमने इस्तेमाल कर लिया है, उनपर वैठो। लेकिन आज तो किसी भाईने चद्दर विछा दी है तो अच्छा किया। हम वेदरकार रहते है यह एक तरहसे तो अच्छा भी है। हम क्यो ऐसे नाजुक बने कि हम अगर कही वैठ गए तो हमको ठड लगे। फिर भी घासपर अगर हम वैठते है तो एक कागजका टुकड़ा अच्छा-सा मिल जाय और वह गीला नही हो जाता है तो वह ठंडसे वचा लेता है। ऐसा नही हो तो पीछे हमारा तो एक पुराना तरीका भी है कि जहां भी कही जाना है, सवको आसन अपन साथ ही लेकर चलना है और पीछे जहा भी वैठना होता है वही आसन विछाकर वैठना है। आज तो हम यह सव भूल गए है और ऐश-आराममे पड़ गए है। लेकिन मै तो कहता हूं कि कागजका टुकड़ा भी छोड़ो, ले लो अगर लेना ही है तो, और वह भी एक खासा अखवार है तो, मगर जो आसन होता है, या तो ऊनका या फिर जूटका या दोनोमेंसे किसीका, नही तो फिर कपड़ेका या सूखी घासका ही हो, वह एक वड़ी चीज है। जहां वैठना है, उसे विछाया और वैठ गए और पीछे उसको वगलमे रखकर चले गए। क्योंकि मुझको ठंड लगती है, इसलिए सवको ठड तो लगती ही होगी। पीछे डाक्टरोका भी वताया हुआ है कि भीगी जमीनपर या कि वहा जहां ठंड लगती है, नही वैठना चाहिए। जो भाई धोती पहनते है या जो वहने सिलवार या घाघरी पहनती है, वे अगर भीतर मोटा कपडा पहना हुआ है तो आसनका काम दे देता है। लेकिन वे भी तो नाजुक वन गई है तो फिर उनके पहननेको भी मुलायम चीज ही होनी चाहिए। वे मोटा कैसे पहनें और भीतर जो कपड़ा पहनते है वह मुलायम होना चाहिए। तव वह

यहाकी जो सर्दी है, उससे बचा नही सकते।

अभी मेरे पास तो बहुतसे तार आ गए है काठियावाडसे। उनके बारेमे मैंने सुना तो दिया है जो कुछ भी मैंने सुना था और पीछे जो पाकिस्तानके अखबारोमे लिखा था। उनको भी वहाके हजारो लोग पढते है, शायद दस हजार पढते हो। कितने पढते होगे, इसका तो मुझे कुछ पता नही; लेकिन उनमें जो चीजें आती हैं, उनके बारेमे मैं ऐसा सोचू कि क्या पता ऐसा हुआ है कि नही, तो ऐसे काम नही निपटता। इसलिए मैंने बड़ा अच्छा किया कि जो कुछ उनमे पढ़ा था वह आपके सामने रख दिया। मैं नही जानता कि वह सब सही है या नही। अगर वह सही है तो सारे काठियावाडके लिए बडी शर्मकी बात है और अगर सही नही है तो पीछे जो अखबारोमे लिखनेवाले है उनके लिए शर्मकी बात है। तब एक या दूसरोके लिए वह शर्मकी बात तो हो ही गई। उस बारेमे सरदारजी क्या कहते है, यह भी मैंने आपको बता दिया था। आज भी वे आ गए थे और मुझको सुनाते थे कि वहांसे जो बाते आती है वे तुम्हारे कहने लायक नही होती। वे तो बहुत बनी-बनाई आती है।

लेकिन राजकोटसे जो तार आ गया है वह तो आपके समझने लायक है। काफी लबा तार है, उसका थोडा-सा बयान मैं आपको दे देता हूं। आखिर मैं तो काठियावाडके मुसलमानोको पहचानता हू। उनमेंसे एक-एकको तो नही पहचानता, लेकिन वहा जो खोजा लोग रहते है, मीना है, बाघेर है और किसानोमे भी कुम्बिय है, महेर है इन सबको मैं जानता हू। आखिर मैं तो वहा पैदा हुआ हू और करीब-करीब १७ साल वहा रहा हू। करीब-करीब क्या, पूरे १७ साल रहा हू; क्योकि कही बाहर तो पढ़ने मैं गया ही नही। मेरे बापने मुझको कही भेजा ही नही। मेरा पढ़ना तो वही पूरा हुआ और कालेजमे तो क्या हुआ, कोई दो-चार महीने पढ़ा था और वह भी भावनगरमे। इम्तहान भी मेरा अहमदाबादसे आगे नही जा सका। यह मेरे हाल थे। पीछे वहा कुछ था तो मैं सब चीजे देख लेता था, और बादमें भी आता-जाता सबसे मिलता रहा। तो वे लिखते है कि तुमको तो हमारी तरफसे बडी चिंता हो गई है और तुम्हारी चिंता पीछे हमारी चिंता बन गई है। यह ठीक है कि काठियावाड़मे हिंदू कुछ बिगड़ गए

और आज तो कहा ऐसा नही हुआ, और उन्होने कुछ मारपीट भी की, मुसलमानोको कुछ रज भी पहुचाया, उनके कुछ घर ढाए और जलाए भी; लेकिन हमने उसको आगे बढने ही नही दिया। जितने काग्रेसके लोग थे और उनके मुखिया तो ढेबर भाई थे। उनको तो मै अच्छी तरह पहचानता हू। वे उनको बचाने गए और उनको काफी कामयाबी भी मिली। सब लोगोंका तो इस लूटमारमे हाथ नही था, क्योकि अगर सबका हाथ होता तो फिर राजकोटमे जितने मुसलमान थे, उन सबके मकान जल जाते, मारपीट भी बहुत होती और कोई खून भी हो गया होता। लेकिन यहातक तो नौबत नही पहुची। काग्रेसवालो और दूसरे लोगोने वहा बहुत एहतियातसे[1] काम लिया। ढेबर भाईके साथ तो यहातक भी हुआ, हालांकि वह तो खासा बड़ा आदमी है और वकील भी है, लेकिन भीडको जब इस तरहसे गुस्सा आ जाता है तो फिर छोटे-बड़ेकी बात ही छूट जाती है, उन्होंने कहा कि अच्छा, इनको बचाने आता है, गालिया दी और बहुत परेशान भी किया। ढेबर भाईके साथ जो दूसरे लोग है, वे लिखते है कि कुछ नुक्सान तो किया, लेकिन ढेबर भाईको तो दूसरे लोगोने बचा लिया। तब तारमे तो यह भी लिखा है कि वहाके जो ठाकुर साहब है उन्होने भी हमारे साथ हाथ बटाया और वहाकी जो पुलिस है, उसने भी। तब वहा दगा करनेवाले रहे कौन ? हिंदू महासभा और राष्ट्रीय स्वयसेवक सघ, ऐसा वे कहते है। इन लोगोने कुछ-न-कुछ तो किया भी, लेकिन इनकी कोशिश तो यह थी कि मुसलमानोको, कम-से-कम राजकोटसे, तो निकाल ही दें। मगर वह कर नही सके। लेकिन अब हम निश्चिंत हो गए और मुसलमानोंके लिए कोई खतरा अब नही रहा है। और आप भी अब निश्चिंत रहिए। दूसरी जगह भी हम देखनेकी कोशिश कर रहे है और इसके बाद एक दूसरा तार हम भेजेंगे।

वहीसे एक मुसलमान भाईका भी तार आ गया है। वे लिखते है कि हम तो काग्रेसवालो और दूसरे लोगोंके बहुत अहसानमद है। हमारी जान-मालकी रक्षाके लिए उन्होंने पूरी कोशिश की। लेकिन बबईसे

---

[1] खबरदारीसे।

एक दूसरा तार आया है, वह भी मुसलमानका ही है। वे लिखते है कि पहले जो आपने कहा था वह तो ठीक कहा था, लेकिन अब जो तुमको काठियावाडके बारेमे सुनाया गया है, वह ठीक नही है। वहा काफी हुआ है और अभी भी हो रहा है।

मुझको नही मालूम कि मै बबईसे जो तार आता है उसको सच मानू या इस दूसरे मुसलमानके तारको। लेकिन जो बबईसे तार आता है उसमे मुझको शक हो जाता है, क्योकि वे तो बबईमे बैठे हुए लिखते है और दूसरा तार तो उनका है जो खुद काठियावाडमे पड़े है। और पीछे जो काठियावाडमे है वे मुझको धोखा भी नही दे सकते, धोखा देकर वे जायगे कहा! इसलिए मुझको ऐसा लगता है कि जो बबईसे तार आया है उसमे कुछ अतिशयोक्ति या मुबालगा[1] है। क्या है और क्या नही, यह तो मुझको पीछे पता चल जायगा, लेकिन अभी तो मै उसे सबके सामने रख दू।

एक तार भावनगरसे भी आया है। वह वहाके महाराजाका है। उनको भी मै पहचानता हू, क्योकि मै तो वहा तीन-चार महीने रहा हूं। इसलिए महाराजाको मेरे लिए यह लगा कि वह परेशान क्यों होता है। उन्होने लिखा है कि तुम फिक्र क्यों करते हो। हम यहा सब जाग्रत है और यहाके हिंदू भी जाग्रत है। मुसलमानोको कोई नुक्सान नही होने देगे। तुमको इस बारेमें कुछ शक मनमे नही लाना चाहिए।

लेकिन जूनागढ़से अभी एक तार आ गया है। वह मुसलमानोंकी तरफसे है और वे लिखते है कि ये लोग तो तुमको धोखा दे रहे है। तुम एक कमीशन बिठाकर इसकी तहकीकात कराओ कि हम लोगोको परेशान किया जाता है कि नही। यह तार जवाहरलालजी, सरदारजी और दूसरे लोगोको भी भेजा है और उनमे एक मै भी आ गया हू। मै कहता हूं कि हरएक चीजके लिए इस तरहसे कोई कमीशन नही बैठ सकता है। कमीशन बनाना कोई छोटी बात नही होती। हां, अगर कोई चीज ऐसी है कि सचमुच इतना नुक्सान हुआ है तो फिर इसमे कमीशन बिठानेकी क्या दरकार है? काठियावाडके लिए तो मै ही कमीशन-जैसा पड़ा हू। अगर मेरे ध्यानमे

[1] अतिशयोक्ति।

कुछ आता है तो मैं दबा सकता हू, वहांके राजा लोगोंको और रैयतको भी। मैं यह दावा तो नही करता हू कि मैं हर चीजमे कामयाब रहता हू और वह मेरी हर बातको मान ही लेते है; लेकिन काठियावाड़के लिए तो ऐसा है न, कि जैसा बिहारके लिए कहो। बिहारमे अगर कोई कहे कि तू कमीशन विठा दे तो मैं क्या कमीशन बिठाऊगा ? मैं तो खुद ही वहाँ पड़ा हूं। वहाके सब लोग मुझको चाहते हैं और मेरी मान भी लेते है। तब वहांके लिए कोई कमीशन बिठाना तो ठीक नही हुआ।

मेरे पास तो राजकोटसे काफी खत भी आए है मुसलमानोके। वे लोग काफी हिंदुओंके दोस्त है और कांग्रेससे भी खुश है। तब हिंदू महासभा और राष्ट्रीय स्वयसेवक सघमे कौन है ? उनसे मुझको कोई अदावत[1] तो हो नही सकती। वे सोचते है कि हिंदू-धर्मको बचानेका वही तरीका है, लेकिन मैं मानता हू कि इस तरहसे हिंदू-धर्मकी रक्षा नही होगी। वे मानते है कि अगर एक आदमीने कुछ कर लिया है तो उसके साथ मारपीट करना। मगर मैं यह कहता हू कि बुराईका बदला बुराईसे क्या देना ! हमारी जो हकूमत पड़ी है उसको सताओ और उससे कहो कि ऐसा क्यो होता है। और फिर हमारी हकूमत तो जाग्रत पड़ी है और जितना भी हो सकता है कोशिश कर रही है। तब हिंदूमहासभाको मै कहूगा और राष्ट्रीय स्वयसेवक सघको भी—ये दोनों हिंदुओंकी सस्था है और अच्छे बड़े और पढ़े-लिखे आदमी इनमे है, जैसे कि और सस्थाओंमे भी है—आप हिंदू-धर्मको ऐसे नही बचा सकते, अगर यह बात सही है कि इन्होने ही मुसलमानोंको सताया है और अगर यह सही नही है तो फिर किसने उनको सताया है ? काग्रेसने नही सताया, वहाकी हकूमतने नही सताया और यहाकी हकूमतने नही, तो पीछे और कौन हिंदू है जिसने किया ? आज तो यह इल्जाम सारे हिंदुओ और सिखोपर पड़ता है जैसा कि पाकिस्तानमें सारा इल्जाम मुसलमानोपर पडता है, और वह ठीक तो पड़ता है। इसलिए मैं कहूगा कि जो बेगुनाह है और जिनके खिलाफ इल्जाम लगाए गए है उनको अपना नाम साफ करना चाहिए। जूनागढ़में जो मुसलमान

---

[1] दुश्मनी।

भाई पड़े है वे अगर इन्साफ चाहे तो वह मिल सकता है, फिर कमीशन हम किसलिए बिठाएं ?

वहांकी वात मैंने आपको कह दी, लेकिन अव यहांके वारेमे भी तो आपको कुछ सुनाऊ। सरदारजीने कुछ इतजाम तो कर लिया है और जितनी मस्जिदे हमने यहां रखी है उनकी वे रक्षा करने जा रहे है। आपने अखवारोंमें उनका यह नोटिस तो देख लिया होगा कि सात दिनके अंदर जितनी मस्जिदोंपर कब्जा किया हुआ है वे खाली कर दे, नही तो पुलिसको भेजकर खाली कराई जायगी। मै तो कहता हू कि वे पुलिस भेजकर क्या करेंगे ? वहां अगर मस्जिदमे किसी हिंदूने मूर्ति रख दी है, पीछे वह मूर्ति तो सोनेकी हो सकती है, चादीकी भी, पीतल, मिट्टी या पत्थरकी भी हो सकती है, लेकिन ऐसा कहते है और मै भी मानता हू कि जवतक उसमें प्राण-प्रतिष्ठा नही की गई है और जवतक लोग पाक हाथोसे उसकी पूजा नही करते है तवतक वह मेरी दृष्टिमें तो मूर्ति नही, वल्कि पत्थर या सोनेका टुकड़ा है। ऐसी कुछ मूर्तियाँ कनाट प्लेसके कोनेवाली मस्जिदमे भी विठा दी गई है और उनमे अभी तो हनुमानजी नही है। मेरे नजदीक तो वह नही है। मेरे नजदीक तो वह एक पत्थरका टुकड़ा है जिसे हनुमानजीकी शक्ल दे दी है और कुछ सिंदूर भी लगा दिया है। मेरी दृष्टिमे तो वह कोई पूजाके लायक नही है। पूजाके योग्य तो वह तभी वन सकता है जबकि उसको कही हकसे बिठाया जाय, और उसकी प्राण-प्रतिष्ठा की जाय। वह सव तो नही हुआ। इसलिए जिन लोगोने उनको वहां बिठाया है उनका यह धर्म हो जाता है कि वे दिनके आरभके साथ उसको वहासे उठा ले जायं और पीछे जहां भी उसको रखना है वहां रखे। इस तरहसे वे एक तो मस्जिदको विगाड़ते है और दूसरे उस मूर्तिका अपमान करते है। हिंदू-धर्ममे हम मूर्तिपूजक होकर भी इस तरहसे किसी मूर्तिकी पूजा करें तो वह धर्म नही, वल्कि अधर्म है। तव सरदारजीको क्या पड़ी कि वह वहां पुलिस भेजे ! आप जितने हिंदू है वे सव पहरेदार वन जाएं और जिन मस्जिदोमे मूर्तिया रखी है वहासे उनको हटा दे। जो मस्जिदें विगड़ी हुई है हमको कहना चाहिए कि हम उनकी मरम्मत कर देगे। लेकिन आज तो सरदारजी कहते है कि हकूमत अपने खर्चपर उनकी मरम्मत कर

लेगी। हकूमत क्यो करेगी, इसीलिए न कि हम नही कर रहे है। उसको तो सबकी रक्षा करनी है। लेकिन यह हमारे लिए शर्मकी बात हो जायगी। आज जितने हिंदू या सिख है, लेकिन सिखको तो मैने कही मूर्ति बिठाते हुए सुना नही, उनकी तो एक ही मूर्ति या पुस्तक कहो, वह गुरु ग्रथ साहब ही है। मैने तो देखा नही कि किसी सिखने गुरु ग्रथ साहबको मस्जिदमे लाकर रखा हो। अगर किसीने ऐसा किया भी है तो उसने गुरु ग्रथ साहबका अपमान किया है। गुरु ग्रथ साहबको तो गुरुद्वारेमे ही रखा जा सकता है। जो पवित्र सिख है वही उसको ऊची जगहपर सजाकर रखते है। मेरे-जैसा अगर कोई हो तो वह तो बहुत सुदर खादी बिछाकर उसको रखे। लेकिन आज यदि देसी-परदेसीका तो खयाल नही है, फिर भी बडे खूबसूरत ऊनी और रेशमी वस्त्र हम हाथोसे तैयार करते है। उस रेशमको हम वहा बिछाए और गुरु ग्रथ साहबको रखे तब तो वह पूजाके लायक है और अगर कोई सिख उसे मस्जिदमें ले जाकर रखता है तो वह गुरु ग्रथ साहबकी तौहीन[1] करता है और वह पूजाके लायक नही हो सकता।

आज एक मुसलमान मेरे पास आया। मै समझा नही कि वह क्या कहना चाहता था। लेकिन उसके हाथमें एक कुरानशरीफ थी, जो आधी जली हुई थी। लेकिन उसके लिए तो वह भी पाक थी। इसलिए उसने उसको बहुत साफ कपडेमें लपेटा हुआ था। उसने आरभसे वह कपड़ा खोला और मुझको दिखाया। वह कुछ बोला तो नही, लेकिन रोने-जैसी उसकी शक्ल बन गई और पीछे चला गया। बृजकिशनजीसे तो कुछ बाते भी की, लेकिन मै तो काममें पड़ा हुआ था। इसी तरह अगर एक मुसलमान यहा आकर कुरानशरीफ बिठा जाता है और मुझको और आपको मारता है तो मै कहूगा कि वह कुरानशरीफकी तौहीन करता है। कुरानशरीफ यह नही कहती कि किसीको मजबूर करके उसे रखो।

इसलिए मै तो बडे अदबसे कहना चाहता हू हिंदू-महासभा और राष्ट्रीय स्वयसेवक सघसे तथा और भी लोगोंसे, जो मेरी सुनना चाहते है और साथ-साथ सिखोंको भी, क्योकि सिख तो बडे है और अगर वे सीधे

---

[1] अपमान।

हो जाते है और गुरु नानकके सच्चे अनुयायी बन जाते है तो हिंदू भी आप-ही-आप सीधे हो जाते है। मेरे दिलमे सिखोकी कद्र है। लेकिन आज क्या हिंदू और क्या सिख, सब बिगडते जा रहे है और हिंदुस्तानको धूलमे मिला रहे है। जिस हिंदुस्तानको हमने ऊचे चढाया है, क्या उसको नीचे खीचकर हम मटियामेट करेगे? क्या हम अपने धर्म, कर्म और देशको इस तरहसे धूलमे मिला देगे? ईश्वर हमको इस चीजसे बचा ले।

: १६५ :

मौनवार १ दिसबर १९४७

(लिखित संदेश)

भाइयो और बहनो,

कई मित्र नाराज होते है कि मै 'अगर यह सही है तो' कहकर क्यो कोई निवेदन करता हू। मुझे पहले तय कर लेना चाहिए कि बात सही है या नही। मै मानता हू कि जब-जब मैने 'अगर' इस्तेमाल किया है मैने कुछ गमाया नही है। जो काम उस समय मेरे हाथमे था उसे फायदा ही हुआ है।

इस वक्तकी चर्चा काठियावाड़के बारेमे है। मित्र लोग कहते है कि मैने काठियावाडके बारेमे मुसलमानोपर ज्यादतियोके झूठे बयानको मशहूरी[1] दी है। अधिकतर इल्जाम सरासर झूठे थे। जो थोडी-बहुत गडबड़ी हुई थी उसे फौरन काबूमे लाया गया। मेरे 'अगर' के साथ उन इल्जामोका जिक्र करनेसे सचाईको कोई नुकसान नही पहुचा। काठियावाड़के सत्ताधीश और काग्रेस, जिस हदतक सचाईपर खडे रहे है, उतना ही उन्हे फायदा होगा। मगर मित्र लोग कहते है कि सचाई आखिरमे जाहिर होकर रहती है। इसमें भले शक न हो, मगर उससे पहले नुक्सान तो हो ही जाता

---

[1] प्रसिद्धि।

है। जिन्हें सच-झूठकी कुछ पड़ी नही, ऐसे वेईमान लोग मेरे कथनको अपनी बात सिद्ध करनेके लिए काममे लाते है। इस तरहसे झूठको फैलाया जाता है। मै इस तरहकी चालबाजीसे आगाह[1] रहू। जब-जब इस तरहकी चालाकी खेलनेकी कोशिश की गई है वह निष्फल हुई है और ऐसा करनेवाले बेईमान लोग जनतामे झूठे बने है। मै 'अगर' कहकर इल्जामोका जिक्र करता हूं तो उससे किसीको घबरानेकी जरूरत नही, शर्त सिर्फ यह है कि जिनपर इल्जाम लगाया जाता है वे सचमुच इल्जामसे सर्वथा मुक्त हो।

इससे उल्टी स्थितिका विचार कीजिए। काठियावाडकी ही मिसाल लीजिए। अगर पाकिस्तानके बड़े-बडे अखबारोंमे लिखे इल्जामोकी तरफ मै ध्यान न देता, खास करके जब पाकिस्तानके प्रधान मत्रीने भी कहा कि इल्जाम मूलमे सही है, तो मुसलमान उन इल्जामोंको वेद-वाक्य माननेवाले थे। मगर अब भले मुसलमानोंके मनमे उनकी सचाईके बारेमें शक है।

मै चाहता हूं कि इसपरसे काठियावाड़के और दूसरे मित्र यह पाठ सीखे कि हम अपने घरमे तो किसी तरहकी गड़बड़ होने नही देगे, टीकाका स्वागत करेगे, चाहे वह कड़वी टीका ही क्यो न हो; अधिक सच्चे बनेगे और जब कभी भूल देखनेमे आवे उसे सुधारेगे। हम यह सोचनेकी गलती न करें कि हम कभी भूल कर ही नही सकते, कड़वी-से-कड़वी टीका करनेवाले- के पास हमारे विरुद्ध कोई-न-कोई सच्ची, काल्पनिक शिकायत रहती है। अगर हम उसके साथ धीरज रखे, जब कभी मौका आवे उसकी भूल उसे बतावें, हमारी गलती हो तो उसे सुधारें, तो हम टीका करनेवालेको भी सुधार सकते है। ऐसा करनेसे हम कभी रास्ता नही भूलेगे। इसमे कोई शक नही कि क्षमता तो रखनी ही होगी। समझदारी और शनाख्तकी[2] हमेशा जरूरत रहती है। जान-बूझकर शरारतकी ही खातिर जो बयान दिए जाते है उनकी तरफ ध्यान नही देना चाहिए। मै मानता हू कि लबे अभ्याससे मैं शनाख्त करना थोड़ा बहुत सीख गया हू।

---

[1] परिचित; [2] पहचान।

आज हवा बिगडी हुई है, एक दूसरेपर इल्जाम-ही-इल्जाम लगाए जाते है। ऐसी हालतमे यह सोचना कि हम गलती कर ही नही सकते, मूर्खता होगी। हम ऐसा दावा कर सके वह खुशकिस्मती आज कहा! अगर मेहनत करके हम झगडेको फैलनेसे रोक सके और फिर उसे जड़मूलसे उखाड़ फेके तो बहुत हुआ। यह हम तभी कर सकेगे अगर हम अपने दोष देखने और सुननेके लिए अपनी आंखे और कान खुले रखे। कुदरतने हमे ऐसा बनाया है कि हम अपनी भूल नही देख सकते, वह तो दूसरे ही देख सकते है। इसलिए बुद्धिमानी यही है कि जो दूसरे देख सकते है उससे हम फायदा उठावे।

कल प्रार्थनामे जाते समय मुझे जो जूनागढ़से लंबा तार मिला उसकी बात कल पूरी नही हो सकी। कल मैने उसपर सरसरी नजर ही डाली थी। आज उसे ध्यानपूर्वक पढ गया हू। तार भेजनेवाले कहते है कि जिन इल्जामोका मैने पहले दिन जिक्र किया था वे सब सच्चे है। अगर यह सही है तो काठियावाडके लिए बहुत बुरी बात है। अगर जो इल्जाम साथियोने स्वीकार किए है और मैने छापे है उनको बढ़ानेकी कोशिश की गई है तो तार भेजनेवालोने पाकिस्तानको नुक्सान पहुचाया है। वे मुझे निमत्रण देते है कि मै खुद काठियावाडमे जाऊ और अपने आप सब चीजोकी तहकीकात करू। मै समझता हू कि वे जानते है कि मै आज ऐसा कर नही सकता। वे एक तहकीकाती कमीशन मागते है। मगर उससे पहले उन्हे केस तैयार करना चाहिए। मै मान लेता हू कि उनका हेतु जूनागढ़को या काठियावाड़को बदनाम करना नही है। वे सच निकालना चाहते है और अल्पमतकी जान-माल और इज्जतकी रक्षाका पूरा प्रबध करना चाहते है। वे जानते है कि हरएक आदमी जानता है कि अखबारी प्रचार, खास करके जब वह पूरी-पूरी सचाईपर न हो, न जानकी रक्षा कर सकता है, न मालकी, न इज्जतकी। तीनो चीजोकी रक्षा आज हो सकती है, उसके लिए तार भेजनेवालोको सचाईपर कायम रहना चाहिए और हिंदू मित्रोके पास जाना चाहिए। वे जानते है कि हिंदुओमे उनके मित्र है। वे यह भी जानते है कि अगरचे मै काठियावाड़से बहुत दूर बैठा हू, मगर यहासे भी उनका काम

कर रहा हूं। मैंने जान-बूझकर यह बात कह दी और मैं सब सच्ची खबरें इकट्ठी कर रहा हूं। मैं सरदार पटेलसे मिला हूं और वे कहते हैं कि जहांतक उनके हाथकी बात है, वे कौमी झगड़ा नहीं होने देंगे और कहीं कोई मुस्लिम भाई-बहनोंसे बदतमीजी करेगा उसे कड़ी सजा दी जाएगी। काठियावाड़के कार्यकर्ता, जिनके मनमें कोई पक्षपात नहीं, सच ढूंढ़नेकी और काठियावाड़के मुसलमानोंको जो तकलीफ पहुंची हो, उसको दूर करनेकी पूरी कोशिश कर रहे हैं। उन्हें मुसलमान उतने ही प्यारे हैं जितनी अपनी जान। क्या मुसलमान उनकी मदद करेंगे?

: १६६ :

२ दिसंबर १९४७

भाइयो और बहनो,

मैंने तो आपको कहा था कि आज मुझको पानीपत जाना है। इरादा ऐसा था कि ४ बजे वापस आ जाऊंगा। लेकिन काम इतना निकल गया था कि बड़ी मुश्किलसे ५॥ बजकर ५ मिनट हो गई थी—३ मिनट तो हो ही गई थी—आया। तब प्रार्थनाकी आवाज सुनी। प्रार्थना तो शुरू हो ही जानी चाहिए थी, मैं रहूं चाहे न रहूं। मैंने तो कह दिया है कि प्रार्थना शुरू हो ही जानी चाहिए, नियमके मुताबिक चलना ही चाहिए। पीछे मुह धोने चला गया, इसलिए देर लग गई। मैं इसके लिए क्षमा चाहता हूं।

मैं क्यों पानीपत गया, इसका थोड़ा-सा तो इशारा कर दिया था। मेरी उम्मीद तो थी और अब भी उम्मीद नहीं छोड़ आया हूं कि किसी-न-किसी तरह पानीपतके मुसलमानोंको रख सकें तो अच्छा है। हमारे लिए तो अच्छा है ही, सारे हिंदुस्तानके लिए भी अच्छा है और जो हिंदुस्तानके लिए अच्छा है वह पाकिस्तानके लिए भी अच्छा है।

वहां आज लोग मुसीबतमें पड़े हैं। वहांसे जो दुःखी लोग आए हैं—

दु खीको शरणार्थी कहते है—वे भी दु खमे है और रहनेवाले है, जबतक अपने घर नही चले जाते है। वैसे ही मुसलमान मजबूर होकर जो पाकिस्तान गए है वे भी दु खमे ही रहनेवाले है। इसमे आप कोई शक न रखे।

मै धर्मका पालन करता हू तो वहा चला गया, यह अच्छा हुआ। डाक्टर गोपीचद भार्गव भी आ गए थे, गृह-मत्री सरदार स्वर्णसिंह भी आ गए थे। मुझको पता नही था कि डाक्टर गोपीचद आनेवाले थे। सरदार कर्णसिंहने तो कहला भेजा था कि मेरी दरकार हो तो मै आ सकता हू। मैने कहा कि दरकार तो नही है; क्योकि जो कुछ करना है, वह मै करूगा; लेकिन वे आ गए। पूर्वी पजाव उनका इलाका है तो उनका तो वह हक है, इसलिए वह भी आ गए। देशबन्धु गुप्ताने कहला भेजा था कि मै बीमार हू सो नही आऊगा। मैने कहा कि ठीक है, लेकिन वहा तो उनका घर पडा है, इसलिए वह भी आ गए। तो अच्छा हुआ सब आ गए। मौलाना है वह जो यहा हमेशा आते है, वह भी आए। पीछे उन लोगोसे बातचीत की। मुसलमानोसे अकेलेमे बातचीत की, लेकिन दोनो मत्री तो साथ थे। उन लोगोने कहा कि मत्री तो रहे। जो बात मत्रीसे अलहदा है, जिसे मै इस्तेमाल न कर सकू तो वह किस कामकी है! उन लोगोने कहा कि वहा उस वक्त जो बात हो गई थी तब तय किया था कि रहेगे और आपको कहा भी था। बादमे हालत बिगड गई। जैसा तुम कहते थे, कुछ भी हो ही नही पाया, इसलिए हम परेशान हो गए। हमारी इज्जतकी कोई परवाह नही की गई। जब इज्जत, माल और जान, तीनोकी रक्षा नही हो सकी तो कैसे रहेगे? जो कुछ भी हो, घर गिरा तो क्या, आग लगी तो क्या, जानको जाने देगे, मालको जाने देगे, लेकिन मानकी हिफाजत[1] करना अपना काम है। उसकी हिफाजत कर सकेगे तो रहेगे। तो मैने कहा कि मरनेकी बात कहते है वह तो ठीक है, लेकिन मनमे जगतप्रेम है वही ईश्वरकी भक्ति है।

पीछे वहा जो दुःखी शरणार्थी है उनसे बहुत बाते हुई। यह करते-ही-करते ३॥ बज गए। यहासे १०॥ बजे निकल गया था और

[1] रक्षा।

करीब ११॥ बजे वहा पहुच गया । ३ बजेतक बाते चलती रही—बाते काफी थी । पीछे दु खी लोगोसे मैंने कहा, पीछे डाक्टर गोपीचद भार्गव थे उन्होने कहा, सरदार स्वर्णसिह खड़े हुए तो गोलमाल शुरू हो गया, लोगोंने चीखना शुरू कर दिया, इसलिए नही कि वे लोग उनका अपमान करना चाहते थे, लेकिन वे लोग अब गवारा[1] नही कर सकते थे। वह क्या बताएगे हमको, इसलिए वे लोग गुस्सा हो गए ।

काफी लोग थे— करीब २० हजार होगे। मैदान भर गया था। छत सब भर गई थी। इस तरहसे लोग भरे थे । मेरी बात तो शातिसे सुनी । पीछे उन्होने शुरू किया तो लोग खडे हो गए । हमारेमे तो रिवाज हो गया है कि गुस्सा बता दे । सब खडे हो गए, चीखना शुरू कर दिया कि मुसलमानोको हटा दो । मैंने कहा कि मुसलमानोका जाना अच्छा नही है, उनका घर है तो रहने दो, मजबूर करनेसे क्या होगा ? यहां ऐसा करोगे तो वहा हमारा काम बिगड़ जायगा। तो यह सब समझाया। मै तो बैठनेवाला था, लेकिन स्वर्णसिह गृह-मत्री है, बहादुर आदमी है, वे माननेवाले नही। उन्होने कहा कि ऐसे कैसे चलेगा ? उन्होने बोलनेकी बडी चेष्टा की; लेकिन काम चला नही। लोग चीखते ही रहे, सब खडे रहे। तो दुःखी लोगोके जो प्रमुख है, नुमायदा है, वह उतरे। पीछे उन्होंने शुरू किया । मुझको पता नही था कि वे शायर है, पजाबीमे शुरू किया, पहले तो भजन शुरू किया— वे लोग तो जानते है कि पजाबियोमे ऐसा है कि उनको भजन अच्छा लगता है—पीछे पजाबीमे ही डाटा और कहा कि मै तो आपका नुमायदा हू, आप क्यो नही सुनते, चीखनेसे क्या होगा ? सभा बिगाडनेसे आपका क्या फायदा होगा ? आपका नुकसान ही है । तो पीछे शाति हुई, मेहनतसे । लोग बैठ गए तो पजाबीमे सब बाते हुई ।

मै पजाबी बोल तो नही सकता, लेकिन समझ लेता हू। उन्होंने जो कहा वह मुझको अच्छा लगा था। मुसलमानोके साथ बैठे थे तब भी कहा था कि हम दो चीज जरूर करनेवाले है, पाकिस्तानमे चाहे कुछ भी हो, हम वहशी[2] नही बनेंगे। हम आजादीकी सल्तनत चलाते है तो ऐसा

---

[1] बर्दाश्त; [2] जंगली ।

थोडे होने देगे। मुस्लिम लड़कीको जो भगा लिया है उसको हम हर हालतमे वापस करेगे। हां, कोई भी आदमी बता दे, कह दे कि वह लडकी वहां है, क्योकि हमको पता तो है नही, तो वह जहां होगी वहासे हम लाएगे। और दूसरी बात यह कि जिन मुसलमानोको मजबूरीसे हिंदू और सिख बनाया गया है वे मुसलमान ही है; धर्म-परिवर्तन हुआ है उसे हम बाकानून नही समझेंगे, क्योकि यह नीतिके विरुद्ध है। ऐसे जो लोग पडे है उनकी हम हिफाजत करेगे। अभी जैसे है वैसे ही उनकी हिफाजत करेंगे, पाकिस्तान चाहे करे या न करे। स्वर्णसिंहने तीसरी बात भी कह दी कि मस्जिदोकी भी हिफाजत करेगे। ये तीन चीज तो हर हालतमे हम करनेवाले है।

हां, जान-मालके बारेमे कौन क्या कह सकता है! हकूमत है, पुलिस है, वह पूरी कोशिश तो करेगी; लेकिन अगर सब-के-सब लोग लूट-मार करने लगे तो क्या गोलीसे उडा दें? क्या करें? हम लाचार है, हमारी आजादी लूली है, हम लाचारी कबूल करते है। हां, लोगोको डांटेंगे; लेकिन लाचारी तो कबूल करनी ही चाहिए। उन्होने लोगोको खूब समझाया, मिन्नत की कि हमारी लाज, आबरू, शर्म सब आपके हाथमे है, उसकी आप रक्षा करे। हकूमत हमारी थोड़ी है, हकूमत आपकी ही है, आपने ही हमे भेजा है तो हम पडे है। जब हम पड़े है तो हम काम तो करे और आप इसमें मदद दें। यह सब समझाया। इसमे काफी समय लग गया। गोलमाल हो गया, उसे शात करनेमे काफी देर लगी। हमेशा ऐसा रहा है कि ऐसे मौकेपर जब लोग बेचैन हो जाते है, गुस्सा कर लेते है, तब मैंने देखा है कि थोडी देर बाद जब वे लोग ठडे दिलसे सोचते है तो समझने लग जाते है। मै जब आजादीकी लडाई करता था तब भी देखा था। ऐसी भी नौबत आ जाती थी कि सभाको खत्म कर देगे; लेकिन देखता था कि बादमे समझ जाते थे। तो पीछे नुमायदे आए। मैने कहा था तो वे मेरे पीछे आए। मैने उनको गाड़ीमे ले लिया। अगर न लू और वहा बैठ जाऊ तो यहा समयमें पहुच नही सकता था, इसमे भी समय लगता, मिनट-मिनटका हिसाब करना पड़ता था, जब यहा आना था।

मैने आराम करना छोड दिया, जब सब दु:खी है तब मै क्या आराम

करू ! उनसे तो मुझको बहुत आराम है ही। तो वे सुनाते हैं कि जो यहा दु:खी पड़े है वे खुद बहुत रजमे पडे है। कुछ तो हुआ ही है, जैसा मैने देखा था वैसा ही है, ऐसी बात नही है। कुछ इतजाम तो हुआ ही है, कुछ छते लगाई गई है, वे अब तबूमे रहते है, ऐसा तो है, लेकिन खाना जैसा होना चाहिए वैसा नही है, पूर्वी पजाबके गवर्नरने भी देखा और कवूल किया कि ऐसा तो नही होना चाहिए। कपडेके बारेमे ऐसा होता है कि अच्छे कपड़ेको भीतरसे ही कोई ले जाता है—कौन लेता है, क्या कहू। उसको छोड देता हू, लेकिन पीछे उनको टूटे-फूटे सड़े कपड़े मिल जाते है, ऐसा नही होना चाहिए। जो चीज उनके लिए भेजी जाती है वही मिलनी चाहिए। वहा लोग मरते भी है, मृत्यु तो होनी ही है। दो मरनेवालोको जलानेके लिए लकड़ी मिली ही नही। सारा दिन चला गया। कोई डाक्टर महाशय है, उनका नाम भूल गया, उनके हाथमें इसका इतजाम है। वे एक जगह नही मिले, दूसरी जगह गए, वहां नही मिले तो तीसरी जगह गए, वहा भी नही मिले। इस तरह दिनभर चला गया, शामको ७ बज गया तो कुछ लोगोने उनके रिश्तेदारको कहा कि वहासे लकडी नही मिली तो क्या हुआ। हम आठ-आठ आना देते है। इस तरहसे १०) या १५) हो गए। लेकिन वह तो तगड़ा आदमी था। उसने रुपये लेना मजूर नही किया। उसने कहा कि लकड़ी नही मिलती है तो मेरा नसीब, मै दफना दूगा। हिंदू दफन नही करते, लेकिन उसने दफना दिया। तो मुझको दु ख हुआ कि ऐसा नही होना चाहिए।

पीछे मुझको सुनाया कि कोई भी चीज हो, वह वडे शरणार्थीको तो मिल जाती है, गरीबको नही मिलती है; क्योकि वे अफसरोके हाथमें नही है। रखे भी कैसे, कहातक रखे, वहां जो लोग पड़े है, उनको ले लिया, उनकी मारफत करते हैं। अगर वे भले है, परमार्थी है, सेवाभावी है तब तो हो जाता है, लेकिन जव सेवाभावी नही रहते है तो दुरवारी हो जाती है। मै सब चीज जाहिर कर देता हू। हम मारपीट तो न करे, इससे जहर पैदा होता है। हमारे पास दूसरा तरीका है, वह यह कि साफ-साफ कह देना चाहिए। ढाकनेसे कोई फायदा तो होता नही है। मै कहता हूं कि जो चीज वनी है वैसा कह देना चाहिए। जो बुरा करते है उनपर इल्जाम लगाया जाय तो उसमे बुरा क्या है! इल्जामके लायक है तो कहना ही

चाहिए। ऐसा समझकर मै सुनाता हू कि यह बुरी बात है। एक तो हम दु खी है, लाखो लोग घर-बार छोडकर आए है, फिर ऐसा करने लगे यह बहुत दु.खकी बात है। आज मुझको एक छोटा-सा लडका मिला, वह स्वेटर पहने था, उसे निकालकर खडा हो गया। मेरे सामने आंखे तो बहुत करता था मानो कि खा जायगा। लेकिन बच्चा था, क्या करनेवाला था! कहने लगा कि आप बात करते है कि आप हिफाजत करने आए है; लेकिन मेरा बाप मर गया है तो मुझे मेरा बाप तो दे दो। वह तो मर गया, मै कहां-से लाऊ? आखिर उस लडकेको गुस्सा आ गया। मै समझ सकता हू कि अगर इतनी ही उम्रका मै रहता तो शायद मै भी ऐसा ही करता। यह सुनना पडता है, मुझको गुस्सा नही आया, दया आई।

आजका नजारा देखा। ऐसा था तो पीछे वे कहते है कि इतना तो करो कि हम जो शरणार्थी है वे सब खराब थोडे है, उनके हाथमे इतजाम दे दो, ऊपरमे मजिस्ट्रेट वगैरा तो है ही, वहाके लोगोंके ऊपर भी तो देखना पडता है, मजिस्ट्रेट वगैरा हमारे ऊपर भी देख-रेख करे, लेकिन कवल बांटने है तो हमको दे दो। बच्चोको दूध तो मिलना चाहिए, फिर भी मिलता नही, वह तो ऊपरके अमलदारोके लिए है। वे या सेवा-भावके लिए जो कमेटी बनी है उसके सदस्य पी जाय, इससे बेहतर तो यह है कि हमको दे दो। चोरी होती है तो क्या, जैसा करते है वैसा भोगेंगे। पीछे वे कहते है कि उनके पास और दु खी भाई लोगोने चिट्ठी भेजना शुरू किया। चिट्ठियोमें वे लिखते है कि महात्माको तो कहो कि वह हमारी भी सुने। वे सुनाते थे कि उनमे ऐसी-ऐसी बाते लिखी है। तो मै समझता हू कि मै चला गया तो अच्छा हो गया। मैने उनसे कहा कि अगर आप शातिसे रहें और आप मुसलमानोको कहे कि आप भाई है, यही रहो, पानीपतमे तो बहुत-सी लड़ाई हो गई है, तो यह सबसे आला दर्जेकी चीज हो जायगी।

आप २८००० आदमी डेरेमे रहते है, दूसरे आते है तो इससे क्या। आपको खाना मिल जाय, पहनने और ओढनेको कपडा मिल जाय, छत हो या तबू ही मिल जाय तो ठीक है। कही भी रहोगे तो अभी चौथी चीज तो मिल नही सकती। इन तीनों चीजोसे आप बहुत-सी चीजे पैदा

कर सकते हैं। तो मैंने सोचा कि यह आप लोगोंको सुना दूं। आप भी समझें कि हमारे हिंदुस्तानमें कैसे-कैसे खेल चल रहे है और उसपर हम कैसे काबू पा सकते हैं। आज तो हकूमत है। हकूमत आपपर जबरदस्ती तो कर नही सकती। आजादी हमने पाई है तो क्या ऐसा होना चाहिए? कल जवाहरलालने सुंदर कहा है। आज देख लिया, मैं हमेशा कहां पढ़नेवाला था, पढ़नेका मौका कहां आता था। जवाहर कहता है कि मुझको प्रधान मंत्री कहते है तो मुझको चुभता है, मैं प्रधान मंत्री कब बना था? हां, यह कहो तो अच्छा लगेगा कि मैं अव्वल दर्जेका खादिम हूं, सेवक हूं। अगर सब ऐसे बन जायं कि प्रधान सेवक है तो उनको २४ घंटे लोगोंका खयाल करना है। पीछे उनके नीचेके नौकर ऐसा करेंगे तो हमारा देश सचमुच स्वर्णभूमि बन सकता है, रामराज्य हो सकता है, खुदाई राज्य बन सकता है। तब हमारी आजादी मुकम्मिल[1] बन सकती है। अगर हम आजादीके बाद ऐसा करेंगे जैसा आज हो रहा है तो ऐसी आजादी मुझको चुभती है। क्या हमारी आजादी ऐसी होगी? ऐसी कभी नही होगी।

: १६७ :

३ दिसबर १९४७

भाइयो और बहनो,

मेरे पास काफी लोग आते हैं, सबका हिसाब तो मैं आपको देता नही हूं, कोई ऐसी चीज होती है तो कह देता हूं। तो आज भी कुछ भाई लोग मेरे पास आए। उनका कोई ताल्लुक हमारी हकूमतके प्रधान जो हैं उनसे हुआ होगा। तो वे कहते हैं कि प्रधानने एक समय तो एक चीज कही थी, लेकिन अभी अपनी प्रतिज्ञा, वचनको भंग कर रहे हैं। वह कैसे, मैं तो कह नहीं सकता हूं। उनके पास लिखित खत था कि उन्होंने एक बार कल या तीसरे दिन—ऐसा कहा था और अब ऐसा कहते हैं।

---

[1] पूर्ण।

तो मैंने कहा कि लिखित चीज हो तो बताइए। आखिर मैं भी वैसा ही हू जैसे आप हैं। मैं हकूमत तो हू नही, मेरे पास कोई अधिकार तो है नही; लेकिन मैं सेवक हू, उनका दोस्त हू, उनके साथ काम किया है, इसलिए उनके साथ बात कर सकता हू, लेकिन ऐसी बात कैसे कहूं? इसपर मुझको लगा कि ऐसा क्यो होता है, हमसे कहे एक बात और करे दूसरी बात। ऐसा होता है तो मुझपर बीतती है न? मैं समझता हू कि मैंने कभी इरादा करके, समझके किसीको धोखा नही दिया है। हा, हो सकता है कि आदमीको जानकारी नही है, सद्भावसे कहता है, बुरा हेतु नही है, उसे धोखा मानें और दु ख मानें तो ऐसी बहुत-सी चीज दु खकी होती है। बहुत-सी चीज बगैर समझे होती है और उससे भी वचन भग हो जाता है; लेकिन अगर कोई जान-बूझकर अपना वचन भग करता है तो बुरा करता है। ऐसा नही होना चाहिए। इसके लिए जहांतक हो सके वहातक मौन ही रखना चाहिए। कभी बेकार एक शब्द भी नही कहना चाहिए, और अगर एक बार दिलकी बात निकाल दी तो उसके मुताबिक काम करना चाहिए। हम ऐसा करेंगे तभी हम एक-वचनी बन सकते हैं। और अभी जब सारे देशकी हकूमत चलाते हैं तो हमको सावधानीसे काम करना चाहिए, उसमे मर्यादा होनी चाहिए, विवेक होना चाहिए और नम्रता होनी चाहिए, उद्दडता नही होनी चाहिए। ये सब हो तब हमारा काम आखिरतक पहुच सकता है और लोगोको कुछ कहनेकी गुजाइश नही रहेगी। हा, एक बार कह दिया कि अमुक चीज मुफ्तमे बाटेंगे, ऐसा तो होता नही है, लेकिन मानो कि हुआ, बादमे कहा कि दो पैसे लेगे तो वह वचन-भग हुआ। इस तरहसे वचनका भग करना ही नही चाहिए। आज हम ऐसे बन गए हैं कि हमारे पास वचनकी कोई कीमत ही नही रही। आज बोल दिया और कल अलग हो जाते हैं। आज मैं कह देता हू कि कल कोई ४ बजे आपके पास आता हू, लेकिन उस वक्त नाचमे चला गया या और कही चल देता हू तो वह वचन-भग होता है। मैं तो कहूगा कि हमें बडी सावधानीसे काम करना चाहिए। तो मैंने सोचा कि मैं कह तो दू कि वह हकूमतपर लागू नही होता, व्यक्तिपर लागू होता है। सब वचनपर कायम रहें, बोलें तो तौलकर बोलें, आवेशमें तो कुछ कहना ही नही चाहिए।

जैसे हम एक चीजका बयान देते हैं कि मारपीट हो गई, पीछे उसमें रंग डालनेके लिए कह देते हैं कि खून हुआ। ऐसी बात तो छिप नहीं सकती, अभी नहीं तो बादमें, कभी-न-कभी तो मालूम हो ही जायगी। मैं तो यही कहूंगा कि ऐसा करना ही नहीं चाहिए।

अभी मुझे एक डाक्टर सिंधसे लिखते हैं कि वहां जितने हरिजन रहे हैं वे बेहाल हैं। हरिजन अगर अकेले वहां रह गए और कोई दूसरे नहीं रहते तो वे कहते हैं कि उनको वहां मरना है। अगर मरना नहीं है तो गुलामीमें रहना होगा और आखिरमें मुसलमान बनना होगा। यह बहुत बुरी बात है। आज तो ऐसा हो गया है कि पाकिस्तानकी हकूमत जो कहती है उसको उनके मातहत जो आदमी हैं, वे करते नहीं हैं। आज हिंदुस्तानमें भी ऐसा हो गया है। जवाहरलाल कह देंगे, सरदार कह देंगे कि हम तो मुसलमानोंकी हिफाजत करेंगे, हम नहीं चाहते कि जबरदस्ती एक भी मुसलमानको पाकिस्तान जाना पड़े; लेकिन चलती नहीं है, उनके पास ऐसे करनेवाले नहीं हैं; क्योंकि उनके मातहत करते नहीं हैं, पीछे प्रजा तो करती ही नहीं है।

मैंने कल सुनाया ही था कि मैं पानीपत चला गया था। वहां २८००० हिंदू सिख दुःखी पड़े हैं। उनके साथ पाकिस्तानमें अच्छा सलूक नहीं हुआ। तभी तो उनको भागना पड़ा, दुःख पड़ा तभी तो भागे, नहीं तो भागनेकी क्या गरज पड़ी थी! जब वे ऐसा दुःख उठाकर आए हैं तो क्या वे दूसरेको भगाएं? लेकिन ऐसा होता है। मैं पाकिस्तानको किस मुंहसे कहूं? तो भी कहना पड़ता है। वे लिखते हैं—लंबा-चौड़ा खत लिखा है, मेरे पास पड़ा है—वहां कोई हरिजन रहना नहीं चाहता। वे अगर एक जगह बैठना चाहते हैं तो बैठकर रह नहीं सकते, उनसे जबरदस्ती काम लिया जाता है। कहा जाता है कि पैखाना साफ करो, झाड़ू निकालो। यह सब हमको करना चाहिए। लेकिन उनको ऐसा करनेको कहते हैं तो आज भंगी पैखाना ही साफ करे, ऐसी बात थोड़ी है। एक भंगी हमेशा पैखाना साफ करनेका काम करे, ऐसी बात तो होनी ही नहीं चाहिए। अगर वह बैरिस्टर बन सकता है तो वह क्यों न बने? हम ऐसा क्यों कहें कि तुम यही काम करो—उनके दिलकी बात होनी चाहिए। अगर उनसे ऐसा

कहा जाय कि मुसलमान वनके रहो, नही तो ठीक नही है तो वेचारे हरिजन जायं कहां ? क्या करें ? आपने देखा ही होगा कि जगजीवनरामने एक लवा वयान दिया है। उसमें उन्होने कहा है कि हरिजनोंको वहांसे आ जाना चाहिए। अगर वे आना चाहते है तो उनके लिए सव सहूलियत पैदा करनी चाहिए। जवतक वे पाकिस्तानमें भी रहते हैं तवतक उनको उनकी खुशीके मुताविक करने देना चाहिए, नही तो छोड़ देना चाहिए। ऐसा नही करते है तो हमेशाके लिए हिंदू और सिखको चुभनेवाली वात है हिंदुस्तान या पाकिस्तान कुछ भी वने, तो भी हम एक दूसरेको भूल नही सकते। हमको तो एक शराफतसे काम करना है, किसीको रंज पहुचाना नही है, किसीको मजवूर करके मुसलमान भी नही वनाना है, किसीकी लड़कीको या औरतको मजवूर करके, छीनकर भाग नहीं जाना है। कल डाक्टर गोपीचंद भार्गव और सरदार स्वर्णसिंहने भी कहा था कि इसको हम वर्दाश्त करनेवाले नही है। आजकल अगर कोई मुसलमान कहे कि मै हिंदू वन गया हूं तो उसे मानना नही चाहिए, हरिजन कहे कि हम मुसलमान वन गए हैं तो वह मानने लायक चीज नही है। डरके मारे ऐसा कह देते है; लेकिन उसे मानने लायक चीज नही समझना चाहिए; क्योकि वह वेकानून चीज है।

अभी एक वात और रह गई है—काठियावाड़से दो किस्मकी चीजे आती हैं। एक किस्मकी तो ऐसी आती है कि जो तुमने लिखा था वैसी ही चीज वन गई है। आज भी ऐसा तार आया है। दूसरी किस्मकी काग्रेसकी चीज है कि नही ऐसा नही वना है। कांग्रेसवाले ऐसा करते ही नही है, हिंदूमहासभावाले और राष्ट्रीय स्वयसेवक सघवाले करते हैं। वे कहते है कि मुसलमानोको कोई नुकसान ही नही पहुंचा है। हिंदू-महासभा-वाले और राष्ट्रीय स्वयसेवक सघवाले कहते है कि हमने तो किसीका मकान जलाया ही नही है। मैं किसकी वात मानूं ? काग्रेसकी या मुसलमानों-की या हिंदूमहासभा और राष्ट्रीय स्वयसेवक संघकी ? हमारे मुल्कमें ऐसा हो गया है कि ठीक-ठीक पता लगाना मुश्किल हो गया है। गलती हो गई तो मान लेना चाहिए। हिंदुओंसे गफलत हो गई, हिंदुओंने ज्यादतियां

की तो कह देना चाहिए। इसमे क्या है? अगर नही हुआ है और मुसलमान अतिशयोक्ति करते है कि उनका मकान जला दिया गया है, उनको जबरदस्ती हिंदू बनाया गया है, उनकी लड़की भगा ली गई है तो डका पीटकर संसारको बता देना चाहिए कि बात क्या है, इसमे मुझे कोई शक नही है। इसी तरहसे अगर हिंदू महासभा और राष्ट्रीय स्वयसेवक सघसे कुछ नही हुआ है तो मै धन्यवाद देनेवाला हू। बडी अच्छी बात है। सही क्या है वह मै नही जानता हू। इसे जाननेकी मेरी कोशिश तो चल रही है। मै वहां जिनको जानता हू उनको मैने लिखा है। मुसलमानोको लिखा है कि क्या हुआ है, उसका हवाला दो, तब तो मै समझू कि किस तरहसे काम चल रहा है। इसका आखिर अजाम क्या आएगा, वह नही जानता हू।

अभी दक्षिण अफ्रीकाकी बात है। आपने देखा होगा कि पडित विजयालक्ष्मीने क्या कह दिया है। वह कहती है, हम यहा हार तो गए, क्यो? क्योकि दो-तिहाई मत नही मिले। दो-तिहाई मत मिले तब अमरीकामें काम हो सकता है, लेकिन काफी लोगोने मदद दी और कहा कि आप जो कहती है वह सही है। दूसरी बात यह कि सच तो हमारे साथ है, पीछे हमारी एक प्रकारकी विजय तो हो ही गई है। इसलिए दक्षिण अफ्रीकावालोको मायूस[1] नही होना चाहिए। लेकिन मै तो दूसरी बात कहूगा। वह विजयालक्ष्मी बहन तो कह नही सकती, क्योकि वह तो यहासे सरकारकी ओरसे गई थी—आपके पास उपाय नही है तो मेरे पास तो है, मैंने तो जनूबी[2] अफीकामे शुरू किया था, तो मै कहूगा कि हारना-जीतना क्या है, चाहे दक्षिण अफ्रीकाके अग्रेज कहे, स्मट्स कहे कि वह वहा हमको नही चाहते, जाओ, नही तो मारेंगे, खाना-पीना नही देंगे जैसे पाकिस्तानमे होता है और यहा भी ऐसा होता है कि हम मुसलमानोको खाना नही देंगे। पाकिस्तानसे हिंदू और सिखको भगा दिया गया, उनसे कहा गया कि नही जाओगे तो मारेंगे। जैसे अभी बन्नूमे काफी हिंदू, सिख पडे है, उनका क्या हाल होगा, मुझे पता नही है। आज ही मेहरचद खन्ना आए थे तो उन्होने कहा कि दूसरी जगह भी पडे तो है, लेकिन कहा नही जा सकता

---

[1] निराश; [2] दक्षिण।

कि जिदा रहेगे; और अगर जिंदा रहना है तो इस्लाम कबूल करना ही है; लेकिन वन्नूमे तो वहुतसे हिंदू सिख पड़े है, वे क्या करे ? जैसे जेलमे रहते है वैसे पडे है, वाहर निकल नही सकते; भीतर रहते है तो खाए क्या, ऐसी वडी आपत्तिमे पडे है। हकूमत क्या करे? वह भी पेचीदगीमे पड़ी है । मै जो यहा कहता हू, वैसे ही वहां दक्षिण अफ्रीकामें हिंदू, मुस्लिम, सिख सव पडे है। उनको मै एक ही वात कहूगा कि हार-जीत तो चलती है। लेकिन सच्ची हार-जीत तो आप ही खानेवाले है, नही तो आप कहे कि हम इज्जतसे रहेगे, हटेगे नही। यहासे सव गए, ऐसी वात नही है। हमको वुलाया गया था। जो गिरमिटमें गए थे, फिर वहा हमारे वाल-वच्चे पैदा हो गए। तो यदि वहा किसीको रहनेका हक है—हब्शीको छोडकर, क्योकि वह तो उनका देश है—तो सवसे पहले इनका है। वोर लोगोको भी हमारे-जितना हक नही है।

अमरीकामे सव देशके नुमायदे[1] गए थे। जमा हो गए थे, तो हमारे देशके नुमायदेको भी जाना था। वह वुरा नही, अच्छा किया। वहा तो इन्साफ करने जमा होते है, इन्साफ नही कर पाते या कर नही सकते यह वात दूसरी है। लेकिन मै तो कहूगा कि दक्षिण अफ्रीकामे हम लडे, तलवारसे नही, वाहुवलसे नही, आत्मवलसे। आत्मवल तो छोटी लडकी जो मेरे पास वैठी है उसके पास है, और वैठे है उनके पास है, सिपाहियोके पास है। तलवारको तो कोई छीन सकता है, हथियारको छीन लेगा, हाथको काट डालेगा, लेकिन आत्माको तो कोई छीन नही सकता—वह तो सनातन सत्य है, आज रहेगा, कल रहेगा, परसो रहेगा। विना आत्माके शरीर निकम्मा है। शरीर तो दफन होनेवाला है। मेरी पत्नी मर गई तो उसे मै रख नही सका, जला दिया उसी रोज। दो दिन भी नही रख सका। महादेव मर गया, वह तो मेरा सव काम करनेवाला था। तो मै उसको रख थोडे सका! जो काम करता था वह चला गया तो उसके शरीरको जला दिया। तो मै तो यही कहनेवाला हूं कि अगर दक्षिण

---

[1] प्रतिनिधि।

अफ्रीकावालोमें अपनापन है और मै मानता हू कि वह है, अगर हिम्मत-वान है तो उन्हें नम्रतासे कहना है कि अमरीकामे दो-तिहाई मत तो नही मिले, लेकिन काफ़ी तो मिले। दक्षिण अफ्रीकाके लोगोसे कहे कि हम नम्रतासे कहते है कि आप इतना तो करें कि हमे इज्जतसे रहने दें। हम इज्जतसे रहेगे। वहां मुहकमोमे हमे कोई हिस्सा नही चाहिए। आप हमे मदद न करे, लेकिन हमे हवा तो खाने दे, पानी पीने दे, जमीनमे रहने दे, जिस जगह हम रहना चाहते है, पैसे देकर रहना चाहते हैं, मुफ्तमे नही, हमे आपका मत नही चाहिए, मिले तो जैसे अग्रेजोको मिलते है वैसे मिले, नही तो नही मिले। उसके लिए हम सत्याग्रह नही चलाएगे, लेकिन हमे अपनी इज्जत रखनी है और हमे पानी चाहिए, रोटी चाहिए और जमीन चाहिए, और हमारे लडकोको तालीम चाहिए, इसके लिए पैसे न दें उसे तो समझ सकेगे। हम इधर घूमते है तो लडकोको तालीम तो दे। यह हमारा हक है और इन चीजोके लिए इस तरहसे लड़नेका हमारा हक है। हारनेकी बात तो है नही, मरनेकी बात है। करना या मरना इसके सिवा कोई दूसरा चारा नही है। अगर दुनियामे हमे इज्जत रखनी है तो करना या मरना है। इसमे कोई बेहालकी बात नही है। यह सीधा धर्म है। यह मै दक्षिण अफ्रीकावालोको बताता हू और आपको भी बताता हू। दूसरा मेरे पास है ही नही।

: १६८ :

४ दिसंबर १९४७

भाइयो और बहनो,

काठियावाडकी बात मैने कल भी की थी। आज मेरे पास सामलदास गाधीका तार आया है। कल श्री ढेबरभाईका तार आया था। दोनो कहते है कि मेरे पास बहुत अतिशयोक्तिभरी खबरे आई है। वहां औरते उडाई ही नही गई और जहातक वे जानते है, एक भी खून वहां नही हुआ। सरदार पटेलके जानेके बाद तो कुछ भी नही हुआ। इसके

पहले थोडी लूटपाट और दगा हुआ था। सामलदासको मेरे कहनेकी चोट लगी, लगनी ही चाहिए थी। वह खुद बबईसे काठियावाड चले गए है। वहा और तहकीकात करके मुझे ज्यादा खबर देगे।

इधर अमेरिका, ईरान और लदनसे मेरे पास तार आते रहे है, जिनमे लिखा था कि काठियावाड़मे मुसलमानोपर बड़ा अत्याचार किया गया है। इस तरहका प्रचार करना सच्चे लोगोका काम नही। इस बारेमे ईरानका हिंदुस्तानके साथ क्या ताल्लुक?

सामलदास गाधी कहते है कि 'मेरे पास हिंदू-मुसलमानका भेद नही।' तो जो मुसलमान भाई मुझे लिखते है उनका मै पूरा-पूरा साथ देना चाहता हू। मगर शर्त यह है कि वे सचाईकी राहपर हों। वे अतिशयोक्तिभरी खबरे विदेशोमे भेजे, सारी दुनियामे शोर मचावे, यह मुझे बुरा लगता है। हिंदुस्तानमेंसे भी मेरे पास तार आते है, उन्हे तो मै बरदाश्त कर लेता हू, लेकिन जब विदेशोसे तार आते है तो मुझे लगता है कि यह तो बहुत हुआ। उससे मुझे चोट लगती है।

होशगाबादसे एक मुसलमान भाईका खत आया है। उन्होने लिखा है कि वहा गुरु नानकके जन्म-दिनपर सिखोने मुसलमानोको बुलाया और उनसे कहा कि आप हमारे भाई है, आपसे हमारा कोई झगड़ा नही है। मुझे यह जानकर खुशी हुई। होशगाबाद वही जगह है, जहां स्टेशनपर एक घटना हो गई थी। होशगाबादमे गुरु नानकके जन्म-दिनपर सिखोने जैसा किया, वैसा सब जगह लोग करे, तो आज हमपर जो काला धब्बा लग गया है उसे हम धो सकेगे।

व्यापारी-मडलवाली बात आगे चल रही है। मैंने इशारा तो किया था कि मारवाड़ी और यूरोपियन व्यापारी-मडल रहें, तो मुसलमान-चेबर क्यो न रहे? एक मारवाडी भाईने मुझे लिखा है कि हम है तो मारवाडी, मगर हमारे चेबरमे दूसरे भी आ सकते है। मैंने उनसे पूछा है कि आपके चेबरमे गैर-मारवाड़ी कितने है और हिंदू कितने है। उनका खत अग्रेजीमे है, मुझे यह बुरा लगता है। उनकी रिपोर्ट भी अग्रेजीमे है। क्या मै अग्रेजी ज्यादा जानता हू? मेरा दावा है कि जितनी मै अपनी जबान जानता हू, उतनी अग्रेजी कभी नही जान सकता। मांका दूध पीनेके समयसे

जो जबान सीखी, उससे ज्यादा अग्रेजी—जिसे १२ बरसकी उमरसे सीखना शुरू किया—मुझे कैसे आ सकती है? एक हिंदुस्तानीके नाते जब कोई मेरे बारेमे यह सोचता है कि मै अपनी जबानसे अग्रेजी ज्यादा जानता हू, तो मुझे शर्म मालूम होती है।

हम अपने आपको धोखा न दे। यूरोपियन चेबरवाले भी ऐसा दावा कर सकते है कि हमारे चेंबरमे सब लोग आ सकते है। मगर इससे काम नही चलता। अगर सब कोई आ सकते है तो अलग-अलग चेबर रखनेकी जरूरत क्या? यूरोपियनोसे मेरा कहना है कि वे हिंदुस्तानी बनकर रहें, अगर वे हिंदुस्तानी बनकर रहे और हिंदुस्तानके भलेके लिए काम करे तो हम उनसे बहुत कुछ सीख सकते है। वे बडे होशियार व्यापारी है। उन्होने अपना सारा व्यापार बदूकके जोरसे नही, बल्कि बुद्धिकी शक्तिसे बढाया है।

बर्माके प्रधान मत्री मुझसे मिलने आ गए थे। वह बडे नम्र और सज्जन है। उनसे मैने कहा, आप हमारे यहां आए, यह अच्छी बात है। हमारा मुल्क बडा है, हमारी सभ्यता प्राचीन है। मगर आज हम जो कर रहे है, उसमे आपके सीखने-जैसा कुछ नही है। हमारे देशमे गुरु नानक हुए, उन्होंने सिखाया कि सब दोस्त बनकर रहे, सिख मुसलमानोंको भी अपना दोस्त बनावे और हिंदुओको भी। हिंदुओं और सिखोंमे तो फर्क ही क्या है? आज ही मास्टर तारासिंहका बयान निकला है। उन्होने कहा है, जैसे नाखूनसे मास अलग नही किया जा सकता, वैसे ही हिंदू और सिख अलग नही किए जा सकते। गुरु नानक खुद कौन थे? हिंदू ही थे न? गुरु ग्रथ साहब वेद, पुराणो वगैराके उपदेशोसे भरा पड़ा है। बाते तो कुरानमे भी वही है। हिंदू-धर्ममें 'वेदके पेट' मे सब धर्मोका सार भरा हुआ है। वर्ना कहना पडेगा कि हिंदू-धर्म एक है, सिख-धर्म दूसरा, जैन-धर्म तीसरा और बौद्ध-धर्म चौथा। नामसे सब धर्म अलग-अलग है, मगर सबकी जड़ एक है। हिंदू-धर्म एक महासागर है, जैसे सागरमे सब नदियां मिल जाती है वैसे हिंदू-धर्ममें सब धर्म समा जाते है। लेकिन आज हिंदुस्तान और हिंदू अपनी विरासतको भूल गए मालूम-होते है। मै नही चाहता कि

वर्मावाले हिंदुस्तानसे भाई-भाईका गला काटना सीखे। आज हम अपनी सभ्यताको नीचे गिरा रहे है। लेकिन वर्मावालोको हमारे इस काले वर्तमानको भूल जाना चाहिए। उन्हें यही याद रखना चाहिए कि हिंदुस्तानकी ४० करोड प्रजाने विना खून वहाए आजादी हासिल की है। हो सकता है कि अग्रेज थके हुए थे। मगर उन्होंने कहा है कि 'हिंदुस्तानियोकी लड़ाई अनोखी थी। उन्होने हमसे दुश्मनी नही की, वदूकका सामना वदूकसे नही किया। उन्होने हमे नाराज नही किया। ऐसे लोगोपर क्या हम हमेशा मार्शल ला चलाते रहे ? यह नही हो सकता। सो वे हिंदुस्तान छोड़कर चले गए। हो सकता है कि हमने कमजोरीके कारण हथियार नही उठाया। अहिंसा कमजोरोका हथियार नही, वह वहादुरोका हथियार है। वहादुरोंके हाथमे ही वह सुशोभित रह सकता है। तो आप हमारे जगलीपनकी नकल न करे, हमारी खूवियोका ही अनुकरण करे। आपका धर्म भी आपने हमसे लिया है। हिंदुस्तान आजाद हुआ तो वर्मा और लका भी आजाद हुए। जो हिंदुस्तान विना तलवार उठाए आजाद हुआ उसमे इतनी ताकत होनी चाहिए कि विना तलवारके वह उसको कायम भी रख सके। यह मै इसके वावजूद कह रहा हू कि हिंदुस्तानके पास सामान्य फौज है, हवाई फौज है, जल-सेना वन रही है, और यह सव वढाई जा रही है। मुझे विश्वास है कि अगर हिंदुस्तानने अपनी अहिंसक शक्ति नही वढाई तो न तो उसने अपने लिए कुछ पाया और न दुनियाके लिए। हिंदुस्तानका फौजीकरण होगा तो वह वरवाद होगा और दुनिया भी वरवाद होगी।

: १६६ :

५ दिसवर १९४७

भाइयो और वहनो,

मुझको यहा जो खत दिए जाते है वे लवे-लवे मिले तो उनको मै पढू और उत्तर दू, ऐसा तो नही वन सकता है। तो मै इतना ही कहूगा कि ऐसे जो पत्र आते है वे अगर जवाव देने लायक है तो

दूं; लेकिन उनको पढ़नेमें समय लगता है। उनको यहां पढ़ तो नही सकता हूं, क्योकि उनमे मेरा समय जाता है और आपका भी। एक खतमे लिखा है कि आप लियाकत अली खां साहबसे मिले और बातचीत की। क्या अब भी पता नही चला है कि काठियावाडमे कुछ भी नही हुआ ? वह भाई अगर यहां है तो सुन ले, नही है तो भी इसके (रेडियोके) मारफत सुन ही लेगे कि काठियावाड़में कुछ भी नही हुआ है। सामलदास गांधीने कहा है कि जैसा बयान आपको मिला है वैसा नही हुआ। हां, हुआ है; लेकिन उतना नही हुआ है। वह पाकिस्तानके अखबारोमे आ गया और तार भी छूटा। वह भयानक चीज है, लेकिन भयानक चीज नही हुई। आज सामलदासका दूसरा तार आया है। वह लिखते है कि मैंने तहकीकात की तब पता चला कि ऐसा हुआ नही है और सरदारके आनेके बाद तो कुछ हुआ ही नही। पहले जो मुझे खबर दी गई थी उसका कहनेका मतलब यह है कि सरदारने लोगोको भड़काया तब हुआ, लेकिन उनके जानेके बाद तो कुछ हुआ ही नही तो शक्ल बदल जाती है। तो सामलदास गांधीने कहा कि मैं मुसलमान भाइयोसे कहूंगा कि आप ऐसे तार क्यों भेजते है। तो मेरे पास उन्ही लोगोने, जिन मुसलमान भाइयोने शिकायत की थी, तार भेजे है कि उसमें गलती थी, उसमे अतिशयोक्ति थी। वे लिखते हैं कि पाकिस्तानके अखबारोंने जो लिखा है वह गलत है। जितना नुकसान हुआ बताया जाता है वह भी गलत है। उसमें यह भी है कि मुसलमान लोग भड़क उठे हैं, सब दहशतमे है—यह भी गलत है। तो मुझको अच्छा लगा। क्यो ? मैंने तो कह दिया है कि मुसलमान भाइयोके लिए जितना मुझसे हो सकता है करूगा। जो गिरे है उन्हे हमे लात नही मारनी चाहिए, उनको उठाना चाहिए। यह हमारी इन्सानियत बताता है, हमारी मोहब्बत बताता है; हम सभ्य है, शरीफ है, यह बताता है। किसीको नीचे गिराना तो मेरेसे कभी हो ही नही सकता। मेरा दुश्मन भी हो—मेरा दुश्मन तो कोई है नही—तो उसको भी मैं कभी नुकसान नही पहुचाऊंगा। हां, लोगोका जो बड़ा ख्वाब था कि जब पाकिस्तान हो जायगा तो वहा सब कुछ हो जायगा। ऐसा क्या होगा ? ऐसा थोडा है कि जो पाकिस्तानमे रहेगे वे जिंदा रहेगे और जो बाहर रहेगे वे जिंदा नही रहेंगे। पाकिस्तान क्या

बचा सकता था ? पाकिस्तानमे तो समुदर भरा है हिंदू और मुसलमानोंका। क्या वहा जो हिंदू सिख भरे है उनको भगाए ? वे हटना तो चाहते नही थे; लेकिन नही होने लायक चीज हो गई। वे हटना थोड़े चाहते थे। सिखोके पाससे मेरे पास खत आया है कि वे वहां जाना चाहते है और उनको उनके बिना चैन नही। मानो कि लायलपुरके नजदीक किसीकी हजार एकड़ जमीन पडी है, वहां उसने खेत बना लिया है, बगीचा बना लिया है, केले पकाता है, गेहू पकाता है, कपास पकाता है, फल पकाता है तो वह उसको कैसे छोड़ सकता है। जबतक वह वहा लौट नही जाता है तबतक उसको चैन मिल ही नही सकता। तो वहा तो ऐसा हुआ और यहां क्या हुआ ? सिखोको गुस्सा आया कि हम तो वहासे भागकर आए और वे लोग यहा आरामसे रहते है तो बदला लें। तो मैने कहा कि यह इन्सा-नियत नही है, हैवानियत है। ऐसा करना नही चाहिए। बुरेका बदला अच्छा ही देना चाहिए। बुरेकी नकल नही करनी चाहिए। अच्छेकी नकल हो सकती है। यह इन्सानका काम है। तो मुझको अच्छा लगा कि काठिया-वाडसे तार आया। मै तो मुसलमान भाइयोसे कहूगा कि एक चीज बन गई है तो उसका आधा बताओ; पाव बताओ, उसका दुगुना, दस गुना क्या करना था, और बाहर क्या भेजना था ! दुनियामे फैलाएं, ऐसा क्या करना था ! पीछे हिंदू, सिख—सिख तो है नही, हां अभी थोड़े चले गए है—बिगड़ जाए तो दुनिया क्या बचा सकती थी ? हां, वे कहते कि क्या तुमने इसलिए आजादी पाई ? हम उसे छीन लेते हैं। वह सब बन सकता है, लेकिन जो मर जाय वह थोड़े आ सकता है। इसलिए मै कहूगा कि हम कोई चीज बढ़ाकर न कहे। जो दुःख है वह दुःख तो है ही, उसको कोई बाहरवाला हटानेवाला नही है। उसको छोटा करके कहें। दूसरोका जो भला काम है उसको बढाकर बताए और बुरेको छोटा करके बताए तब तो हम दुनियामे काम कर सकते है। तो आपको यह खबर देनी थी, दे दी। एक भाईने लिखा था, वह भी आ गया। उसमे और क्या लिखा है, देखूगा। कहना होगा तो वह खबर कल दे दूगा।

अभी एक बात और आपको कहनी है। उसका आपसे कोई ताल्लुक नही है, लेकिन आपके मारफत कह तो दू। मैने बृजकिशनजीको कह दिया

है कि मेरेसे जो मिलने आते है उनको ६ तारीखसे १३ तारीखतक वक्त न दें। नही मिलना चाहता हू, इसका मतलव यह नही है कि मै वीमार हूं या शौक करता हूं। वह तो कई महीनेसे वात चल रही है। मै सेवाग्राम जा नही सकता हूं। इसलिए वे लोग सेवाग्रामसे यहां आ रहे है। कलसे कस्तूरवा ट्रस्टकी वैठक शुरू होती है, उसके वाद चर्खा-सघ, फिर नई तालीम, पीछे ग्राम-उद्योगसघकी वैठक होगी। इन दिनोंमे चार वैठक हो जायंगी। अच्छी तरहसे हो सके तो इसमे वक्त तो जायगा। तो इनको वक्त दू या मिलनेवालोंको वक्त दू ? तो मैंने कह दिया कि मेहरवानी करके इन दिनोमे वक्त न मांगे। हां, वादमे मिल सकते है। मै यहा अपना काम नही करूगा ऐसी वात नही है। वाहरसे आते है तो कितना चाहते है; क्योकि मैं तो सूखा-जानवर-सा वन गया हूं। जव घर रहता है तब कहते है कि देखनेके लिए तो चले जाए। वाहरसे आते हैं तो कहते है कि सूखा जानवरको तो देख ले, लेकिन समझ ले कि थोड़े दिन घर के भीतर वैठा हुआ है। तो इतना मैंने कह दिया।

अभी एक वात आपको और कह देनी चाहिए। कह तो चुका हूं। वाते भी चल रही है कि कपडोपर जो अकुश है, कट्रोल है, वह छूट जायगा। खुराकपर है वह भी छूट जायगा—कल छूट जायगा, ऐसी वात थोडी है। लेकिन प्रवाह चल गया है तो कहते है कि तुमने अच्छा किया। सब जगह-से खत आते है कि अकुश छूट जाय तो अच्छा है। तव मुझे कहना चाहिए कि अकुश छूट जाता है तव हमारा कुछ फर्ज नही है, ऐसी वात नही है। जव छूट जाता है तो जो इस वारेमे व्यापार करते है उनका पहला फर्ज हो जाता है। मै घनश्यामदासको भी कहूगा कि आप ज्यादा कपडे क्यों नही पैदा करते ? वह कह सकते है कि मै तो एक मजदूरी कर लेता हू। जो हुकम होता है वे कपड़े हम वनाते है, जो दाम होता है वह दाम ले लेते है, लेकिन जव अकुश उठ जाता है तव घनश्यामदास क्या करे, दूसरे मित्र लोग क्या करे? छूट मिल गई तो लोगोको लूटना है ? तव तो मेरी हजामत होनेवाली है। ऐसा हो गया है कि लोग कहते है कि यह मैंने हटाया। हकूमतमे मेरे भाई-वद है, मेरे दोस्त है, उनको कहा तो छूट गया, ऐसी वात थोडी है। मैंने तो हिंदुस्तानकी खिदमत की है। मै कितना भी बड़ा होऊ, कितना

भी कहूं, लेकिन अगर हकूमतको नही जचती है, लोगोको, जिनकी हकूमत है, नही जचती है तो मैं कितना भी कहूं, उससे क्या ? मैं भगवान थोड़े हू कि जो कहू वह अच्छा है। मैं तर्क करता हूं, अनुमान करता हू, तब कहता हू कि कपड़े और दूसरी चीजोपर जो अंकुश है वह हट जाय। इसका मतलब यह है कि अगर आज हमारे पास ५ मन अनाज पड़ा है तो कल १० मन होना चाहिए; क्योकि मै समझता हूं कि दबाकर बैठ गए है। अगर आज किसानके पास नही है और तब भी मैं कहू कि अकुश हटा लो, लोग भूखे मरेंगे तो क्या ? मै इतना बेवकूफ थोड़े हूं कि कहू कि लोगोको भूखें मरने दो ! मेरे लिए तो घनश्यामदास बकरीका दूध तैयार करा देते है, फल दे देते है, भाजी-तरकारी दे देते हैं, मै थोड़े भूखा मरता हू। मैं क्या ऐसा कर सकता हूं कि लोग भूखे मरे ? मै तो मान बैठा हू कि किसानोके पास अनाज पडा है, लेकिन उतना दाम नहीं मिलता है जिससे वे खाना भी खा सकें। मजबूर करके सरकार उनसे जितना लेती है उतना दे देते हैं और कहते है कि जब छूट हो जायगी तब बता देंगे कि हमारे पास कितना अनाज है। दूसरे व्यापारी है, जब हमारे पास हकूमत नहीं थी तब वे नखरा करते थे और हरएक किस्मका पैसा लोगोसे ले लेते थे, लेकिन अब वैसे एक कौडी भी लेना हराम है। मै तो समझता हू कि किसान अनाज निकाल देंगे, उसको अच्छे दामपर बेच देंगे तो भूखे नही मरेंगे। माना कि हमारे पास उतना अनाज नही है जितना चाहिए, तो क्या जिसके हाथमें जितना अनाज आए उतना सब खा जाय और पड़ोसी भूखा मरे ? अगर हम इतने नालायक बन गए तो उसका इलाज नही है। तब भी मैं कहूंगा कि उसका इलाज अकुश नही है। अगर ऐसा हुआ तो हमारी हकूमतको जिसमे आला दर्जेके हमारे लोग है, हट जाना है। लोग चालाकी करते है, सचपर नही रहते है, जिन व्यापारियोंको लोगोंके लिए व्यापार करना है वे अपना ही घर भरते है, अपने लड़के-लड़कीके लिए व्यापार करते है तो हमारी जो सल्तनत है उसे हट जाना चाहिए। हकूमत क्या करे ? गोली मारे, मजबूर करे ? हमारी ऐसी ताकत है नही और ऐसी ताकत हमे चाहिए भी नही। पुलिस रखना है तो रखे, लेकिन गोली मारनेके लिए थोड़े रखना है ! व्यापार करते है उनको मारना है तो किसके लिए मारे ? किसानो-

को मारें तो कौन रहेगा ? मै तो कहूगा कि ३० वर्षसे तालीम ली वह कहा गई ? इन्सानियत कहां चली गई ? ऐसा चल नही सकता। यह तरीका तो जो आजादी मिल गई है उसको खोनेके लिए है। इसलिए मै तो कहूगा कि अकुश हट जाय। अगर हकूमत कहे कि अकुश हटा लेंगे तो लोग मर जाएंगे तो मै कहूगा कि पचायत राज नही बना, लोगोका राज नही हुआ, रामराज्य तो हुआ ही नही। मै तो उसीके खातिर जिंदा रहना चाहता हू। मै कहूगा कि जो अकुशसे बरी हो जाते है वे अपनेपर अकुश रखकर दूसरोंको खुश करें। पीछे हकूमत चलानेमें जो सिविल सर्विसके लोग है वे कहे कि यह गाधी कहासे निकला, यहां क्यों कूद पड़ा, उसको हकूमत चलाने का अनुभव कहा है। बादमे अकुश लाना और खाना खिलाना मुश्किल हो जायगा। तो मै कहूगा कि हा, ठीक है, मै सिविल सर्विसमे नही गया हूं, हकूमत नही चलाई है; लेकिन हजारों करोड़ों लोगोंमें मै घूमा हू, उनके दिलको जानता हूं, इसलिए मै समझता हू। मै सिविल सर्विसवालोंसे, जो हकूमत चलाते है उनके पाससे प्रमाणपत्र मांगूगा कि वे ऐसा ही कहे, गांधीकी बात सुन ली और नतीजा यह आया कि अबतक हमारेमे जो काला-बाजार चलता था वह मिट गया। जो ताजिर करते है वे अपना ही काम नही करते है—वे लोगोंको साथ रखकर चले।

पीछे कपड़ेका भी आ जाता है। अनाज निकालना तो एक अलग बात भी है। आप कह सकते है कि हमारे यहा अनाज पूरा नही है, लेकिन अभीतक किसीने ऐसा नही कहा है कि कपास काफी नही है। कपास तो यहातक ज्यादा है कि बाहर जाता है। तो कहोगे कि हमारे पास इतनी मिले कहा है ? मै कहूगा कि मिल मेरे घरमें है, आपके घरमें है, यहा जितनी माताए बैठी हैं उनके घरमे है। दो हाथ तो सबके पास है। कपड़ा पहनना है तो चर्खा चलावे, नही तो नगे रहे। हां, तो ताजिरको कहोगे कि खबरदार, जितना पैसा चाहो लोगोंसे ले नही सकते, और कहोगे कि मिल हम चलाएगे तो मैं कहूगा कि वह तो हकूमतके पास है, वह ले सकती है। हमारे पास इतनी मिले है फिर भी उम्मीद है कि कम पडेगा तो हमे हाथसे कातना और बुनना तो पडेगा। बुनना आसान है। हमारे यहा इतने जुलाहे, बुनकर पड़े है कि जितना चाहिए उतना बुन सकते है। लेकिन

हमारे यहा शौकीन वडे है, मिलका सूत मिले तो बुन सकते है, हाथका सूत नही चाहिए। हाथ जब दवावमे आता है कि नही बुनेंगे तो नगा रहना पड़ेगा तब लाचारीसे हाथके सूतको ही बुनेगे। अगर हाथके सूतको बुनने लगे तो नंगा रहनेकी कोई दरकार नही। तो हमारा खूबसूरत मुल्क, जिसमे इतने करोड़ लोग रहते है, जो धधा जानते हैं, जिनको इतना इल्म है कि कपडा किस तरह तैयार किया जाता है, नगा नही रह सकता। इस कारण कपडेपर अकुश रखना कि २ गज कपड़ा मिलेगा, ४ गज मिलेगा, ज्यादा नही, अच्छा नही लगता। कपड़ेपर अकुश रखना मेरी निगाहमे अज्ञानताकी सीमा है। आज छूट सके तो आज छूट जाय। हां, अनाजकी वात है तो मैं कहूगा कि किसान और व्यापारी कहे कि हमे तो लोगोके लिए पैदा करना है, कोई दगावाजी नही करना है। किसान समझे कि अनाज बोना है तो अपने ही पेटके लिए नही, सव लोगोके लिए। मै यह भी कहूगा कि हमारे मुल्कमे आधा सेर पैदा होता है तो हम अपनी जमीनसे एक सेर क्यो न पैदा करे, लेकिन इसके लिए लोगोको वताना तो चाहिए, उत्तेजन तो दे, हमारे पास जो यत्र[1] पडा हैं उसे रोक ले और इसमे लगा दे कि क्यो ज्यादा नही होता है।

हमारा मुल्क ऐसा है कि भूखे मरने, नगे रहनेकी कोई दरकार नही। हम अपनी अज्ञानतासे नंगे रहते है, जितना अनाज चाहिए उतना पैदा नही करते, जितना दूध चाहिए उतना दूध पैदा नही करते, हमारे यहां इतनी भैस पडी है तो भी हमारा यह हाल है। इससे ज्यादा मूर्खता मै समझ नही सकता हू।

: १७० :

६ दिसवर १९४७

भाइयो और वहनो,

आप लोगोने लक्ष्मी वहनका भजन सुना, रामधुन भी सुनी।

---

[1] कंट्रोलमें लगी हुई मशीनरी।

वे तो यहा नई है, जलसामे चली जाती है। रामधुन तो ऐसी है, भजन भी ऐसी चीज है जिसमें लीन होना पड़ता है। आज आपने समझ लिया कि उनका गाना सुननेके लिए क्यों आतुर रहते है— सुर अच्छी रहती है। उन्होने उसके लिए जब पैगाम भेजा तब मुझको अच्छा लगा।

हा, तो आज १५ मिनटसे ज्यादा नही बोलना चाहता हू। कल २५ मिनट लग गए, वह ज्यादा हो गया। यह मेरे लिए शर्मकी बात है। मै नही चाहता हू कि मै २५ मिनट लू। १५ मिनट करना है तो मै १५ मिनट बोलनेका अभ्यास कर लू। बाकी छूट जाय तो छूट जाय। आज १५ मिनटमें पूरा कर दूगा।

कल एक भाईने पत्र भेजा था उसको पूरा पढ नही पाया हू, थोडा पढा है। आज दूसरा पत्र आया है। उसको पढ नही सका हू। इसके लिए माफी माग लूगा। एक ढेर पड़ा है, उसमे कही पडा होगा। वह खत जिसे पढकर आया हू उसमे लिखा है कि मै तो भोला-भाला हू, पीछे दुनिया कैसी चलती है उसको मै नही जानता हू। उसका उत्तर कैसे दू, यह भी नही जानता हू। इसलिए धोखा दे सकते है। जो धोखा है उसका तात्पर्य भी बताता है। तो वह खबरदार करता है कि मै सावधानीसे रहूं। वह लिखता है कि देखो, पाकिस्तानमे क्या हो रहा है, हम भी ऐसा ही करें और बदला ले। अगर सावधान रहते है तो कुछ होनेवाला नही है—हम बदला ले, हमारे मकान वगैरा तो सब गए। मै ऐसा नही मानता हू। ऐसा समझकर मुसलमानोके मकानोको, थोडा या ज्यादा, जलाए तो जिसका मकान जलता है उसके लिए तो उस मकानकी उतनी ही कीमत है जैसे करोड़पतिका मकान जल जाय; क्योकि उसीमे उसका गुजारा होता है। यह बडा मकानवाला है तो ज्यादा खाता है, ऐसा थोड़ा है। जितना आप खाते है, मै खाता हू उतना करोड़पति खाता है। तो मै आपको यह बताना चाहता हू कि जब मुसलमानको मजबूरन पाकिस्तान जाना पडता है तो उसको भी नुकसान पहुचता है।

वह पूछते है कि हिंदू, सिख पाकिस्तानमे सब छोड़कर यहा चले आए तो वह कब मिलनेवाला है? मुझे कहना है कि हा, यह ठीक शिकायत

है, लेकिन मैं तो कहूंगा कि मैं संतुष्ट होकर बैठनेवाला नहीं हूं जबतक सब हिंदू, सिख—मर गए वह बात दूसरी है—अपने मकानपर जाकर बैठ नहीं जाते हैं। जबतक एक भी हिंदू, सिख ऐसा रह जायगा जिसे उसका मकान वापस नहीं मिला हो तबतक मैं शांतिसे नहीं रह सकता हूं। हां, जो मकान जल गया है उसको कहे कि ऐसा-का-ऐसा बना दो, तो ऐसा तो कोई हकूमत नहीं कर सकती, न आपकी हकूमत ऐसा कर सकती है। हकूमतसे ऐसी आशा करनी ही नहीं चाहिए। मैं तो कहता हूं कि मॉडल टाउनमें हिंदू सिख सब जाकर रहें तो यह काफी है। लाहौरके हिंदू, सिख हैं वे अपने घरपर, जमीनपर जाकर बैठें और कहें कि जो मकान जैसा है दे दो, जो जमीन है वैसे दे दो। इसी तरह सब अपने घर चले जायं और अपने घरमें जाकर रह सकते हैं तो मेरे लिए काफी है। हां, इतना होना चाहिए कि जिन मकानोंपर मुसलमानोंने कब्जा कर लिया है वहांसे उनको हटा दें और जिस हालतमें वह मकान है, दे दें। उनको हवेली बनाकर, दें, ऐसा थोड़ा है। जमीन है, उसे ही लौटा दें, बस इतना काफी है। लेकिन हां, इस यूनियनमें जितने हैं वे सच्चे बनें, अच्छे बनें, शरीफ बनें तो दूसरा नतीजा बन नहीं सकता। इसमें मुझे कोई शक नहीं है। मैं तो यह भी कहूंगा कि वे जैसा करें, हम भी वैसा ही करें, ऐसा थोड़ा है। वे नाक कटाकर बैठ गए हैं तो क्या हम भी नाक कटाकर बैठ जायं?

यह भाईका जो खत है उसके जवाबमें मैं कहता हूं जो हमारी गलती हो गई—गलती सब करते हैं, उसमें क्या, लेकिन जब गलतीपर कायम रहते हैं तब हम जो करते हैं उसको शैतानियत मानता हूं, उसीपर हम कायम रहें तो वह इन्सानियत नहीं है। आदमी तो गलतीका पुतला है, वैसे धर्मका भी पुतला है। जिस जगह गलतियां कर लेता है उसको दुरुस्त कर लेता है तो वह धर्मका ही पुतला रह जाता है। तो हम अपने धर्मपर कायम रहें तो पीछे सारी दुनियाको सुनानेकी जरूरत नहीं है।

काठियावाड़के मुसलमानोंको जितना नुकसान हुआ है उसके बारेमें मुझको लिखना पड़ा, और यह ठीक भी है, वहांके हिंदुओंको उनके बारेमें कहना अच्छा है, वहांकी हकूमतको कहना अच्छा है, यहां हमारी जो हकूमत पड़ी है उसको कहना चाहिए। यह हमारा हक है। हमने ऐसे थोड़े माना

है कि जब पाकिस्तान हो जायगा तो वहा सब हिंदू-सिखका मकान जला दे, सब वहांसे चले जाय, ऐसी बात थोडी है। लेकिन गलती हो गई तो गलतीको दुरुस्त करो। उसमे वक्त लगता है। हमको भी कह सकते है कि तुम भी गलतीको दुरुस्त करो। वे कह सकते है कि जितने मुसलमान पड़े है, जिनको मजबूरन वहा जाना पडा है, उनको ले लो। ऐसे ही पाकिस्तानसे यहा जितने हिंदू सिखोको आना पडा है वे वहा चले जाय तो हम दोनो शरीफ बन जाते है, पाक बन सकते है। नही तो पीछे दुनियामे भारी मुह काला होनेवाला है। हमारा मुह सब दिन सफेद रहा है। हा, हम गुडे रहते है और गुडेपनसे आजादी ले तो बात दूसरी है। दुनिया कहती है कि हमने शराफतसे आजादी ली। मै कहू तो बात दूसरी है, हिंदू मुसलमान कहे तो बात दूसरी है, बाहरकी दुनिया कहती है हमने जो आजादी ली है, मिल गई है, वह शराफतसे ली है, शराफतसे मिली है। तो शराफतसे उसे हमे रखना भी चाहिए, गुडेबाजीसे नही, गुडेबाजीसे हम उसे गवानेवाले है। उसी तरहसे हम अपना आचार रखे, बर्ताव रखे तो दुनिया देख ले कि हमने गलती दुरुस्त कर ली। पीछे आप कहे कि दुनिया पाकिस्तानका क्या करती है, देखना है। मै तो कहूगा कि दुनिया क्या करेगी, दुनियाको कहनेकी दरकार नही। उसे साफ होना ही पडेगा। मुझको कहते है कि अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटीने जो प्रस्ताव पास किया है उसमें मेरा हाथ था, तो सुनाते है कि तुमने करा तो लिया, लेकिन लोगोके दिलमे है नही—पाकिस्तानसे जो हिंदू, सिख आए है वे जाना नही चाहते। तो मै थोड़े कहता हू कि वे मिस्कीन होकर जाय। यह ठीक है कि पाकिस्तानसे जितने हिंदू, सिख आए है वे लाचारीसे आए है; लेकिन मै कहता हू कि लाचारीसे जानेकी जरूरत नही, शानसे जाय। पाकिस्तानके मुसलमान कहे कि हम सब मुसलमान ठीक हो गए है, आप आइए। ऐसा हम मुसलमानोसे कहे कि आप मेहरबानी करके आइए, आपका मकान, आपकी जमीन जैसी-की-तैसी पड़ी है, उसपर कब्जा लीजिए। हमारा दीवानापन मिट गया है। हम शराफतसे चलनेवाले है तो आज अच्छा हो जाता है। इसमे धोखा देनेकी बात क्या है? मै तो जानता नही हूं कि धोखा कैसा है, किस तरह धोखा दिया जाता है। इसमें दुनियाको धोखा माननेकी बात नही है। अखिल

भारतीय कांग्रेस कमेटीने प्रस्ताव पास किया है कि जितने हिंदू, सिख यहा आए है उन सबको आदरसे, मोहब्बतसे अपने घरोपर, जमीनपर जाना है, लायलपुरमें जाना है। जैसे हमारे सिख भाई वहा खेती वगैरह चलाते थे तो उनको तो वहा जाना ही है। ऐसा मेरा ख्वाब है। यही देखनेके लिए मै जिंदा रहना चाहता हू। ईश्वर मेरे ख्वावको पूरा नही करना चाहता है तो मुझे उठा ले। दिल्लीमे मै रह इसीलिए रहा हूं, दिल्लीमे न कर सकू तो दूसरी जगह क्या करनेवाला हू! हम शरीफ हो जाय तो यह चीज वननेवाली है, इसमे मुझे कोई शक नही है। पाकिस्तानवाले भले वन जाते है और भलेपनसे कहते है कि हमारी गलती हो गई, अब हम शराफतसे पेश आएगे, आप आइए। इस तरहसे हो जाय तो ठीक वन सकता है। तभी हम अच्छे पडोसी बनकर रह सकते है।

: १७१ :

७ दिसबर १९४७

भाइयो और वहनो,

आज मै आपको वहुत गूढ वात कहना चाहता हू। वात तो हमेशा रहती है, लेकिन यह वहुत नाजुक चीज है। अखवारोमे तो आ गई है। आप लोगोने देखा है कि कल लाहौरमे यहासे चद हिंदू वहनें चली गई थी और लाहौरमे चद मुसलमान वहने थी। वे आपसमे मिली—इस कारण कि जिन वहनोको मुसलमान उठा ले गए है और जिन वहनोको हिंदू और सिख उठा ले गए है, पूर्वी पजावमे, उनका क्या किया जाय? यहासे काफी मुसलमान चले गए और हो सकता है कि अभी और जाय। अगर हम हिंदू और सिख समझ जायं कि हम एक भी मुसलमानको मजबूर करके यहासे भेजना नही चाहते है, अपने आप चले जाय, यह वात दूसरी है। लेकिन ऐसा है कि अपने आप कोई जाना नही चाहता। क्यो जाय अपना घरवार छोडकर? वहा पाकिस्तानमे उनके लिए घरवार तैयार है, ऐसी वात तो है नही। इच्छासे वहा जानेका तय कर लिया है

या नौकरीवाले वहा जा रहे है तो यह बात दूसरी है। लेकिन ऐसे कम हैं। और, लोगोंको वहा क्या जाना था ! वहा पाकिस्तानमे उनके लिए काम खाली है, ऐसी बात भी नही है। पहलेके व्यापारमे यहां उनका कोई हर्ज नही होता है तो वे क्यो जायंगे ?

यह तो हुआ, लेकिन औरतोंका क्या ? यह मामला गूढ है, पेचीदा है। कोई कहते है कि बारह हजार औरतोको हिंदू और सिख उठा ले गए और उससे दुगुनी पाकिस्तानके मुसलमान उठा ले गए। कोई कहते है कि यह बहुत कम तादाद है, इससे भी ज्यादा है। मै तो कहूगा कि बारह हजारकी तादाद कम नही है, एक हजार भी कम नही है, एक भी कम नही है मेरी निगाहमे। ऐसा क्यों हो कि किसी औरतको कोई उठाए ? कोई हिंदू औरत है या सिख औरत है उसको मुसलमान उठाए और मुसलमान औरत है उसको हिंदू और सिख उठाए, यह तो बडा अत्याचार है। कुछ लोग जो कहते है कि बारह हजारको उठा ले गए, यह कम-से-कम तादाद बताई जाती है। मै तो कम-से-कम लेना चाहता हू। मेरे लिए यह बहुत ज्यादा है। बारह हजार औरतोको पाकिस्तानके मुसलमान उठा ले गए और बारह हजार औरतोको पूर्वी पजाबके हिंदू, सिख ले गए। इनको कैसे लाना एक पेचीदा प्रश्न है। इसको हल करनेके लिए वे बहनें चली गई थी। मुसलमान बहनें है, उन लोगोने भी सोचा। जितनी हिंदू और सिख बहनोको उडा ले गए है उनको वापस लाना चाहिए, इसके लिए ये गई थी। उसी तरह जितनी मुसलमान बहने है उनको भी उनके घर पहुंचाना चाहिए। ऐसा नही कि वे आकर ले जायं। हमें ही पहुचा देना चाहिए। उसमें वहाके प्रधान गजनफर अली और वहाके पुलिस अफसर भी थे—नाम तो भूल गया—और दूसरे भी थे जो इसमे काम कर सकते थे। मृदुला बहन, रामेश्वरी बहन चली गई थी। दोनोने मुझे अलग-अलग सुनाया कि सबने मिलकर तय किया कि बहनोको घर वापस पहूचाना चाहिए। लेकिन बात यह हुई कि यह कैसे हो सकता है ? अगर आज उनको निकालनेके लिए ऐसा करना पडे कि पुलिस भेजनी पडे, फौज भेजनी पडे, उसके साथ बहनें भेजनी पडे तो यह काम करनेका कोई तरीका नही है। जैसे कि पाकिस्तान है, तो वहा हिंदू, सिख बहने चली जायं, पुलिस

अफसर चले जाय, शायद पूर्वी पजाबके अफसर भी चले जाय, उन वहनोको लानेके लिए, और उन वहनोको ले आए। लेकिन दोनोमेंसे एक भी जगह ऐसा हुआ नही है। कह सकते है कि वे बहने आना नही चाहती तो भी लाना है। उसी तरहसे यहासे भी वहा पहुचाना है। कोई कह सकता कि हिंदू और सिख बहन मुसलमान वन गई है, उनके साथ निकाह कर लिए है। हा, हुआ है, लेकिन वे आनेको तैयार नही है, यह मै माननेके लिए तैयार नही हू। मै इसे गलत बात समझता हू। उसी तरहसे यहा है। वे वहन खुशीसे रहती है, यह माननेके लिए मै तैयार नही।

दूसरी वात भी मै सुना चुका हू। हमारा व्यवहार वहशियाना तौरसे चलता है, पूर्वी पजावमे, और ऐसे ही पश्चिमी पजावमे। उसमें एक ज्यादा हैवान है और दूसरा कम, ऐसा कहोगे? हैवानमे ज्यादा और कम क्या हो सकता है? राजा गजनफर अलीने कहा है कि दोनोने काला काम किया है। किसने ज्यादा किया और किसने कम, इसे जाननेकी जरूरत नही। काफी तादादमे हुआ, किसने पहले की यह तहकीकात करनेकी जरूरत नही, इसके निर्णयकी जरूरत नही। जरूरत यह है कि जिन वहनोको जवरदस्ती उठा ले गए है, जिनके साथ वुरा व्यवहार हुआ है, उनको उनके घर पहुचाना है। तो उनको कैसे लाना? यह काम कैसे हो सकता है? मुझको कहना चाहिए कि यह काम पुलिससे नही वन सकता है, फौजसे नही वन सकता है। चद बहनोको पूर्वी पजाव भेज दो और चद वहनोंको पश्चिमी पजाव—तो यह काम हो सकता है, नही तो हो नही सकता, ऐसी वात नही है, लेकिन यह तरीका नही है। मै नही कहता कि जान-बूझकर करना नही चाहते, लेकिन मै तजुर्वेकार होनेके नाते कहता हू कि इस तरहसे काम होता नही है। यह काम हकूमतका है। मै यह नही कहता कि औरतोको उडानेका काम हकूमतने कराया—पूर्वी पजावका काम हकूमतने थोड़े कराया—पूर्वी पजावमे हिंदू और सिखोने किया और पश्चिमी पजावमे मुसलमानोने किया। इसमे तहकीकात क्या करनी है? वह तो हुआ है। सख्या कितनी ही हो, मै कम-से-कम वारह हजार मानता हू। तो पूर्वी पजाव और पश्चिमी पजाव इतनेको तो दे दे।

कुछ ऐसा सवाल उठा है कि उनके घरवाले उनको लेना नही चाहते। जंगली मां-बाप या पति होगे जो कहते है कि हम अपनी लड़कीको या बीबीको नही लेगे। उनको तो लेना ही है। उन बहनोने बुरा काम किया, यह मै माननेको तैयार नही। उनके साथ जबरदस्ती की गई तब हुआ। उनपर काला तिलक लगा देना और कहना कि यह समाजमें रहने लायक नही है, अधर्म है। मुसलमानोंमे ऐसा नही होता है। उसमें, इसलाममे, तो उदारता है कि वह निकम्मा नही बनाता है। यहा निकम्मे बन जाते है ऐसा थोड़ा है। निकम्मे बनानेवाले ही निकम्मे बन जाते है। तो मैं तो यही कहूगा कि यह काम हकूमतका है। हकूमतको पता लगाना है कि वे कहां-कहां है— दो-चार थोडे है, बारह हजार है। उनको निकालना है और घर पहुचाना है। अगर हम समझे कि पुलिसको भेजे, औरतोको भेजे उन बहनोंको लानेके लिए, तो यह तरीका नही है। इस तरीकेसे वे आनेवाली नही है। यह पेचीदा सवाल है। इसका मतलब यह है कि लोकमत तैयार नही है। बारह हजार औरते उडा ले गए है तो कहोगे कि बारह हजार आदमी ले गए होगे, और वे गुडे लोग है, तो मै कहूगा कि ऐसी बात नहीं है। शरीफ ही गुडे बन गए है। गुडे तो कोई दुनियामे पैदा होते नही। मौका मिलनेपर वे बन जाते है और इस तरहसे ले जाते है। ऐसा क्यो होता है ? तो मै कहूगा कि दोनो हकूमत इस काममे पगु है। दोनो हकूमतोने अपना अधिकार यहातक नही जमाया है कि अधिकारके जरिये उन औरतोको लावे। अगर इतना अधिकार होता तो पूर्वी पजाबमे जो हो गया है वह होनेवाला नही था, इसी तरहसे पश्चिमी पजाबमे होनेवाला नही था। हमें तो तीन महीने पहले आजादी मिली है। हमारी आजादी तो अभी बच्चा है।

मेरी निगाहमे पाकिस्तानने यह जहर फैला दिया। लेकिन उसको क्या कहू ? कहनेसे क्या बन सकता है ? बहनोको तो बचानेका एक ही तरीका है—वह यह कि हकूमत अब भी समझ जाय, जाग्रत हो जाय, इसको पहले दर्जेका काम बनाकर इसमे सारा वक्त लगा दे और इसके लिए मरनेतकको तैयार हो जाय। तब इन औरतोको बचाया जा सकता है, नही तो कितनी ही बहनोको पूर्वी पजाब भेजो व पश्चिमी पंजाब भेजो

इससे वे बचनेवाली नही है। बचानेका एक ही तरीका है जो मै कहता हूं। हा, मदद मागे तो मदद दे, यह बात दूसरी है। इतनी बड़ी बात मैंने सुना दी।

मैंने कल कह दिया था कि मुझे पंद्रह मिनटसे ज्यादा नही लेना है। इसलिए इतना ही कहकर खतम कर दूगा। दो-तीन मिनट रह गई है, उन्हे मैं छोड़े देता हू।

: १७२ :

मौनवार, ८ दिसवर १९४७

(लिखित सदेश)

एक मुस्लिम सोसायटी मुझे चेतावनी देती है कि मुझे हिंदू या मुसलमानोकी बाते मानकर दलीलमे नही उतरना चाहिए। बेहतर यह होगा कि मै पहले तहकीकात करू और बादमे जो करना हो सो करू। सोसायटी आगे चलकर मुझे सलाह देती है कि मुझे काठियावाड़ जाकर खुद सब कुछ देखना चाहिए। मै कह चुका हू कि आज मैं वह नही कर सकता। मुझे दिल्लीमे और दिल्लीके आस-पास अपना धर्म-पालन करना चाहिए। यह सलाहकार भूल जाते है कि मेरे मिठासके तरीकेसे, जहातक आवश्यक था वहातक, उनकी शिकायत वापिस खिचवा सका हू। इसमेसे सीखनेको तो यह है कि जहां सचाईकी खातिर सचाई निकालनेका प्रयत्न रहता है वहा परिणाम अच्छा ही आता है। इस बातको बहुत बार आजमाया जा चुका है। ऐसी बातोमे धीरजकी और लगकर काम करनेकी बहुत जरूरत रहती है।

सिंधसे दुखी पत्र आया ही करते है। सबसे आखिरका खत कराचीसे है। उसमे लिखा है, "खून तो नही हो रहे, पर हिंदू इज्जत व आबरूसे यहा रह नही सकते। यूनियनसे आए हुए मुसलमान जब चाहे हिंदुओके घरोमे आ घुसते है और आरामसे कहते है—'हम यहां रहने आए है।' उनके हाथमे सत्ता नही, पर हम उन्हे 'ना' कहनेकी हिम्मत

नही कर सकते। ऐसे किस्से काफी सख्यामे देखनेमे आते है। चद महीने पहिलेका कराची आज स्वप्न-सा हो गया है।" यह एक लबे खतका साराश है। मै जानता हू कि यह खत विश्वास करनेके लायक है। यह बताता है कि वहा अधाधुधी मची हुई है। यह तो आदमीका लहू सुखाकर मारनेकी बात हुई। साथ ही इसमे आत्माका भी हनन होता है। पाकिस्तानवालोसे मेरा अनुरोध है कि वे इस अधाधुधीको रोके। यह एक बीमारी है। उससे जितनी जल्दी छुटकारा पाया जाय उतना ही अच्छा है।

चीनीपरसे अकुश उठ गया है। अन्नपरसे, दालो और कपड़ेपरसे जल्दी ही उठ जाएगा। अकुश उठानेका मूल हेतु यह नही है कि कीमते एकदम कम हो। आज तो असल हेतु यह है कि हमारा जीवन स्वाभाविक बने। ऊपरसे लदा हुआ अकुश हमेशा बुरा होता है। हमारे देशमे वह और भी बुरा है, क्योकि हमारी करोड़ोकी आबादी है और वह एक विशाल देशमे फैली हुई है, जो १९०० मील लंबा और १५०० मील चौडा है। यहा देशके बटवारेको सामने रखनेकी जरूरत नही। हम फौजी कौम नही है। हम अपनी खुराक खुद पैदा करते है, या यो कहिए कि कर सकते है, और हमारी जरूरतके लिए काफी कपास पैदा करते है। जब अकुश उठ जायगा, लोग आजादी महसूस करेंगे, उन्हे गलतिया करनेका अधिकार रहेगा। यह प्रगतिका पुराना तरीका है, आगे बढना, गलतियां करना और उन्हें सुधारते जाना। किसी बच्चेको रुईमे लपेटकर ही रखा जाय तो या तो वह मर जायगा, या बढेगा नही। अगर आप चाहते है कि वह तगडा आदमी बने तो आपको उसे सिखाना होगा कि वह सब किस्मके मौसमको बर्दाश्त कर सके। इसी तरहसे हकूमत अगर हकूमत कहलानेके लायक है तो उसे लोगोको सिखाना है कि कमीका सामना कैसे करना। उसे लोगोको बुरे मौसमका और जीवनकी दूसरी मुसीबतोंका अपनी सयुक्त कोशिशसे सामना करना सिखाना है। बिना अपनी मेहनतके जैसे-तैसे उन्हें जिदा रखनेसे मदद नही करना है।

इस तरहसे देखा जाय तो अंकुश निकालनेका अर्थ यह है कि हकूमतके चद लोगोकी जगह करोडोको दूरदेशी सीखनी है। हकूमतको जनताके प्रति नई जिम्मेदारिया उठानी होगी, ताकि वह जनताके प्रति

अपना फर्ज पूरा कर सके। गाड़ियों-इत्यादिकी व्यवस्था सुधारनी होगी, उपज बढ़ानेके तरीके लोगोको बताने होगे। इसके लिए खुराक-विभागको बड़े जमीदारोके बजाय छोटे-छोटे किसानोकी तरफ ज्यादा ध्यान देना होगा। हकूमतको एक तरफसे तो सारी जनताका भरोसा करना है, उनके काम-काजपर नजर रखना है और हमेशा छोटे-छोटे किसानोकी भलाईका ध्यान रखना है। आजतक उनकी तरफ ध्यान नही दिया गया, मगर करोडोकी जनतामे बहुमत इन्ही लोगोका है। अपनी फसलका उपयोग करनेवाला भी किसान खुद है। फसलका थोड़ा-सा हिस्सा वह बेचता है और उसके जो दाम मिलते है उनसे जीवनकी दूसरी जरूरी चीजे खरीदता है। अकुशका परिणाम यह आया है कि किसानोको खुले बाजारसे कम दाम मिलते है। इसलिए अकुश उठानेसे किसानोको जिस हदतक अधिक दाम मिलेगे उस हदतक खुराककी कीमत बढ़ेगी। खरीदारको इसमे शिकायत नही होनी चाहिए। हकूमतको देखना है कि नई व्यवस्थामे कीमत बढ़नेसे जो नफा होगा वह सब-का-सब किसानकी जेबमे जाय। जनताके पास रोज-रोज या हफ्ते-के-हफ्ते यह चीज स्पष्ट करनी होगी। बड़े-बड़े मिल-मालिको और बीचके सौदागरोको हकूमतके साथ सहयोग करना होगा और हकूमतके नीचे काम करना होगा।

मैं समझता हू कि यह आज हो रहा है। इन चंद लोगोमे और मंडलोमे पूरा मेल-जोल और सहकार होना चाहिए। आजतक उन्होने गरीबोको चूसा है। उनमे आपसमे जो स्पर्धा चलती आई है यह सब दूर करना होगा। खास करके खुराक और कपड़ेके बारेमें इन चीजोमें नफा कमाना किसीका हेतु नही होना चाहिए। अकुश उठानेसे अगर लोग नफा कमानेमें सफल हो सके तो अकुश उठानेका हेतु निष्फल हो जायगा। हम आशा रखे कि पूजीपति इस मौकेपर पूरा सहकार देगे।

: १७३ :

९ दिसंबर १९४७

भाइयो और बहनो,

आज मैं चर्खा-संघके ट्रस्टियोंकी सभामें गया था। बहनोंके साथ तो आध घंटे बात करना ही था। अगर समय रहा, क्योंकि मैं १५ मिनटमें तो खतम करता हूं, तो उसके बारेमें कहूंगा, नहीं तो कल कहूंगा।

आज एक चीज तो अखबारोंमें यह आ गई है कि सरदार पटेल और मैं पिलानी जा रहे हैं और वह किस कामके लिए ? हवा खानेके लिए। यह बात बिल्कुल निकम्मी है। सरदारके दिलमें क्या है यह तो मैं नहीं जानता हूं, लेकिन मैं इतना तो जानता हूं कि यह हवा खानेका समय नहीं है। सरदार सारा दिन काम करते हैं और रातको आराम करते हैं, वही हवा खाना है। वही हाल मेरा भी है। हां, मेरा काम इतना नहीं है, क्योंकि मेरे हाथमें हकूमत नहीं है। लेकिन मेरे पास लोग आते-जाते हैं इसलिए थकान हो जाती है, तो भी आराम तो करता ही हूं। आजकल हवा तो यहां भी अच्छी है। इस वक्त हवा क्या खाना था ! आजकल तो यहांकी हवा ठंडी है। पिलानीमें है क्या ? मेरा तो ऐसा है कि करना या मरना। यह भी नहीं कर पाया हूं। अखबारवाले इस तरहकी हवाई बातें क्यों छापते हैं, यह मैं नहीं समझ सकता हूं। मैं यही समझूंगा कि अखबारोंमें जो कई बातें आती हैं, वे गलत हैं। पीछे मैंने सुना कि— वह अखबारमें नहीं है—क्योंकि हम वहां जा रहे हैं, इसलिए जयपुरसे हुकम निकला है कि इतनी चीनी चाहिए, इतना गेहूं चाहिए, क्या-क्या चाहिए। पीछे आदमी तो भी रहे, इसलिए इतना चाहिए नहीं, लेकिन ऐसा हो गया कि वहांके बाजारमें सन्नाटा हो गया। यह सुनी हुई बात है, देखी हुई नहीं। यह कितनी बुरी चीज है कि जो चीज होनेवाली नहीं, वह भी हो गई। हम ऐसे हैं कि बाजारपर भी असर हो गया। बाजारमें ऐसा हो गया कि इतना दूध चाहिए, इतना सेर चीनी चाहिए, जैसे हम खानेके लिए ही जिंदा रहते हैं या हमारे साथ इतना बड़ा रिसाला जाता है। ऐसा तो होना नहीं चाहिए। सरदार

मिस्कीन है, मैं भी मिस्कीन हू। यह है कि वह आलीशान मकानमे रहते हैं, आलीशान मकानमे तो मै भी पडा हू। नही तो कहां ढूढू। तो इस तरहसे है। आलीशान मकानमे रहते हुए भी मिस्कीनकी तरह अच्छा है। बडा अच्छा तो यही है—मैं कबूल करूगा—कि वह मिट्टीके झोपडेमे रहे और मै भी मिट्टीके झोपड़ेमे रहू। कुछ भी हो, मै तो यही बात बताना चाहता हू कि इस तरहसे गप्प उडती है। मै तो यही पड़ा हूं तो पूछ लेना चाहिए था कि क्यो भाई, तुम पिलानी जाओगे? हमारे पास तार आ गया है और वह भी एसोशियेटेड प्रेसका—उसकी तो ऐजेसी यहां है, सो मुझको और चुभा। सरदार तो ज्यादा काममे रहता है। उसको नही मुझको तो पूछ सकते थे कि क्या कही जानेवाले हो?

दूसरी बात यह है कि एक सिंधी भाईका पत्र आ गया है। उसने तो अपना नाम दिया है, लेकिन मै उसका नाम देना नही चाहता हू। उनकी तरफसे कोई मनाही नही है। सिंधके एक डाक्टरकी बात तो मैने बताई ही थी। नाम नही दिया था। उन्होने बताया था कि वहां हरिजनोको कितनी तकलीफ है। वह पकड लिए गए। इसी कारण पकड़ लिए गए या दूसरे कारण, यह मै नही जानता हूं। कई आदमी जो हरि-जनोकी सेवा करते है वे पकड़ लिए गए है। ऐसा सिलसिला आज सिंधमे चलता है। हां, इतना है कि खून नही होता है, लेकिन जैसा मैंने कल बताया, वह खूनसे बदतर है; क्योकि खून तो एकका हुआ, वह खतम हुआ, पीछे सब समझ जाएगे कि इतना हुआ। लोगोको परेशान कर मारना, यह तो बदतर बात है। एक आदमीको पकड़ लिया और छोड दिया, मुमकिन है दूसरोको भी छोड दे। लेकिन तो भी इस तरह लोगोको पकडना बुरी बात है। मै पाकिस्तानकी हकूमतपर इल्जाम नही लगाता हू; लेकिन मै पाकिस्तानको सावधान करता हू कि अगर वे इस तरह करते है कि कोई हरिजनोकी सहायता करता है, इसलिए गिरफ्तार कर ले तो सिंधमें कार्यकर्ता कैसे रहेंगे? हरिजन लोग कैसे रह सकते है? हा, यह चीज पहले अंग्रेजोके जमानेमे तो चलती थी। क्या हम भी ऐसा करेंगे?

अभी चद मिनट बाकी है तो चद मिनटमे वहाकी एक बात सुना

दूं—वह औरतोंकी बात है। कस्तूरबा स्मारकका सिलसिला है, वह तो इस कारण है न कि हमारे यहां सात लाख देहात हैं, वहां बच्चे और बहनें पड़ी हैं, उनकी जागृति करना, उनकी सेवा करना कस्तूरबा स्मारक-का काम है। लेकिन यहां तो एक बड़ा मामला हो रहा है कि एक तरफसे हिंदू और सिख औरतोंको, लड़कियोंको मुसलमान भगा ले गए हैं और दूसरी तरफसे हिंदू और सिख मुसलमान लड़कियोंको भगा ले गए हैं। यह बात छोड़ दो कि कौन ज्यादा भगा ले गए और कौन कम। कुछ भी हो, एक-एक हकूमतने बारह-बारह हजारसे ज्यादा लड़कियोंको भगा ले गए हैं। इसमें कस्तूरबा स्मारक क्या करे? मेरे हाथमें है तो जो होना चाहिए वह तो करूंगा ही। लेकिन यह एक बात साफ है कि कोई नामके लिए तो कर नहीं सकते हैं। जो सेवक हैं तो उन्हें काम करना है—काम किया, खतम हुआ, भूल गए—अखबारमें आए चाहे न आए, इसकी ओर ध्यान नहीं देना चाहिए। इसी तरहसे दूसरा काम भी है—वह काम भी औरतोंका ही है। दूसरे भी मदद करेंगे। एक बात यह भी है कि औरतोंके लिए क्या-क्या किया जाय वह तो बताओ। वह थोड़ा-सा मैं यहां बता देना चाहता हूं। इसमें जितनी सेविकाएं हैं, वे शहरोंसे हैं—बहुत-सी सेविकाएं देहातोंसे नहीं मिलीं, दैवयोगसे मिलीं तो बहुत कम मिलीं और जो देहातोंसे मिलीं हैं वे भी शहरोंसे ताल्लुक रखती हैं। शहरोंसे ताल्लुक रखना बुरा है, गंदा है, ऐसा नहीं है; लेकिन ऐसा सिलसिला बन गया है—१५० वर्षोंसे भी अधिक समयसे—कि शहर हैं वह देहातियोंसे पैसे लेनेके लिए हैं, देहातोंसे कच्चा माल ले, देश-विदेशोंमें व्यापार करे और करोड़ों रुपये कमाये। लेकिन करोड़ों रुपया देहातियोंको नहीं मिलेगा, थोड़ा मिलेगा, ज्यादा रुपया करोड़पतियों, धनिकों तथा मालिकोंको मिलेगा। शहर देहातियोंको चूसनेके लिए है। इसलिए शहरकी जो सभ्यता है वह देहातोंके ढांचेमें नहीं है। एक बहन शहरकी है तो उसे किस दृष्टिसे देहातको जाना है, तो मैंने तो बता दिया है कि उसे शहरोंकी आबहवा व सभ्यता लेकर नहीं जाना चाहिए। माना कि उसके पास पैसे पड़े हैं, शौककी चीजें पड़ी हैं, मोटर पड़ी है, रंग-रागकी चीजें हैं, मखमल है, ऐसी कीमती चीजें पड़ी हैं। दांत साफ करनेका—बाहरसे या यहांका हो—मंजन पड़ा है तो ले लें,

टूथ ब्रुश ले ले, और अच्छे, खूबसूरत लगते है वैसे बूट ले लें, जूतियां ले ले चप्पल ले ले—ये सब चीजे पडी है, इनको लेकर देहात जाय तब देहातकी सेवा कैसे कर सकती है? यह देहातके लिए आदर्श है, ऐसा हुआ तो ये चीजे देहातको खा जायगी। होना तो ऐसा चाहिए कि शहर है वह देहातके मारफत समृद्ध बननेके लिए है, पैसे भेजनेके लिए है, देहातकी सभ्यताको जितना बढा सके उतना बढानेके लिए है, लेकिन वैसे हुआ तो उल्टा हो जायगा। अभी मैंने सब बाते तो बताई नही है; लेकिन इतना तो कह दू कि जिन बहनोको सच्ची सेवा करना है, चूसना नही है, तो उनको विवेकशक्ति रखनी होगी और विवेककी दृष्टि रखकर जो चीजे देहातोमे जा सकती है वहां ले जाय। जो सुधार करना है वह भी देहातों-के ढाचेमे करे। तब तो हमारे सात लाख देहात, जो गिरी हुई हालतमे है, ऊपर आ सकते है। ऐसा नही है कि देहातोमे जगली पडे है, वहा कला नही है, वहांके जीवनमे कुछ भी अच्छापन नही है। देहाती जीवनमें तो बहुत कुछ खूबसूरती भरी है, ऐसा मेरा मत है। यहा बहुत कला भरी है, यहा अनेक प्रकारके उद्योग पडे है, जो सारी दुनिया जानती है। यहांके ही उद्योग पश्चिममे नमूना बनकर गए। तो मै आज इतना ही बता देना चाहता हू कि जिन बहनोको वहां सेवा करनी है उनको समझना चाहिए कि शहरो-की चीज शहरोमें ही छोड दें। शहरकी जो उत्तम चीज है, नीति-वर्धक है, उसे ही ले जाय, बाकी शहरमे ही रख जाय। तभी करोड़ो बहन और बच्चोको ऊपर ले जानेमे मदद दे सकते है। इतना तो हम कर ही सकते है।

: १७४ :

१० दिसबर १९४७

भाइयो और बहनो,

कल तो मैने आपको कह दिया था कि मै चर्खा-संघकी सभा-मे गया था और औरतोसे थोड़ी बात कर ली थी, पर आज भी वहां तालीमी सघकी बैठकमे जाना पडा, लेकिन शायद आज यह बात

छोड़ दूगा। आज मुझे चर्खा-संघकी बात करनी चाहिए। चर्खासंघ क्या चीज है, आप जानते ही है। वह तो खद्दरका काम करता है और चर्खासे (चर्खीसे) शुरू होता है, माने यह कि पहले कपासका बिनौला निकालना पडता है, पीछे धुनाई करनी होती है, पीछे पूनियां बनानी पड़ती है, फिर कातना, फिर बुनाईकी बात आती है। मै उस सबमें जाना नही चाहता हू। मैं तो इतना बता देना चाहता हू कि हिंदुस्तानमे करोड़ों लोग पड़े है। अगर वे यह काम करे—यह आसान काम है, बुढिया औरत भी कर सकती है, ६, ७ वर्षका बच्चा भी कर सकता है, हम चर्खा-संघमें ऐसे बच्चोंको भी सिखाते है—तो कपडेका खर्च करीब-करीब बच जाता है। अगर देहातोमे कपड़े बन जाते है तो मुफ्त-सा हो जाता है—मेहनत की और हो गया। अगर देहातमें कपास बो ली तो करीब-करीब सब खर्च बच गया, दुगुना पैसा बच गया—एक तो पैसा खर्च नही करना पडा, और दूसरा कुछ उद्योग करते है, कला भी भूलते नही, और आगे बढते है। इस कारण, मै तो कहूगा कि अगर हम पागल नही बनते है तो कपडेका घाटा तो हमारे यहा होना ही नही चाहिए। कोई भी मिल न रहे तब भी घाटा नही होना चाहिए। आज तो हम मिलका मुह ताकते है, मिलका ही कपड़ा अपनाते है। आज हम चर्खेको, खद्दर-गाढेको अपनाना भूल गए है। आज कोई खद्दरकी टोपी पहन लेता है, क्योकि कुछ अभ्यास हो गया है, उसको साथ लेकर आजादीकी लडाई लड़ी थी, लेकिन आज वह चीज हमारे जीवनमे जिंदा नही है। यह हमारे लिए दुःखकी बात है। इतने वर्षोंसे चर्खा-सघने काम किया और लोगोको करोडो रुपये दिए, लेकिन फिर भी हम ऐसे-के-ऐसे रह गए है, तो इसके लिए सोचना चाहिए। कल सोचते थे तो बताया गया कि चर्खाके मारफत क्या काम होता है, वह क्या बताता है। चर्खा अहिंसा बतानेवाली चीज है। अगर सब लोग चर्खामय बन जाते है और सब देहात सचमुच समृद्ध बन जाय तो आज जो हालत देखते है, करुणा-मय है, वह बननेवाली नही थी। वहा बहस चलती थी। वहा बताया गया कि किस तरह चर्खेके मार्फत—खादीके मार्फत—कपडेका घाटा आरामसे पूरा कर सकते है, करोड़ो रुपए देहातोंमे दाखिल कर सकते है। नगद नही, लेकिन करोड़ों रुपये जो मिलके कपडे खरीदनेमे खर्च करते है, वह

बच जाते हैं। लोग कह सकते हैं कि खादी तैयार करनेमे भी तो कपास-का दाम पडेगा, लेकिन मैं कहता हू कि कपासका दाम तो कम पड़ेगा। आज यहा जिस तरहसे कपास निकलता है उसे लगा दो तो उसमें करीव-करीव ऐसा बन जाता है। लेकिन यह हिसाव सच्चा नहीं है। इसलिए नही है कि कपडोका दाम मिलमें जो होना चाहिए उससे कममे दिया जाता है। सल्तनतकी मदद नही हो तो दाम तो वहुत वढ जाय, लेकिन उसको सव मदद सरकारसे मिलती है। मिलके लिए सव सुविधा पैदा की जाती है। हम राज चलाते हैं, उसमे धनपति हैं, उनकी तो चलती है और जो हलपति हैं उनकी नही चलती है। यह एक वड़े दु खकी वात है। धनपतिसे मेरा द्वेष तो है नही, क्योकि मैं एक धनपतिके घर पड़ा हूं। धनपतिका जो रवैया रहा है उसे जानता हू। धनपति मिल चलाते हैं, तो मैं थोड़े हिस्से लेता हू, या काम करता हू! कर भी नही सकता और हिस्सा भी नही लेना है। हा, उनके मार्फत चर्खाका काम निकाल लू तो अच्छा है, लेकिन कर नही पाया हू। ये सव सुविधाए धनपतियोंने सरकारके मार्फत पैदा कर ली हैं। अगर वे कहते हैं कि गरीवोके लिए हैं तो वैसा तो अगरेज भी कहते थे। लेकिन सच वात यह है कि गरीवोका काम नही होता है। इस हक़ीकतको दीनतासे कवूल कर लेना चाहिए। अव अगर ऐसा नही होता है तो वुरी वात है। कह तो सभी देंगे कि हां, गरीवोका काम होना चाहिए, लेकिन हमारे जितने मत्री हैं वे कहे कि हम तो देहातोंमें जाकर कहने वाले हैं। अगर समाजवादी हैं, और मेरी चले तो यही आवाज निकलवा लूगा कि सव समाजवादी वन जायं। अगर समाजवादी सच्चे हैं, लोगो-की सच्ची सेवा करते हैं—मजदूरोकी ही नही, हलपतियोकी भी, क्योकि इनकी सख्या ज्यादा है, और, हमलोगोंको ऊपर उठाना चाहते हैं तो उनसे यही कहलाऊगा कि हमको तो यही सिखाना है कि तुम कपड़ा खादीका ही पहनो। तुम घरमे खद्दर वना लो, उसमें कोई रुकावट नही है। मतलव यह है कि वे क्या कर रहे हैं, यह मैं लोगोको वता दूगा। जवसे मैं आया हू तवसे मैं यही कह रहा हूं, तो भी मुझसे कुछ हुआ नहीं है। मुझसे यही हुआ कि कई करोड रुपये देहातोको दे दिए, लेकिन मैं तो चाहता हूं कि हरएक देहातके घरोमें चर्खा गुंजन करे और गाढ़ेके सिवा दूसरा दीखे ही नही।

ऐसा बना सकूं तो जो दीनता है वह रहनेवाली कहां है! ऐसा अभीतक हो नहीं सका, यह बहुत दुःखकी बात है।

आजकल यहां सब ठीक चल रहा है, गोलमाल नहीं है, ऐसा नहीं है। हिंदू मुसलमानोंके बारेमें एक तरहसे सुनता हूं कि ऐसे व्याख्यान भी चलते हैं—अभी नाम नहीं बताऊंगा, क्योंकि पूरा-पूरा नाम अभी नहीं आया है—कि यहां चंद मुसलमान पड़े हैं उनको रहने नही देंगे। जो मस्जिदें रह गई हैं उनपर कब्जा करेंगे और उनमें हिंदू रहेंगे। फिर क्या करेंगे, दैव जानता है, मै नहीं जानता हूं। मैं समझता हूं कि अगर उनमें हिंदू रहेंगे तो उससे हिंदू-धर्म मिट जाता है। यह दिल्लीकी बात है।

अभी अजमेरकी बात भी आ गई। अजमेरमें भी ऐसा हो रहा है। वहां तो मैं कई बार गया हूं। वहां मुसलमान पड़े हैं, हिंदू पड़े हैं। वहां तो बड़ी भारी दरगाह है। उस दरगाहमें हिंदू भी जाते हैं और हिंदू जाकर मानता भी करते हैं। इसी तरहसे मुसलमान भी जाते हैं। तो सब एक ही बन गए हैं, ऐसा चलता है। धर्मसे नही, कर्मसे। हिंदू और मुसलमानके बीच वहां कभी झगड़ा नहीं हुआ है, ऐसी बात नहीं है। होता था; लेकिन आज ज्यादा हो गया है। ऐसा थोड़ा-सा अखबारमें आया है, उससे जानता हूं वहां काफी मुसलमान मारे गए। पहले तो वे डरे, डरके मारे भागे। पीछे थोड़े रह गए। फिर झगड़ा हो गया। सुनता हूं कि इर्द-गिर्दके देहातोंमें यही हो रहा है। पूरी खबर मिल जायगी तो सही-सही बता दूंगा। इतना तो कहूंगा कि यह शर्मनाक बात है। हम अभी इतना तो करें कि ईश्वरसे प्रार्थना करें कि हमें ऐसी सुबुद्धि दे कि हम ऐसे न बिगड़ जायं कि हम हिंदू-धर्मका भी नाश करें। मुसलमानोंका नाश करनेके बहाने हिंदू-धर्मका भी नाश करें, यह तो कुछ अच्छी बात नहीं हो सकती। अगर हम जिंदा रहना चाहते हैं तो हमें सबको जिंदा रखना है, तभी हम भी रह सकते हैं। ईश्वरने ऐसा नहीं बताया है कि एकको मारकर दूसरेको जिंदा रखें। पाकिस्तानमें सब हिंदू और सिखोंको मार डालें और हिंदुस्तानमें मुसलमानोंको मार डालें और जो बाकी रहें उनको गुलाम बनाकर रखें, यह हो नहीं सकता। तो मैं कहूंगा कि हम विनाशका काम कर रहे हैं। जैसे संस्कृतमें है, 'विनाश-काले विपरीतबुद्धिः,' ऐसी हमारी बुद्धि विपरीत हो गई है। मारो, काटो,

निकाल दो मुसलमानोको, यह पागलपनकी बात है। बहुत-सी बाते ऐसी हो गई है, लेकिन सब नही सुना सकता हू, क्योंकि मैने तो ऐसा कर लिया है कि घडी निकालकर रखता हू, जिससे १५ मिनटसे ज्यादा न बोलू।

: १७५ :

११ दिसबर १९४७

भाइयो और बहनो,

पहले तो जिस भाईने बडी नम्रतासे पूछा था तो कहा कि कुरानशरीफमेंसे यहा जो आयते पढ़ी जाती है, उसके माने अगर समझा दिए जाय तो अच्छा हो, माने पुराने हो या नए। नया तो कोई हो नही सकता। कुरानशरीफ तो मुहम्मदसाहबने उतारा। उनकी जबान है, ऐसा कहते है। इसे १३०० वर्ष हो गए, इतना पुरातन है। उसमेका जो हिस्सा हम पढते है वह बडा बुलद माना जाता है। जैसे हमारे मत्रमे है, वह विभूति मानी जाती है, उसे पढनेमे ही पुण्य मिल जाता है, वैसे ही यह भी जानो। अर्थ जाने चाहे न जाने, शुद्ध उच्चारणसे ही उसका पुण्य मिल जाता है। मै उसका अर्थ, निचोड दे सकता हू, क्योकि मै अरबी या फारसी तो जानता नही हू। मेरे पास शब्दार्थ है। अभी तो नही है, कल दे दूगा। उसका अर्थ यह है कि हम ईश्वरकी प्रार्थना करते है। ईश्वर तो एक ही है, उसे चाहे किसी नामसे पुकारो। उसका नाम अल्ला भी है। वह कैसा है, उसके विशेषण दिए है। वह रहीम है, रहमान है, दयावान है, दयाका भडार है। उसमें यही आता है कि ईश्वर एक है, ईश्वर अनेक नही है। उसमे यह भी है कि तू ही हमे शैतानसे बचा सकता है, शैतान तो हमको नीचे गिराता है, शैतान पाप-कर्म कराता है तो तू ही उस बलासे बचा सकता है। उसमे एक आदमीने इकरार किया है कि वह पुरुषार्थका काम नही करता है, दैव कराता है, ईश्वर कराता है। पीछे कहता है कि हे ईश्वर, तू ही शैतानसे बचा सकता है। हम छोटे इन्सान तो समुदरमे एक बिंदुके समान है। तू नही बचाएगा तो शैतान हमको खा जायगा।

तू महान् है, तू सब कुछ है. तेरी मेहरबानी रहे तो हम बच सकते हैं। तो मैं कहूंगा कि हम उसका जितना उच्चारण करें, उसका मनन करें और उसके मुताबिक चलें, कम है। इसीसे दुनिया चलती है। तब आप कहेंगे कि फिर मुसलमान ऐसा मिथ्या आचरण क्यों करते हैं? उसका जवाब यही हो सकता है कि क्रिस्टी आला बन गए हैं, मुसलमान बन गए हैं; लेकिन बाइबिल-के मुताबिक चलते कहां हैं? उसके मुताबिक चलनेवाले क्रिस्टी कहां हैं? हिंदू गायत्री मंत्रके मुताबिक कहां चलते हैं? वह कितना बड़ा मंत्र है। हम सदा पढ़ते हैं—"ईशावास्यमिदं सर्वम्" उसके माने यह है कि सारा जगत ईश्वरसे भरा है। सब चीज वही देता है। तो आदमी कहता है कि हमारे पास सारा जो कुछ है वह तेरा है। वह हम सब त्याग देते हैं और जो हमें भोगना चाहिए भोगते हैं। हमारी कोई चीज नहीं है, घरबार सब ईश्वरके अर्पण कर दिया। यह तो बड़ी चीज है। पीछे ऐसा है कि दूसरेका धन है, दूसरेकी दौलत है, उससे द्वेष न करें। उसकी इच्छा तक न करे। उसमें यह सब चीज है। एक ही मंत्रके मुताबिक सब हिंदू चलें, सारा संसार चले, हिंदूके लिए ही थोड़े है, हिंदूका नाम भी नहीं है—सिख चलें. सिख नहीं मानते हैं, ऐसा थोड़ा है। तो हम आज दुनियामें जो करुणामय दृश्य देखते हैं वह थोड़े होनेवाला था। तो कहोगे कि उसके मुताबिक नहीं चले तो कैसे यह दुनिया चलती है? तो मैं कहूं कि सब-के-सब बदनाम हैं, ऐसे थोड़ा है। सब हिंदू फरिश्ता थोड़े हैं। सब सिख बदनाम हैं, ऐसा थोड़े है। सब हिंदू देवरूप हैं और सब मुसलमान फरिश्ता हैं, ऐसा भी नहीं है।

दूसरा मंत्र पारसियोंका है। पहला मंत्र जो होता है वह गुरुदेवको नमस्कार है। पीछे सत्कृतमें है वह है। पीछे भजन गाते हैं वह है। इतना होते हुए भी मनको साफ नहीं करते हैं, यह दु:खकी बात है।

अब हरिजन-बस्तीमें जो चल रहा है, उसकी एक चीज समझा दूं, लेकिन आज मैं उसको छोड़ देता हूं, क्योंकि दूसरा काम करना है। सात मिनट हो गए और १५ मिनटमें खतम करना है।

आज मेरे पास कुछ मुसलमान भाई आए। पहले भी आए थे, आज दुबारा आए। उन लोगोंने मुझसे कहा कि अभी हम पाकिस्तान,

पंजाबमें गए थे। यही काम करनेके लिए युक्तप्रांतके मुसलमान वहां गए थे। पीछे वहां दूसरे मिले। उनके दिलमें हुआ कि वहां सुलह करा सकेंगे तो यहां सुभीता हो जाएगा और पीछे कोई बात नहीं रहेगी। मुझको पूछकर गए थे। तो मैंने कह दिया था कि जाओ। सच्चे दिलसे जाते हो तो अच्छा है। तो आज वहांसे आए। मेरे पास आए और कहा कि हम तुम्हारे पाससे एक चीज चाहते हैं, इतना चाहते हैं कि हिंदुओंको कहो, सिखोंको कहो—पहले हिंदूको कहो कि वे लाहौर जायं और हम उनके साथ जाएंगे। पहले हम मरेंगे, फिर कोई दूसरा मर सकता है। पर ऐसा तो होगा नहीं। हमने वहांकी हकूमतके साथ बात कर ली है। वह गैर-मुसलमानोंको बसानेके लिए राजी है। तो मैंने कहा कि यह सब लिखकर तो दो। आज-के-आज तो ऐसा होता नहीं है। यह बड़ी बात है। अगर ऐसा हो गया तो मेरा बहुत सारा काम हो जाता है। पीछे उन लोगोंने कहा कि करो तो सही, हम जो कहते हैं उसकी जितनी परीक्षा करते हो करो। तो उन लोगोंने लिखकर दिया। उसमें लिखा है—

"युक्तप्रांतके शांति-दलने दो मर्तबा पश्चिमी पंजाबका दौरा किया। पहली मर्तबा एक महीना और दूसरी मर्तबा एक हफ्ता घूमा। अब वहांकी हालत पहलेसे अच्छी है। पहलेके मुकाबले अवाम[1] और हकूमत दोनों अमनके लिए कोशिश कर रहे हैं। चुनांचे पश्चिम पंजाबकी सरकार ख्वाहिशमंद[2] है कि जो गैर-मुस्लिम वहां इस वक्त रहते हैं तो रहें और जो वहांसे चले गए हैं वे वापस आएं, सरकारने यह हिदायत जारी की है कि जो गैर-मुस्लिम पश्चिम पंजाब वापस जाएंगे उनको उनकी मिल्कियत और जायदादपर कब्जा दिया जायगा और जो गैर-मुस्लिम भाई आएंगे और रहेंगे उनकी पूरी हिफाजत की जायगी और उनको कारोबारकी हर तरहसे सहूलियत दी जायगी। अगर बावजूद[3] मिन्नत[4]-के कोई गैर-मुस्लिम वहां रहने या वापस जानेका ख्वाहिशमंद न हो तो उसको अपनी जायदादको बदलने या फरोख्त[5] करनेका पूरा हक है। बलवा-फसाद करनेवालोंको हकूमत सख्त सजा दे रही है और आनेवालोंकी

[1] जनता; [2] इच्छुक; [3] तिसपर भी; [4] प्रार्थना; [5] बेचना।

हिफाजतके लिए हर तरहकी तदबीर एहतियात[१] वरत रही है। शातिदलने वहाके अवाम और सरकारको इस बातके लिए आमादा और तैयार कर लिया है कि पाकिस्तानकी हकूमतका यह फर्ज है कि गैर-मुस्लिमकी इज्जत-आबरूकी पूरी जिम्मेवरी ले। चुनाचे सरकार और अवाम दोनो इसके लिए तैयार है। युक्तप्रातीय शाति-मिशनके सदस्य गैर-मुस्लिम भाइयोसे गुजारिश करते है कि जो भाई पश्चिमी पजाबमे बसना चाहते है हम उनके साथ चलकर उनको वहां बसानेके लिए तैयार है। हम अपनी जानसे ज्यादा उनकी जिम्मेवरी लेते है और उनको पूरा इतमीनान कराके हम वापस आएगे।"

चार मुस्लिम भाइयोंने इसमे दस्तखत किए है। इसे मैं अच्छी खबर मानता हू अगर यह सही है। ये शरीफ आदमी है, तो मैंने कहा कि लिखकर दे दो तो काम करू, मै सारी दुनियाको बताऊगा। और अगर ऐसी बात नही होगी तो बुरी बात है। पीछे मैंने कहा कि माडल टाउनसे काफी हिंदू, सिख आए है, लाहौरमे भी हिंदुओकी बडी-बड़ी इमारते है, सिखोकी भी इमारतें है, उनका वहां गुरुद्वारा भी है, क्या वहां जा सकते है ? उन लोगोने कहा कि जरूर जा सकते है। वहा सब अवाम ठीक हो गए है, ऐसी बात नही है। कुछ जहर तो भरा ही है, वह जल्दी नही निकाला जा सकता है। लेकिन हकूमतने तय कर लिया है कि वहां किसीको हलाक नही किया जाय।

अगर सचमुच ऐसा होगा तो यह बहुत बडी चीज है। मेरी उम्मीद नही थी कि इतनी जल्दी काम हो जायगा। कितना सही है, वह मैं नही जानता हू; लेकिन हम कम-से-कम दिलमे समझे तो सही कि ऐसा करनेवाले मुसलमान भी पड़े है। ऐसा समझे कि सब मुसलमान बदमाश है तो वह इन्सानियत नही है। उनमे भी शरीफ पडे है। पीछे उनके साथ एक हिंदू आया। वह भी खत लाया। अब ज्यादा वक्त नही है, इसलिए उसे पढूगा नही, लेकिन उसमे भी यही चीज है। वह वहा होटल, विश्रामगृह चलाता है। वहा करीब एक हजार आदमी हमेशा आते है। मुसलमान ज्यादा आते होगे, लेकिन कुछ हिंदू भी आते होगे। उनके आनेमे कोई रुकावट

---

[१] सावधानी।

नही होती है। उस खतमें उन्होने लिखा है और कहते है कि हिंदू भाइयोको वहा जानेमे कोई रुकावट नही है। इतना मै आजके तजुर्बेसे कहता हू। लेकिन मै यह नही कहता हू कि कल चले जाओ। मै ऐसा भी नही कहनेवाला हूं कि न जाओ, जाओ तो अच्छा है।

: १७६ :

१२ दिसबर १९४७

भाइयो और वहनो,

एक भाईने खत लिखा है। उसमे लिखा है कि मैंने कल कहा था कि पाकिस्तान जाना शुरू करे। मैंने तो कहा था कि मै उस वातकी जाच करूगा, निश्चय हो जायगा तो कहूगा। मै देख लू कि जिन भाइयोने कहा है वह ठीक है या नही। तव कहूगा कि जाओ या नही जाओ। तो वह भाई कहता है कि मै अभी जाना चाहता हू, क्योकि यहा लूटमार चल रही है, आते है तो कोई पूछता नही है, तन ढाकनेको कपड़ा और खानेको अनाज नही मिलता, हमारे लिए कुछ भी नही होता है। हा, मै जानता हू कि ऐसा है। ऐसा हो गया है कि सवको पूछ नही सकते, सव चीज पहुचनेवाली भी नही है। मेरा खयाल है कि जितनी तजवीज हो सकती है, कर रहे है। लेकिन अगर तजवीज नही है तो भी मै कह नही सकता कि आज जाओ। नही आए थे तो वात दूसरी थी, लेकिन जव आ गए है तव ठीक-ठीक हो जाय तव जाय। मै अभी खुद यह कहनेको तैयार नही हू कि आप अभी जायं। हां, तैयारीमें रहे तो अच्छा है। जितनी जल्दी जाने लायक हो सके उतना अच्छा है।

मैंने कल कहा था कि कुरानशरीफकी जो आयत पढी जाती है उसका तर्जुमा सुना दूगा। उसका सार तो वता दिया था। मेरे पास आज तर्जुमा पडा है। उसमें यह है कि मै अल्लाहकी शरण लेता हू, वह भी शैतान पापात्मासे वचनेके लिए। पीछे कहा है कि मै शुरू करता हूं ईश्वरके नामसे ही। मै जो कुछ भी करता हू उसीके लिए, क्योकि सव कुछ

बख्शनेवाला[1] वही है। जो रहीम है, रहमान है, दयालु है वह सब वही है। पीछे कहा है कि अल्लाह एक है, वह जन्म नही लेता और जन्म नही देता है। जन्म नही देता है, यह गलत है, गलत तर्जुमा हुआ है। सबको जन्म देने-वाला तो वह ही है। उसकी बराबरीका कोई नही है—वह तो अकेला है। इसीलिए हम कहते है कि वह निरजन है, निराकार है। गुणका भी आगार है—गुणकी थाहको बता नही सकते। ऐसी चीज उसमे है।

आज मेरे पास चार-पांच खत आ चुके है। एक तो काठियावाड़से है। मैंने कहा था कि काठियावाडसे मुसलमान भाइयोने लिखा, लेकिन चद मुसलमानोको वह भी चुभा है। क्यों, मै जानता नही हू; क्योकि जिन लोगोने शिकायत की थी वे खुद लिखते है कि कुछ हुआ नही है और जो हुआ भी तो उसे मिटानेके लिए काग्रेसियोने पूरा जोर लगाया, इस-लिए हम आरामसे घरमे है।

एक खत ब्रह्म देशसे आया है और दूसरा शायद बबईसे। उनमे किसीके दस्तखत तो है नही, तो जवाब किसको दू? बबईसे लिखते है कि तुम्हे कुछ करना तो है नही। वह कहते है कि आप गोलमाल करते है। मै यहा गोलमाल करता हू या क्या करता हू, वह तो जो सुनते है वे जानते है, और मै जानता हू। जो भाई खतमे नाम नही देते है तो किसको कहू? वह कहते है कि काठियावाड़मे हुआ है, तो पीछे उस खतमे अपना नाम-धाम तो देना चाहिए, तब मै तहकीकात करू। तहकीकात करना मेरे हाथ-मे तो है नही। हकूमतको कहूगा कि तहकीकात करो। यह कैसी बात है कि आप बैठे है और लोग शिकायत करते है।

एक खत अजमेरके बारेमे भी है। वह हिंदुओका खत है। उसमे लिखा है कि जो तुमने कहा वैसा नही हुआ है। हुआ है सही; लेकिन हिंदुओ-की तरफसे शुरू नही हुआ, मुसलमानोकी तरफसे शुरू हुआ। ऐसे तो चलता ही आया है। तो मुझको ऐसा लगा कि ऐसे कहनेवाला पक्ष भी है। ईश्वर ही जानता है कि क्या सही है। मेरे पास तो वहासे कोई चीज आई नही है। अखबारमे जो चीज आई उसको पढकर मैंने बताया। कुछ दूसरोने भी

---

[1] देनेवाला।

कहा कि वहा क्या हो रहा है। तो मैंने कहा कि अगर हम ऐसा करते रहे तो यहाकी हकूमतको कायम नही रख सकेंगे।

पीछे एक भाई लिखते है कि सोमनाथके मदिरके जीर्णोद्धारके लिए पैसे निकालने है। सरदारने कहा कि इस मदिरका जीर्णोद्धार किया जाय, लेकिन उन्होने कह दिया कि जूनागढकी तिजोरी या यहाकी हकूमतकी तिजोरीसे पैसा नही निकलेगा। मै कहता हू कि यह ठीक है, लेकिन वह कहते है कि क्यो न निकले, मै इसके वारेमे ज्यादा कहना नही चाहता, लेकिन इतना तो कहूगा कि अगर इसके वास्ते पैसे निकले तो सबके लिए निकले। तो यह वड़ी वात हो जायगी।

कलकत्तेमे जो हुल्लड़ हो गया उसकी काफी चीजे अखवारोमे आ गई है। उस परसे लगा कि आज हमारे यहा एक वायुमडल पैदा हो गया है कि किसी-न-किसी तरहसे हम हुल्लडसे ले सकते है। यह खतरनाक वात है। मैंने तो ऐसा कभी सिखाया नही। ३० वर्षतक अग्रेजोसे लडाई चली, लेकिन यह ठडी ताकतकी लडाई थी। किसीसे मारपीट करनेकी लड़ाई नही थी—किसीके पाससे जवरन[1] छीननेकी नही थी। वगालमे जो हकूमत है वह हमारी है, उसमें काग्रेसके आदमी है। उनके साथ ऐसा क्या करना था! मानो कि गलती की, मै तो जानता नही हू कि क्या गलती की, लेकिन मानो कि की है, तो जवरदस्ती क्या करनी थी! हम वहशियाना तौरसे क्यो पेश आए? अखवारोमे जब ऐसी चीज आती है और मै उसे पढता हू कि इस तरहसे हुआ तो मै आपके सामने निचोड रखता हू। वहांके हुल्लडमे विद्यार्थीगण भी है। वे अच्छे लिखे-पढे है, तो उनका यह मार्ग तो हो नही सकता है कि असेवलीमे उसके जो सदस्य जाना चाहते है उनको रोकें और हर एक जगहसे सव दरवाजे रोक दे, इतना ही नही, भीतर भी चले जाय। लेकिन उन लोगोने ऐसा किया। तो मुझको ऐसा लगता है कि इस तरहसे हम हकूमत चलानेवाले नही है। इस तरहसे मजबूर करना है कि जो हम नही चाहते है, उसको कानून न वनाओ। वगालकी हकूमतने जो कानून वनाया है उसमे यही है कि जो तूफान वगैरा करते

---

[1]जवरदस्ती।

है, उनको रोका जाय। मानो कि यह भद्दा कानून है, तो जब हमारी हकूमत है तब उसका बाकानून इलाज कर सकते है, तूफान नही कर सकते हैं। तूफान क्या करना था ! हम अंग्रेजोंके विरुद्ध भी ऐसा नही करते थे और जब कोई ऐसा करता था तब मैं डांटता था। हम शरीफ-जैसे काम करते थे—मैं तो उपवास भी कर लेता था।

आज जो हमारी हकूमत है उसके सामने बहुतसे काम पड़े हैं। इस कामके लिए सब काम रोकना, पीछे सिपाही जाते हैं, डंडा चलाते हैं तो उसकी शिकायत करना, गोली चलाते है तो उसकी शिकायत करना, अश्रुगैस चलाते है तो उसकी शिकायत करना—दोनों चीजे हो नही सकती। आजादीका यह अर्थ हो नही सकता कि तूफान करे और अगर उनपर डंडा चलाया जाय तो शिकायत करें। तो क्या हकूमत ऐसे लोगोको सजा भी न दे? इसलिए इसकी शिकायत करना ठीक नहीं। हां, बाकानून करो और जितना कर सको करो। लोगोंको समझाओ, अखबारोंमे लिखो, वहांकी पार्लमेंटमें शिकायत करो, वहां न हो तो यहांकी मरकजी[१] हकूमतको कहो। हमारे पास ऐसे सब सामान है। उसे निकम्मा नही कह सकते। तीन महीनोंमे उसे क्या कह सकते है ? हम तीन महीनेके बालक हैं, तीन महीनेकी आजादी है। इसलिए हम संपूर्ण हो गए, ऐसा मैं नहीं कह सकता हूं। इसलिए जो गोलमाल कर रहे है उनसे नम्रतासे कहूंगा कि वे ऐसा न करें।

गोलमाल करनेवालोंमें गुंडे पड़े है, ऐसा नही है, या अनपढ़ पड़े है, ऐसा नही है। उसमे पढ़े-लिखे है। वे अगर ऐसा करे तो सब काम रुक जायगा। जो काम हम करना चाहते है वह रुक जायगा। लोगोको खुराक पहुचाना है, लोगोंको हर तरहकी मदद देनी है यह सब काम रुक जायगा। सब काम रोक देना क्या हमारा पेशा बन गया है ? ऐसा होना नही चाहिए। ईश्वरका शुक्र है कि कलकत्तेके जितने आदमी है उन सबने यह काम नही किया, लेकिन अगर सब-के-सब भी करे तो भी वह शराफतकी चीज हो नही सकती। मुझको लगा कि ऐसी चीज रोकी जानी चाहिए तो

[१] केंद्रीय।

मैंने कह दिया। लोगोंको समझना चाहिए कि हकूमत हमारी है। अगर हकूमतसे इमदाद नही मिलती है तो कानूनके मुताबिक लड़ना चाहिए।

: १७७ :

१३ दिसबर १९४७

भाइयो और वहनो,

जब मैं हरिजन-निवास जाता था तब वहाकी वातोके वारेमे रोज थोडा-थोडा आपको वताना चाहता था। पर मैं ऐसा कर न सका। आज आपको फिरसे चरखेकी वात सुनाना चाहता हू। वहापर यह सवाद चला था—चरखेका क्या महत्व है? मै क्यो उसपर इतना जोर देता हूं?

जब मैंने पहले-पहल चरखेकी वात शुरू की थी तव मुझे यह पता नही था कि पजावमे चरखेका काफी प्रचार था। लेकिन जब मैं गया, तो वहाकी वहनोंने मेरे सामने सूतके ढेर लगा दिए थे। वादमें पता चला कि गुजरात-काठियावाडमें भी एकाध जगह चरखा चलता था। गायकवाडकी रियासतोमे वीजापुर नामक एक गाव है। वहा गगा वहन भटकती हुई जा पहुची थी। इन्हे पता था कि मै चरखेके पीछे दीवाना हू। वहा परदेवाली चद राजपूत औरते चरखा चलाती थी। गगा वहनने उन्हे पूनी देकर उनसे सूत खरीदना शुरू किया। उस समय वहुत कम दाम दिए जाते थे। वादमें तो हमने काफी प्रगति कर ली। उस समय हमें इतनी ही कल्पना थी कि खादीके जरिये हम वहनोका पेट भर सकेगे। उनका पेट कहा वड़ा होता है? दो पैसेकी जगह तीन पैसे मिल गए कि वे खुश हो जाती थी।

वादमें मैंने समझ लिया कि चरखेमे तो वड़ी ताकत भरी है। वह ताकत अहिंसाकी ताकत है। एक तरफ तो हिंसाकी, मिलिटरीकी ताकत और दूसरी तरफ वहनोके पवित्र हाथोसे चरखा चलानेसे पैदा

अहिंसक शक्तिका संगठन करे। आज भी उस चरखेमें अपार शक्ति भरी है। अंग्रेज चले गए है, मगर हमारा लश्करका खर्च बढ गया है, यह शर्मकी बात है। इतने साल अहिंसासे काम लिया, अब हमारी आंखें लश्करपर लगी है। क्योंकि हम चरखेको भूल गए हैं, इसीलिए हम आपसमें लड़ते है। अगर सब भाई-बहन दुवारा चरखेकी सच्ची ताकतको समझकर उसे अपनावे तो बहुत काम बन जाय। जब मैं पंजाब गया था, तब वहांके सिख और मुसलमान भाइयोने मुझसे कहा था—'चरखा चलाना तो औरतोका काम है। मर्दोके हाथमें तो तलवार रहती है।' बादमें कुछ पुरुषोने चरखा चलाया था, मगर उसे अपनाया नही। आज अगर सब भाई-बहन चरखेको जला दें, खादीको फेक दे, तो मुझे उसकी परवा नही। लेकिन अगर उसे रखना है तो समझ-बूझकर रखें। अहिंसा बहादुरीकी पराकाष्ठा, आखिरी सीमा है। अगर हमे यह बहादुरी बताना हो, तो समझ-बूझसे, बुद्धिसे चरखेको अपनाना होगा। ४० करोड़की आबादीमेंसे छोटे बच्चोंको छोड़ दीजिए, फिर भी, अगर ५–७ बरससे ऊपरके बच्चे और बड़ी उमरके सब तदुरुस्त लोग काते, तो हिंदुस्तानमें कपड़ेकी कमी कभी नही हो सकती और करोड़ों रुपये बच जाते है। मगर वह सब भूल जाइए। सबसे बड़ी चीज यह है कि करोड़ोंके एक साथ काम करनेसे जो शक्ति पैदा होती है उसका सामना कोई शस्त्र-बल नही कर सकता। मैं यह सिद्ध न कर सकूं तो दोष मेरा है, अहिंसाका नही। मेरी तपश्चर्या अधूरी है, अहिंसाकी शक्तिमें कभी कमी नही आ सकती। उस शक्तिका प्रदर्शन चरखे द्वारा हो सकता है, क्योंकि चरखा करोड़ोंके हाथोंमें रखा जा सकता है और उससे किसीको नुकसान नहीं हो सकता। करोड़ों आदमी मिल नही चला सकते, दूसरा कोई धंधा नही कर सकते। चरखेमें नीतिशास्त्र भरा है, अर्थशास्त्र भरा है और अहिंसा भरी है।

: १७८ :

१४ दिसंबर १९४७

भाइयो और बहनो,

मुझे एक खत मिला है। उसमे एक भाई लिखते है कि 'एक मुसलमान भाईको मजबूर होकर पाकिस्तान जाना पड़ा है। वह अपनी मेहनतकी कमाईका कुछ सोना-चादी मेरे पास छोड़ गए है। क्या आप बता सकते है कि यह सोना-चांदी असली मालिकके पास कैसे भेजा जाय ?' अगर वह लिख भेजे तो मै हकूमतसे कहूगा कि वह मालिकके पास उसकी मिल्कियत भेजनेका इतजाम कर दे। मैने इसका जिक्र इसलिए किया है कि हम जान ले कि हममे अब भी ऐसे शरीफ आदमी पड़े है। इस भाईके दिलमे ख्याल भी नही आया कि चलो, दोस्त तो गया, उसका माल हड़प कर जायं। उसे अमानतको लौटानेकी फिक्र है। अगर हम सब भले बन जाय तो सब अच्छा ही होनेवाला है।

मैने आपसे वायदा किया था कि हरिजन-निवासमे जब मै जाता था तब वहा जो चर्चा होती थी, उसके बारेमें आपको थोड़ा-सा बता दूगा। आज मै आपको नई तालीमके बारेमे कुछ कहना चाहता हू। नई तालीमको शुरू हुए आठ साल हुए है। इस सस्थाका उद्देश्य राष्ट्रको नए आधारपर शिक्षा देना है। उसके लिए यह कोई लबा समय नही है। बुनियादी तालीमका आमतौरपर यह अर्थ किया जाता है कि दस्तकारीके जरिये शिक्षा देना। मगर यह कुछ अशतक ही ठीक है। नई तालीमकी जड़ इससे गहरी जाती है। उसका आधार है सत्य और अहिंसा। व्यक्तिगत जीवन और सामाजिक जीवन, दोनोमे ये ही उसके आधार है। विद्या वह जो मुक्ति दिलानेवाली हो—'सा विद्या या विमुक्तये'। झूठ और हिसा तो बधनकारक है। उनका शिक्षामे कोई स्थान नही हो सकता। कोई धर्म यह नही सिखाता कि बच्चोको असत्य और हिंसाकी शिक्षा दो। सच्ची शिक्षा हर एकको सुलभ होनी चाहिए। वह चंद लाख शहरियोके लिए ही नही, मगर करोड़ों देहातियोके लिए उपयोगी होनी चाहिए। ऐसी शिक्षा कोरी पोथियोसे थोड़े मिल सकती है! उसका

फिरकेवाराना मजहवसे भी कोई ताल्लुक नही हो सकता। वह तो धर्मके उन विश्वव्यापी सिद्धातोकी शिक्षा देती है, जिनमेसे सव सप्रदायोके धर्म निकले है। यह शिक्षा तो जीवनकी किताबमेंसे मिलती है। उसके लिए कुछ खर्च नही करना पड़ता और उसे ताकतके जोरसे कोई छीन नही सकता। आप पूछ सकते है कि बुनियादी तालीमका काम करनेवाले भाई क्या ऐसे सत्य और अहिंसामय वन चुके है? मै निवेदन करूगा कि मै ऐसा नही कह सकता। मै यह थोड़े ही वता सकता हू कि किसके दिलमे क्या है। हिंदुस्तानी तालीमी सघके अध्यक्ष डॉ० जाकिरहुसैन है। श्री-आर्यनायकम् और आशादेवी उसके मन्त्री है। उन्होने यह कभी नही कहा कि वे सत्य और अहिंसामे विश्वास नही रखते। अगर उनका सत्य और अहिंसामे विश्वास न हो तो उनका तालीमी सघसे हट जाना ही मुनासिव होगा। नई तालीमके शिक्षक सत्य और अहिसाको पूरी तरह माननेवाले हो, तभी वे सफलता पा सकेंगे। तव वे कठोर-से-कठोर व्यक्तियोको चुवकके मानिंद खीच सकेंगे। उनमे वे सव गुण होने चाहिए, जो स्थित-प्रज्ञके वताए गए है, और जो आप रोज प्रार्थनाके सस्कृत श्लोकोमे सुनते है। तालीमी सघको काग्रेसने जन्म दिया, मगर अभी वह काग्रेस-जैसा कहा वना है? काग्रेसमेसे मै निकल गया, सरदार भी निकल जाय, जवाहरलाल भी चले जाय, जितने वहा आज काम करते है, वे सव मर जाय, तो भी काग्रेस थोड़े ही मरनेवाली है? वह तो जिंदा ही रहनेवाली है। मगर तालीमी सघके वारेमे आज ऐसा नही कह सकते। उसे ऐसा वनना है। हर सस्थाको ऐसा वनना चाहिए कि व्यक्ति निकल जाय, तो भी उसका काम वद न हो, वल्कि वरावर वढता और फैलता जाय।

: १७६ :

मौनवार, १५ दिसबर १६४७

(लिखित सदेश)

भाइयो और बहनो,

अखवारोमें पढकर मुझे दु:ख हुआ कि शरणार्थियोंने ६ म्यूनिस्पल स्कूलोंके मकानोपर कब्जा कर लिया है और दिल्ली म्यूनिस्पल कमेटीकी पूरी कोशिशोके बावजूद उन्हे खाली नही किया। कमेटी इन मकानोको खाली करवानेके लिए पुलिसकी मदद लेने जा रही है।

यह रिपोर्ट विश्वासके लायक लगती है। यह किस्सा शर्मनाक अधाधुधीका एक नमूना है। यूनियनकी राजधानीमे ऐसी चीजे हरएकके लिए शर्मका कारण है। मै आशा करता हू कि कब्जा करनेवाले अपनी बेवकूफीके लिए पछताएगे और अपने आप स्कूलोंके मकान खाली कर देगे। अगर ऐसा न हुआ तो आशा है, उनके दोस्त उनको समझा सकेगे और सरकारको अपनी धमकीपर अमल नही करना पडेगा। शरणार्थियोके सामने यह आम शिकायत है कि इतना दु:ख सहन करनेके बाद भी वे समझदार, गभोर और मेहनती कार्यकर्ता नही बने। हम सब आशा करते हैं कि आम तौरपर सब शरणार्थी और खास तौरपर यह स्कूलोका कब्जा लेनेवाले भाई प्रायश्चित्त करके इस शिकायतको गलत साबित कर देगे।

शनिवारको मैंने कलकत्तेकी दगा-खोरीका जिक्र किया था। वहां शरारत करनेवाले शरणार्थी नही थे। उसकी भूमिका भी अलग थी। सब नेताओका, चाहे वे किसी भी खयालो या पार्टीके क्यों न हों, यह फर्ज है कि वे हिंदुस्तानकी इज्जतकी दिलोजानसे रक्षा करे। अगर हिंदुस्तानमें अधाधुधी और रिश्वतखोरीका राज चले तो हिंदुस्तानकी इज्जत बच नही सकती। मैंने रिश्वतखोरीका यहा जिक्र इसलिए किया है, क्योकि अराजकता और रिश्वतखोरी दोनो एक ही कुटुबके है। कई विश्वासपात्र जरियोसे मुझे पता लगा है कि रिश्वतखोरी बढ रही है। तो क्या हरएक अपना ही खयाल करेगा और हिंदुस्तानकी भलाई कोई नही सोचेगा?

एक भाई लिखते है. "मैने अभी आपकी कलकी प्रार्थनाका भाषण

रेडियोपर सुना। उसमे आपने कहा है कि यू० पी० के कुछ मुसलमान भाइयोने जो लाहौर जाकर आए है, पाकिस्तानकी हकूमतकी तरफसे आपको विश्वास दिलाया है कि गैर-मुस्लिम, खास करके हिंदू, वहा जाकर अपना कारोबार शुरू कर सकते है। पहली बात तो यह है कि हिदुओको ही बुलाना और सिखोको नही, यह चालाकी है, और सिखो और हिंदुओमे फूट डलवानेकी चाल है। इस तरहके आश्वासन धोखाबाजी है, मजाक है। शायद आप-जैसे ही ऐसे मुसलमानोकी बातोमे आ सकते है। मै आपको ११ दिसबरके 'हिंदुस्तान टाइम्स'की एक कतरन भेजता हू। उससे आपको पाकिस्तान सरकारकी सचाई और साफदिलीका पता चल जायगा। यह पढकर भी क्या आप यह मानते है कि जो मुसलमान आपके पास आते है वे ईमानदार है? वे सिर्फ इतना ही बताना चाहते है कि पाकिस्तान सरकार अल्पमतवालोके प्रति न्याय करती है और पाकिस्तानमे सब ठीक-ठाक चल रहा है, अगरचे वाकयात[1] इससे उल्टे है। अगर वे मुसलमान दुबारा आपके पास आवे तो कृपा करके उन्हे यह कतरन दिखाइएगा। मै विश्वास रखता हूं कि आप भूले नही होगे कि २० नवबरको जो हिंदू और सिख अपनी कीमती चीजे बैंकसे निकलवाने लाहौर गए थे, उनका क्या हाल हुआ था। हिंदुस्तानी मिलिटरीपर, जिसकी रक्षामे ये लोग गए थे, मुसलमानोने हमला किया। पाकिस्तानी अफसरोके सामने यह वाकया बना। मगर उन्होने दगाखोरोको रोकनेकी कोई कोशिश नही की।" कतरनमे लिखा है :

"लाहौर 'सिविल और मिलिट्री गजट' अखबारमे हालहीमे एक रिपोर्ट छपी थी कि गैर-मुस्लिम व्यापारी और दुकानदार 'जो दगेके दिनोमें भाग गए थे, धीरे-धीरे महीनोका बद पड़ा अपना कारोबार फिरसे चलानेकी आशासे वापिस आ रहे है। मगर उनकी दुकाने वगैरा वापिस करनेसे पहले उनसे ऐसी नामुमकिन शर्तोपर दस्तखत कराए जाते है कि कई निराश होकर वापिस चले गए है। फिर बसानेवाला कमिश्नर इन शर्तोपर दुकाने खोल देता है :

---

[1] घटनाए।

१—विक्रीका पूरा हिसाब रखा जाय ।

२—बिना इजाजत मालिक कुछ भी माल या रुपया दूसरी जगह न ले जाय ।

३—अपनी दुकानका चालू धंधा रखनेका वचन दे ।

४—विक्रीसे जितनी कमाई हो रोज-की-रोज बैंकमें जमा की जाय, बिना इजाजत उसमेंसे कुछ भी निकाला न जाय ।

५—दुकानदार कायमी तौरपर लाहौरमें ही रहेंगे ।.

मुसलमानोंपर ऐसी कोई शर्त नहीं है तो हिंदुओंपर क्यों ? हिंदू कहते हैं कि इन शर्तोंका वे पालन न कर सकेंगे । सो निराश होकर वापिस जाते हैं ।"

तो निराशाकी बात तो मैं पहले ही कर चुका हूं । यह खबर सही हो तो भी जरूरी नहीं कि उन मुसलमान भाइयोंने मुझे जो कहा वह सर्वथा रद्द हो जाता है । उन्हें न सिर्फ अपना नाम रखना है, मगर यूनियनमें, जिनके वे नुमायंदे हैं, उनका और पाकिस्तानका, जिन्होंने उन्हें वह सब आश्वासन दिया उनका नाम भी उन्हें रखना है । मैं यह भी कह दूं कि वे भाई मुझे मिलते रहते हैं । आज भी आए थे । मगर मेरा मौन था और मैं अपनी प्रार्थनाका भाषण लिख रहा था, इसलिए उनसे मिल न सका । उन्होंने मुझे संदेशा भेजा है कि वे निकम्मे नहीं बैठे हैं । इस मिशन-का काम कर रहे हैं । पत्र लिखनेवाले भाईको मेरी सलाह है कि जरूरतसे ज्यादा शक न करें और बहुत ज्यादा नाजुक बदन न बनें । विश्वास रखनेसे वे कुछ खोनेवाले नहीं हैं । अविश्वास आदमीको खा जाता है । वे संभलकर चलें । मेरी तरफसे तो इतना ही है कि मैंने जो किया है उसका मुझे अफसोस नहीं । मैंने तो सारी जिंदगी खुली आंखोंसे विश्वास किया है । मैं इन मुसलमान भाइयोंका भी विश्वास करूंगा जबतक कि यह साबित नहीं हो जाता कि वे झूठे हैं । विश्वासमेंसे विश्वास निकलता है । उससे दगाबाजी-का सामना करनेकी ताकत मिलती है । अगर दोनों तरफ लोगोंको अपने घरोंको वापिस जाना है तो उसका रास्ता यही है जो मैंने अख्तयार किया है और जिसपर मैं चल रहा हूं । पत्र लिखनेवाले भाईकी शंका कि यह निमंत्रण हिंदुओं और सिखोंमें फूट डलवानेकी चाल है, ठीक नहीं ।

मैंने मुसलमान भाइयोसे कहा भी था कि उनकी वातका ऐसा खतरनाक अर्थ भी निकल सकता है। उन्होने जोरोसे इन्कार किया कि ऐसा कुछ मतलब उसमें है ही नही। वापिस जानेवालोंके लिए रास्ता साफ करनेमे मैं कोई बुराई नही देखता। इस वातसे इन्कार नही हो सकता कि पाकिस्तानमे सिखोके सामने जहर ज्यादा है, मगर इसमे भी शक नहीं कि हिंदुओ और सिखोको साथ तैरना है या डूबना है। उनके मनमे कोई बुरे इरादे नही होने चाहिए। साजिशवाजोंके[1] वीच ईमानदारीका भाई-चारा नही हो सकता।

पूर्वी पाकिस्तानसे एक भाई लिखते हैं. "हिंदुस्तानके दो टुकड़े हो जानेके वाद भी आप अपने आपको एक हिंदुस्तानका वाशिंदा कैसे कहते है ? आज तो जो एक हिस्सेका है, वह दूसरेका हो नही सकता।" कानूनके पडित कुछ भी कहे, वे मनुष्योके मनपर राज नही कर सकते। इस मित्रको भी यह कहनेसे कौन रोक सकता था कि वह सारी दुनियाका वाशिंदा है। कानूनकी दृष्टिसे ऐसा नही है और हरएक मुल्कके कानूनके मुताविक कई मुल्कोमे उसे कोई घुसने भी नही देगा। जो आदमी मशीन नही वन गया, जैसे कि हममेसे कई लोग नही वने, उन्हे कानूनन हमारी क्या हस्ती है उसकी फिक्र क्या ? जवतक नैतिक दृष्टिसे हम सही रास्तेपर हैं हमे फिक्र करनेकी जरूरत नही। हम सवको जिस चीजसे वचना है वह तो यह है कि हम किसी मुल्कके प्रति या किसी मुल्कके लोगोंके प्रति वैर-भाव न रखे। मिसालके तौरपर मुसलमानोंके प्रति या पाकिस्तानके प्रति वैर-भाव रखकर कोई भी पाकिस्तानका और यूनियनका वाशिंदा होनेका दावा नही कर सकता। अगर ऐसा वैर-भाव आम तौरपर फैल जाय तो दोनोंमे लडाई ही होनेवाली है। हरएक मुल्क ऐसे वाशिंदोको, जो मुल्ककी तरफ दुश्मनी रखता है और दुश्मन-मुल्ककी मदद करता है, दगावाज और वेवफा करार देगा। वफादारीके हिस्से या टुकड़े नही किए जा सकते।

---

[1] षड्यंत्रकारियों।

: १८० :

१६ दिसंबर १९४७

भाइयो और बहनो,

ऐसा कहा जाता है और कुछ अशमें ठीक भी है कि जो खाने और पहननेकी वस्तुओंपर अंकुश रखा है वह कुछ तो चला गया है और कुछ और चला जायगा। लेकिन जा रहा है इसमें तो कुछ शक नहीं है और उसका परिणाम भी मेरे सामने है, जो वृजकिशनजीने रख दिया है। मैंने सोचा कि अच्छा है वह भी मैं आपको बता दूंगा। अभी गुडका भाव एक रुपये सेर था और अब अंकुश हटनेके बाद वही गुड़ आधे रुपयेमें मिलता है। यह तो एक बड़ी बात हुई। इससे भी कम दाम होना चाहिए। मुझको तो पता नहीं कि वह क्यों कम नहीं होना चाहिए। मैं जब जवान था तब तो गुड़का इतना दाम क्या होनेवाला था! एक सेर गुड़ ले लिया तो बस उसका एक आना दे दिया और शायद उससे भी कम। इसलिए आशा तो ऐसी ही है कि वह कम होता जायगा। हां, मुफ्त तो वह मिलेगा नहीं, लेकिन हमें जो पुराने ढंग थे, उनपर पहुंचना चाहिए, अगर पहुंच सकते हैं तो। शक्करका भाव भी जो ३२ रुपए मन था वह २० रुपए हो गया। बड़ा अच्छा लगता है कि इतना भाव उतर गया। मूंग, उड़द और अरहरकी दाल है वह एक रुपयेकी डेढ़ सेर हो गई है। कितना बडा फर्क हो गया? इसी तरहसे चनेका हाल है। मेरी नजरमें तो चना भी एक प्रकारकी दाल ही है। लेकिन उसका इस प्रदेशमें बहुत उपयोग होता है, इसलिए उसे अलग रखा है। वह २४ रुपए मन था उसके अब १८ रुपए हो गए हैं। और गेहूं चोर-बाजारमें ३४ रुपए मन था वह अब २४ रुपए हो गया है। इस तरहसे यह सब है। मुझको तो पहले सब डरा रहे थे कि तुम कहते तो हो, लेकिन तुमको पता नहीं कि बाजार कैसे चलता है और किस तरहसे भाव चढ़ते-गिरते हैं। तुमको अर्थ-शास्त्रका पता ही नहीं। बस महात्मा हो, इसलिए कह रहे हो। उसका नतीजा तुम्हें तो उठाना नहीं पड़ेगा, लेकिन गरीब लोग मर जायंगे। मगर जो परिणाम मैं देख रहा हूं उससे गरीबोंको मरना नहीं, बल्कि तरना है। इसलिए

मै तो यह कहूगा कि मक्का और बाजरा वगैरापर जो अकुश है उनपरसे भी वह हट जाना चाहिए; क्योकि बाजरा खानेवाले वाजरा ही खाते थे, गेहू उनको हज्म भी नही होता। इसी तरहसे मक्का खानेवाले भी बहुत है। उनको पसद भी वही आएगा। इसलिए अकुश जारी रखनेकी कोई वजह मुझको तो लगती नही है। डा० राजेद्रप्रसादने भी तो यही कहा था कि सब अंकुश आहिस्ता-आहिस्ता हटा देगे। कुछ तो हट गए है और दूसरे भी जो है वे भी हट ही जायगे। उसका शुभ परिणाम भी हमारे सामने आ गया है। यही दियासलाईका हाल है। अभी तो उसपर वहुत दाम देना पड़ता है। चोरबाजारमे तो क्या, खुले बाजारमे, उसको चोरवाजार कहे भी कैसे, लेकिन होता है, और इसलिए लोगोको वहुत दाम देने पड़ते है। उसपरसे भी अगर अंकुश निकल गया तो वडा अच्छा परिणाम हो सकता है, मुझको तो इसमें कुछ शक नही है। दियासलाईपरसे कट्रोलको जाना ही है और उसका दाम भी गिरना ही है। दियासलाईका इतना दाम तो पहले कभी भी नही था। मेरे जमानेमे तो उसकी कुछ गिनती ही नही थी। आज तो एक दियासलाईकी पेटी कोई एक आनेमे देगा, लेकिन तब एक आनेमे १२ पेटी मिलती थी। ऐसा भी एक जमाना था और आज ऐसा जमाना हो गया है! आज तो सब चीजोके दाम बढ गए है। अगर लोगोका दरमाहा बढे तब तो वह अच्छा लगता है, लेकिन चीजके दाम बढते हुए देखकर मुझको कभी अच्छा नही लगनेवाला है। अगर दाम कुछ बढ़ना है तो वह मेहनत करनेवालेके घरमे चला जाए, लेकिन उनके घरमे जाए तब भी इतना दाम नही बढ सकता है। इतना दाम तो तब बढता है जब तिजारत करनेवाले लोग पाजी बन जाए, उनकी नीयत बिगड जाए और वह सब पैसा उनकी जेबोमे जायगा। हम आजादी पाकर तो बैठ गए और हमारे ऊपर इतनी बडी आपत्ति भी आई, लेकिन हम शुद्ध काम करना नही सीखे। हमारे जो ताजिर लोग है वे अगर शुद्ध कौड़ी कमाएं तो मुझको तो जरा भी शक नही है और जिनको शक है उनको भी यह नही है कि अकुश हटा दे तो चीजोके दाम बढ जायगे। वे कहते है कि दाम बढ़ जायगे, क्योकि हम लोग पाजी और दगाबाज है। ताजिर शुद्ध कौड़ीका व्यापार नही करते और जो किसान वगैरा हैं, या जो पैदा करनेवाले है, वे भी अपना

पेट भरना जानते है और प्रजाकी कोई खबर ही नही लेते। तव मै कैसे यह मानू कि हमारे यहा लोकराज्य है ? मुझको तो यह मानते हुए शर्म आती है। लोकराज्य या पचायत राज्यमे यह कैसे हो सकता है ? उसमे तो हकूमतका यह पूरा-पूरा धर्म हो जाता है कि वह लोगोपर एतबार करे। वह साफ-साफ कह दे कि आप जैसा चाहते है वैसा हम करते है, लेकिन उससे अगर कोई तकलीफ होती है तो हम जिम्मेदार नही होनेवाले है। यह ठीक है कि हमारे यहा सिविल सर्विस पड़ी है, लेकिन हम लोग जितने यहा पड़े है, सब-के-सब अपनेको सिपाही समझे और लोगोकी सेवा करे। अगर हम जिंदा रहते है तो भी लोगोके लिए ऐसा हम लोग सोच ले तो मुझको कोई शक नही है कि दाम नही बढ सकते और आज लोगोमे जो एक किस्मका पाजीपन या दगाबाजी आ गई है वह भी मिट जायगी और हम सरल होकर सीधा-सादा काम करने लगेंगे। लेकिन आज तो सब इसी तरहसे होता है और मेरे पास तो जगह-जगहसे तार वगैरा आते है। मैने सुना है कि बवईमे तो इस बारेमें कुछ गोलमाल भी चल रहा है। क्या है, इसका मुझको कुछ पता नही। लेकिन यह सब होना ही नही चाहिए। मगर अबतक जो शुभ काम हो गया है इसके लिए तो लोगोंको हर प्रकारसे बधाई ही देनी चाहिए। इससे हकूमतको भी उत्साह मिल जाता है। यह तो एक बात हुई।

दूसरी बात यह है कि मेरे पास काफी शिकायते आ रही है कि अभी यह कहाकी बात है कि सिविल सर्विसपर इतना खर्च कर रहे हो। एकाएक तो हटा भी कैसे सकते है और हटाए तो काम कैसे चल सकता है। उनमेंसे काफी तो चले भी गए और जो जा रहे है उनसे काफी ज्यादा काम ले रहे है। हमारे जो सरदार है उनके मातहत ये लोग है। वे तो उनको धन्य-वाद देते है कि उन्होंने अच्छा काम किया है। थोड़े है तो भी वे कामको पहुच जाते है। इस धन्यवादके लायक है तो वह उनको मिले। उनको दरमाहा भी तो काफी मिल जाता है। लेकिन सच्ची सिविल सर्विस तो हम है। हकूमतको चाहिए कि सच्ची सिविल सर्विस हमको बना दे और जितना एतबार वह सिविल सर्विसपर रखे उतना हमपर रखे। यह हो सकता है कि अगर सिविल सर्विसवाले दगा दे तो वे सजाके योग्य होते है और उनको सजा हो जाती है। इसी तरहसे वह हमको भी सजा दे। किसीको

वुला ले और कहे कि तुम्हे इतना काम करना है। क्या पाजीपन और धोखावाजी करनेवालेको सजा देनेका कोई कानून नही है? अगर नहीं भी है तो मै कहूगा कि वे बना ले। जिस तरहसे वे सिविल सर्विसको जिम्मेदार समझते है उसी तरह सारी प्रजाको जिम्मेदार समझे। सारी प्रजाका ही यह राज्य चलता है।

मुझको यह क्यो कहना पडता है? इसलिए कि अभी जो एक नई बात और हो गई है न, कि काग्रेसने यह कह दिया कि मत्रियोके नीचे पार्लामेंटरी सेक्रेटरी भी होने चाहिए और वे सिविल सर्विसके लोग नही, बल्कि बाहर काग्रेससे या जो लोग काग्रेससे अच्छा सवध रखते है, उनमेसे पार्लामेटरी सेक्रेटरी बनाए जाय। मुफ्त तो कोई वनता नही है, सवको दरमाहा देनेको चाहिए। आज अगर करोडो रुपयेकी हुकूमत हमारे हाथमे नही आती तो हम कहासे दरमाहा दे सकते थे और कहासे देते? आज वह अगर हमारे हाथमे आ गई है तो हम डेढ-दो हजार रुपया दे, मकान दे, यह दे, वह दे और पीछे पार्लमिटरी सेक्रेटरी वना दे, मुझको तो यह सव चुभता है। चाहे वह पार्लमिटरी सेक्रेटरी प्रधान मत्रीका हो, गृह-मत्रीका हो या किसीका भी हो। और इसके लिए पार्लमिट उनको मजबूर करे, पार्लमिट तो क्या काग्रेस-पार्टी कहो। काग्रेस-पार्टीका तो शब्द भी मुझको अच्छा नही लगता है। काग्रेस तो सव लोगोकी है। हिंदू, मुसलमान और पारसी वगैरा आपस-आपसमे दगा न करे, ऐसा कुछ करना है तो उसके लिए वडा दरमाहा दे तभी क्या हम लोगोको काम करना है? ऐसा अगर हम करते रहे तो हिंदुस्तान तो एक विल्कुल निकम्मा देश वन जायगा। हमारी ताकत क्या कल नही थी और आज हो गई है? इससे ज्यादा अज्ञान मै कोई और नहीं समझता। हा, पहले कुछ पैदा तो हम कर ले। जितना १४ अगस्तको पैदा होता था, उससे कितना आगे हमने वढाया, यह हिसाव तो कर ले। पहले हम जो कुछ पैदा करते थे उससे ज्यादा क्या वनाया? क्या हमारे अनाजकी पैदावार वढी, क्या कपडा वढ़ा और क्या हमारा उद्योग कुछ वढा? जव लोग सच्चा उद्योग करनेमे लग जाए, उनकी धन-दौलत वढे और वे कहे कि आप क्या पैसा-पैसा करते हो, ले जाओ हमारे पाससे, तव मै समझूगा कि हमारा काम वढा है, हिंदुस्तानका नाम आगे वढा है और हमारा दाम भी वढ़ गया

है। लेकिन आज तो हमारी पैदावार ७० रुपये फी आदमी प्रति वर्ष है। यह तो कुछ भी चीज नही है। जब उसकी आय दुगुनी हो जाय या उससे भी ज्यादा, और देहाती लोग भी यह महसूस करने लगे कि उनकी आमदनी बढ़ती जा रही है, तब आप उनसे ज्यादा पैसे भी मांग सकते है। अगर पैदावार तो बढ़े नही और हम खर्च बढ़ाते ही चले जायं तो हमारा हाल क्या होगा? मान लीजिए, एक दुकान है, क्योकि हिंदुस्तान भी तो एक बड़ी दुकान है, उसका मालिक हमेशा आकर देखता है और अपने मंत्री या कारकुनसे[1] पूछता है कि आज बिक्री कितनी हुई, साहब? अगर वह कहता है कि आज एक हजारकी बिक्री हुई और कल पांच-सौकी हुई थी तब तो वह राजी हो जाता है। जब वह पूछता है कि आज खर्च कितना किया और वह बताए कि एक हजारकी आमदनी और डेढ़ हजारका खर्च, तब तो सेठका मिजाज खराब हो जायगा। उसकी आंखे लाल हो जायगी और अपने कारकुनको गालियां भी देगा। खैर, गाली देना तो ठीक नही, लाल आंखें करना भी ठीक नही, लेकिन वास्तवमे चीज तो उसकी सच ही है, जब वह कहता है कि हजार रुपयेकी आमद और डेढ़ हजारका खर्च तो ५०० रुपए मै कहांसे लाऊ और कौन मुझको देगा? आज हमारे हाथमे रुपया पड़ा है, इसलिए हम नाचते है। लेकिन वह नही रहनेवाला है। इसलिए मुझको वह चुभता है कि हम क्यो इतना पैसा फेक रहे है। बस आज मै इससे आगे और नही जाना चाहता।

: १८१ :

१७ दिसंबर १९४७

भाइयो और बहनो,

एक भाई जो होशियारपुरमे रहते है, शायद वहींके है, नाम वगैरा दिया है, वह सब तो मै नही देना चाहता हूं। काफी प्रश्न भी

---

[1] कर्मचारी।

उन्होने पूछे है, उनको भी मैं छोड़ना चाहता हूं। लेकिन उसमें जो तात्पर्य है वह तो यह है कि पहले पंजाब तो एक ही था, उसके कोई टुकडे थोडे ही हुए थे ! इसलिए एक आदमी व्यापार किसी जगह करता था और उसकी जमीन और मकान किसी दूसरी जगह होते थे। यह भाई पश्चिमी पंजाबमे तिजारत करता था और मकान उसका पूर्वी पंजाबमें था। वहासे उसको भागना पड़ा। जैसे हजारो-लाखो लोग भागे, इसी तरह उसको भी भागना पड़ा। उसने सोचा कि पूर्वी पजाबमें चला जाता हू, वहा मेरा मकान है जिसमें जाकर मै बैठ जाऊंगा। लेकिन वहा सब जाते है तो क्या देखते है कि उसमे तो कोई अमलदार[1] रहता है। तब उनको अपने ही घरमे रहनेके लिए सिर्फ दो कमरे मिलते है और बाकीके बड़े हिस्सेमे वह अमलदार रहते है। मकान कुछ बड़ा है, ऐसा मुझको लगता है; क्योकि आजही उनका खत मेरे हाथमे आया है। वे पूछते है कि मुझको मकान मिलना चाहिए कि नही। अगर नही मिलता है तो हकूमतको मुझे मदद देनी चाहिए कि नही, या मुझको कोर्ट-दरबारमे ही जाना चाहिए ? मेरा खयाल है कि वह मकान उसको मिलना ही चाहिए। कोर्ट-दरबारमे जानेकी उनको क्यो तकलीफ दी जाय ? अगर वह हकूमतका ही कोई अमलदार है तब तो उसपर और भी हक उनका हो जाता है। यह तो मैंने इसका उत्तर दे दिया।

मैंने पहले भी कहा था कि जो दु.खी लोग है वे जहां चाहे कब्जा कर लेते है और वहा चले जाते है। किसी जगहपर अगर ताला-कुंजी लगी हो तो उसको भी तोड डालते है और वहां जमकर बैठ जाते है। जैसे अमलदार रहता है वह किराएसे रहता है, वहातक तो ठीक है, लेकिन जब उस मकानका मालिक आ जाता है तब वह कैसे उसमे रह सकता है ? अगर रहना भी है तो मालिकसे मशविरा[2] करके केवल एक हिस्सा अपने पास रखे। लेकिन यह तो हो नही सकता कि बड़ा हिस्सा तो अपने पास रखे और मालिक-मकान अभ्यागत बन जाए। यह तो ठीक नहीं है। लेकिन जो दु खी लोग है उनका तो घरमे हिस्सा नही है। उनका तो इतना ही है

---

[1]अफसर; [2]सलाह।

न कि उनको मजबूरन अपने घरोंसे निकलना पड़ा। इसलिए क्या वे कहीं भी जमकर कब्जा कर ले ? अगर दुर्भाग्यसे वह मुसलमानका घर हुआ तब तो बस खत्म हुआ। उसपर तो वे अपना एक तरहका हक-सा मानते है; लेकिन इससे हम अपना या हिंदुस्तानका कोई भला नहीं कर सकते। मेरा तो यह दृढ़ विश्वास है कि कभी भी वे इस तरहसे अपना भला नही कर सकते। इन्सान क्या चोरी या लूट करनेसे या किसीके मकान जलानेसे कभी अपना भला कर सका है, तब इनका कैसे हो सकता है, इस तरहसे अगर मामला चले और पाकिस्तानमे भी ऐसा बन जाए कि वहां सिवाय मुसलमानोके कोई दूसरा रहता ही नही है। मेरे पास तो रोज ऐसा कुछ-न-कुछ आ जाता है कि वे अगर मीठी जबानसे कुछ कहे तो आपको धोखेमे नही पड़ना चाहिए। बाकी वहां कोई आरामसे रह नही सकता, अगर वह मुसलमान नही है। लेकिन आखिरमे वहां अगर सब मुसलमान ही रह गए तो फिर वे आपस-आपसमें लड़ेंगे। यह अगर वहां चलता है तो भी अच्छा नही है और यहां चलता है तो भी अच्छा नहीं है। यहां अगर चलता है तब तो मेरी निगाहमें वह और भी अच्छा नही है, क्योंकि हमने कभी कहा ही नही कि हिंदुस्तान हिंदुओंका ही है या उसमें एक ही कौम रह सकती है और दूसरी नहीं। जो लोग यहां पैदा हुए और जो अपनेको हिंदुस्तानके रहनेवाले मानते हैं, उन सबको इस देशमें रहनेका हक है। ऐसा अगर था और आज भी है, तो फिर हमारे पास तो कोई कारण नहीं रहता। लेकिन पाकिस्तानके लिए तो बहुत वर्षोंसे वे ऐसा कहते आए है कि मुसलमानोंके लिए तो कोई जगह होनी चाहिए। उसका मतलब यही हुआ कि उसमे दूसरे चाहे रहे या न रहे, लेकिन बादमें जब यह हो गया और १५ अगस्तका दिन आया, जो पहले ख्वाबमे भी नही था, लेकिन वह हुआ और कहा कि अभी तो हमें सबको रखना है। यह आवाज निकली तो मुझको बहुत प्रिय लगी। लेकिन जो बात चुभने लायक है वह यह कि जो कुछ कहा जाता है उसपर अमल नहीं होता। यहां भी हिंदू और सिख अगर वैसा ही करते है तो उसमे मैं तो दोनोंका ही संहार और नाश देखता हूं। उसमें मैं कोई और दूसरी चीज नही पाता हूं, ऐसा मैंने कह दिया है।

अभी एक भाई है, वह कहते है कि मैं तो लाहौरमें था। अब तो

वे लाहौरमे नही है, लेकिन यह वात लाहौरकी है। वह कहते है कि मुझको वहासे निकलना पडा, निकलना चाहता था, ऐसी वात नही है। लेकिन निकला और पश्चिमी पजाव छोडकर यहा आ गया। लेकिन जव तुमने कहा कि इस तरहसे वापिस वही जाना है तो वहा फिर वापिस चला गया। लेकिन देखता हू कि मेरी जमीन और मेरे मकानपर तो मेरा कुछ होता ही नही है। मुझको लवी-चौडी वाते सुनाई गई और जो कुछ मेरा था वह मुझको नही मिल सका। ऐसी हालतमे आप कैसे कह सकते है कि वापिस वही जाओ ?

मैने कई बार इसका जवाव दिया है और अव भी जव कोई लिखते है तो कुछ कहना ही चाहिए। मैने तो साफ-साफ यह कहा है कि जव वह मौका आएगा तव जाया जायगा। वहा तो मैने तैयारीकी वात कही थी कि जिसके दिलमें वापिस जानेकी इच्छा हो वह तैयार रहे। पहले तो जिन मुसलमान भाइयोकी तरफसे यह वात आई है उनको वहा जाना है । अभी तो वह सिर्फ वात ही है, लेकिन वह वात-की-वात रहनेवाली चीज नही है। हकूमत-के नामसे वे कहते थे। आखिरमे उनको या तो यह कह देना होगा कि हम हार गए और यह हमने गलत कह दिया था कि पाकिस्तान सरकारने कहा है कि हिंदू वहा वापिस आ सकते है। यह भाई लिखते है कि कहना तो एक वात है; लेकिन काम असलमे उल्टा ही होता है, इसलिए वह पूछते है कि उनको वापिस जाना है ? और यह पूछनेका उनको पूरा हक है। लेकिन जव वे इतना लवा-लवा लिखते है तो जो कुछ कह चुका हू वह भी दुहरा देता हू, क्योकि आखिर तो यह एक भलाईकी वात है। साफ-साफ जो वात है वह यह कि इस तरहसे किसीको वापिस जानेकी वात ही नही है। इस तरह तो दूसरे भी वहुतसे लिखते है कि हम भी जानेको तैयार है। मै सवको यही जवाव दे देता हू कि जव जाना होगा तो मैं कह दूगा कि फला तारीख-को आप जानेको तैयार रहे। अभीसे मै किसीको कोई बात नही कह सकूगा। ऐसी शीघ्रतासे तो यह खयाल भी किसीके दिलमे नही आ सकता था, लेकिन जव मुसलमान भाई ही ऐसा कहते है तो मुझको वह अच्छा लगता है। अगर वे इसमे कामयाव हो जाते है तो मै कहूगा कि हमारी फिज़ा[1] जो आज

---

[1] वातावरण।

विगड़ गई है उसको दुरुस्त होनेमे उससे एक वडी मदद मिलनेवाली है। उसके लिए जो कोशिश हो सकती है वह की जायगी। लेकिन ये जो भाई लिखते है या दूसरे भी, उनसे मैं कहूंगा कि आपको अभी तो खामोश रहना है, अभी तो कुछ होनेवाला नही है। उसकी तजवीज हो रही है। जव हो जायगी तो उसका मैं ऐलान[1] कर दूगा। किसीके खुफिया तौरसे जानेकी तो वात है नही। मेरी तो ऐसी उम्मीद रहती है कि पाकिस्तान उनके लिए गाडी यहा भेज दे और फिर उसमे पांच हजार आदमी चले जाएं। वे वहा शौकसे और हकसे जायगे। इसलिए वे जाएगे कि उनको वे वहा वुलाते है। अगर यह नही होता है तो वह चीज भी नही हो सकती है।

अभी एक तीसरी चीज और है और वह है पूर्वी अफ्रीकाकी। आपको याद रखना चाहिए कि पूर्वी अफ्रीकामे नेरोबी करके जो प्रदेश है वही सवसे अच्छा है। वह ऐसे ही है जैसे यहां शिमला है। यहा जैसे चार-पांच महीने तो मौसम अच्छा होता है और फिर गर्मी पडने लगती है और मैदानमे तो और भी अधिक गर्मी होती है। लोगोको ठडक चाहिए, इसलिए वे शिमला या दार्जिलिंग चले जाते है। हिंदुस्तान तो एक वडा मुल्क है, मगर पूर्वी अफ्रीका तो छोटा-सा है। इसके अलावा नेरोवीको वनानेवाले भी सिख थे। सिख लोग कोई ऐसे-वैसे थोड़े ही है। वड़ी काविल कौम है और वहुत तगड़े और काम करनेवाले है। वडी जहमत[2] उठाकर उन्होंने वहांकी रेल वनाई थी। मगर खूवीकी वात यह है कि रेल तो वनाई उन्होने और नेरोवीमे वे खुद जा भी नही सकते। जा तो सकते है, मगर मजदूरी करनेके लिए, रहनेके और तिजारत करनेके लिए नही। यह तो नेरोवीमे है, लेकिन आदमी जव विगड़ता है तो स्वभावसे ही कुछ ऐसा है कि जव वह एक चीजमे विगड़ता है तो पीछे सव चीजोमे ही विगड जाता है। इसलिए जो भी हिंदुस्तानी वहा रहते है उनके विरुद्ध वे भारतीय प्रवेशविरोधी विल वनाने जा रहे है, जैसा कि दक्षिण अफ्रीकामें भी वन गया है। हिंदुस्तानियोके जो हक है उनको वे छीन लेनेकी कोशिशमे है। अभी यह विल वना तो नही है, लेकिन उनकी लेजिस्लेटिव असेवली

---

[1] जाहिर, [2] संकट।

या कौंसिलमे तो आ गया है। इसलिए जो हिंदुस्तानी भाई वहा रहते है बेचारे उम्मीद तो हमसे रखते ही है। पडित नेहरूको भी उन्होने कुछ लिखकर भेजा है, क्योकि वे हमारे विदेश-मत्री है। बाहर जितनी चीजे होती है वे सब उनके हाथमे रहती है। इसके अलावा वे हमारे प्रधान मत्री भी है। इसलिए उनको उन्होने एक तार दिया और तारकी एक नकल मुझको भी दी है। वे कहते है कि इस बारेमे कुछ तो कहो। मै चूकि अफ्रीकामें रहा हू, इसलिए मुझपर भी उनका हक है। इसलिए मै तो आज कुछ कहे देता हू और पीछे मेरी आवाज वहां पहुच जायगी। हिंदुस्तान आजाद तो हो गया है, लेकिन आजाद हिंदुस्तानके साथ ऐसा ही होगा क्या? मुबासा और पूर्वी अफ्रीका जो है वह ब्रिटिश इलाका है। जो हिंदुस्तानी वहा गए हुए है उनके साथ ब्रिटिश इलाकेमे क्या ये हाल होनेवाले है? उनके साथ यह सब गोलमाल क्यों चलता है? आपको समझना चाहिए कि वहां हमारे काफी ताजिर लोग है, उनमे काफी मुसलमान है और खोजा तथा दूसरे मुसलमान भी वहा है। हिंदू भी वहा काफी पडे है। हर जगहसे वे वहा गए है और पैसे भी काफी वहा कमाए है, कोई लूट या चोरी करके नही, बल्कि वहा जो हब्शी लोग रहते है उनके साथ तिजारत करके। वे अंग्रेजोके जानेसे काफी पहलेके वहा है। यूरोपके अन्य लोग भी तबतक वहा नही गए थे और अगर गए भी होंगे तो बहुत कम। हिदुस्तानियोने वहा बड़ी-बडी हवेलियां बनाईं, क्योकि वे बनाने लायक थे। उस जमानेमे तो जहाज भी हमारे थे, लेकिन जब हम गिर गए तो हमारे जहाज भी सब गए।

पीछे तो वहा अग्रेज भी गए और यूरोपके दूसरे लोग भी। वह तो एक लबा इतिहास है, जिसपर मै नही जाता। हिंदुस्तानी वहाके हब्शी तथा दूसरे लोगोसे मिल-जुलकर रहे और उनके साथ तिजारत की। उन्होने शुद्ध कौड़ी ही कमाई हो, ऐसा दावा मै नही कर सकता। लेकिन इतना तो सही है कि उन्होने जबर्दस्ती किसीसे कुछ नही लिया। मुसलमान भी वहा गए और ऐसा कुछ नही था कि जो मुसलमान थे उनको वहा कुछ ज्यादा मिला हो और हिंदुओको कम। उनमें ऐसा आज भी कोई भेदभाव नही है। इसलिए वे सब मिलकर लिखते है कि इस बिलको आप किसी-

न-किसी तरह रोकें, नहीं तो हमारा बड़ा नुक्सान होता है। मैं तो कहूंगा कि वह बिल रुक जाना चाहिए।

हिंदुस्तान आज एक आजाद मुल्क है। मुझको पता है कि जवाहरलालजी तो इस बारेमें जो कुछ हो सकता है वह करनेवाले हैं।

: १८२ :

१८ दिसंबर १९४७

भाइयो और बहनो,

एक भाईका एक खत आया है जिसमें यह लिखा है कि जब आपको उर्दू जबानपर एतराज नहीं है तो अंग्रेजीपर क्यों है? जब हिंदुस्तान सारी दुनियाका मित्र है, जैसा कि आप कह चुके हैं तो फिर जैसे मुसलमान हैं, वैसे अंग्रेज हैं।

इस भाईको जो दुःख हुआ है वह केवल अज्ञानताका कारण है। इससे ज्यादा अज्ञानका कारण कोई और हो सकता है मैं तो नहीं समझता। उर्दूपर मुझको एतराज नहीं होता, मैं तो उसका समर्थन कर रहा हूं। प्रांतीय भाषाकी हैसियतसे तो उर्दू है, पंजाबी है, मराठी, गुजराती, बंगला और उड़िया वगैरा सब हैं। जितने भाषावार प्रांत हैं उनकी उतनी ही भाषाएं हैं। यों तो हिंदुस्तानमें बहुत अधिक भाषाएं पड़ी हैं, लेकिन सब विद्वानोंने मिलकर जो फैसला किया है उसके मुताबिक तो १४ या १५ भाषाएं हैं जो काफी भव्य हैं, जिनके अपने-अपने साहित्य हैं और जिनसे हम कुछ-न-कुछ सीखते ही हैं। लेकिन १५ या १४ भाषाएं सब प्रांतोंमें तो नहीं चल सकती। सब प्रांतोंमें एक दूसरेके साथ व्यवहार करनेके लिए कौन-सी एक भाषा होनी चाहिए, यह सवाल है। जबसे मैं दक्षिण अफ्रीकासे वापस आया हूं तभीसे मैं बराबर यह कहता आया हूं कि हमारी राष्ट्रभाषा वही हो सकती है कि जिसको हिंदू और मुसलमान ज्यादा-से-ज्यादा तादादमें बोलते और लिखते हैं। तब तो वह देवनागरी लिपि या उर्दू लिपिमें लिखी हुई हिंदुस्तानी ही हो सकती है। मैंने तो कहा है कि मैं उर्दूका समर्थन करता

हू, लेकिन सारी दुनियाका मित्र होते हुए भी मै अग्रेजीका समर्थन क्यों नही करता, यह समझने लायक बात है। अग्रेजी भाषाका यहा स्थान नही है। अग्रेजोने यहा राज चलाया और पीछे जो राज चलाता है वह अपनी भाषा भी चलाता है। वह परदेशी भाषा है, स्वदेशी भाषा नही है। इसलिए मुझको यह कहते हुए दु.ख नही, वल्कि फख्र[1] होता है कि उर्दू हिंदुस्तानकी भाषा है और वह हिंदुस्तानमे ही बनी है। तुलसीदासके तो हम सब भक्त है और होना ही चाहिए, लेकिन उनकी रामायणमे आपको यह देखकर ताज्जुब होगा कि कितने ही अरबी और फारसीके शब्द ले लिए है। जो शब्द वाजारमे लोग वोलते थे वही उन्होने ले लिए। आखिर उन्होने लिखा है वह आपके लिए और मेरे लिए लिखा है। तुलसीदासजीने जो थोडेसे सस्कृत बोलनेवाले है, उनके लिए थोडे ही लिखा है! इसलिए जो तुलसीकी भाषा है वही हमारी भाषा है। अगर आपको फैसला करना है कि कौन-सी हमारी राष्ट्र-भाषा है तो मै यह दावेसे कह सकता हू, पीछे हिंदू मुझको चाहे मारे, काटे, या कुछ भी करे, कि हमारी राष्ट्र-भाषा वही हो सकती है जो देवनागरी और उर्दू दोनो लिपियोमे लिखी जाती है।

लाला लाजपतरायजी तो पजाबके शेर माने जाते थे। वह तो चले गए। मै तो उनका मित्र था और उनके साथ मजाक भी करता था कि हिंदीमें बोलना कब सीखोगे। वह कहते थे, यह नही होनेका। याद रखो वह समाजी थे और यह भी याद रखो कि वे हवन इत्यादि भी करवाते थे। चूकि मै उन्हीके घरमे ठहरता था, इसलिए मै यह सब देखता था। हवन-मे तो सस्कृत ही काममे आती है और अजीब बात थी कि यह सब होते हुए भी वे थोडा-थोडा पढ़ तो लेते थे देवनागरीमे, लेकिन उनकी मादरी जबान उर्दू ही थी। वे कहते थे कि उर्दूमे तो मुझसे कहो तो घटो बोल लेता हू और बोलते थे, और उर्दूके तो मै आपको क्या वताऊ, वे बडे भारी विद्वान थे और बहुत शीघ्रतासे लिख सकते थे। अग्रेजीमे भी वे घटो बोल सकते थे, लेकिन सस्कृतमय हिंदी तो उनकी समझमें भी नही आती थी। जब मै चुन-चुनकर अरबी-फारसीके शब्द लाता तब वे मेरी बात समझ सकते

---

[1] अभिमान।

थे। जव उनकी वात मैंने कर ली तो सवकी कर ली। तव वे भाई क्यों कहते हैं कि उर्दूपर एतराज क्यों नही है ? मैं तो कहूगा कि किसीको भी नही होना चाहिए। लेकिन अग्रेजीके लिए एतराज है। आखिर हिंदी साहित्य सम्मेलन-का भी मैं दो दफा सभापति रह चुका हू और सभापतिके पदसे मैंने यही चीज कही और किसीने शिकायत नही की। की होगी तो शायद १-२ ने की होगी। सव लोगोंने तालियां ही वजाईं और कहा कि मैं विल्कुल ठीक वात कहता हू। आज भी मैं वही आदमी हूं। तव क्यो आप मुझको ऐसा सुनाएंगे कि मैं हिंदीका पक्ष कम लेता हू और इसलिए कम हिंदुस्तानी हूं। मुझको तो ऐसा लगता है कि जो आदमी उर्दूपर एतराज करता है, वही कम हिंदुस्तानी है।

हम आज अनेक झंझटोमें पड़े हैं और इस तरहसे आपस-आपसमें विष पैदा हो गया है। अजमेरमे भी तो यही हुआ है। अगर आप हिंदू-धर्म-की रक्षा करना चाहते हैं तो यहां जितने मुसलमान पड़े हैं उनकी दुश्मनी करके नही कर सकते। मैं तो आजकलका ही मेहमान हू। कुछ दिनोंमें यहांसे चला जाऊगा। पीछे आप याद किया करोगे कि वूढा जो कहता था वह सही वात है। मैं कोई अकेले हिंदू-धर्मकी ही वात नही करता। इस्लाम-धर्म भी मर जायगा अगर उन्होंने कहा कि हम तो सिर्फ मुसलमानोको ही पहचानते हैं, वाकी तो हमारे दुश्मन है। इस तरह तो वे इस्लामको दफना देंगे, इस वारेमे मुझे कोई शक नही है। ईसाई-धर्मके लिए भी मैं यही कहूंगा। अगर वे कहे कि जो ईसाको नही मानते वे सव दुश्मन हैं और अहले[1]किताव नही हैं, तो मैं कहूगा कि वे गलती करते हैं। दुनियाके जितने धर्म हैं उनके माननेवाले सव अहले किताव हैं। अगर वे कहे कि जो वाइविलको माने वह अहलेकिताव है या जो कुरान शरीफको मानते हैं वही अहले किताव है, तो मैं कहूगा कि वे गलत रास्तेपर है। दुनियाके जितने धर्म हैं वे सव अच्छे हैं, क्योंकि वे भलाई सिखाते हैं। जो दुश्मनी सिखाते हैं उनको मैं धर्म नही मानता।

अग्रेजोके जमानेमे भी वही वात मैं कहता था कि यहां अग्रेजी हो

---

[1]आस्मानी कितावों वाले।

नहीं सकती। मेरे दिलमें अंग्रेजीकी कद्र है और मैं अंग्रेजी पढ़-लिख भी लेता हूं। सब मानते भी हैं कि मैं न अंग्रेजोंका दुश्मन हूं, न उनकी भाषाका। लेकिन सब चीजें अपनी-अपनी जगहपर हैं। अंग्रेजी दुनियाकी भाषा है। अगर दुनियाके साथ व्यवहार करना है तो अंग्रेजीसे ही हो सकता है। अंग्रेजी बहुत व्यापक बन गई है, लेकिन हिंदुस्तानी व्यापक नहीं है। हम अंग्रेजी राज्यसे तो बरी हो गए, लेकिन अंग्रेजी भाषा और अंग्रेजी सभ्यताका जो प्रभाव हमपर पड़ा है, उस असरसे हम अभी नहीं निकले हैं, यह कितने दुःखकी बात है!

याद रखो, मैंने कहा है कि हिंदुस्तानी वह चीज है जो उर्दू और हिंदीके संगमसे बनी है, जैसा गंगा और जमनाका संगम प्रयागमें होता है। उस संगममें तो सरस्वती भी बताई जाती है, लेकिन उसको तो न देखते हैं, न जानते हैं। दोनोंका व्याकरण तो एक होना ही चाहिए और वह हिंदुस्तानी है। उसमें संस्कृत, फारसी, अंग्रेजी वगैरा सब भाषाओंके शब्द भरे पड़े हैं। अंग्रेजीका शब्द जैसे कोर्ट है, तो उसको कोर्ट ही कहेंगे। अगर कचहरी कहो तो वह भी बाहरका ही शब्द है, हमारा तो नहीं है। इसी तरह बाइसिकल है और रेल है। रेलको और क्या कहेंगे? अंग्रेजी शब्द हमारी भाषामें काफी दाखिल हो गए हैं और उनसे हमें घृणा नहीं है। लेकिन अगर ये भाई मुझको अंग्रेजीमें खत लिखें तो मैं फेंक दूंगा, क्योंकि मैं जानता हूं कि वे हिंदुस्तानी लिख सकते हैं। इसी तरहसे अगर मेरा लड़का अंग्रेजीमें लिखे, क्योंकि अंग्रेजी तो वह जानता है, तो मैं फेंक दूंगा और नहीं पढूंगा। इसी तरहसे अगर मैं अंग्रेजीमें कुछ लिखकर भेजूं तो उसे फेंकनेका अधिकार है। यह तो बिल्कुल ही सरल चीज है, लेकिन हम तो आज अपना धर्म-कर्म सब भूल गए और हमारे अंदर एक प्रकारकी विकृति पैदा हो गई है। ईश्वर उस बलासे हमें बचा ले।

: १८३ :

१९ दिसंबर १९४७

भाइयो और बहनो,

आज दुपहरको मेवों[1]को देखनेके लिए गुड़गावां चला गया था। वहा तीन तरहके मेव थे: एक तो अलवरसे भागकर आए हुए, दूसरे भरतपुरसे और तीसरे वहीके। पूर्वी पजावके प्रधान मत्री डा० गोपीचंद भार्गव भी साथ थे। उन्होने मेवोंसे कहा कि जो रहना चाहते है, उनको कोई हटा नही सकता। हकूमत उनकी हिफाजत करेगी। लाखों आदमियों-को अपने मकान छोडकर वहासे भागना पडा, वह एक वहशियाना बात थी। यहांसे जिनको भागना पड़ा वह भी वहशियाना बात थी। पीछे किसने ज्यादा किया, किसने कम किया और किसने शुरू किया, उसको छोड़ देना चाहिए; क्योकि ऐसे हिसाबमें अगर हम पड़ें तो दुश्मनी मिट नही सकती और कोई आरामसे नही बैठ सकता। हमारे नसीवमें एक-दूसरेकी दुश्मनी रहे, वह नही रहनी चाहिए। वह अगर रही तो हमारा खात्मा हो जायगा। मैंने तो कहा है न कि मै तो इसे बर्दाश्त कर नही सकता। हा, जिनको जाना है या जो बिदक गए है, उनको कोई रोकनेवाला नहीं है। लेकिन किसीको मजबूरीसे न जाना पड़े। जो भी हो, वह आदमीकी इच्छासे हो। उनको भागना पड़े, इस तरह उन्हें कोई मजबूर न करे, न हकूमत करे, न हकूमतके अफसर करें और न जनता करे। अगर कोई करता है तो वह पागलपन है। वहा बहनें भी सब थी और पुरुष भी। सब परेशानीमे पडे है। कई तो ऐसे है कि तंबू है, नही है और ये जाड़ेके दिन! यह सब एक बहुत ही दु:खद किस्सा है। इनको वापिस जाना चाहिए, अगर अलवर रियासत यह कहे कि गलती तो हो गई, लेकिन अब आप आइए। इसी तरहसे भरतपुर है। और पीछे यहां भी जिन्होंने गुनाह किया है और उनको हलाक किया है, उनको उन्हे निभा लेना चाहिए। ऐसा कहनेसे तो काम नही चलता कि मेव तो गुनाह करनेवाली कौम है। गुनाह

---

[1] एक जाति।

करनेवाला कौन है और कौन नही, इसको कौन जानता है? जो लोग गुनाह करते भी है उनको क्या आप हिंदुस्तानसे जला-वतन[1] करेगे? यहासे निकाल देगे या मार डालेगे? तुम यहासे चले जाओ, यह कहनेसे तो काम हो नही सकता। उनको तो सुधारना चाहिए और सच्ची तालीम देनी चाहिए। जो शराफतका रास्ता है वह उनको बताना चाहिए। एक तो यह बात हुई।

दूसरी बात चीनीकी है। चीनी हर जगहपर तो होती नही और शक्कर भी हर जगह नही होती। जहां होती है, उस जगहसे उसको लाना है। माना कि यहा नही है, तो यू० पी०से उसको लाना है। या कोयम्बटूरसे आ सकती है। लेकिन आए कैसे? वह तो रेलसे ही आ सकती है। लेकिन गाडिया तो आज है ही नही। डा० जान मथाईके हाथमे वह महकमा[2] है। वह कहते है कि मै कहासे दू! जितने वैगन[3] है रेलवेके वे सब-के-सब तो निकाल दिए है। जितनी जल्दी वे माल ला सकते है, ला रहे है। इसके अलावा कोयला कम, लोहा कम और चलानेवाले कम, ये सब झंझट है। रेलवे स्टाफ जितना चाहिए उतना नही है। पीछे दूसरे-तीसरे काममे भी उनको लेना पड़ता है। वह तकलीफ तो जब रफा होगी तब हो जायगी। लेकिन बीच-बीचमे हम क्या करे? वह जो चीनी और शक्कर बनानेवाले है वे बदमाश है और वे दाम बढ़ा देते है। आखिर हजारो और सैकड़ो मीलसे माल कोई सिरपर तो ला नही सकता। आज तो रेल और हवाई जहाज देखकर लोगोको ऐसा हो गया है कि उनके हाथ-पैर चलते ही नही है। तब क्या करना चाहिए? एक तो मथाई साहबको लिख देना चाहिए। यह सही है कि हमको रेलवे वैगन नही मिलते या ऐसा कहो कि रेल ट्रासपोर्ट[4] नही मिलता। मगर हिंदुस्तानमें ऐसा भी तो बन गया है कि एक तरफ रेलवे चलती है तो साथ-साथ दूसरी ओर मोटर भी चलती है। जितनी तेज रफ़्तारसे रेल जाती है उतनीसे ही मोटर जाती है। रेलके लिए तो लोहेकी पटरी भी होनी चाहिए, लेकिन मोटरके लिए तो कुछ भी नही। साफ रास्ता हो तो अच्छा है, लेकिन रास्ता जैसा-तैसा हो तो भी जीप तो

---

[1] देश निकाला; [2] विभाग; [3] डिब्बे; [4] यातायात।

चली जाती है। काफी तादादमे ये मोटरे हिंदुस्तानमें चलती है। लेकिन उनके लिए पेट्रोल चाहिए और उसपर अभीतक अकुश है। मैने बताया कि अभी सब अकुश तो छूटे नही है। अगर पेट्रोलपरसे अकुश हटा ले तो सब लारिया चलने लगे और माल लाए—और ले जाने लगे। उनमे तो पीछे नमक भी आ सकता है। यह कैसी भयानक बात है कि आज हमारे मुल्कमें नमक बन सकता है, उसपरसे कर भी चला गया है, तो भी वह महगा है; क्योकि वह पूरा आता ही नही है। मेरी निगाहमे तो कुछ लोगोंको नमक बनाने और लानेका जो ठेका दिया गया है वह एक बडी गलती हुई है। सबको नमक लानेकी छूट होनी चाहिए। अगर पेट्रोलपरसे अकुश निकल जाए तो ये मोटर-लारिया नमक भी ला सकती है और दूसरी चीजे भी। एक चीजपरसे अकुश हटा लिया और दूसरीपर रखा तो वह ठीक नही बैठता। जब एक नीति हमने ग्रहण कर ली कि अकुश निकालना है तो पीछे सबको ही निकाल देना है और देखना है कि लोग क्या करते है। ऐसा आप नही कह सकते कि बाजारमे पेट्रोल नही है। पेट्रोलका तो चोर-बाजार चलता है और जबतक उसपर अकुश चलेगा तबतक यह चोर-बाजार चलता रहेगा। चोर-बाजार तो अधेरेमे चलना चाहिए, लेकिन वह तो साफ-साफ जाहिरमे चलता है। तब उसे ब्लैक मार्केट कहे या सफेद मार्केट कहे या उसको और कोई नाम दे ? पीछे क्या होता है, सुना है उसके पीछे रिश्वत भी बहुत बढ गई है। जो पेट्रोलका अफसर है, थोड़ा पैसा उसके हाथमे रखना ही चाहिए। थोडा पैसा कोई रुपया, दो रुपया नही, बल्कि सैकड़ोकी बात चलती है। जब एक चीज बुरी हो जाती है तो और भी बुराइया उसके साथ चलती रहती है। जिन चीजोपरसे अकुश निकल गया उससे लोग तो मानते है कि उनको राहत मिली है। फिर पेट्रोल तो कोई खानेकी चीज भी नही है और न हरएक आदमीके दरकारकी चीज है। जो लोग मोटर ट्रांसपोर्ट चलाते है उनको पेट्रोल चाहिए। हकूमतको जितना पेट्रोल चाहिए उतना वह अपने लिए रख ले और बाकीको खुले बाजारमें रख दें। अगर माना कि बाजारमे वह बिल्कुल मिलता ही नही और रेले भी सब-की-सब मिट गईं तो भी हिंदुस्तानका कारोबार पेट्रोलके बिना बद नही होनेवाला है। सिर्फ इधर-उधर माल लें जानेका तरीका, जो आज है वह बदल जायगा।

तब हम पुराने जमानेके तरीकेपर चले जायगे। अगर पेंट्रोलका जो अकुश है वह निकल जाय तो मुझको उससे कुछ डर नही है।

एक बात यह भी है कि हमारे यहा पूरी खुराक तो पैदा नही होती है। तब लोगोंको कहो कि वे जमीनको बो ले, उसमेसे पैदा हो जायगी। बात तो सच्ची है, लेकिन उसके लिए बाहरसे जो बनी बनाई खाद आती है, जिसको कि रसायन खाद बोलते है, उसमें हम चद करोड़ रुपये मुफ्तके दे देते है या ऐसा कहो कि जमीनको बिगाड़नेके लिए वह पैसे देते है। यह मेरा कहना नही है, मै तो वह जानता ही नही; लेकिन जो इसका ज्ञान रखते है वे ऐसा कहते है। मीराबेनने ही यह सब किया है और उसने ही इस चीजके जानकार लोगोको इकट्ठा किया। उसको शौक है और वह सचमुच किसान बन गई है।

और भी बडे-बड़े आदमी इस काममें उसके साथ थे। राजेद्र बाबू तो है ही, सर दातारसिंह है और भी दूसरे अच्छे-अच्छे खेतीका थोडा-बहुत जाननेवाले है, वे आ गए थे। वे मिले और जो किया वह अखबारोमे भी आ गया है। उन्होने यह निकाला है कि खाद किस तरह बना सकते है। उसको जिंदा खाद कहते है। हमारे यहां गोबर तो काफी होता है और जहां मनुष्य है वहा उनका विष्टा भी रहता है, उससे खासा अच्छा खाद बन जाता है। उसको मिश्रण करनेके बाद, यह कोई कह नही सकता कि वह कैसे बना है। अगर बननेके बाद उसको हाथमें ले लो तो सुगधि निकलती है, दुर्गन्धि नही। इस तरहसे उसका परिवर्तन हो जाता है। जो भी घास-पत्ता और कूडा-कचरा होता है वह सब मिला लिया जाता है और इस तरह वह मुफ्तमे खाद बन जाता है। कचरेमेंसे करोड़ो रुपए कैसे निकल सकते है, यह इल्म लोगोको बतानेके लिए दो-तीन रोजके लिए ये कुछ लोग बैठ गए थे।

: १८४ :

२० दिसबर १९४७

भाइयो और बहनो,

बड़े दु.खकी बात है कि यहा (दिल्लीमें) फिर थोड़ेसे पैमानेपर दंगा शुरू हो गया है। अगर हम चाहते है कि सब मुसलमानोको यहासे जाना है तो फिर हमको साफ कह देना चाहिए, वह शराफत होगी या हकूमत कहे कि आप लोगोंका यहा रहना मुफीद[1] नही है? हम आपको थोडा-थोडा हलाक करके नही निकालना चाहते, लेकिन सचमुच तो आपको जाना ही है। मुझको तो इसका बडा दु.ख होता है।

क्या ही अच्छा हो अगर हम सब अच्छे हो जाय, शरीफ बन जाय और बहादुर हो जाय। वह तो एक डरपोकका काम हो जाता है कि जो यह कहे कि मुसलमान मेरे पास नही रह सकता। क्यो नही रह सकता? अगर वह खराब है तो उसको ठीक करना है—शराफतसे, मारपीटकर नही। इसलिए मुझको तो यह बड़ा चुभता है कि हम क्यो ऐसे बन गए कि जिससे मुसलमान यहा डरे और हिंदू तथा सिख पाकिस्तानमे डरे। और पीछे बड़ी-बडी बाते हम करे कि यहा सब लोग आरामसे रह सकते है। कहां आरामसे रह सकते है? मै तो हमारी हकूमतसे भी कहता हू कि अगर वह सच्ची बनना चाहती है तो ऐसा होना नही चाहिए। अपने सारे अफसरोंको साफ-साफ यह कह दे कि हमारे रहते हुए ऐसे नही बन सकता है। आखिर आप ही लोगोके तो हम नुमायदे है, क्योकि सरकारी अफसर भी तो मतदाता होते है। इसलिए अफसरोको क्या, फौजको क्या और पुलिसको क्या, सबको शराफतसे चलना है। अगर हम लोग शराफतसे चलेगे तो हमारी गाडी आगे चल सकती है, नही तो जो लगाम हमारे हाथमें आ गई है उसको हम छोड रहे है, इसका मुझको दु ख होता है। लेकिन आज तो मै वह बात नही करना चाहता था। मै तो आपको वह सुनाना चाहता हूं जो मैंने छोड़ रखी है।

---

[1] लाभदायक।

चरखा-संघकी जो बैठक हुई थी उसमें ग्राम-उद्योगसंबंधी बात मैंने अभीतक छोड़ रखी थी। थोडा-सा इशारा जरूर कर दिया था। चरखा तो ग्राम-उद्योगका मध्य-बिंदु है। अगर सात लाख गांवोमे चरखा न चले तो अन्य गृह-उद्योग भी नही चल सकते है। चरखा तो सूरज है और दूसरे जो उद्योग है वे ग्रह है, जो सूरजके इर्द-गिर्द घूमते है। उनको ग्रह भी इसलिए कहा गया कि वे सूरजके इर्द-गिर्द फिरते रहते हैं। अगर सूरज डूब जाय तो दूसरे ग्रह चल नही सकते, क्योकि वे सब सूरजपर ही आश्रित हैं, ऐसा दुनियामे बन गया है। लेकिन देहातका सूरज किसको कहे? हिंदुस्तानका सूरज तो वह चक्र है कि जो झडेमे मौजूद है, पीछे चाहे आप उसको सुदर्शन चक्र कहे या अशोक राजाका चक्र कहे। मेरी निगाहमें तो वह चरखेकी निशानी है। अगर वह देहातोमें चलता रहे तो अन्य ग्राम-उद्योग भी रुक नही सकते, लेकिन उसके चलते रहनेपर भी दूसरोको देखना तो है। अगर उनको सभाले ही नही और वे सब इर्द-गिर्द चलना छोड दे तो फिर जो सूरज है, वह भी बेहाल हो जायगा। जितने हमारे खगोल-शास्त्री कहे जाते है उन्होने यह नही देखा है और उन्होने देखा होगा तो मैं मूर्ख हू, जानता नही हू। लेकिन मै तो मानता हू कि अगर सब ग्रह डूब जाते है तो सूरजको भी डूबना है। यह मै शास्त्रीय तरीकेसे तो सिद्ध नही कर सकता हू, लेकिन यहा तो मैं सिद्ध कर सकता हू कि जो दूसरे इर्द-गिर्दके उद्योग न चले तो चरखा बेचारा अकेला क्या कर सकता है? दिल्लीके इर्द-गिर्द क्या थोड़े ग्राम पड़े है। अगर वे सब दिल्लीको आश्रय दे और उनको दिल्लीका आश्रय लेना है तो पीछे वह सब बहुत खूबसूरत काम बन जाता है और आपस-आपसकी लडाईका सारा झगडा भी मिट जाता है। आखिर देहातोमेंसे सब चीजे हमको चाहिए। आज तो वे चीजे आ नही सकती है। आप अगर न जानते हो तो जानना चाहिए कि दिल्लीमे बहुतसे कारीगर मुसलमान थे। वे चले गए। पानीपतमें देखो, कितने मुसलमान कबल वगैरा बनाते थे। आज तो वह धधा अस्त-व्यस्त हो गया। पीछे अगर हिंदू और सिख वहा गए तो देखा जायगा। लेकिन वे क्यो वहां जाए? वे कोई भूखे थोडे ही मरते है! हिंदूके पास जो पेशा है उसमेसे वह कमा लेता है और मुसलमानके पास जो पेशा है उसमे वह कमा लेता है। अगर तब

मुसलमान अपना काम छोड़कर यहांसे चले जाते है तो उसमें हिंदुस्तानका नुकसान ही होता है। इस लिहाजसे तो पाकिस्तान और हिंदुस्तान दोनों डूब रहे है। क्या वजह है कि हम काश्मीरमे लड़ते है? वहां जो बागी लोग आ गए है वे लड़े और फिर हम यहासे उसके लिए लश्कर भेज दें, वह तो एक वहशियाना बात मै समझता हू।

ग्राम-उद्योगकी बात तो एक बड़ी बुलद बात है। कल मैंने आपको बताया था कि मीरा बेन उस कामको कर रही है और उसमे तो हमारी हकूमतके लोगोंका भी हाथ है। वह खाद हम सब अपने घरोंमें बना सकते है। हम लोग जो मैला करते है वह और गोबर तथा और भी जो कूडा-कचरा जमा हो जाता है, वह सब मिला लें। वह इस खूबीसे मिल जाता है कि पीछे एक खूबसूरत और सुगधित खाद बन जाती है।

इसलिए ग्राम-उद्योग और चरखा-सघका जो काम है वह तभी चल सकता है जब करोड़ो आदमी उसमे मदद दे। अगर वे न दे तो वह काम बिल्कुल चल नही सकता। चार चीजें, जहातक मुझको याद है, अर्थात् चरखा-संघ, हरिजन-सेवक संघ, ग्राम-उद्योग सघ और तालीमी संघ—जो बनी है, वे चारोंकी चारों धनिकोके लिए नही, बल्कि गरीबोंके लिए है। सब लोगोंको इनके काममें हाथ बटाना है। अगर हाथ न बटाए तो वह काम चल नही सकता। अगर हम हिंदुस्तानमे पचायत राज्य या लोगोका राज्य चाहते है, तो सब लोगोको उस काममें मदद देनी है। वह कोई हवामेंसे तो आता नही है और न हिमालयसे चलकर आता है। वह तो यहांकी जनताके द्वारा ही हो सकता है। जनता एक तरहकी नीव है, जिसपर हम एक बहुत ऊचा मकान बना सकते है। अगर उसमे सब हाथ दे, तब तो खैर है और अगर न दे तो ठीक है। हम एक-दूसरेसे लड तो रहे ही है और नतीजा भी उसका वही आकर रहेगा जो यादव लोगोंका हुआ था। यदुवंशी तो कृष्ण भी हुए थे, लेकिन पीछे क्या हुआ कि सब लड़ते थे और दूसरोंको डराते रहते थे। शराब पीना, व्यभिचार करना और आपसमें लडना, उनका काम रह गया था। नतीजा यह हुआ कि वह उस चीजमे जो घासकी थी, खत्म हो गए। यादवस्थल उसको हम कहते है। वह नतीजा या तो हिंदुस्तानको आनेवाला है और अगर नही

आनेवाला है तो केवल इससे कि ये चार चीजे बनी है उनको हम करते रहे। तभी हम सब आरामसे रह सकते है।

: १८५ :

मौनवार, २२ दिसबर १६४७

(लिखित सदेश)

भाइयो और बहनो,

यहासे आठ-दस मीलके फासलेपर महरौलीमें कुतुबुद्दीन बखतियार चिश्तीकी दरगाह है। वह पवित्रतामें अजमेरकी दरगाहसे दूसरे नबरपर मानी जाती है। इन दरगाहोपर न सिर्फ मुसलमान जाते थे, बल्कि हजारों हिंदू और दूसरे गैर-मुस्लिम भी वहा पूजाभावसे जाया करते थे। पिछले सितबरमें यह दरगाह हिंदुओके गुस्सेका शिकार बनी। आस-पासमे रहनेवाले मुसलमान अपने ८०० साल पुराने घरोको छोडनेपर मजबूर हुए। इस किस्सेका जिक्र करनेका कारण इतना ही है कि दरगाहके प्रति प्रेम और वफादारी रखते हुए भी, वहां आज कोई मुसलमान नही है। हिंदुओ, सिखों, वहाके सरकारी अफसरो और हमारी सरकारका यह फर्ज है कि जल्दी-से-जल्दी पहलेकी तरह उस दरगाहको खोलकर, यह कलकका टीका धो डालें। यह चीज देहलीमें और देहलीके इर्द-गिर्दके मुसलमानोकी सब धार्मिक जगहोपर लागू होती है। वक्त आ गया है कि दोनो तरफकी सरकार सख्तीके साथ अपनी-अपनी अक्सरियत[1]के सामने यह साफ कर दे कि अब धार्मिक स्थलोका अपमान बर्दाश्त नही किया जायगा, चाहे वह स्थल छोटा हो और चाहे बडा। इन स्थलोका जो नुक्सान किया गया है, उसकी मरम्मत होनी चाहिए।

मुस्लिम लीगकी सभाने कराचीमे जो फैसला किया है उसे देखते हुए मुसलमान मुझे पूछते है कि जो लीगके मेबर है वे, जो सभा लखनऊमे मौलाना आजाद बुला रहे है, उसमें जावें या न जावे ? क्या मुस्लिम लीगके

---

[1] बहुसंख्यक।

मेंबरोंकी जो सभा मद्रासमें होनेवाली है, उसमें भी आवें? हर हालतमें यूनियनमें रहनेवाले मुस्लिम लीगके मेंबरोंका क्या रवैया[1] होना चाहिए? मेरे दिलमें कोई शक नहीं कि अगर उन्हें व्यक्तिगत या जाहिर निमंत्रण मिले, तो उन्हें लखनऊकी मीटिंगमें जाना चाहिए, और मद्रासकी मीटिंगमें भी। दोनों जगह उन्हें अपने विचार निर्भयतासे और खुली तरह जाहिर करने चाहिएं। अगर उन्होंने पिछले ३० सालमें हिंदुस्तानकी अहिंसाकी लड़ाईका अभ्यास किया है तो उन्हें इस बातसे घबराहट नहीं होनी चाहिए कि यूनियनमें वे अकलियतमें[2] हैं, और पाकिस्तानकी अक्सरियत उनकी कोई मदद नहीं कर सकती। यह चीज समझनेके लिए उन्हें अहिंसामें विश्वास रखनेकी जरूरत नहीं कि अकलियतको, चाहे वह कितनी ही छोटी क्यों न हो, अपनी इज्जत और इन्सानको जो भी प्रिय और निकट लगता है, वह सब कुछ, बचानेके लिए डर रखनेका कभी कारण नहीं रहा। इन्सान ऐसा बना है कि अगर वह अपने बनानेवालेको समझ ले और यह समझ ले कि मैं उसी भगवानका प्रतिबिंब हूं तो दुनियाकी कोई ताकत उसके स्वमानको छीन ही नहीं सकती। उसके स्वमानका हनन कोई कर सकता है तो वह खुद ही कर सकता है। जिन दिनों मैं ट्रांसवालकी जबर्दस्त हकूमतके साथ लड़ रहा था, मेरे एक प्रिय अंग्रेज मित्रने मुझे जोहांसवर्गमें कहा, "मैं हमेशा अकलियतका साथ देना पसंद करता हूं, क्योंकि अकलियत आम तौरपर कभी गलती नहीं करती है, और करती है तो उसे सुधारा जा सकता है। मगर अक्सरियतको सत्ताका मद होता है, इसलिए उसे सुधारना कठिन रहता है।" अगर अक्सरियतसे हथियारोंकी एकतरफा ताकतका भी मतलब हो तो इस दोस्तकी बात सही थी। हम अपने कड़वे अनुभवपरसे जानते हैं कि कैसे मुट्ठीभर अंग्रेज यहां हथियारोंकी ताकतसे अक्सरियत बने बैठे थे और सारे हिंदुस्तानको दबाए हुए थे। हिंदुस्तानके पास वे हथियार नहीं थे, और रहते भी तो हिंदुस्तानी उनका इस्तेमाल नहीं जानते थे। यह दुःखकी बात है कि हमारे मुल्कमें अंग्रेजोंकी हकूमतसे हिंदुओं और सिखोंने पाठ नहीं सीखा। यूनियनके मुसलमानोंको पश्चिममें और पूर्वमें अपनी

---

[1] तरीका; [2] अल्पसंख्यक।

अक्सरियतका झूठा घमड था। आज उस बोझसे मुक्त हो गए है। अगर वे अकलियतमे रहनेके गुणोको समझेगे तो वे अपने तरीकेसे इस्लामकी खूबियोका प्रदर्शन कर सकेगे। उन्हे याद रखना चाहिए कि इस्लामका अच्छे-से-अच्छा जमाना हजरत मुहम्मदके मक्केके दिनोमे था। कान्सटेनटेन-की शहनशाहीके वक्तसे मिस्री धर्मका अस्त होने लगा। इस दलीलको यहा लवा करना नही चाहता। मेरी सलाहका आधार मेरा पक्का अकीदा[1] है, इसलिए अगर मुस्लिम मित्रोंके मनमे इस चीजपर विश्वास नही है तो बेहतर होगा कि वे मेरी सलाहको फेक दे।

मेरी रायमे उन्हे काग्रेसमे आनेके लिए तैयार रहना चाहिए। मगर जबतक काग्रेसमे उनको हार्दिक स्वागत न मिले, और समानताका वर्ताव न मिले, तबतक वे काग्रेसमे भर्ती होनेकी अर्जी न करे। सिद्धातके तौरपर तो काग्रेसमे अक्सरियत और अकलियतका सवाल उठता ही नही। काग्रेसका कोई धर्म नही, एकमात्र मानवताका धर्म है। उसमे हरएक स्त्री-पुरुष समान है। काग्रेस एक शुद्ध राजनैतिक सस्था है, जिसमे सिख, हिंदू, मुसलमान, ईसाई, पारसी, यहूदी, सब बराबर है। काग्रेस हमेशा अपने कहनेपर अमल नही कर सकी। इससे कभी मुसलमानोको लगा है कि यह तो मुख्यत सवर्ण हिंदुओकी ही सस्था है। जो भी हो, जहातक खेचतान जारी है मुसलमान बाइज्जत अलग खड़े रहे। जब उनकी सेवाओकी काग्रेसको जरूरत होगी वे काग्रेसमे आ जावेगे। उस वक्त-तक जिस तरह मै काग्रेसका हू, वे काग्रेसके रहे। काग्रेसका चार आनेका मेबर न होते हुए भी काग्रेसमे मेरी हैसियत है, तो उसका कारण यह है कि जबसे १९१५ में मै दक्षिण अफ्रीकासे आया हू, मैने वफादारीसे काग्रेसकी सेवा की है। हरएक मुसलमान आजसे ऐसा कर सकता तो वे देखेगे कि उनकी सेवाओकी भी उतनी ही कदर होती है जितनी कि मेरी सेवाओकी।

आज हरएक मुसलमान लीगवाला और इसलिए कांग्रेसका दुश्मन समझा जाता है। बदकिस्मतीसे लीगका शिक्षण ही ऐसा रहा है। आज तो दुश्मनीका तनिक भी कारण रहा नही। कौमीवादके[2] जहरसे मुक्त

---

[1] विश्वास; [2] सांप्रदायिकता।

होनेके लिए चार महीनेका अर्सा बहुत छोटा अर्सा है। इस दुःखी देशका दुर्भाग्य देखिए कि हिंदुओं और सिखोंने जहरको अमृत समझ लिया और लीगी मुसलमानोंके दुश्मन बने। ईंटका जवाब पत्थरसे देकर उन्होंने कलंक-का टीका मोल लिया और मुसलमानोंके बराबर हो गए। मेरा मुसलमान अकलियतसे अनुरोध है कि वे इस जहरी वातावरणसे ऊपर उठें, अपने आदर्श वर्तावसे उनके बारेमें जो वहम भर गया है, उसे वे गलत सिद्ध करें और बता दें कि यूनियनमें इज्जत-आबरूसे रहनेका एक यही तरीका है कि वे मनमें किसी तरहकी चोरी न रखकर हिंदुस्तानके शहरी बनें।

इसमेंसे यह परिणाम निकलता है कि लीग राजनैतिक संस्थाके रूपमें नहीं रह सकती। इसी तरह हिंदू-महासभा, सिख-सभा और पारसी-सभा भी नहीं रह सकती। धार्मिक संस्थाओंके रूपमें वे भले रहें। तब उनका काम अंदरूनी सुधार होगा, धर्मकी अच्छी चीजें ढूंढ़ना और उनपर अमल करना होगा। तब वातावरणमेंसे जहर निकल जाएगा और ये संस्थाएं एक दूसरेके साथ भलाई करनेमें मुकाबला करेंगी। वे एक दूसरे-के प्रति मित्रभाव रखेंगी और हकूमतकी मदद करेंगी। उनकी राजनैतिक महात्वाकांक्षाएं तो कांग्रेसके ही द्वारा पूर्ण हो सकती हैं, चाहे वे कांग्रेसमें हों या न हों। जब कांग्रेस, जो कांग्रेसमें है उन्हीका विचार करेगी, तो उसका क्षेत्र बहुत संकुचित हो जायगा। कांग्रेसमें तो आज भी बहुत कम लोग हैं। कांग्रेसकी आज कोई बराबरी नहीं कर सकता तो उसका कारण यह है कि वह सारे हिंदुस्तानकी नुमायंदगीका प्रयत्न कर रही है। वह गरीब-से गरीब, दलित-से-दलितकी सेवाको अपना ध्येय बनाए हुए है।

: १८६ :

२३ दिसंबर १९४७

भाइयो और बहनो,

आज तो मैंने विचार कर लिया है कि तीन चीज कहूंगा। एक

चीज तो यह है कि कल आपने देखा होगा कि यहां बहावलपुरके लोग आ गए थे। बड़े परेशान हैं। उन लोगोने बताया कि वहा जितने हिंदू और सिख हैं उन सबको बुला लेना चाहिए, नहीं तो उनकी जान खतरेमे हैं। आज वहासे दो भाई भी आ गए थे। उन लोगोने भी यही बात बताई। उन लोगोने कहा कि अगर कुछ नही होता है तो गवर्नर-जनरलके घरके सामने जाकर भूख-हडताल करेंगे। तो मैने कहा कि वहां भूख-हड़ताल करनेसे न तो आ सकते है और न बच सकते है और गवर्नर-जनरल तो अब नामके रह गए हैं। दस्तखत कर देते हैं, उनके पास तो आज सत्ता है नही। वे तो आज जैसे आप हैं वैसे हैं। अपने बलसे ऐसा कहो कि हमारे बलसे खड़े हैं। हमारे प्रधान हैं, हमारे बलपर खड़े हैं। तो सोचोगे कि पडित नेहरू या सरदारके घरके सामने भूख-हडताल करे, यह भी अज्ञानता है। उनमे एक-दो डाक्टर थे। वे समझ गए, इसलिए हड़ताल नही की। कल तो मेरी खामोशी थी, इसलिए कुछ नहीं कह सका। बहावलपुरके नवाबको चाहिए कि वे सब हिंदू सिखको जहां वे जाना चाहते हैं, भेज दे, नही तो उनके धर्मका पतन हो जायगा। नवाब साहबके होते हुए क्या हुआ, वह क्या बताऊं? वह काफी खतरनाक बात है। वहा काफी हिंदू, सिख मारे गए और परेशान भी हुए। सिखोने तो बहावलपुरको बनाया है—वे बहादुर हैं, वे लड़ सकते हैं, किसानका काम कर सकते हैं और वे वहां किसान बनकर रहते हैं, खाते-कमाते हैं। वैसे ही हिंदू भी हैं। आलसी बनकर बैठे हैं, ऐसे थोडे हैं। उन्होंने कोई गुनाह तो किया नही गुनाह इतना ही है कि वे हिंदू है या सिख हैं। बिना गुनाहके काफी हिंदू और सिखोको मार डाला और बाकी भाग गए। जब हिंदू और सिख वहां आरामसे रह नही सकते तो नवाब साहब कुछ भी कहे तो उससे क्या! मैं तो कहूगा कि नवाब साहब अपने धर्मका पालन करें, इसीमे उनकी शोभा है। अगर वे वहां उन लोगोको इज्जतसे रख नही सकते तो उनको चाहिए कि वे प्रबध कर उन लोगोको भेज दें, नहीं तो उन्हे ऐलान कर देना चाहिए कि वहा जितने हिंदू, सिख पडे हैं उनके बालको भी कोई छूनेवाला नही है। वे आरामसे पडे रह सकते हैं और अगर भूखो मरते हैं तो उनकी रोटीका प्रबध कर दिया जाय।

जो पागलपन हो गया वह हो गया। वैसा पागलपन तो हिंदुस्तान और पाकिस्तान दोनोंमें हो गया। उस पागलपनको अब छोड़ दें और शराफतसे काम करें।

दूसरी बात जो कहना चाहता हूं वह आजके 'स्टेट्समैन' में है। वह यह कि लाहौरमें जो शिविर पड़े हैं—उसमें तो दुःखी लोग हैं, वहां तो मुसलमान पड़े हैं—वे बहुत गंदे हैं, वहां हैजा हो रहा है, शीतला निकल रही है और काफी लोग ऐसे हैं जिनको कुछ हुआ तो नहीं है, लेकिन ठंडमें पड़े रहते हैं। कुछ लोग ठंडके कारण भी मरते हैं, क्योंकि बाहर पड़े रहते हैं। बाहर रहें तो रहें, लेकिन आकाशके नीचे कैसे रह सकते हैं? पानीसे बचनेको कुछ रहना चाहिए, तन ढकनेको चाहिए और रोटी भी चाहिए। ये न रहें तो मरनेका चारा हो गया। बाकी मैं नहीं जानता कि वहां क्या-क्या हो रहा है। हां, ऐसा भी है कि वहां स्यालकोटसे भंगी बुलाए गए हैं, जो शिविरोंकी सफाईका काम करेंगे, मैला उठाएंगे। वहांके अफसर कहते हैं कि वहां उनसे पूरा-पूरा काम होता नहीं है—मैं तो जानता नहीं हूं कि क्या है, लेकिन मैं इतना कहूंगा कि परेशानीमें पड़े हैं। वे लोग पाकिस्तानमें हैं तो क्या हुआ, मुसलमान हैं तो क्या हुआ, इन्सान ऐसे क्यों बनें, मुझे इसका दुःख होता है। हमारी ज्यादतीके कारण वे लोग यहांसे जान बचाकर भागे, यहांसे घर-बार छोड़कर चले गए। वहां उनका घरबार तो है नहीं तो तकलीफ तो होगी ही; लेकिन यह क्या बात है कि वे अपनी सफाईतक न रख सकें। मैं तो हर दुःखीको—वहां पड़े हैं उनको, और यहां पड़े हैं उनको, सबको—कहूंगा कि उन्हें ऐसा कहना नहीं चाहिए कि हमें खाना बनानेवाले दो, झाड़ू करनेवाले दो, मैला उठानेवाले दो। जब घर छोड़कर भाग गए तो ऐसी मांग क्यों करनी चाहिए। वे तो करोड़पतिके लिए हैं। वह चाहे तो एक आदमीके बदले दस आदमी रख सकता है, लेकिन सब कैसे रख सकते हैं? मैं तो कहूंगा कि यह हमारे गिरनेके लक्षण हैं। उनको दृढ़तासे, हिम्मतसे कहना चाहिए कि हम स्यालकोटसे भंगी नहीं बुलाएंगे और अपने शिविरको हमें ही साफ रखना है। पाकिस्तानके अफसर और वहांकी हकूमतको भी कहना चाहिए कि हम आपके लिए स्यालकोटसे झाड़ू देनेवाले नहीं बुलाएंगे। इन्सानसे जितना हो सकता है उतना तो करें। उसके बाद

मरे वह बात दूसरी है, लेकिन नही करते है तो गुनाह इन्सानका है और इन्सानपर खूनका बोझ पडनेवाला है । मै पहले भी कह चुका हू और अब भी कहता हू कि शरणार्थियोको शराफतसे रहना चाहिए । उन्हे चाहिए कि उनसे जितना काम हो सकता है, करे, किसीपर बोझ नही होना चाहिए । पजाबका नमूना देकर सबको कहूगा कि सफाईका काम खुद करना चाहिए । काम करनेमे कोई शर्म नही है ।

एक बात और कहूगा । वह अच्छी बात है । आपको मैने एक वक्त शायद सुनाया तो था कि प्यारेलाल यहा आ गए है । आप लोग तो जानते ही है कि वे कौन है । वे तो मेरा मत्रीका काम करते है—वे बहुत दिनोसे नोआखालीमें काम करते थे । उनके साथ और लोग भी थे—वे सब-के-सब जानपर खेल रहे थे, उससे वहा जितने हिंदू कष्टमे थे उन सबको सहारा मिल गया और मुसलमान भी समझ गए कि वे हमारे दोस्त है, सेवक है, मारने-पीटने नही आए है, वे तो दोनोके बीचमे, अगर हो सके तो मेल कराने आए है । वे कहते है कि वहाकी एक चीज जानने लायक है, ऐसी तो कई चीज है; लेकिन यह एक बडी चीज है । वहा किसी मदिरको मुसलमानोने तोड दिया था और उसपर लोगोने अधिकार कर लिया था । तो यह तो झगडेकी बात हो गई । पीछे उन मुसलमानोने कहा कि हम हिंदुओंके साथ मिल-जुलकर रहनेवाले है, लेकिन जब हिंदू मदिरको नही जा सकते, पूजा नही कर सकते तो यह जचनेवाली बात नही हुई । वह सब तो दुबारा सुनाऊगा, क्योकि अब वक्त हो रहा है । पीछे मुसलमानोने कहा कि वे अपने मदिरोमे जा सकते है, पूजा कर सकते है, हम भी जाकर उनके साथ पूजा करेंगे तो प्यारेलालने कहा कि क्या करोगे, मदिर तो है नही, मदिर तो होना चाहिए, तो उन लोगोने कबूल कर लिया कि ठीक है और मेहनत कर मदिर बना दिया और कहा कि आप लोग आरामसे रह सकते है, पूजा कर सकते है, रामधुन चला सकते है । वहा प्रतिष्ठा हो गई । इस तरहसे अब सब बड़े आरामसे रहते है । अमलदारोने भी इसमें हिस्सा लिया । वह अच्छी चीज है । अगर सारे हिंदुस्तान और पाकिस्तानमे ऐसा हो जाय तो हमारी शक्ल बदल जाती है । अगर हम अपने धर्मपर कायम रहे और दूसरोके धर्ममे दखल न दे तो हमारा सब काम हो सकता है ।

: १८७ :

२४ दिसबर १९४७

भाइयो और बहनो,

मेरे पास हमेशा सिख भाई आते रहते है। मै अखबारोमेसे थोडा पढ लेता हू, मिलने आनेवाले लोग भी मुझे सुनाते रहते है। वे लोग कहते है कि मै तो सिखोका दुश्मन बन गया हू। उन्होने इसकी परवा न की होती, अगर मेरी बात हिंदुस्तानके बाहर कुछ-न-कुछ वजन न रखती। दुनिया मानती है कि हिंदने अहिंसाके, शातिके जरिये आजादी ली है। अगर ऐसा ही होता तो मुझे बहुत अच्छा लगता। मगर पगु और नामर्दोसे अहिंसा चल नही सकती। यह पगुपन और गूगापन शारीरिक नही। शरीरसे पगु बननेवाले तो ईश्वरकी मददसे अहिंसापर खड़े रह सकते है। एक बच्चा भी अहिंसापर खडा रह सकता है—जैसे प्रह्लाद। ऐसा हुआ या नही, मै नही जानता, पर कहानी बन गई है कि प्रह्लादने अपने पिताको साफ कह दिया था कि मेरी कलमसे रामके सिवा कुछ निकलेगा ही नही। मेरे सामने १२ बरसका बच्चा प्रह्लाद आज भी खड़ा है। मगर जो आदमी आत्मासे लूला है, पगु है, अधा है, वह अहिंसाको समझ नही सकता। अहिंसाका पालन कर नही सकता। मैने गलतीसे यह सोच लिया था कि हिंदुस्तानकी आजादीकी लडाई अहिंसक लडाई थी। लेकिन पिछली घटनाओने मेरी आखे खोल दी है कि हमारी अहिंसा असलमें कमजोरोका मद विरोध था। अगर हिंदुस्तानके लोग सचमुच बहादुरीसे अहिंसाका पालन करते, तो वे इतनी हिंसा कभी नही करते।

सिख भाइयोके गुस्सेपर मुझे हँसी आती है। सिखों और हिंदुओमे मै फर्क नही समझता। गुरु ग्रथसाहब मैने पढा है। सिख कहते है कि मै गुरु गोविंदसिहके बारेमे क्या समझू? अगर मै इस दिशामे अज्ञान होता, तो उनके बारेमें मैने जो लिखा है वह नही लिख सकता था। मै किसीका दुश्मन नही हू। उन्हे समझना चाहिए कि जब मै सिखोकी शराबखोरी या जुआ खेलनेकी बात करता हू, तो वह सारे सिखोपर लागू नही होती। हिंदुओमें भी ऐसे बहुत लोग पड़े है। मगर जहा सिखोकी

तलवार नहीं चलनी चाहिए, वहां चलती है यह बुरी बात है। बुरा बर-ताव करनेवाला कोई भी क्यो न हो, वह ईश्वरके सामने गुनाह करता है।

आज २४ दिसबर है, कल २५। क्रिस्मस[1] ईसाइयोके लिए वैसा ही त्योहार है, जैसी हमारे लिए दीवाली। न दीवाली नाचरगके लिए हो सकती और न क्रिस्मस। जीसस क्राइस्टके नामसे यह चीज बनी है। इस मौकेपर सारे ईसाई भाइयोको मै बधाई देता हूं और आशा करता हू कि वे अपने जीवनमे जीसस क्राइस्टके उपदेशोंपर अमल करेगे। मै नही चाहता कि कोई हिंदू, मुसलमान या सिख यह चाहे कि हिंदुस्तानके थोडेसे ईसाई बरबाद हो जाय या अपना धर्म बदल डाले। 'धर्म-पलटा' शब्द मेरी डिक्शनरी[2]मे ही नही है। मै चाहता हू कि हर ईसाई अच्छा ईसाई बने। हर हिंदू अच्छा हिंदू बने। वह हिंदू-धर्मकी मर्यादा और सयमका पालन करे और उसमे जो तपश्चर्या बताई गई है, उसे अपने सामने रखकर जीवन व्यतीत करे। उसी तरह मै चाहता हू कि एक मुसलमान अच्छा मुसलमान बने और सिख अच्छा सिख बने। पाजी हिंदू अगर मुसलमान बने, तो वह अच्छा मुसलमान हो नही सकता। अगर मै अच्छा हिंदू बनता हू और ईसाईको अच्छा ईसाई बननेकी प्रेरणा देता हूं, तो मै अपने धर्मका प्रचार करता हू।

ईसाई लोग जीसस[3]के धर्मपर कायम रहे। दुनियामें धर्मकी वृद्धि हो। मैने अखबारोमे देखा है कि चूकि अब ईसाई धर्म या दूसरे किसी धर्मको राजसे पैसेकी मदद नही मिलनेवाली है, बाहरसे भी बहुत पैसे नही आने-वाले है, इसलिए हिंदुस्तानके ७५फी सदी गिरजे बद हो जायगे। हमारे यहाके ज्यादातर ईसाई गरीब है। उनके पास पैसे नही है। मगर पैसेसे धर्म नही चलता। ईसाइयोको खुश होना चाहिए कि पैसेकी यह बला दूर हुई। हजरत उमरके घर एक बार बहुत-सा इनामइकराम आ गया। वह बहुत गभीर होकर अपनी बीबीसे कहने लगे कि यह बला आ गई है। पता नही, अब मै अपने धर्मपर कायम रह सकूगा या नही। भगवान तो हमारे पास पड़ा है, उसे हम पहचानें। सबसे बड़ा गिरजाघर है ऊपर आकाश और

---

[1] बड़ा दिन; [2] कोष; [3] ईसा।

नीचे धरती माता। खुलेमे क्या मैं भगवानका नाम नही ले सकता ? भगवानकी पूजाके लिए न सोना चाहिए न चांदी। अपने धर्मका पालन हम खुद ही कर सकते हैं, और खुद ही उसका हनन कर सकते हैं।

: १८८ :

२५ दिसंबर १९४७

भाइयो और बहनो,

काश्मीरमें जो कुछ हो रहा है, उसके बारेमे थोड़ा बहुत मुझे और आपको मालूम है। एक चीजकी तरफ मैं आपका ध्यान खींचना चाहता हूं। अखबारोमे आ गया है कि यूनियन और पाकिस्तान काश्मीर-के बारेमे फैसला करनेका किसीको निमन्त्रण दें। यह पंच नियुक्त करनेकी बात हुई ? कहांतक ऐसा चलेगा कि पाकिस्तान और यूनियन आपसमे फैसला कर ही नही सकते ? कहातक हम आपसमे लड़ते रहेंगे ? दोनो काश्मीर और जम्मू एक हैं। वहां मुसलमानोकी अधिकता है। काश्मीरके दो टुकड़े करे, तो यह टुकड़े करनेकी बात कहां जाकर रुकेगी ? हिंदुस्तानके दो टुकड़े हुए, इतना बस है, बससे ज्यादा है। हिंदुस्तानको ईश्वरने एक बनाया, उसके टुकड़े मनुष्य कैसे कर सकता था ? पर वह हुआ। लीग और कांग्रेस अलग-अलग कारणोंसे उसमें राजी हुईं। आज काश्मीरके टुकड़े करे तो दूसरी रियासतोंके क्यों नही ?

काश्मीरमे झगड़ा क्यों हुआ ? कहा जाता है कि हमला करनेवाले डाकू है, लुटेरे हैं, वे बाहरसे आते हैं, रेडर्स[1] है। मगर जैसे-जैसे वक्त बीतता है, वैसे-वैसे पता चलता है कि ऐसा नही है। उर्दूके कुछ अखबार यहां आ जाते हैं। मैं थोड़ा-बहुत खुद पढ़ सकता हू। कुछ मुझे आसपास वाले सुना देते है। आज 'जमींदार' नामके अखबारमेंसे मुझे थोड़ा सुनाया गया। 'जमींदार'के एडीटर[2]को मैं पहचानता हूं। उनकी जबानपर कभी लगाम

---

[1] आक्रमणकारी; [2] सम्पादक।

नही रही । अब तो उन्होने खुल्लमखुल्ला निमत्रण दिया है कि सब मुसलमान काश्मीरपर हमला करनेके लिए भर्ती हो। डोगरोको, सिखोको, सबको उन्होने गालिया दी है। काश्मीरकी लडाईको जिहाद[1] कहा है। मगर जिहादमे तो मर्यादा होती है—सयम होता है। यहा तो कुछ भी नही है। जो कुछ चल रहा है, वह होना नही चाहिए। क्या वह यह चाहते है कि हिंदू, सिख और मुसलमान हमेशा अलग ही रहे? मुसलमान अगर हिंदुओ और सिखोको मारे-काटे, फिर भी हमारा धर्म क्या है? यह मै आपको रोज बतलाता हू। हिंदू और सिख कभी बदला न ले।

सीधी बात यह है कि काश्मीरपर पाकिस्तानकी ही चढाई है। हिंदुस्तानका लश्कर वहा गया हुआ है, मगर चढ़ाई करनेको नही। वह महाराजा और शेख अब्दुल्लाके बुलानेपर वहा गया है। काश्मीरके सच्चे महाराजा शेख अब्दुल्ला है। हजारो मुसलमान उनपर फिदा है।

अपना गुनाह हरएकको कबूल कर लेना चाहिए। जम्मूके सिखो और हिंदुओने या बाहरसे आए हुए हिंदुओ और सिखोने वहा मुसलमानोको काटा। काश्मीरके महाराजा इग्लैडके राजाकी तरह नही है। उनकी रियासतमे जो भी बुरा-भला होता है, उसकी जिम्मेदारी उनके सिरपर है। वहा काफी मुसलमान कतल किए गए, काफी लडकिया उडाई गई। शेख अब्दुल्ला साहबने बचानेकी कोशिश की। जम्मूमे जाकर उन्होने बहस की, लोगोको समझाया। काश्मीरके महाराजाने अगर गुनाह किया है तो उन्हे या जिस किसीने गुनाह किया है, उसे हटानेकी बात मै समझता हू। पर काश्मीरके मुसलमानोने क्या गुनाह किया है कि उनपर हमला होता है?

पाकिस्तानकी हकूमतसे मै अदबसे कहना चाहता हू कि आप कहते है कि इस्लामकी सबसे बडी ताकत पाकिस्तान है। मगर आपको उसका फख्र तभी हो सकता है, जब आपके यहा एक-एक हिंदू-सिखको इन्साफ मिले। पाकिस्तान और हिंदुस्तानको आपसमे बैठकर फैसला करना चाहिए, लेकिन तीसरी ताकतके मार्फत नही। दोनो तरफके प्रधान

---

[1] मजहबी लड़ाई।

बैठकर बातें करें। महाराजा अपने आप समझकर अलग बैठ जायं और लोगोंको फैसला करने दें। शेख अब्दुल्ला तो उसमें होंगे ही। मगर महाराजा समझ लें और कह दें कि यह हकूमत मेरी नही, काश्मीरके लोगोंकी है। यहांके लोग जो चाहें, सो करें। काश्मीर, काश्मीरके मुसलमानों, हिंदुओं और सिखोंका है, मेरा नहीं। महाराजा और उनके प्रधान अलग हो जाते हैं, तो शेख साहब और उनकी आरजी हकूमत रह जाती है। सब बैठकर आपस-आपसमें फैसला करें। उसमे सबका भला है। यूनियन सरकारने काश्मीरकी मदद की तो वहांकी प्रजाके खातिर; महाराजाके खातिर नहीं। कांग्रेस प्रजाके विरुद्ध किसी राजाका पक्ष नहीं ले सकती। राजाओंको प्रजाका ट्रस्टी बनकर रहना है, तभी वे रह सकते हैं।

एक उर्दू मैगजीन[1] में आज मैंने एक शेर देखा। वह मुझे चुभा। उसमें कहा है—'आज तो सबकी जबानपर सोमनाथ है। जूनागढ़ वगैराका बदला लेनेके लिए गजनीसे किसी नए गजनवीको आना होगा।' यह बहुत बुरा है। यूनियनके किसी मुसलमानकी कलमसे ऐसी चीज नही निकलनी चाहिए। एक तरफसे मित्रभाव और वफादारीकी बातें और दूसरी तरफसे यह! मैं तो यहां यूनियनके मुसलमानोंकी हिफाजतके लिए जीवनकी बाजी लगाकर बैठा हूं। मै तो यही करूंगा, क्योकि मुझे बुराईका बदला भलाईसे देना है। आप लोगोंको यह सुनाया, ताकि आप ऐसी चीजोंसे बहक न जावें। गजनवीने जो किया था, बहुत बुरा किया था। इस्लाममे जो बुराइयां हुई हैं, उन्हें मुसलमानोंको समझना और कबूल करना चाहिए। काश्मीर, पटियाला वगैराके हिंदू-सिख राजाओंको उनके यहां जो बुराई हुई हो उसे कबूल कर लेना चाहिए, उसमें कोई शर्म नही। गुनाह कबूल करनेसे वह हलका होता है। यूनियनमें बैठकर मुसलमान अगर अपने लड़कोंको सिखावें कि गजनवीको आना है, तो उसका मतलब यह हुआ कि हिंदुस्तानको और हिंदुओंको खा जाओ। इसे कोई बर्दाश्त करनेवाला नहीं। दोनों आपसमें मिलकर चाहे कुछ भी कर लें। अगर यह शरारतभरा शेर एक महत्वपूर्ण मैगजीनमें न छपा होता, तो मैं उसका जिक्र भी न करता।

---

[1] अखबार।

: १८६ :

२६ दिसबर १९४७

भाइयो और वहनो,

आज मैं आपको यहाके तिविया कॉलेजके वारेमें एक वात सुनाना चाहता हू। इस कॉलेजके जन्मदाता हकीम अजमलखां थे। आज कमनसीवीसे हम मुसलमानोको दुश्मन मानकर बैठ गए हैं। मगर जब तिविया कॉलेज बना था, तब ऐसा नही था। हिंदू राजाओ और मुसलमान नवावोने और हिंदू-मुस्लिम जनताने उसके लिए पैसा दिया था। हकीम साहब बडे तवीव (डॉक्टर) थे। वह इस कालेजको चलाते थे। इसका एक ट्रस्ट भी वना था। ट्रस्टमे हिंदू और मुसलमान दोनो थे। डॉ० अन्सारी भी उसके ट्रस्टियोमे थे। आज कुछ हिंदू सज्जन मेरे पास आए थे। उन्होने पूछा कि तिविया कॉलेजका क्या होगा? अगर तिविया कॉलेज बद हो, तो मैं समझता हू कि हमारे लिए बहुत दु.ख और शर्मकी वात होगी। आज तो वह वद पड़ा है। कॉलेज करोलवागमे है। हमने वहुतसे मुसलमानोको अपने पाजीपनसे भगा दिया। मगर दिल्लीमे आज मुसलमान कहा रह सकते है और कहा नही रह सकते, यह वड़ा प्रश्न है। दूसरोको मिटानेकी चेष्टा करनेवालोको खुद मिटना होगा। यह जीवनका कानून है। यह अपने आपको और अपने धर्मको मिटानेकी वात है।

दूसरी वात जो मैं कहना चाहता हू, वह पहले कह चुका हू। मगर वह वार-वार कही जा सकती है। हजारो हिंदू और सिख लडकियोंको मुसलमान भगा ले गए है। मुसलमान लडकियोको हिंदुओ और सिखोने भगाया है। वे सव कहा है? उनका पता भी नही है। लाहौरमे सवने मिलकर यह फैसला किया था कि सारी भगाई हुई हिंदू, सिख और मुसलमान औरतोको निकाला जाय। मेरे पास पटियाला और काश्मीरसे भगाई हुई मुसलमान लड़कियोकी एक लवी लिस्ट[1] आई है। उनमेसे कई अच्छे और मशहूर घरोकी लड़कियां हैं। अगर वे लडकिया मिले तो उन्हे वापस

---

[1] सूची।

लेनेमे कोई कठिनाई नही होगी। लेकिन हमारे हिंदू लोग खोई हुई हिंदू और सिख लड़कियोको आदरसे वापिस लेगे या नही, यह वड़ा प्रश्न है। अगर उनके साथ किसीने निकाह भी कर लिया, उन्होंने इस्लाम भी कबूल कर लिया, तो भी मेरे विचारसे वे मुसलमान नही हुई। उन्हें मैं आदरसे अपने पास रखूगा। उनकी जो संतान होगी उसे भी आदरसे रखूगा। वे दिलसे तो नही विगडी। अगर वे दुष्टोके पजेमे फंस गईं तो मेरे मनमें उनके प्रति घृणा नही हो सकती, रहम ही हो सकता है। समाजको उन्हे वापस ग्रहण करना ही चाहिए। अगर उन्हे आदरसे वापस नही लेना हो तो उन्हे लोगोंके घरोसे निकालनेकी चेष्टा ही क्यों की जाय ? किसी लपटने उनपर जवरदस्ती की और उन्हे हमल[1] रह गया, तो क्या उन्हे मैं ठुकरा दूं ? नही, उन्हे मैं अपनी गोदमे विठाऊंगा।

ऐसी जो लडकियां हिंदू थी, वे हिंदू रहेगी, और जो सिख थी वे सिख रहेगी। बच्चोका धर्म माका ही धर्म रहेगा, बडे होकर वे स्वेच्छासे भले किसी धर्ममे चले जाय। सुनता हू कि कई लडकियां आज कहती है कि हम वापस नही जाना चाहती। क्योकि उन्हे डर है कि उनके मां-बाप या पति उनकी तौहीन[2] करेगे। जिन लड़कियोके रिश्तेदार है, उन्हे ऐसी लड़कियोंको आदरपूर्वक वापिस लेना चाहिए। जिनका कोई नही है, उन्हे हम कोई धधा सिखा दे, ताकि वे अपने पाँवोपर खड़ी रह सके। मेरे पास ऐसी कोई लडकी आ जायगी तो उसे मैं लाकर आपके सामने यहां विठाऊगा। जैसा इन लडकियोका आदर है, वैसा ही उसका भी होगा। वह मेरी गोदमे बैठेगी। अगर मै बेरहम बन जाऊं, तो मै हिंदू नही रह जाऊगा। गुडा मुसलमान हो या हिंदू, वह बुरा है। मुसलमान लडकियोको हमें वापिस करना चाहिए और पचके सामने अपने गुनाहका प्रायश्चित्त करना चाहिए। यह लिस्ट देखकर मैं काप उठता हू। जम्मूमे भी यही हुआ। मर्दो और बूढी औरतोको मार डाला और जवान लड़कियोको उठा ले गए। मै नही जानता कि वे कहां है। अगर मेरी आवाज वहातक पहुच सकती हो, तो मेरा उन लोगोसे अनुरोध है कि उन सब लड़कियोंको वे लौटा दे।

---

[1] गर्भ; [2] अनादर।

कहते है कि काफी हिंदू और सिख लडकिया किसी पीरके यहां पड़ी है। वे कहते हैं कि उन्हे किसी तरहका नुकसान नहीं पहुचाया जायगा। मगर हम उन्हे तवतक वापिस नही करेंगे, जवतक हमारी मुसलमान लडकिया वापिस नही आएगी। लेकिन ऐसी चीजोमे सौदा क्या? हमे दोनो तरफसे सव लड़किया अपने-आप लौटा देनी चाहिए। वही आराम और शराफतसे रहनेका रास्ता है, नही तो हमारा मुल्क ४० करोड़ गुडोका मुल्क वन जायगा।

: १६० :

२७ दिसबर १९४७

भाइयो और वहनो,

मुझे वडा हर्ष होता है कि मै आज इस देहात[1]मे प्रार्थना कर रहा हू। लेकिन आप मुझे प्रार्थनामे यहां धन्यवाद करते है या मान-पत्र देते हैं या हार पहनाते है, ऐसा होना नही चाहिए। प्रार्थना करना तो हमारा धर्म है। प्रार्थना तो जब प्रात काल हम उठते हैं तभी करते है। अगर हम नियमित रूपसे प्रार्थना करे तो फजर[2] और शाम को करे। शामको पाच वजे अगर हो सके तो मिलकर करे, लेकिन जाड़ेके दिनोमे जितनी जल्दी कर सके, अच्छा है। सोते है तव, और उठते है तव, ईश्वरकी याद करें। वीचमे जव काम करते है तव ईश्वरका काम करे, स्वार्थका काम न करे, सेवा करे। प्रार्थनामे क्या भरा है यह मै आज नही समझा सकता; क्योकि मेरे पास इतना समय नही है।

मैंने जव कह दिया कि मान-पत्र नही चाहिए, हार नही चाहिए तो भी आप लोगोने दिया तो मैं इसके लिए आभारी हूं। आपने मान-पत्र-मे सत्य और अहिंसाका जो उल्लेख किया है वह वहुत भारी चीज है। अगर हमारे आचार-विचार ऐसे नही है तो हम नाम लेनेसे घातक वनते

---

[1] दिल्लीसे बारह मील दूर सिंभालका नामक गांवमें; [2] सुवह।

हैं। मै तो ऐसा धोखा दे नही सकता हूं। जबसे मै दक्षिण अफ्रीकासे हिंदुस्तान आया हूं तबसे मैं हिंदुस्तानका भ्रमण कर रहा हूं। एक दफा नही, कई दफा सारे हिंदुस्तानका मैंने भ्रमण किया है, हजारों देहातोंको देखा है। लोग ऐसी बातें कह तो देते है, लेकिन करते नही है। उनको मानते है या नही, उसकी परवाह नही करते। हम ऐसा कभी न करे। खयाल एक चीजका करें, उच्चारण दूसरेका और आचरण तीसरी चीजका करें तो बात बनती नही है। हिंदुस्तानमे आपस-आपसमे हिंदू, सिख और मुसलमान एक दूसरेको काटें, गाली दे, हटा दे तो हमारे लिए शर्मकी बात है। दैवयोगसे आपके यहां झगड़ा नही है, क्योंकि मुसलमानोंकी ज्यादा आबादी नही है। अगर है तो थोड़ी-सी। तो वे बेचारे क्या करनेवाले है ? अगर मै जान लेता कि यहां कितने है तो अच्छा होता और कुछ ज्यादा सुना सकता था। अगर हम आपस-आपसमे दुश्मनी करते हैं तो अहिंसा छोड़ दें। हम कम-से-कम इतने सच्चे तो हो जायं। अगर हम ऐसा नही करते हैं तो वह दुःखकी बात है। हम आजाद हुए हैं तो एक दूसरेको काटनेके वास्ते नही। आजादीके माने यह है कि हम बिना किसी दबावके धर्मका पालन करें—धर्मकी आजादी मिली है, अधर्मकी नही। ईश्वरसे कोई ऐसी प्रार्थना थोड़े करता है कि हमको झूठ बोलने दे। अगर हम ऐसा करते है तो हम शैतानकी बंदगी करते है, उसके पंजेमें पड़ते हैं और गुलाम बन जाते हैं।

आप लोगोंने पचायत बनाई है तो अच्छा किया, इसके लिए मुबारकबाद देता हूं। लेकिन अगर पंचायतका काम नही किया तो मैं कहूंगा कि पंचायतका नाम किया, लेकिन काम नही किया। आपकी पंचायत सच्चे मानेमे पंचायत नही है। पहले हिंदुस्तानमें सच्ची पचायत थी—आपने तथा मैंने वह देखी नही है; लेकिन चीन और यूनानसे जो लोग हिंदुस्तान आए वे सब कहते हैं। उनकी किसीने खुशामद नही की, उनको किसीने पैसा नही दिया, उनको किसीने बुलाया भी नही। वे खुद बड़ी तकलीफ उठाकर आ गए—वे ज्ञान पाने आए, तो वे लिखते है कि हिंदुस्तानमें कही चोरी देखनेमें नही आई, किसी जगह ताला-कुंजी नही देखा, यह कोई हजारों वर्षकी बात नही है। हजारों वर्षका इतिहास कहां है ?

वह तो रामायण-महाभारतसे निकलता है, लेकिन किसीने देखा नही है—वह कहातक ठीक है यह मै नही कह सकता। एक-दो हजार वर्षकी बात इतिहाससे पता चलती है; लेकिन आज हम उस ढगसे नही रहते, जैसे एक-दो हजार वर्ष पहले रहते थे।

पहले चार वर्ण थे। मै उनके वर्णनमे नही जाना चाहता हू। आज तो कितने ही वर्ण हो गए है। उनको वर्ण कहना अनर्थ हो जाता है। आज आपने पचायत कर ली तो आपने कितनी जिम्मेदारी ले ली। गाय आज इतना कम दूध देती है कि कई लोग कहते है कि उनको काट डालो। मुसलमान तो काटते है, लेकिन हिंदू जितनी गाए काटते है उतनी गाए जगतमें कोई नही काटता। हिंदू अच्छी तरहसे रखते ही नही, किस तरहपर गाए रखनी चाहिए, यह जानते ही नही। यह तो आहिस्ता-आहिस्ता काटनेकी बात हो गई। इससे अच्छा तो जल्दीसे काट दे तो वे खत्म हो जाय। हम उनकी पूजा तो करते है, लेकिन कष्ट इतना देते है जितना दुनिया-मे कही नही दिया जाता। आज अगर एक गाय तीन सेर दूध देती है तो एक वर्षके बाद मैं सुनना चाहता हूं कि वह ६ सेर दूध देती है, तब मैं सम-झूगा कि आपने कुछ किया।

इसी तरह आप अनाज दुगुना पैदा करे। आप कहेगे—कैसे? मैं कहूगा कि आप जमीनको पेटभर खानेको दे। मीराबेन आई थी, उसने सभा बुलाई। उसमे बहुत लोग आए। उन लोगोने तय किया कि गावमे जितना कूडा-कचरा, गोबर, विष्ठा होता है उनमेंसे सुनहरी खाद पैदा कर सकते है। इसमे पैसे भी नही लगते, हां, थोड़ा परिश्रम करना पडता है। लेकिन इससे जमीनकी पैदा करनेकी शक्ति बढ जाती है।

आज यहां कितनी स्वच्छता है, मै यह नही जानता हू; लेकिन आपका परम कर्तव्य है कि आप तगडे हों। आप भीतर भी स्वच्छ रहे और बाहर भी। आपका देहात ऐसा होना चाहिए कि किधर भी जाए कूडा-कचरा न मिले, गोबर पड़ा हुआ न मिले और दुर्गंध न आए। आपको स्वच्छताके नियम पूर्णतः पालन करने चाहिए।

मै कहूंगा कि यहा सिनेमा-घर रखकर क्या करोगे? हमारे जमानेके कितने खेल पडे है, नाटक है, ये सब करो। सिनेमा आएगा तो पैसे खर्च

करोगे, पीछे जुआ खेलोगे। इससे और भी कई बुराइयां सीखोगे। जब तालीम दी जायगी तब भले ही कुछ फायदा हो, लेकिन अभी तो मैं ये बुराइयां देख रहा हूं। अभी तो आपमेंसे कई भाई शराब, गांजा, भांग पीते हैं, लेकिन जब सब भाई ये व्यसन छोड़ दें तब मैं समझूंगा कि आपने सचमुच पचायत बनाई। तब दिल्लीके लोग यहां देखने आएंगे। पीछे आप अस्पृश्य बन जायं और छूआछूतको भूल जायं। आप जब यह समझने लगे कि मुसलमान, हिंदू, सिख, क्रिस्टी, पारसी सब भाई हैं तब आप हिंदुस्तानकी आजादी किसको कहते है, यह सिद्ध करके बतानेवाले हैं। तब हिंदुस्तान आपके गांवका नमूना देखकर नकल करेगा। ईश्वर आपको शक्ति दे कि आप यह सब काम कर सके।

आप लोग तालियां न बजाएं, क्योकि मैंने जो कहा है वह भी प्रार्थनामे शामिल है और प्रार्थना तो ईश्वरका नाम है। मुझे आपलोगोका आशीर्वाद चाहिए और मैंने जो कहा है वह पूरा कर दिया तो मुझको आपने सब दे दिया, मेरा काम पूरा कर दिया, ऐसा मैं माननेवाला हूं।

: १६१ :

२८ दिसंबर १९४७

भाइयो और बहनो,

आज मै व्यापारियोंकी सभामे चला गया था। उन लोगोने भी बताया कि कुछ अन्य चीजोंकी तरह कपड़ेपरसे भी अंकुश हटा लिया जाय। मुझको इसमे शक नही है कि अंकुश छूट जाना चाहिए। उस सभाकी सब चीज तो आप अखबारमे देख ही लेगे; लेकिन एक चीज कहने लायक है। वह यह कि व्यापारियोने बताया कि अंकुश हटनेका ऐसा चमत्कार हो गया है कि कपड़ेपरसे अंकुश न हटनेपर भी कपड़ेके दाम कम होने लगे है। इसका कारण यह बताया जाता है कि लोगोको ऐसा खयाल हो गया है कि अब चूकि गांधीजी लोगोकी आवाजको हकूमततक पहुंचा रहे है, इसलिए कपडेपरसे शीघ्र अंकुश हट जायगा। इसीसे चोर-

बाजारका कपड़ा बाहर आ गया और दाम कम हो रहा है।

उसी तरह चीनीका हो गया है। मुझको बताते है कि जिधर जाओ उधर चीनीका ढेर पडा है। वहांसे सब लोग ले जाते है। एक रुपया सेरके भावसे लेते है। आज मैंने सुना है कि कुछ लोग कहते है कि हम तो इस भावसे नही ले सकते, तो पद्रह आना सही, चौदह आना सही। यह तो व्यापार है। अकुश छूट जानेसे लोग आरामसे ले जाते है। इसमे ऐसी खूबी है। हर जगहसे इस तरहसे मेरे पास तार और खत आ रहे है। अकुश छूट जानेसे आराम महसूस करते है। पीछे मुझको लिखते है कि करोडोकी दुआ तुमको मिलती है। मै समझता हू कि मुझको दुआ क्यो मिले—करोडोको मिले। मैंने तो करोडोकी आवाज उठाई—न उठाऊ तो मेरी आवाजको क्यो सुने ? जब मै अपनी आवाज उठाता हू तब कौन सुनता है ? मै कहता हू कि मुसलमानोको दुश्मन मत मानो तब लोग मुह मोड लेते है। लोग कहते है कि यह क्या पागलपन करता है। मेरी ऐसी आवाज कोई नही सुनता। हा, मै इतना तो जरूर कहूगा कि अगर करोडो लोग मेरी आवाज नही सुनते है तो अपने धर्मको हानि पहुचाते है। लोगोको समझना चाहिए कि मै जब हमेशा अच्छी बात कहता हू तो अभी बुरी बात क्यो कहूगा ? मै गलत बात कहता ही नही। इसमे गलत बात क्या कहनी थी ! मै जो कहता हू कि धर्मकी जड़ दया है वह तो तुलसीदासका है। उससे कहो कि तू दीवाना है। लेकिन उसकी रामायण जितनी चलती है उतनी सारे हिंदुस्तानमे दूसरी कोई पुस्तक नही चलती—शायद ही दुनियामे इतनी कोई दूसरी पुस्तक चलती होगी। वह पुस्तक सिर्फ बिहारमे चलती है या युक्तप्रातमे चलती है, ऐसी बात नही है। वह सब जगह चलती है। मैंने तो उनका काम किया, उनकी आवाज उठाई। इसमे मुझको पागल कहनेकी क्या बात है। लकडीपर क्या अकुश रखना था ! वह खानेकी चीज तो है नही कि न मिले। मानो कि मिलने लग जाय तो सब खा जायगे यानी जला डालेगे ? लेकिन उतनी ही जलाएगे जितनी जरूरत होगी। कोई फालतू तो जलाएगा नही। तब उसपर अकुश क्यो ? मुझको तबतक सतोप नही जबतक लकडीपरसे अकुश न हट जाय। आज उसका मिलना इतना मुश्किल हो गया है कि गरीबोंकी हानि होती है।

पीछे मुझको सुनाते है कि आपने इतना तो किया तो पेट्रोलपरसे अकुश हटानेके लिए आवाज उठाओ। मै तो कहूगा कि पेट्रोलपरसे भी अकुश हट जाना चाहिए और कल हट जाना चाहिए तभी हमारी भलाई होनेवाली है। पेट्रोलपरसे अंकुश हट जायगा तब ज्यादा मोटरे चलेगी। इससे गरीबोंको नुकसान नही होगा—फायदा होगा। अगर रेलगाडियां ज्यादा चले तो पेट्रोलकी ज्यादा जरूरत नही, लेकिन ज्यादा रेल बनाए तो करोडों रुपया खर्च होगा। जितना है उतना तो हजम होने दो। ज्यादा क्या करोगे ? रेलके लायक बने तो सही। हमको जितना चाहिए उतना है। जल्दीसे एक जगहसे दूसरी जगह जानेके रास्ते तो है, लेकिन पेट्रोल नही है। एक जगहसे दूसरी जगह हम जितनी चीज भेजना चाहे भेज सकते है। इसके लिए हमे रेल-यातायात नही, सडक-यातायातके साधनोकी जरूरत है। मै समझता हूं कि अगर पेट्रोलपरसे अकुश उठ गया तब यह हो सकता है। अकुश हटानेसे सब दाम कम हो रहे है। किसी चीजका दाम बढ नही रहा है। अगर कोई ऐसा कहे तो वह गलत बात है। अगर दाम बढ़ते तो मेरे पास इतने तार कहासे आते ! क्योकि दाम गिर रहे है, लोग कहते है कि अच्छा हुआ। पेट्रोलपरसे अकुश हट जाय तो सड़क-यातायात बढ़ जायगा। इसके बढनेसे सब जगह अनाज और कपडा जा सकेगा। नमकका आना-जाना बढ जाएगा।

सबसे ज्यादा तो नमकका दाम कम होना चाहिए, लेकिन वह सबसे ज्यादा है। नमकपर कर बंद हो गया, इसलिए दाम बढ गया, यह गलत बात है। हा, लेकिन नमकका दाम बढ गया है। हमारी आदत नही हुई है कि नमक पैदा कर ले। नमक बनाना हमने सीखा नही है। हिंदुस्तानके पास दरियाका किनारा इतना पड़ा है कि नमककी कमी हो नही सकती। दरियाके पानीसे बच्चा भी नमक बना सकता है। नमक बडे आरामसे बनाया जा सकता है। एक बहन बना सकती है। बगालसे नमकका पानी लाऊ तो बडे आरामसे नमक बन सकता है। इसके लिए इतना पैसा देना पडता है, इतने झझटमे पड़ते है। इसका सबब यह है कि जिस जगह नमक बनता है वहासे वह आ नही रहा है—वहासे शीघ्रतासे हम ला नही सकते। मै मानता हू कि उसमे एक गलती हो गई है। वह यह कि किसीको ठेका दे दिया है कि

तुम लाओ। वे वदमाशी करना सीख गए है, जिससे वहुत पैसा कमाते है। वहासे दूसरे ला नही सकते। इस ठेकेकी तवदीली[1] होनी चाहिए। अगर नमकको सस्ता करना है तो अंकुश हटाकर चमत्कार देखो। हां, दो चीजे जरूरी है, एक यह कि ठेका-प्रणालीमे तवदीली हो और दूसरी सड़क-यातायातकी व्यवस्था हो। वस आज मैं इतना ही कहना चाहता हूं।

: १६२ :

२६ दिसंबर १६४७

भाइयो और वहनो,

कल हकीम अजमल खा साहवकी वार्षिक तिथि थी। वह हिंदुस्तानके हिंदू, मुसलमान, सिख, क्रिस्टी, पारसी, यहूदी सवके प्रिय थे। वह पक्के मुसलमान थे, मगर वह इस खूवसूरत देशके रहनेवाले सव लोगोंकी समान सेवा करते थे। उनकी मेहनतकी सवसे वढ़िया यादगार दिल्लीका मशहूर तिविया कालेज और अस्पताल था। वहापर हर श्रेणीके विद्यार्थी पढ़ते थे और वहा यूनानी, आयुर्वेदिक और पश्चिमी डाक्टरी सव सिखाई जाती थी। साप्रदायिकताके जहरके कारण यह सस्था भी, जिसमे किसी तरह सांप्रदायिकताको स्थान न था, वद हो गई है। मेरी समझमे इसका कारण इतना ही हो सकता है कि इस कालेजको वनानेवाले हकीम साहव मुसलमान थे, फिर वे चाहे कितने ही महान् और भले क्यो न रहे हो, और भले ही उन्होने सवका मान सपादन क्यों न किया हो। उस स्वर्गवासी देशभक्तकी स्मृति, अगर वह हिंदू-मुस्लिम फिसादको दफन नही कर सकती, तो कम-से-कम इस कालेजको तो नया जीवन दे सके।

कल मैंने जिक्र किया था कि हमारी सभाएं वगैरा खुलेमें, आकाशके मंडपके नीचे हो। यह वहुत इष्ट चीज है। अगर यह आम रिवाज हो जावे

[1] परिवर्तन।

तो इस कामके लिए विचारपूर्वक जगह वगैराका प्रबंध करना होगा। छोटे-बड़े शहरोमे इस कामके लिए मैदान रखने होगे, अपनी आदतें हमे बदलनी होगी; शोरकी जगह शाति और वेतरतीबीकी जगह करीने[1]से बैठना सीखना होगा। हमारी आदते सुधरेगी तो हम तभी बोलेगे जब हमे बोलना ही चाहिए और जब बोलेगे तब हमारी आवाज उतनी ही ऊची होगी, जितनी कि उस मौकेके लिए जरूरी होगी, उससे ज्यादा कभी नही। हम अपने पड़ोसीके हकका मान रखेगे, और व्यक्तिगत रूपसे या सामूहिक रूपसे कभी दूसरोके रास्तेमे नही आएगे; दूसरोके कामोमे दखल नही देगे। ऐसा करनेके लिए कई बार अपने आपपर बहुत सयम रखना पड़ेगा। ऐसी सामाजिक व्यवस्थामे दिल्लीके सबसे ज्यादा कारोबारवाले हिस्सेमे जो शोर और गदगी आज देखनेमे आती है, वह नही मिलेगी, चाहे कितने ही बड़े हजूम[2] क्यों न हों, धक्कम-धक्का या फिसाद नही होगा। हम ऐसा न सोचे कि इस लक्ष्यको तो हम पहुच ही नही सकते। किसी-न-किसी तबके[3]को इस सुधारके लिए दिली कोशिश करनी होगी। जरा विचार कीजिए इस किस्मके जीवनमे कितना समय, शक्ति और खर्च बच जायगा।

मैंने काश्मीर और वहाके महाराजा साहबके बारेमे जो कुछ कहा है उसके लिए मुझे काफी डांट खानी पडी है। जिन्हे मेरा कहना चुभा है उन्होने मेरा निवेदन ध्यानपूर्वक पढ़ा नही लगता। मैंने तो वह सलाह दी है जो मेरी समझमे एक मामूली-से-मामूली आदमी दे सकता है। कभी-कभी ऐसी सलाह देना फर्ज हो जाता है और वही मैंने किया। ऐसा किया इसलिए कि मेरी सलाह अगर मानी जाती तो महाराजा साहब अपनी और जगतकी आखोंमें बहुत ऊचे चले जाते; उनकी और उनकी रियासतकी हालत आज ईर्ष्याके लायक नही। काश्मीर एक हिंदू राज है और उनकी प्रजामें बहुत बड़ी अक्सरियत मुसलमानोंकी है। हमलावर अपने हमलेको 'जिहाद' कहते है। वे कहते है कि काश्मीरके मुसलमान हिंदू राजके जुल्मके नीचे कुचले जा रहे थे और वे उनकी रक्षा करनेको आए है।

---

[1] सलीका; [2] भीड़; [3] गिरोह।

शेख अब्दुल्ला साहबको महाराजाने ठीक वक्तपर बुलाया है। शेख साहबके लिए यह काम नया है। अगर महाराजा उन्हे इस लायक समझते है तो उन्हे हरएक तरहका प्रोत्साहन मिलना चाहिए। मुझे यह स्पष्ट है और बाहरके लोगोके सामने भी स्पष्ट होना चाहिए कि अगर शेख साहब अक्सरियत और अकलियत दोनोको अपने साथ न रख सके तो काश्मीरको सिर्फ फौजी ताकतसे हमलावरोसे बचाया नही जा सकता। महाराजा साहब और शेख साहब दोनोने हमलावरोका सामना करनेके लिए यूनियनसे फौजी मदद मागी थी।

महाराजाको मेरे यह सलाह देनेमे कि वे इगलैडके राजाकी तरह वैधानिक राजा रहें, और अपनी हकूमत और डोगरा[1] फौजको शेख साहब और उनके सकटकालीन मन्त्रिमडलके कहनेके मुताबिक चलावे, आश्चर्यकी बात क्या है? रियासतोके यूनियनके साथ जुडनेका शर्तनामा तो पहले ही जैसा है। वह राजाको अमुक-अमुक हक देता है। मैने एक सामान्य व्यक्तिकी हैसियतसे महाराजाको यह सलाह देनेका साहस किया है कि वे अपने आप अपने हकोको छोड दे या कम कर दे और एक हिंदू राजाकी हैसियतसे वैधानिक कर्तव्यका पालन करे।

अगर मुझे जो खबरे मिली है उनमे कोई गलती है तो उसे सुधारना चाहिए। अगर हिंदू-धर्मके बारेमे और हिंदू-राजाके फर्जके बारेमे मेरे ख्यालात भूलभरे है तो मेरी सलाहको वजन देनेकी बात नही रहती। अगर शेख साहब मन्त्रिमडलके मुखियाकी हैसियतसे या एक सच्चे मुसलमानकी हैसियतसे अपना फर्ज पूरा करनेमे गलती करते है तो उन्हे एक तरफ बैठ जाना चाहिए, और बागडोर अपनेसे बेहतर आदमीके हाथोमे सौप देनी चाहिए।

आज काश्मीरकी भूमिपर हिंदू-धर्म और इस्लामकी परीक्षा हो रही है। अगर दोनो सही तरीकेसे और एक ही दिशामे काम करे तो मुख्य कार्यकर्ताओको यश मिलेगा और कोई उनका यश और नाम और इज्जत छीन नही सकेगा। मेरी तो एक ही प्रार्थना है कि इस अधकारमय

---

[1] राजपूतोंकी जाति।

देशमे काश्मीर रोशनी दिखानेवाला सितारा बनें।

यह तो हुआ महाराजा साहब और शेख साहबके बारेमे। क्या पाकिस्तान सरकार और यूनियन सरकार साथ बैठकर तटस्थ हिंदुस्तानियोकी मददसे दोस्ताना तौरपर अपना फैसला नही कर लेंगी ? क्या हिंदुस्तानमे निष्पक्ष लोग रहे ही नही ? मुझे यकीन है कि हमारा ऐसा दिवाला नही निकला।

मुझे मथुरासे एक बहिनने ५०)का मनीआर्डर शरणार्थियोके लिए कबल खरीदने को भेजा है, वह अपना नाम मुझे भी बताना नही चाहती और लिखती है कि प्रार्थना-सभामें अपने भाषणमे मै उन्हे पहुच दे दू; मै आभारके साथ उनके ५०) रु० की पहुच देता हू।

आश्चर्यकी बात है कि जिन रियासतोके राजाओने यूनियनमे जुड जानेका इरादा जाहिर किया है वहांकी प्रजाकी तरफसे मुझे शिकायतके तार आ रहे है। अगर किसी राजा या जागीरदारको यह लगे कि वह अकेला रहकर अपने आप अच्छी तरहसे अपना राज नही चला सकता तो उसे अलग रहनेपर कौन मजबूर कर सकता है ? जो लोग तारोंपर इस तरहसे रुपया खर्च करते है उन्हे मेरी सलाह है कि वे ऐसा न करे। मुझे लगता है कि ऐसे तार भेजनेवालोके बारेमे कुछ दालमे काला है। वे गृह-मत्रीके पास सलाह लेने आवे।

कई मुसलमान, खास तौरपर डाक और तारके महकमेवाले कहते है कि उन्होंने प्रचारकी खातिर यूनियनमे रहनेकी बात की थी, अब वे अपना विचार बदलना चाहते है। ऐसे भी मुसलमान है जिन्हे नौकरीसे बरखास्त किया गया है। उसका कारण तो मेरे खयालमे यही होगा कि उनपर शक किया जाता है कि वे हिंदुओके विरोधी है। मेरी उन लोगोके प्रति पूरी सहानुभूति है। मगर मै महसूस करता हू कि सही तरीका यह है कि व्यक्तिगत किस्सोमे यह शक कितना ही बेजा क्यों न हो, उसको क्षम्य समझा जाय और गुस्सा न करे। मै तो अपना पुराना आजमाया हुआ नुस्खा ही बता सकता हू। सरकारी नौकरियोंमे बहुत थोडे लोग जा सकते है। जिंदगीका मकसद सरकारी नौकरी पाना कभी नही होना चाहिए। जीवनके इस क्षेत्रमें ईमानदारीकी जिंदगी बसर करना ही एकमात्र ध्येय

हो सकता है। अगर आदमी हर तरहकी मेहनत-मजदूरी करनेको तैयार रहे तो ईमानदारीसे रोटी कमानेका जरिया तो मिल ही जाता है। मेरी सलाह यह है कि आज जो सांप्रदायिक जहर हमपर सवार है जवतक वह दूर न हो तवतक मुक्ति नही। मै समझता हू, मुसलमानोके लिए अपना स्वाभिमान रखनेके लिए यह जरूरी है कि वे सरकारी नौकरियोमे हिस्सा पानेके पीछे न दौडे। सत्ता सच्ची सेवामेंसे मिलती है। सत्ता पाकर वहुत वार इन्सान गिर जाता है। सत्ता पानेके लिए झगड़ा शोभा नही देता। उसके साथ-ही-साथ सरकारका यह फर्ज है कि जिन स्त्री-पुरुषोके पास कोई काम न हो, चाहे उनकी सख्या कितनी ही क्यो न हो, उनके लिए वह रोजी कमानेका साधन पैदा करे। अगर अक्लसे यह काम किया जाय तो सरकार-पर वोझ पडनेके वदले इससे सरकारको फायदा होगा। मैं इतना मान लेता हू कि जिनके लिए काम ढूढना है वे शरीरसे स्वस्थ होगे, और काम-चोर नही, वल्कि खुशीसे काम करनेवाले होगे।

: १६३ :

३० दिसंवर १९४७

भाइयो और वहनो,

मैंने कलके भाषणमे कहा है कि हमारी सभ्यता कहातक जानी चाहिए। हमे कव बोलना, कैसे चलना चाहिए कि करोड़ों आदमी साथ चले, तो भी पूरी शाति रहे। ऐसी लश्करी तालीम हमे मिली नही। मै यहासे जानेके वाद घूमता हू, तव लोग मुझे इधर-उधरसे देखनेकी कोशिश करते है। वे ऐसा न करे। प्रार्थनामे देख लिया, वह वस हुआ। वहा जो लाभदायक वाते सुनीं, उनका वे मनन करे और अपने-अपने घर चले जाए।

वहावलपुरके वारेमे एक भाई लिखते है कि मै वहावलपुरके लिए एक वार कुछ और कहू। वहाके नवाव साहवने तो कहा है कि उनके नजदीक उनकी सारी रैयत वरावर है। तो मै क्यो कहू कि यह सच्चा नही

है ? अगर सचमुच उनके लिए सारी रैयत एक-सी है तो उनको चाहिए कि अगर वे हिंदू-सिखोकी सभाल नही कर सकते तो उन्हें अपनी गाडीमे बिठाकर यहा भेज दे और आरामसे आने दें। जबतक उनको वहासे लानेका प्रबध नही होता तबतक उनकी खानेकी, कपडेकी, ओढ़नेकी व्यवस्था उन्हे अच्छी तरह कर देनी चाहिए। मुझे उम्मीद है कि वे ऐसा करेगे।

मै तो कायदे आजमसे कहना चाहता हू कि सिंधमे हिंदुओका रहना दुश्वार हो गया है। वहा हरिजन परेशान है। उनको भी वहासे आने देना चाहिए। सिंध जैसा पहले था वैसा आज नही है। इस यूनियनसे जो मुसलमान वहा गए है वे लोग वहाके हिंदुओंको घर छोड़नेपर मजबूर करते है, उनके घरोंमे घुस जाते है। अगर वे ऐसा करे तो कौन हिंदू वहां रह सकता है ? तब क्या पाकिस्तान इस्लामिस्तान हो जायगा ? क्या इसीलिए पाकिस्तान बना है ? कोई हिंदू वहा चैनसे रह ही नही सकता, यह दुःखकी बात है।

पंढरपुरमे विठोबाका मंदिर है। महाराष्ट्रमें इससे बडा मंदिर कोई नही है। वह मदिर हरिजनोंके लिए वहाके ट्रस्टियोने खुशीसे खोल दिया है, ऐसा तार आया था। अब वे लिखते है कि बड़े-बड़े ब्राह्मण पुजारी इसपर नाखुश है और अनशन कर रहे है। यह सुनकर मुझको बहुत बुरा लगा। मै वहा जा तो नही सकता, मगर यहासे दृढतासे कहना चाहता हू कि पुजारी लोग अपने आपको ईश्वरके पुजारी मानते है, लेकिन वे सच्चे तरीकेसे पूजा नही करते। आज तो वे लोगोंको लूटते है। विष्णु भगवान ऐसे नही है कि कोई भी उनके पास जावे और वे दर्शन न दे। ईश्वरके लिए सब एक है। सो उन पुजारी लोगोको अनशन छोडना चाहिए और कहना चाहिए कि हम सब हरिजनोके लिए मदिर खोलनेमे राजी है। हमारी धर्मकी आख खुल गई है। मदिरमे जानेसे पापका नाश होता है, यह माना जाता है। अगर सच्चे दिलसे पूजा करें तो पापका नाश होगा ही। ऐसा थोड़े ही है कि पापी मदिरमे नही जा सकते और पुण्यशाली ही जा सकते है। तब वहा पाप धुलेगे किसके ? जिन हरिजनोको हमने ही अछूत बनाया है वे क्या पापी हो गए ? मुझे आशा है कि अनशन करनेवाले समझ जाएगे कि यह बात कितनी असगत है।

वबईमे चावल बहुत कम मिलते है। एक हफ्तेमे एक रतलसे ज्यादा नही मिलते। सो लोग काले बाजारसे चावल लेते है। अंकुश छूटनेपर भी उस शहरमे अभी राहत नही मिली। अगर शहरी लोग ईमानदार बन जाय, तो ये तकलीफे मिटनी ही है। लोगोका पेट भर जाय तो चोरीका कारण ही क्यों रहे?

: १६४ :

३१ दिसबर १९४७

भाइयो और बहनो,

मेरे पास कई खत आए है। सबका जवाब अभी नही दे सकूगा। जिनका दे सकता हूं, देता हू।

एक भाईने लिखा है कि सिंधमे जब हिंदुओंपर सख्ती होती है और वहा हिंदू और सिख नही रह सकते, तो पंजाबमे या पाकिस्तानके और हिस्सोमे फिरसे जाकर वे कैसे बस सकते हैं? खत लिखनेवाले भाईने मेरी इस बाबतकी सब बातोपर ध्यान नही दिया। कुछ मुसलमान भाई पाकिस्तान होकर मेरे पास आए थे। उन्होने उम्मीद दिलाई थी कि जो हिंदू और सिख पाकिस्तानसे आ गए है, वे वहां वापिस जा सकेंगे, ऐसी आशा होती है। मैंने वही आपसे कह दिया था। पर मैं यह भी कह चुका हूं कि अभी वह वक्त नही आया। अभी मै किसीको वापिस जानेकी सलाह नही दे सकता। जब वक्त आवेगा तब मै कहूगा। अभी तो सुनता हूं कि सिंधमें भी हिंदू नही रह सकते। यह ठीक है। चितरालसे एक भाई मेरे पास आए थे। उन्होने बताया कि वहा ढाई सौके करीब हिंदू-सिख अभी पड़े हैं, जो निकलना चाहते है। सिंधमे तो अभी बहुत है, हजारों है, जो वहांसे निकलना चाहते है। वे सब जबतक नही आ जायंगे, हिंद सरकार चुप नही बैठेगी। वह कोशिश कर रही है।

पर आखिरमे तो मै उसी बातपर जमा हूं। जबतक सब हिंदू और सिख भाई, जो पाकिस्तानसे आए है, पाकिस्तान न लौट जावे और सब

मुसलमान भाई, जो यहासे गए है, यहा न लौट आवे, तवतक हम शांतिसे नही वैठ सकते है। मै तो तवतक शातिसे वैठ ही नही सकता। हो सकता है कि कोई शरणार्थी भाई यहा खुश हो, पैसा भी कमाने लगे, फिर भी, उसके दिलसे खटक कभी नही जायगी। उसे अपना घर तो याद आवेगा ही, दिलमे गुस्सा और नफरत भी रहेगी। हमने दोनोने वुरा किया है। दोनों विगडे है। इसलिए दोनों भोग रहे है। किसने पहले किया, किसने पीछे; किसने कम, किसने ज्यादा, यह सोचनेसे काम नही चलेगा। हम सव अपने-अपने विगाडको नही सुधारेगे तो हम दोनो मिट जायगे। जवतक हिंदुस्तान और पाकिस्तानमे दिलका समझौता नही होता हमारा दोनोका दु ख नही मिट सकता। दोनो अपना-अपना विगाड़ सुधार ले तो हमारी विगड़ी वाजी फिर सुधर जाय।

उन्ही भाईने लिखा है कि शरणार्थियोके कैंपोंमे कुछ घरेलू धधे सिखाए जावें तो अच्छा है, जिससे वे कमाकर अपना खर्च निकाल सके। मुझे यह वात वहुत अच्छी लगी। सव चाहेगे तो मै सरकारसे कहूगा और सरकार वडी खुशीसे इसका इतजाम कर देगी। सरकारके तो इससे करोडो रुपये वचेगे। मै चाहता हू कि जिस भाईने खत लिखा है, वह इसके लिए आंदोलन करें, सव शरणार्थियोको राजी करे। शरणार्थी खुद यह कहे कि मुफ्तकी मिली खीरसे अपनी मेहनतका रूखा-सूखा टुकड़ा कही अच्छा है। इससे उनका मान वढेगा, मर्यादा भी वचेगी।

अभी तो एक हिंदू वहन मेरे पास आई थी। कहती थी कि वह अपने घरका ताला वद करके कही गई तो पाच-छ सिखोने आकर ताला तोड़ लिया और घरमे रहना शुरू कर दिया। वहनने आकर देखा तो पुलिसमे रिपोर्ट लिखाई। सुना है, कुछ सिख पकड़े भी गए। एक भाग गया। हिंदुओ और दूसरोने भी ऐसी गदी वाते की है। इससे हमारे धर्मपर वड़ा कलक लगता है। ऐसी वाते वद होनी चाहिए। उस वहनने मुझसे पूछा, क्या मैं घर छोड़ दू ? मैंने कहा, कभी नही। सिख भाई अपना मान रखें, अपनी मर्यादासे रहे। हम सव अपनी मान-मर्यादासे रहे तो सारा झगडा खत्म हो जावेगा।

एक और खत आया है उससे मैं और भी खुश हुआ। एक भाई

लिखते है कि आपका रोजका भाषण तो सब रेडियोपर सुनते हैं, लेकिन प्रार्थना और भजन रेडियोपर सबको नही मिलते। वह भी सब सुन ले तो अच्छा हो। रेडियो क्या कर सकता है, मैं नही जानता। रेडियो अगर भजन भी ले ले तो मुझे अच्छा लगेगा। वह भाई अपना नाम भी नही देना चाहते। पर मैं एक बात यह भी कहना चाहता हूं कि मैं रोज बोलता हू, जो बहस करता हू, वह भी प्रार्थना ही है, उसीका हिस्सा है। मेरा यह सब भी भगवानके लिए है। लड़किया जो भजन गाती है, वह भगवानके लिए गाती है। फिर उसमे सुरकी मिठास हो या न हो, भक्ति तो है। जिन्हे सुरकी मिठास चाहिए उनके लिए रेडियोपर बहुतेरे गाने होते है। जिन्हे भक्तिकी मिठास चाहिए, उनके लिए रेडियोपर ये भजन जा सके तो लाभ ही होगा।

कुछ भाइयोने जूनागढ़ और अजमेरकी बाबत मुझे तार भेजे है। जूनागढ़मे, जो काठियावाड़मे है, तो मै पला हूं। वहांका हाल मै कह चुका हू। अजमेरमें तो बहुत बुरी बाते हुई है, इसमे शक नही। वहां जलाया भी है, लूट भी हुई, खून भी हुआ। पर बुरी बातको भी ज्यादा बढाकर कहनेसे हम अपना मामला कमजोर कर लेते है। इन तारोंमे बात बढ़ाकर कही गई है। अजमेरमे दरगाह शरीफ तो ठीक है। जितना है, उतना कहिए। सरकार अमन कायम करनेकी कोशिश कर रही है। हम उसपर भरोसा करे। भगवानपर भरोसा करे। सब अपनी-अपनी गलतियोको ठीक नही करेगे तो हिंदुस्तान और पाकिस्तान दोनों मिट जावेगे।

: १६५ :

१ जनवरी १९४८

भाइयो और बहनो,

आज अग्रेजी सालका पहला दिन है। आज इतने ज्यादा आदमियोंको यहा जमा देखकर मै खुश हूं। पर मुझे दु:ख है कि बहनोंको बैठनेकी जगह देनेमे सात मिनट लग गए। सभामे एक मिनट भी बेकार

जानेका मतलब है कि करोड़ो जनताके बहुतसे मिनट बेकार गए। फिर तो हमारा खात्मा है न ? भाइयोको चाहिए कि बहनोको पहले जगह देना सीखे। जिस देशमे औरतोकी इज्जत नही, वह सभ्य नही। दोनोंको अपनी मर्यादा सीखनी चाहिए। यही मनु महाराजने बताया है। आजादी मिल जानेके बाद, हम सबको और भी मर्यादाके साथ बरतना चाहिए। मै उम्मीद करता हू कि आगे इससे भी ज्यादा लोग आवेगे। पर जितने लोग आवे, वे प्रार्थनाकी भावना लेकर आवे; क्योकि प्रार्थना ही आत्माकी खुराक है। भगवानके पाससे हमे जो खुराक मिल सकती है, वह और जगह नही मिल सकती। मै उम्मीद करता हू कि जो लोग आए है, वे सब यहां भी शाति रखेगे और जाते वक्त घरोंको भी अपने साथ शाति ले जावेगे।

यू० पी०मे हालमें एक हरिजन कान्फरेस हुई थी। कहते है, उसमे एक वजीरने हरिजनोको उपदेश दिया कि आप गदे रहना, गदे कपडे पहनना और शराब पीना छोड दे। इसपर कोई हरिजन बोल पडा कि जैसे सरकार ताड़ीके दरख्तोको उखाडकर फिकवा सकती है और शराबकी सब दुकानें बद करा सकती है, वैसे ही वह गदे कपडे भी फुकवा दे, हम नगे रहेगे, पर गदे नही। मै उस हरिजन भाईकी हिम्मतको सराहता हू। मै तो ताडीका गुड बना लेता हू। पर मै हरिजन भाइयोसे कहूगा कि असली इलाज उनके अपने हाथोंमे है। शराब अगर दुकानपर बिकती भी हो तब भी उन्हें जहरकी तरह उससे बचना चाहिए। सच यह है कि शराब जहरसे भी ज्यादा बुरी है। मजदूर लोग घरमे आकर जो दु ख देखते है उसे भुलानेके लिए शराब पीते है। जहरसे शरीर ही मरता है, शराबसे तो आत्मा सो जाती है। खुद अपने ऊपर काबू पानेका गुण ही मिट जाता है। मै सरकारको सलाह दूगा कि शराबकी दूकानोको बद करके उनकी जगह इस तरहके भोजनालय खोल दे जहा लोगोंको शुद्ध और हल्का खाना मिल सके, जहा इस तरहकी किताबे मिले जिनसे लोग कुछ सीखे और जहा दूसरा दिल बहलानेका सामान हो। लेकिन सिनेमाको कोई स्थान न हो। इससे लोगोकी शराब छूट सकेगी। मेरा यह कई देशोका तजुरबा है। यही मैंने हिंदुस्तानमे भी देखा और दक्षिण अफ्रीकामे भी देखा था। मुझे इसका पूरा यकीन है

कि शराब छोड देनेसे काम करनेवालोका शारीरिक बल और नैतिक बल दोनो बहुत बढ जाते है और उनकी कमानेकी ताकत भी बढ जाती है। इसलिए सन् १६२०से शराबबदी काग्रेसके कार्यक्रममे शामिल है। अब, जब हम आजाद हो गए है सरकारको अपना वादा पूरा करना चाहिए और आबकारीकी नापाक आमदनीको छोडनेके लिए तैयार हो जाना चाहिए। आखिरमे सचमुचमे आमदनीका भी नुकसान नही होगा और लोगोका तो बहुत बडा लाभ होगा ही। हमारे लिए तरक्कीका यही रास्ता है। यह हमे अपने आप, अपने पुरुषार्थसे करना है।

: १६६ :

२ जनवरी १९४८

भाइयो और बहनो,

नोआखालीमे किसान लोग धूपसे बचनेके लिए यह टोप ओढते है।[1] मै दो बातोकी वजहसे इसकी बडी कदर करता हू। एक तो मुझे यह एक मुसलमान किसानने भेट किया है। दूसरे यह छतरीका अच्छा काम देता है और उससे सस्ता है, क्योकि सब गांवकी ही चीजोसे बना है।

प्रार्थनामे जो भजन गाया गया है, आपने सुना कितना मीठा है। पर यह भजन असलमे सुबहका है। इसमे भगवानसे प्रार्थना की गई है कि उठकर इतजारमे खड़े भक्तोको दर्शन दो। यह सत्य है कि ईश्वर कभी सोता नही है। भजनमे तो भक्तके दिलकी भावना है।

हालमे इलाहाबादसे मेरे पास एक खत आया है। भेजनेवाले भाईने लिखा है कि थोड़ेसे भले लोगोको छोड़कर किसी मुसलमानपर यह एतबार नही किया जा सकता कि वह हिंद सरकारका वफादार रहेगा—

---

[1] पानी बरसनेके कारण गांधीजी नोआखालीका टोप पहनकर आए थे जिसे देखकर लोग हँसने लगे। इसलिए गांधीजीने टोपसे ही शुरू किया।

खासकर अगर हिंदुस्तान और पाकिस्तानमे लड़ाई हुई। इसलिए थोडेमे नेशनलिस्ट[1] मुसलमानोंको छोड़कर और सब मुसलमानोको निकाल देना चाहिए। मै कहता हू कि हर आदमीको यही चाहिए कि जबतक कोई बात इसके खिलाफ साबित न हो, वह मुसलमानोंकी बातका एतबार करे। अभी पिछले हफ्ते करीब एक लाख मुसलमान लखनऊमें जमा हुए थे। उन्होने साफ शब्दोमे अपनी राष्ट्रभक्तिका ऐलान किया। अगर किसीकी बेवफाई या बेईमानी साबित हो जावे तो उसे गोलीसे मारा भी जा सकता है, गो कि यह मेरा तरीका नही है। पर फिजूलकी बेएतबारी जहालत और बुजदिलीकी निशानी है। इसीसे साप्रदायिक नफरते फैली है, खून बहे है और लाखो बेघरबार किए गए है। यह अविश्वास जारी रहा तो देशके अलग-अलग टुकडे हमेशाके लिए बने रहेगे और आखिरमे दोनो डोमिनियन नष्ट हो जावेगी। भगवान न करे, अगर दोनोमे लडाई छिड़ गई तो मै तो जिदा रहना पसद न करूगा। पर जो मेरी तरह लोगोमे भी अहिसामे विश्वास होगा, तो लडाई नहीं होगी और सब ठीक ही होगा।

: १६७ :

३ जनवरी १९४८

भाइयो और बहनो,

मुझे खुशी है कि आज मै अपना बहुत दिनोका वादा पूरा कर सका और इस कैंप[2]के शरणार्थियोसे बातें कर सका। मुझे बडी खुशी है कि यहां जितने भाई है, उतनी ही बहने है। मै चाहता हू आप सब मेरे पास इस प्रार्थनामे शामिल हो कि हमारे मुल्कमें और दुनियामे फिरसे शाति और प्रेम कायम हो। शाति बाहरकी किसी चीजसे, जैसे दौलतसे या महलोसे, नही मिलती। शाति अपने अदरकी चीज है। सब धर्मोने इस सचाईका ऐलान किया है कि जब आदमीको

---

[1] राष्ट्रीय; [2] बेवल कैंटीन।

इस तरहकी शांति मिल जाती है तो उसकी आखो, उसके शव्दो और उसके कामों—सवसे वह शाति टपकने लगती है। इस तरहका आदमी झोपडीमें रहकर भी सतुष्ट रहता है और कलकी चिंता नही करता। कल क्या होगा, यह भगवान ही जानते है। श्रीरामचद्रको, जो हमारी तरह आदमी थे, यह पता नही था कि ठीक उस वक्त जव उनके गद्दीपर वैठनेकी आशा थी, उन्हे वनवास दे दिया जायगा। पर वह जानते थे कि सच्ची शाति वाहरकी चीजोपर निर्भर नही है। इसीलिए वनवासके खयालका उनपर कुछ भी असर न हुआ। अगर हिंदू और सिख इस सचाईको जानते होते तो यह पागलपनकी लहर उनपरसे फिर जाती, और मुसलमान चाहे कुछ भी करते, वे खुद शात रहते। अगर ये शव्द हिंदुओ और सिखोके दिलोमें घर कर ले तो मुसलमानोपर तो अपने आप उसका असर जरूर होगा ही।

मैंने सुना है कि यह कैप कुछ अच्छी तरह चल रहा है। मै यह वात तवतक पूरी तरह नही मान सकता, जवतक सव शरणार्थी मिलकर इस कैपमे उससे ज्यादा सफाई और तरतीवी न रखे जितनी दिल्ली शहरमें दिखाई देती है। आपको जो मुसीवते भोगनी पडी है वह मै जानता हू। आपमेसे कुछ वडे-वडे घरोके लोग थे। पर आपके लिए उतने ही आराम-की उम्मीद यहां करना फिजूल है। आप सवको सीखना चाहिए कि नई जरूरतोके मुताविक अपनेको कैसे ढाला जाय और जहातक वन पडे इस हालत[1]को ज्यादा अच्छा वनाना चाहिए। मुझे याद है कि सन् १८९९की वोअर वारसे[2] ठीक पहले अग्रेज लोग ट्रासवालको छोडकर वहासे नेटाल गए थे। वे जानते थे कि मुसीवतका कैसे सामना किया जावे। वे सव-के-सव वरावरकी हैसियतसे रहते थे। उनमेसे एक इजीनियर था और मेरे साथ वढईका काम करता था। हम सदियोसे विदेशियोके गुलाम रहे है, इसलिए हमने यह वात नही सीखी। अव जव हम आजाद हुए है—और आजादी कैसी अनमोल वरकत है— मै उम्मीद करता हू कि शरणार्थी भाई-वहन अपनी इस मुसीवतसे भी पूरा फायदा उठाएगे। वे अपने इस कैंपको एक ऐसा आदर्श कैप वना देगे कि अगर सारी दुनियासे नही तो सारे हिंदुस्तानसे

---

[1] व्यवस्था; [2] वोअर युद्ध।

लोग आ-आकर इसपर फख्र करे। प्रार्थनामे जो मत्र पढा गया है उसका मतलब यह है कि हमारे पास जो कुछ है, हम सब भगवानके अर्पण कर दे और फिर जितनेकी हमे सचमुच जरूरत हो, उतना ही उसमेसे ले ले। अगर हम इस मत्रके अनुसार रहे तो इस कैंपमे ही नही, सारी दिल्लीमें, जो हालमें बदनाम हो गई है, फिरसे नई जान आ जावेगी और हमारे सबके जीवन अंदरके सुखसे भर जावेगे।

: १६८ :

४ जनवरी १९४८

भाइयो और बहनो,

आज यहां तो हर जगह लडाईकी ही बात हो रही है। कहते हैं कि पाकिस्तान और हिंदुस्तानके बीच शायद लड़ाई छिड जायगी। अगर लड़ाई छिड़ जाती है तो हम दोनोंका बड़ा दुर्दिन है, ऐसा मैं मानता हू। और बस हम दोनों आपस-आपसमें सुलहसे नही बैठ सकते है। अभी मैं हैरान हुआ कि हिंदुस्तानकी यूनियनने, जो सारी प्रजाका या समग्र प्रजाका मडल बन गया है, पाकिस्तानको लिखा है। ऐसी जब कोई बात हो जाती तो इस मडलको इन्साफ करने और लड़ाई रोकनेके लिए कहा जाता है। इसलिए उनको इडियन यूनियनने लिखा है कि यह जो कुछ भी है, चाहे मामूली चीज ही हो, लेकिन इसमेसे लडाई छिड सकती है। अच्छा लबा-चौड़ा लिखकर भेजा है और चूकि वह तारसे जा सकता था इसलिए उससे भेज दिया। उसपर पीछे पाकिस्तानसे एक तो जफरुल्ला साहब और दूसरा लियाकतअली साहबने एक बहुत लबा बयान निकाला है। वे दोनों भाई मुझको कहने देगे कि वह मुझको कोई अच्छी बात नही लगी। तब कहो कि यूनियनके जो सचिव है, उन्होने जो चीज भेजी वह अच्छी लगी क्या? मैं कहूगा कि मुझको अच्छी भी लगी और बुरी भी। अच्छी तो यो लगी कि आखिर वे करे क्या? उन्होंने मान लिया है कि हम जो कर रहे है वह सही कर रहे हैं। अगर काश्मीरकी सरहदके बाहरसे लड़ाई

होती रहे तो जाहिर है कि उनके दिलमें यही होगा कि उसमे पाकिस्तानका कुछ-न-कुछ हिस्सा तो है ही। वह नही है, ऐसा वह कहते है। लेकिन उनके कहनेसे तो काम नही निपट सकता। काश्मीर हमारे पास आ गया है। एक शर्तसे हमने उसको यूनियनमे ले लिया है। अगर पाकिस्तान उसको नाराज करे और काश्मीरके नेता शेख अब्दुल्ला यह मागे कि हमको मदद दे दो, तो यूनियन तो मदद देनेके लिए मजबूर हो जाता है। इसलिए मदद तो दी, लेकिन यहा तो इस तरहसे हो रहा है कि पाकिस्तानसे मिन्नत करते है कि जो हमलावर है उनको वहासे निकल जाना चाहिए और कोई आपसी निपटारा हो जाना चाहिए। अगर यह निपटारा नही होता है तो फिर तो लडाईमे ही फस जाना पडेगा। इस लड़ाईमे न फसनेके लिए ही उन्होने ऐसा कर लिया है। यह सब ठीक है या नही, यह तो ईश्वर ही जानता है। न मै जानता हू, न कोई और जानता है।

पाकिस्तानमें चाहे कुछ भी था, लेकिन मैं तो ऐसे करता कि उनको यहा आनेके लिए कहता। वे यहा आ सकते थे या किसीको भेज सकते थे। इस बारेमें कोई समझौता करनेके लिए हम मिल तो ले। सारी दुनियाको जाहिर तो यह करते है कि हम मिलना चाहते है, लेकिन मिलनेका सामान पैदा नही करते, ऐसा मुझको लगता है। इसलिए पाकिस्तानके जो जिम्मेदार आदमी है उनसे मैं तो मिन्नत करूगा कि हमारे दो टुकडे तो हो गए, हालांकि मुझको तो अच्छा नही लगा कि दो टुकडे हो गए, लेकिन हो गए, क्योकि आप लोग चाहते थे। दो टुकडे होनेके बाद अब ऐसा इकरार तो होना ही चाहिए था कि हम आपसमे सुलहसे रहेगे। मान लिया कि हिंदुस्तानमे तो सब बुरे आदमी रहते है, लेकिन पाकिस्तान तो एक नई पैदाइश है और वह भी धर्मके नामपर या इस्लामके नामपर। तब उसको तो साफ ही रहना चाहिए था। लेकिन वह नही है, ऐसा वे खुद भी तो कबूल करते है। पाकिस्तानमें मुसलमानोने ज्यादतिया नही की, ऐसा वे खुद भी नही कहते है। की है, इसलिए मैं तो उनसे मिन्नत करूगा कि आपका तो परम धर्म हो जाता है कि जहातक हो सकता है हिंदुस्तानके साथ मिल जाना चाहिए और दोनोको साथ-साथ काम चलाना चाहिए। गलतिया हो गई है दोनोसे, इसमे मुझे कोई शक नही है। लेकिन इसका यह मतलब नही है कि हम गलतियां

करते ही रहें। आखिरमें नतीजा तो यही होगा कि हम दोनों आपसमें लड़ें और मरें। तब तो सारा हिंदुस्तान एक तीसरी ताकतके हाथ चला जाता है। इससे बुरी बात हिंदुस्तानके लिए, या किसी भी हिंदुस्तानीके लिए, कोई और हो क्या सकती है, यह मेरे जहनसे[1] तो बाहरकी बात है। इसलिए दोनों ताकतोंको ईश्वरको दरमियान रखकर आपस-आपसमें मिल जाना चाहिए। आखिर यू० एन० ओ०में तो यह मामला चला ही गया है। उससे तो कौन छीन सकता है। लेकिन एक ताकत तो उनसे भी यह मामला छीन सकती है और वह यह कि अगर हिंदुस्तान और पाकिस्तान दोनों मिल जाते हैं तब यू० एन० ओ० में जो बड़े-बड़े लोग पड़े हैं, वे तो राजी होनेवाले हैं। वे कोई नाराज थोड़े ही होंगे। आखिर उनके हाथमें तो कलम पड़ी है। वे तो यही कहेंगे कि हमारे पास जो चीज आती है उसके लिए हम भी कोशिश करेंगे कि दोनों आपसमें मिल जाएं, ताकि हमें कुछ करना ही न पड़े। ऐसी अगर वे कोई कोशिश न करें तो वे भी आखिर खिलौना थोड़े ही हैं कि कोई हरएक बात उसमें ले जाई जाय। जब दोनों मजबूर हो जाएं कि आपसमें उनका कोई फैसला हो ही नहीं सकता है तब वे उसको यू० एन० ओ० में ले जाते हैं। एक तो मैं यह बात आपको कहना चाहता था। इसलिए हम ईश्वरसे प्रार्थना करते हैं और जो प्रार्थना यहां करें, वही हम हमेशा अपने घरमें भी करें कि किसी-न-किसी तरह भगवान दोनों हकूमतोंको लड़नेसे बचा ले। लेकिन हर तरहसे लड़नेसे बचा ले, वह प्रार्थना भी हम न करें। मैं तो कहता हूं कि हे ईश्वर! या तो दोनोंको आदर और मोहब्बतके साथमें रख या अगर भीतरसे दुश्मन ही रहते हैं तो बेहतर यही है कि हमको पेटभरके लड़ने दे। हम भले ही मूर्ख हों, लेकिन लड़ने तो दो। पीछे कभी-न-कभी तो शुद्ध हो ही जायंगे। आप भी यही प्रार्थना करें।

अब कुछ दिल्लीके बारेमें भी कहना मैं मुनासिब समझता हूं। यहां क्या हो गया, इसका मुझको रातको ही पता चल गया था। मुझको बृजकिशनजीने बता दिया था। मैं भी कल उस तरफ प्रार्थना करने चला

---

[1] अक्लसे।

गया था। मैं तो आ गया था, लेकिन वह कैंप[1] देखने और लोगोसे बात करनेके लिए वही ठहर गए थे। वहांके कुछ फासलेपर ही चार-पांच सौ आश्रित दुखी स्त्रियां, थोड़े बच्चे और बाकी पुरुष गए। उन लोगोंने क्या किया? किसीसे मारपीट तो नही की, ऐसा मैं सुनता हूं। कुछ मुसलमानोके घर थे, थोडे उनमे खाली भी थे, मगर जो भी खाली हो, उन्हीमे वे जाकर बैठ जाय, ऐसा थोडे ही है। लेकिन जिन घरोमे लोग रहते थे उनपर भी जबर्दस्ती कब्जा करनेकी उन्होने कोशिश की। पुलिस तो नजदीक ही थी। सुनते ही वह वहा पहुंच गई और सात या साढ़े-सात बजेसे यह शुरू हुआ और ९ बजेके बाद वह तो अखबारोमे है। मैंने सुना है, ११ बजेके बाद मामला शात हुआ। पुलिस वही रही और जो एक नया शस्त्र निकला है न, अश्रु-गैस, वह भी चलाया गया। उससे लोग परेशान हो जाते है, मरते तो नही है; लेकिन परेशानी तो बहुत होती है। पीछे ये लोग वहासे गए और सुना है कि आज दिनमे भी कुछ हो रहा था। वे वहासे चले नही गए थे।

मैं तो कहूगा कि इससे हमको लज्जित होना चाहिए। जो आश्रित लोग है वे दुखमेंसे भी इतना नही सीखे कि हम मर्यादित हैं। यह कोई मर्यादा नही है कि हम किसीके घरमे जाकर बैठ जाय। उनके लिए घर या कुछ भी चाहिए वह हकूमतका काम है। आज तो हकूमत भी हमारी हो गई है, लेकिन उस हकूमतको भी वे बेकार करे और जो पुलिस है उसकी भी कोई परवा न करे और किसीके घरमे घुसकर बैठ जाय तो इस तरह तो हमारी हकूमत चलनेवाली नही है। और पीछे दिल्लीमे अर्थात् हिंदुस्तानके पाया-तख्त[2]मे ऐसा हो, जहा इतने लोग पड़े है, बाहरसे बडे-बडे एलची यहा आए हुए है! क्या उनको यह देखनेको मिले कि लोग जहा चाहे वहा कब्जा करके बैठ जाते हैं। पुलिस अगर मिन्नत करे कि मेहरबानी करके जाइए तो कोई मेहरबानी करनेका ही नही। इसपर भी औरतो और बच्चोको आगे रखना तो कोई इन्सानियत नही है। मैं तो उसको हैवानियत मानता हू। हम कोई जगली थोड़े ही है! पुरुष

---

[1] वेवल कैंटीन; [2] राजधानी।

स्त्रियोंको आगे रखे वह तो ऐसे ही हुआ जैसा कि मुसलमान बादशाहोंके वक्तमें गायोंको फौजके आगे रखते थे, ताकि हिंदू लड़े ही नही। मै तो उसको भी सभ्यता नही, असभ्यता मानता हूं। लेकिन उससे भी बडी असभ्यता मै यह मानूगा कि औरतों और बच्चोको आगे रखें ताकि पुलिस उनपर गैस या डडा न चला सके। वह तो औरतका बहुत बड़ा दुरुपयोग किया है, ऐसा मै मानूगा। इसलिए जितने दु.खी लोग, औरत-बच्चे, सब पड़े है, उन सबको मै कहूगा और बहुत विनयके साथ कि वे ऐसा न करे। वे सब शातिसे बैठ जाए। अगर नही बैठते है तो दो हकूमतोंका लडना तो दरकिनार रहा, हम आपस-आपसमे ही लडकर ख्वार हो जायगे। हम दिल्लीको गवा बैठेंगे और सारी दुनिया हमपर हँसेगी कि ये लोग हकूमतको नही चला सकते है। इनका लोगोपर कोई काबू नही है। हिंदुस्तान आजाद रहे, ऐसा अगर हम चाहते है तो जो चीजे आज हिंदुस्तानमे हो रही है उनसे हम बच जाय। यहा किसी किस्मका उपद्रव न हो, इसके लिए कोई और दूसरा चारा हमारे पास नही है।

: १६९ :

५ जनवरी १९४८

भाइयो और बहनो,

अकुश निकल जानेके कारण बाजारमे बेतहाशा ऊनी और रेशमी कपड़ा आ गया है। ऊनी और रेशमी कपड़ेकी कीमत कम-से-कम ५० फी सदी गिर गई है। काफी जगह ६६ प्रतिशत गिरी है।

इस आशासे कि सूती कपडे और सूतपरसे भी अकुश जल्दी ही निकल जायगा, कीमते धीरे-धीरे गिर रही है। अगर सूती कपडेपरसे पूरी तरह अकुश उठा लिया जाय तो कीमत कम-से-कम ६० प्रतिशत गिर जायगी और कपड़ा भी ज्यादा अच्छा मिलने लगेगा। मिल-मालिकोंको एक दूसरेके साथ मुकाबला करना पडेगा। रेशमी और ऊनी कपडेकी तरह, अकुश हट जानेसे सूती कपडा भी ढेरों मिलने लगेगा। सूती कपड़ेपरसे अगर

अकुश उठाया गया तो उसे सफल वनानेके लिए कम-से-कम तीन सालतक हिंदुस्तानसे बाहर कपड़ा भेजनेकी मनाही होनी चाहिए ।

सरकारी दफ्तरोके आकडे तो जादूका खेल-सा रहते हैं। वे खुराक और कपडेपरसे अकुश उठानेके रास्तेमे नही आने चाहिए ।

पेट्रोलपर अकुश तो युद्धके कारण लगाया गया था, अव उसकी जरूरत नही है। सच्ची वात तो यह है कि इस कट्रोलसे थोडी-सी ट्रासपोर्ट कपनियोको फायदा पहुच रहा है और वे इसे रखना चाहती है। करोड़ो जनताका तो इसके साथ कोई सवध ही नही है। यह कहनेकी जरूरत नही कि एक भी वस या ट्रामका मालिक, जिसके पास एक ही रास्तेका लाइसेस है, आज दस-पद्रह हजार रुपया हर महीने कमा रहा है। अगर पेट्रोलपर अकुश न रहे, और गाडियां चलानेमे भी किसी एकके इजारे (स्वत्व) का रिवाज न रहे, तो एक गाड़ीका मालिक महीनेमे ३०० रु० से ज्यादा नही कमा सकता। आज तो पेट्रोलकी चिट्ठियोकी[१] तिजारत होती है। एक लारीकी पेट्रोलकी चिट्ठी आज किसी ट्रासपोर्ट डीलरके पास दस हजारमे बेची जा सकती है। अगर पेट्रोलपरसे अकुश हटा दिया जाए तो खुराक, कपडे और मकानोका प्रश्न और कई दूसरे प्रश्न, जो आज देशके सामने है, अपने आप हल हो जाएगे। पेट्रोलके राशनिगसे ट्रासपोर्ट कपनिया पैसे कमा रही है, और करोडो लोगोका जीवन वर्वाद हो रहा है। अकुश निकलवाकर आप दु खी जनताकी सहायता करे तव यह देश चद खुशकिस्मतोके रहने लायक ही नही, पर करोडो वदकिस्मतोके रहने लायक भी वनेगा। अकुश लडाईके जमानेके लिए थे। आजाद हिंदमे उनका कोई स्थान नही होना चाहिए ।

मुझे लगता है कि इन आकडोके[२] सामने कुछ कहा नही जा सकता। हो सकता है यह वात मेरा अज्ञान मुझसे कहला रहा है। अगर ऐसा है तो ज्यादा जानकार लोग दूसरे आंकडे वताकर मेरा अज्ञान दूर करनेकी

---

[१] कूपन ।

[२] गांधीजीने नीचेके भाव वताते हुए कहा कि देखिए, चीनी इत्यादिका भाव सौ प्रतिशत गिर गया है।

कृपा करें। मैंने ये बातें मान ली हैं, क्योंकि जानकार लोगोंका मत भी इसी तरफ है।

जब जनता किसी बातको मानती है और कोई चीज चाहती है तब लोकतंत्रमें झिझकको स्थान नहीं रहता। जनताके प्रतिनिधियोंको जनताकी मांग ठीक स्वरूपमें रखनी चाहिए ताकि वह पूरी हो सके। जनताका मानसिक सहकार तो बड़ी-बड़ी लड़ाइयां जीतनेमें बहुत मदद दे चुका है।

कहते हैं कि दुनियामें जितना पेट्रोल निकलता है, उसका एक

आजकलका भाव	नवंबरमें अंकुश उठानेसे पहलेका भाव
चीनी ३७॥) मन	......८०)से ८५) मन
गुड़ १३)से १५) मन	......३०)से ३२) मन
शक्कर १४)से १८) मन	......३७)से ४५) मन
चीनीके क्यूब ॥=) फी पैकेट	......१॥)से १॥।) फी पैकेट
चीनी देशी ३०)से ३५) मन	......७५)से ८०) मन
अनाज	
गेहूं १८)से २०) मन	......४०)से ५०) मन
चावल बासमती २५) मन	......४०)से ४५) मन
मकई १५)से १७) मन	......३०)से ३२) मन
चना १६)से १८) मन	......३८)से ४०) मन
मूंग २३) मन	......३५)से ३८) मन
उड़द २३) मन	......३४)से ३७) मन
अरहर १८)से १९) मन	......३०)से ३२) मन
दालें और तेल	
चनेकी दाल २०) मन	......३०)से ३२) मन
मूंगकी दाल २६) मन	......३९) मन
उड़दकी दाल २६) मन	......३७) मन
अरहरकी दाल २२) मन	......३२) मन
सरसोंका तेल ६५) मन	......७५) मन

प्रतिशत ही हिंदको मिलता है। निरुत्साह या निराश होनेका कारण नही। हमारी मोटरे तो चलती ही है। क्या इसका यह मतलव है कि क्योकि हम युद्ध करनेवाले लोग नहीं, इसलिए हमे ज्यादा पेट्रोलकी जरूरत ही नही, और अगर हमे ज्यादा जरूरत पड़े और दुनियामे जितना पेट्रोल निकलता है, उतना ही निकले तो दुनियाके लिए पेट्रोल कम पडेगा? टीकाकार मेरे घोर अज्ञानकी हँसी न करे। मै तो प्रकाग चाहता हू। अगर मै अपना अंधेरा छिपाऊ तो प्रकाश पा नही सकता। सवाल यह उठता है कि अगर हमारे हिस्सेमे वहुत कम पेट्रोल आता है, तो काले वाजारमे पैट्रोलका अटूट जखीरा कहांसे आता है, और गाड़ियोका अनावश्यक आना-जाना, विना किसी तरहकी रुकावटके कैसे चलता है?

पत्र लिखनेवाले भाईने जो हकीकत वयान की है वह सच्ची हो तो चौंकानेवाली चीज है। अकुश अमीरके लिए आशीर्वादरूप है और गरीवके लिए शापरूप, और अकुश रखा जाता है गरीवोंकी खातिर। अगर इजारेका रिवाज इसी तरह काम करता है तो उसे एक क्षण भी विचार किए विना निकाल देना चाहिए।

कपड़ेके वारेमे तो, अगर खादीको, जिसे आजादीकी वर्दी कहा गया है, हम भूल नही गए तो कपडेपर अकुश रखनेके पक्षमे तो एक भी दलील नही है। हमारे पास काफी रुई है और काफी हाथ है जो देहातोंमे चर्खा और कर्घा चला सकते है। हम आरामसे अपने लिए कपड़ा तैयार कर सकते है। न उनके लिए शोरगुलकी जरूरत है, न मोटर-लारियोकी। पुराने जमानेमें हमारी रेलवेका पहला काम फौजकी सेवा था, दूसरे नवरपर वदरगाहोपर रुई ले जाना और वाहिरसे वना कपड़ा भीतर ले आना। जव हमारी कैलिको, जिसे खादी कहते है, देहातोमे वनती है, और वही खपती है, तव इस केंद्रीकरणकी कोई जरूरत नही रहती। अपने आलस्य या अज्ञान, अथवा दोनोको छिपानेके लिए हम अपने देहातोको गाली न दे।

: २०० :

६ जनवरी १९४८

भाइयो और बहनो,

आज भी मैंने सुना है कि कई आदमी मुसलमानोके घरमें जानेकी कोशिश कर रहे है। तो पुलिस अपना फर्ज अदा करती है और रोकनेकी कोशिश करती है। पुलिस आखिर क्या करे? वह अश्रु-गैस चलाती है। आज मैंने सुना कि पुलिसकी तरफसे ऐसी कोशिश हुई। यहां काफी जगह है। दिल्लीमें जगह नही है ऐसा तो नही है। हा, यह है कि दु खी लोग परेशानीमें पड़े है। वे लोग आकाशके ही नीचे रहे, यह तो ठीक नही है। पानी पड जाता है उस समय उनके और आकाशके वीच सिर्फ कपड़ा रहे तो वह काफी नही है। इसलिए परेशानीमें वे लोग सब कुछ कर लेते है। अगर सचमुच इतनी ही वात है तव तो उन्ही घरोमें जायं, मुसलमानो-के ही मकानोंका कब्जा ले, यह जमता नही है। तब मैंने एक भाईको कह दिया कि यह बड़ा मकान है। इसमें तो काफी लोग आ सकते है, मुझको निकाल दो, एक वीमार औरत है उसको भी निकाल दो, पीछे मालिकको निकाल दो, इसको मैं समझ सकता हूं। तो वह भाई कहता है कि तुमको तो मिल जायगा, लेकिन हमको कहा मिलेगा! मै तो कहता हूं कि वे ऐसा करे, लेकिन कब? जब उनके पास जितना इलाज है, वह न चले और दिल्लीवाले कुछ न करे तब। इसको मै समझ सकता हूं। तब मैं उनमे कुछ शराफत पाऊगा, लेकिन जिनको हमने डरा रक्खा है या जो भाग गए है, उनके घरोपर कब्जा कर ले या जिनके नजदीकके घर खाली हो गए है, उनके घरोंपर कब्जा कर ले या उनके घरोमें बैठना चाहे तो वह अच्छी वात नही है। उससे हमारी भलाई नही हो सकती, शरणार्थियोंकी भी भलाई नही हो सकती। हिंदू, मुसलमान, सिख या हिंदुस्तान, किसीकी भलाई नही हो सकती।

आज तो पुलिसने ऐसा किया कि किसी-न-किसी तरहसे उन लोगोको कुछ मकान दे दिए, लेकिन उन लोगोने कहा कि ये मकान नही चाहिए, हमें तो वे ही मकान चाहिए। तो मैं तो कहता हू कि साफ कह दो कि हमे

यहा मुसलमान नही चाहिए। यह शराफत तो नही है, लेकिन इतना तो होगा कि टेढी तरहसे निकालनेके वदले सीधे तौरसे निकाल दे। साफ-साफ कह दो कि हम पाकिस्तानमे हलाक हो गए है तो हम तुमको भी हलाक करेगे। हमको तुम्हारा एतवार नही है। इसको तो मै समझ सकता हू, लेकिन आज जैसा हो रहा है वह पागलपन है।

हमारे मुल्कमे वदकिस्मतीसे ऐसा हो गया है कि विना सोचे-विचारे कई काम इधर-उधर ऊटपटांग कर वैठते है। लोग कुछ ऐसा समझते है कि हमारा मुल्क आजाद हो गया है, हमारा राज हो गया है तो हम जैसा चाहे वैसा करे। ववईसे खवर आई है कि वहा सल्तनत वडी मुसीवतमे पडी है। वदरगाहके मजदूरोने हडताल कर दी है। इस तरहकी हडतालसे हम मरनेवाले है। इससे जो मजदूर हडताल करते है उनका भी कोई भला नही होनेवाला है। उसमे चाहे किसी दलका हाथ हो, चाहे काग्रेसका हो या समाजवादी दलका हो, या कम्यूनिस्टका हो या और किसी दलका हो, मुझे इसकी परवा नही है। मै तो सवके लिए कहूगा कि इस तरहसे कारोवार नही चलेगा। ऐसा करनेसे हम मरनेकी कोशिश कर रहे है। आज हमारे देशकी स्थिति नाजुक है, इसलिए हमे तो ऐसी कोशिश करनी चाहिए, जिससे हम वच जाय।

मुझको औंधसे वहाके महाराजा साहवने लिखा है। औंध महाराष्ट्रमे एक छोटी-सी रियासत है। उन्होने तो जव अग्रेजी सल्तनत थी तभीसे अपनी रियासतका सव काम वहाके लोगोके हाथ सौप दिया था। उनके और उनके पुत्रके दिलमे हुआ कि प्रजाकी सेवा करनी चाहिए तो उन्होने वहाके लिए खासा निजाम वना लिया, पचायत राज वना दिया और सत्ता उसके सुपुर्द कर दी। तो महाराजा साहव लिखते है कि सव ऐसा कहते है कि आप अकेले ऐसा नही कर सकते, सव करे तव आप करे। उन्होने हिंदुस्तानमे अपनी रियासतको मिलानेका तय तो करीव-करीव कर ही लिया है, तो भी राजा तो रह जाते है, लेकिन लोगोका दास होकर रहते है, लोग उन्हे जितना दे उतना ही वे ले सकते है। खालसा हो गया है, उसके माने यह है कि जैसी रैयत है वैसा ही राजा है। उन्होने ऐसा कर दिया है। सरदार साहवने उडीसासे शुरू

किया कि राजा लोगोंको भी कुछ पेंशन दे दी जाय, काम करे चाहे न करे। औंधके राजा साहबको भी पेंशन दे दी जाय और बैठ जायं तो इसे मैं अच्छा नही समझता। हां, वे दखल न दे। वे कहते हैं कि पंचायत राज दे दिया है तो उसके मुताबिक रियासतमें काम चल सकता है या नहीं, क्योंकि उनसे कहा गया है कि हिंदुस्तानसे जैसी अन्य मिली हुई रियासतोंमें काम चलेगा वैसे ही वहां चलेगा, अलग कानून नही हो सकता। मैं तो कहूंगा कि उसमें कानूनकी जरूरत नही। क्यो? क्योंकि राजा तो है नही, तो कानून कौन बनाए। मैं तो कहूंगा कि जब हमारी हकूमत है—वह खालसा तो है ही, पंचायत है—उसका हक तो कोई एक आदमी छीन नही सकता, तब उसमें डरनेकी क्या बात है! सच्चा हक तो वही है जो छीना नही जा सके। वह तो धर्मके अमलसे पैदा होता है। उनका यह धर्म हो जाता है कि वे अपना फर्ज अदा करे। अगर कुछ लोग मिल जाते हैं और कोई गिरोह बना लेते हैं तो भी क्या? पूछना क्या था? पचके मार्फतसे न्याय करेंगे। जो अदालतें बनी हैं उनमें नही जायंगे। अपने आप सब कर लेंगे। वहा ज्यादा लोग गुनाह नही करते हैं—थोड़े आदमी करते हैं। जो करते है वे भी पंचायतके बाहर जानेवाले नही है। सभी लोग ऐसा ही चाहते हैं। इसका नाम सचमुच प्रजासत्ता या प्रजाराज है। प्रजासत्ता बन गई इसका मतलब यह नही है कि राज दिल्लीसे चले। अगर सचमुच वैसी सत्ता बन जाती है तब तो वह प्रजाके मार्फत ही बनेगी और उसमें देहातके लोग रहेंगे। ऐसी जो पचायत है वह काम चलाए। उसमें दखल देनेकी गुंजाइश नही। उसमें कोई दखल दे नही सकता। दखल देनेका कानून भी नही बनाया जा सकता; नही तो वह लौकिक राज या पचायत राज नही होगा। तलवारके जरिए पचायत राज नही हो सकता।

तीसरी बात मैं और अभी कह देना चाहता हूं। एक भाई लिखते हैं—वह खासा खत है, हिंदुस्तानीमें है—कि सच्ची चीज तो ऐसी है कि जो मुल्क हमेशा सुखी है वही राम-राज्य हो सकता है। बाहरके मुल्कसे कोई माल लेता नही, ऐसा नही है; लेकिन उतना ही लेना चाहिए जितनी कीमतका माल हम भी भेज सकें। तब हिसाब सीधा हो जाता है। अगर

हम वाहरसे माल खरीदनेमें पचास रुपए खर्चें तो उतना वाहरसे भी आना चाहिए, तव तो ठीक है। वह कहते हैं कि हमारा मुल्क हमेशा ऐसा रहा नही है। हमेशा हम कर्जदार रहे हैं। अभी ऐसा हो गया है कि हम लेनदार हो गए है, लेकिन कवतक रहेगे अगर हम अभी खर्च ही करते रहे ? कहनेका मतलव यह है कि हम वाहरसे उतना माल मगाते नही रहे जितना हम भेजते नही। अगर भेजते हैं तव ठीक हो जाता है, लेकिन नगद भेजकर मगाते है तो ठीक नही। आज तो हमे ऐसा करना चाहिए कि वाहरसे जो माल मगवाते है वह ज्यादा होना ही नही चाहिए—हम वाहरसे कम माल मगवाए और ज्यादा भेजे तव तो हमारा देश लेनदार देश हो सकता है, तव हमारी जमा वढ़ जाती है, यानी हमारे पास ज्यादा पैसे हो जाते हैं। अगर हम ऐसा कर सकेगे तव हम जो काम करना चाहते हैं कर सकते है, नही तो नही।

एक वात यह है कि हम वाहरसे जो मगवाते हैं वह हमारे कच्चे मालका पक्का माल वनकर आता है। इससे हमारा सिलसिला वदल जाता है। हमे तो अपने देशको ऐसा वना लेना चाहिए कि वाहरसे मगवानेकी जरूरत ही न रहे। अगर मगवाते हैं तो दूसरोकी सहायता करनेके लिए। कोई कहे कि हमको कुछ पैसेकी दरकार है तो पैसे है तो भेज दो। वह ठीक कहते हैं कि ऐसे ही अमरीका वना है। हमे अमरीका-जैसे नही वनना है; लेकिन हम इतना तो कर ले कि हम वाहर ज्यादा भेजे नही तो वाहरसे मगवाए भी नही। तभी हमारी खैर है।

: २०१ :

७ जनवरी १९४८

भाइयो और वहनो,

अभी सुना है कि विद्यार्थी लोग हडताल करनेवाले हैं—वह ९ तारीखसे शुरू होनेवाली है। मुझको इसके वारेमे इतना ही कहना है कि यह वहुत गलत वात है। इस तरहसे हड़ताल करना और उससे

अपना काम निकालना कोई बेहतर चीज नही है—यह अहिंसक चीज तो है ही नही, इसके बारेमे मेरे दिलमे कोई सदेह ही नही। मैंने बहुत अहिंसक हडताल कराई है। हरएक हडताल अहिंसक है या हरएक हडताल उचित है, यह नही कहा जा सकता। विद्यार्थी जब विद्याभ्यास करते है तब उनको हडताल क्या करना था और इस तरहसे तो हमारा काम बिगडता है। अगर वे लोग मेरी प्रार्थना माने तो अच्छी बात है। इसके बारेमे भी कहूगा कि अनुभव लेते हुए मुझे करीब पचास वर्ष हो गए। यह अनुभव हिंदुस्तानसे नही, दक्षिण अफ्रीकासे शुरू किया और कामयाब हुआ। मुझे ऐसा कोई ख्याल नही है कि जिसमे पडा उसमे कामयाब नही हुआ। ऐसा हो ही नही सकता। अगर वह सचमुच न्याय है और उसके सिवा दूसरा कोई चारा नही है तो कामयाबी मिलती ही है।

मेरे पास आज पजाब, सिध, सरहदी-सूबा और कहा-कहाके नही थे—सब जगहके भाई आ गए थे, लेकिन सब पाकिस्तानवाले थे। प्रतिनिधि मिलने आए। सब थोडे आ सकते थे। वे अपने दु खकी कहानी सुना रहे थे। कहते थे कि आप इसके बारेमे दिलचस्पी क्यो नही लेते है? बात तो यह है कि वे बेचारे कहासे जान सकते है कि मै क्या कर रहा हू। मै तो यहा इसी कामसे बैठा हू कि किसीके पाससे करवा सकता हू तो करवाऊ। आज तो मेरी दीन हालत हो गई है। एक जमाना था, जब कि मैने कहा कि ऐसा होना चाहिए तो हो जाता था। आज ऐसी बात नही रही। मै तब भी एक अहिंसक सेनापति था—अब जब कोई मानता नही है तो सेनापति कैसा? वह जमाना चला गया। लेकिन उस जमानेमे भी मैने ऐसा कभी दावा नही किया कि मै जो कहता था उसको सब मानते थे, लेकिन लोग मानते थे, जगत मानता था। आज मेरी बात कौन मानते है, मै नही जानता हू। मै जो आज कहता हूं वह अरण्यरोदन है; लेकिन धर्मराजने तो ऐसा कहा है कि अकेले रहनेपर भी क्या हुआ, धर्मकी बात तो करनी ही चाहिए। लोग कहते है कि हकूमत है, उसमे तो तुम्हारे दोस्त है, तो तुम जो कहोगे उसको तो वे लोग माननेवाले है। उसके मुताबिक उनको चलना ही चाहिए। बात सच्ची है—वे मेरे दोस्त है; लेकिन मेरे कहनेके मुताबिक वे क्यों चले? आप सब मेरे दोस्त है, इसका मतलब

ऐसा थोड़ा है कि मैं जैसा कहू वैसा करे। दिलमे घुसता है, जमता है तव करे और न करे तो आलसी है। हकूमतमे मेरे दोस्त है तो उनसे वहस करूगा और कहूगा। मान जायगे तो अच्छा है, नही तो मैं लाचार हूं। वे लोग मुझसे कह सकते है कि हकूमत चलानेमें कई मुश्किलोका सामना करना पड़ता है, तुम भी हकूमत चलाओगे तव भी वैसा नही कर सकोगे। हकूमतमे आज जो मेरे दोस्त है वे करे, पीछे उनके सेक्रेटरी है वे भी मेरे दोस्त है, क्योकि वे लोग जानते है कि मैं किसीका शत्रु नही हूं, वे मानें, पुलिस है वे भी माने, तो पीछे क्या चाहिए? अगर इस तरहसे हो तो आज जो हिंदुस्तानमे हो रहा है वह होनेवाला नही था। हकूमत कह सकती है कि हमारे पास ऐसे सिपाही, कारकून, कहा है? जो अग्रेजोंके जमानेमे थे वे ही है। निकल जाय तो भी काम नही चलता है। ऐसा उन्हें कहनेका अधिकार है। चाहे कुछ भी हो, मै आज जो चाहता हूं वैसा करवा नही सकता हू। मैं तो आप लोगो-जैसे मिस्कीन हूं। मै परमेश्वर तो हू नही। मेरी जितनी ताकत है उतना करता हू।

तो भी वे लोग कहते है—ठीक कहते है—कि इसके वारेमे हम क्या करे। रहनेके लिए कुछ तो होना चाहिए, पहननेको चाहिए और खानेके वारेमे होना चाहिए—तीनो चीजे चाहिए। मेरे पास है तव उनके पास क्यो नही होनी चाहिए—सवके पास क्यो नही होनी चाहिए। उन लोगोने कोई गुनाह किया है, ऐसी वात नही है। शरणार्थियोने कोई गुनाह नही किया है, उन लोगोने मारा नहीं है, पीटा नही है, हकीकतमें उन्हे डराकर मार-पीटकर, भगा दिया है। वे इस तरहसे है, वेगुनाह है। मेरे भाई है, वहन है, उनपर ऐसा दवाव डाला जाय, अन्याय हो और यहा आनेपर भी आरामसे नही रह सके तो उन्हे ऐसा कहनेका हक है कि तुमको तो सव मिलता है, हमको नही मिलता है, यह कहांका न्याय है? मुझको यह कवूल करना होगा कि यह अन्याय है। तो वे क्या करे? यह तो मैंने वता दिया है। किसीके मकानमें जाकर वैठ जायं, यह कहाका तरीका है? हमला करनेका तरीका मैंने वता दिया है, अहिसक हमला करे। किस घरपर हमला करे, यह भी वता दिया है।

मै तो कहता हूं कि आप सीधी वात करे और कह दे कि जो काम

हमको दिया जायगा उसको करेंगे—आगे न चले तो बात दूसरी है। जैसे एक आदमीको लिखनेका काम दिया, लेकिन लिख नहीं सकता था तो क्या करे! एकको कुदाली दी तो वह कहे मुझसे कलम चलती है, इसलिए मुझको वही दो। ऐसा मैं नहीं सुन सकता हूं। जो काम दिया जाय उसको करना चाहिए। इसी तरहसे जिस जगह मकान दिया जाय, तंबू दिया जाय, उसमें रहे। घास-फूसके जो मकान दें उनमें भी रहना चाहिए। हां, मकान होना चाहिए—ऊपर छत होनी चाहिए। मैं उसमें रहा हूं, इसलिए कहता हूं। चारपाईकी कोई दरकार नहीं। मैं तो बताता हूं कि घासमें—हरी घासमें नहीं, सूखी घासमें—भी कोई भी आदमी आरामसे सो सकता है। उसमें हर्ज नहीं होता है। रुईवाले गद्देमें सोनेसे जितनी गर्मी मिलती है, उतनी गर्मी सूखी घासमें भी मिलती है, यह मैं तजुर्बेकी बात कहता हूं। किसी एकके पास गद्दा है तो मुझको भी गद्दा चाहिए, नहीं तो वैसे ही पड़ा रहूंगा, ऐसा कहना नादानी है। जो मिलता है उसको ईश्वरका अनुग्रह मानकर ले ले, तब तो सब काम हो सकता है। ऐसा करे तो आज जो हमारे साथ चंद लाख शरणार्थी पड़े हैं, उतना ही नहीं, अगर करोड़ भी हो तब भी काम अच्छी तरह चल सकता है। यहां काफी जगह पड़ी है। सीधी बात यह है कि उनका दिल साफ होना चाहिए; लेकिन होता है उल्टा।

आपने देखा होगा कि कराचीमें क्या हो गया। लोग कहते थे कि सिंधमें ऐसा नहीं हुआ है, हो नहीं सकता है। मैं तो कहता था कि सिंधमें हिंदू आरामसे रह नहीं सकते, हिंदूके सिवा दूसरे भी नहीं रह सकते, उनका भी रहना दुश्वार है—हिंदू और सिख वहां रह नहीं सकते। वे वहांसे निकलनेके लिए गुरुद्वारा आए थे। तो गुरुद्वारापर हमला शुरू कर दिया, उनपर हमला हुआ, चंद आदमी मारे गए, चंद जख्मी हुए। इस तरहसे सिंधमें हुआ। हकूमत कहती है कि हालत जितनी जल्दी काबूमें की जा सकती थी, कर ली गई। ठीक है; लेकिन मैं इस चीजको इसलिए कहता हूं कि ऐसा होना ही नहीं चाहिए था। मैं पाकिस्तानकी हकूमतको कहूंगा कि या तो ऐसा होने नहीं देना चाहिए, नहीं तो हकूमत छोड़ देनी चाहिए। हां, ऐसा करनेसे कुछ दिन लुटेरोंका राज कायम हो जाएगा; लेकिन पीछे

हालत सुधरने लगेगी। जो मैं वहाकी हकूमतको कहता हू वही बात यहाकी हकूमतको भी कहता हू। मैं हकूमतकी ऐसी बात नही सुनना चाहता कि लोग नही मानते हैं। मैं कहूगा कि लोग नही मानते हैं तो आप हकूमत मत चलाइए। हकूमत अगर कहे कि मजबूरी है तो मैं कहूगा कि मजबूर होनेकी क्या जरूरत है। थोडा यहा किया, थोडा वहा किया, मनको फुसला लिया कि सब चलता है। तो इससे काम बनता नही है, ऐसा मेरा तजुरबा है। हा, मैं ऐसा मान सकता हू कि गाडी हमारी चल तो रही है चाहे वह एक ही कदम आगे गई हो। लेकिन आज तो वह पीछे जा रही है, यह खराब है। पाकिस्तानकी हकूमतको कहता हूं तो यहाकी हकूमतको न कहू, यह बात नही हो सकती। मेरे लिए तो दोनो बराबर हैं।

अगर पाकिस्तानकी हकूमत इस तरह लोगोको मरने देगी तो उससे बेहतर है कि हकूमत चलाना छोड दे। सो नही होता तो हकूमतको भी मरना है। मैं आप लोगोको भी बता देना चाहता हू कि इसके कारण आप दीवाने न बनें। दु खी है तो गुस्सेसे भरे है—गुस्सेके सिवा ऐसा बन नही सकते। इस गुस्सेको पीना इन्सानियत है। गुस्सेका जवाब गुस्सेसे दे और कहे कि कराचीके गुरुद्वारामे ऐसा हुआ तो हम भी मस्जिदोको ढा डालें, उनपर कब्जा कर लें, पीछे मुसलमानोको मार डाले, यह न्याय नही है। इस तरहसे बदला लेनेसे हकूमत रहती कहा है। हकूमतका काम इस तरहसे चलता नही है। ऐसा करनेसे आखिरमे हमे बिगडना होगा। हा, शरणार्थियोके लिए इन्सान जितनी सहूलियतें पैदा कर सकता है, करना चाहिए, नही तो शर्मकी बात है। कराचीमे ऐसा हो गया, उससे न डरना है, न घबराहटमे पड़ना है और न गुस्सा करना है। उसका बदला हम ऐसे ले सकते हैं कि हम अच्छी तरहसे रहे। हम यहा ठीक तरहसे रहें, मुसलमानोको रखे और शरणार्थी सभ्यतासे रहे तो आज जो दर्द पैदा हो गया है उसको हम मिटा देनेवाले है इसमे मुझे कोई शक नही है।

: २०२ :

८ जनवरी १९४८

भाइयो और बहनो,

अभी एक भाई लिखते है कि मैने हरिजनोको शरावके वारेमे लिखा था। मैने तो हरिजनोके लिए ही नही, सबके लिए लिखा था। वे लिखते है कि क्या हरिजनोको शराव छोड़ देनी चाहिए और पीछे फौजी पड़े है, धनिक पड़े है उनको क्या छोड़नेकी जरूरत नही है? सच्ची बात यह है कि यह प्रश्न पूछने लायक नही है। धनिक न छोड़े, फौजी न छोडे तो क्या दूसरे भी न छोड़े! कानून भी न हो कि शराव न पीए तो वह धर्म थोड़े हो जाता है। दूसरे पाप करे तो क्या हम भी पाप करे, ऐसा बन नही सकता है। वे पूछते है तो मै कहूगा कि इस तरहसे जो शराव पीते है उनको तो छोडनी ही चाहिए। हरिजन है, मजदूर है वे इसे समझ नही सकते तो कानून बताता है कि मत पीओ। उनके पास आरामकी चीजे नही रहती है तो शराव पीकर दर्द दूर करना चाहते है। कगालपन है उसको भी वे इसीसे भुलाना चाहते है। इस तरहसे उनके ऐसा करनेका कुछ सबब हो सकता है, लेकिन धनिक है, फौजी है उनको पीनेकी क्या जरूरत है? मै धनिकोको क्या समझा सकता हू? फौजी कहे कि इसके बिना काम कैसे चल सकता है; लेकिन मै तो फौजको मानता ही नही हू तो फिर इसको क्या माननेवाला हू! मेरे दोस्त भी पड़े है जो शराव नही पीते है। हमारे यहां सब पीते है, ऐसा नही है। सब फौजी पीते है ऐसा भी नही है। अग्रेजोमे भी ऐसे पड़े है जो शराव नही पीते। ऐसे थोड़ा है कि मै चाहता हूं कि हरिजन ही छोड़ दे। मै तो कहता हूं कि सबको छोड़ना चाहिए। कानूनकी बात तो सबके वास्ते है। कानून थोड़े कहता है कि धनिक पी सकते है और हरिजन नही।

अभी विद्यार्थियोंकी हडतालकी बात करना चाहता हूं। सुनता हूं कि काग्रेसके विद्यार्थी हड़तालमें शामिल नही होगे। यह तो कम्यूनिस्ट विद्यार्थियोकी हड़ताल है। विद्यार्थियोमे सब होते है—कम्यूनिस्ट, सोशलिस्ट, काग्रेसी—इससे मेरा वास्ता नही है। मै तो सबके लिए कहता हू। काग्रेसके

विद्यार्थी हड़ताल नही करते है तो वे धन्यवादके पात्र है। कम्यूनिस्ट हड़ताल कर सकते है, ऐसा थोड़ा है। जैसे शरावके वारेमे कहा है, वैसा यह भी है। कांग्रेस क्या, मै तो सवको कहूगा कि उन लोगोको ऐसा नही करना चाहिए। मुझको दर्द होता है कि कम्यूनिस्ट भाई ऐसा कर रहे है। कम्यूनिस्ट भाई होशियार होते है, वे देशकी सेवा करना चाहते है, लेकिन इस तरहसे देशकी सेवा नही हो सकती। फिर विद्यार्थी किसी दलका पक्ष क्यों ले—विद्यार्थियोका पक्ष एक है। विद्यार्थी तो विद्याभ्यास करते है सारे मुल्कके लिए—अपने कामके लिए नही, अपना पेट भरनेके लिए नही। अपना काम निकालनेका तो दूसरी तरहसे हो सकता है—पहले ऐसा होता था, आजतक ऐसा होता था, लेकिन अव तो वागडोर हमारे हाथमे आ गई है तो विद्यार्थी ज्यादा चाहिए और सच्चे विद्यार्थी चाहिए। उनको सवकी सेवा करनी चाहिए, विद्याभ्यास करना चाहिए, उनको उसको हजम करना चाहिए, उसपर अमल करना चाहिए। विद्यार्थियोंके लिए समाजवाद है नही; कम्यूनिज्म है नही, कांग्रेस है नही—उसका एक काम है विद्याभ्यास करना, जिससे ज्ञानकी वृद्धि हो। हड़ताल उनके लिए निकम्मी है—यह सवके लिए घातक है।

एक प्रश्न आ गया है, अच्छा है। वे लिखते है कि आप तो वुरी वस्तुका त्याग करवाना चाहते है, आप भी करते है, यह अच्छी चीज है। तो वे कहते है कि आप पाकिस्तानमे जाकर क्यो नही करते ? वहां सत्याग्रह क्यो नही चलाते ? यहां तो काफी कह दिया, अव वहा तो जाओ। मैने तो इसका जवाव दे दिया है। हा, सत्याग्रह करनेका जवाव नही दिया है। मैने तो कह दिया है कि मै किस मुहसे पाकिस्तान जा सकता हू। यहां हम पाकिस्तानकी चाल चले तो कैसे वन सकता है !

ऐसा आप पूछते है तव जवाव देता हू। मै पाकिस्तान तभी जा सकूगा जव हिंदुस्तानमे साफ हो, कहने लायक कुछ चीज नही हो। मुझे तो यहां करना या मरना है। दिल्लीके हिंदू, सिख पागल हो गए है। वे चाहते है कि यहासे सव मुसलमानोको हटा दिया जाय, काफीको हटा भी दिया है। वाकी वचे है वे भी हटा दिए जाए। ऐसेमे मेरा जाना फजूल है। वहा पाकिस्तानमे जितने हिंदू, सिख पड़े है वे आना चाहते है तो

सत्याग्रह कौन करे? आज सत्याग्रह कहा रहा? सत्याग्रह नही तो अहिंसा नही। अहिंसाको आज कौन मानता है? सब हिंसाको मानते है। सब फौज मागते है और जब यह मिले तब राजी हो सकते है, चैनसे बैठ सकते है, नही तो चैनसे नही बैठ सकते। आज ऐसा हो गया है कि ईश्वरका स्थान फौजको मिल गया है। इसका मतलब यह है कि लोग हिंसाके पुजारी हो गए है। तो हिंसाके पुजारी होते हुए सत्याग्रह कैसे चलाए? मेरी सुने तो अखबारोकी शकल बदल जाय। आज हमारे अखबार भी काफी गदगी फैला रहे है। आज तो हम सत्याग्रहको भूल गए है। वह हमेशा चलनेवाली चीज है, लेकिन चलानेवाले सत्याग्रही नही है।

फिर वह भाई कहते है कि जब पाकिस्तानसे इतने हिंदुओ और सिखोको यहा हटा लिया तब मुसलमानोके लिए जगह कहा है? जबतक उतने मुसलमानोको यहासे हटा नही देते तबतक उनको कहा रखोगे? तो जितने हिंदू और सिख पाकिस्तानसे आए है उतने मुसलमान तो यहासे वहा जाय। मै ऐसा मानता हू कि करीब-करीब उतने मुसलमान तो चले गए। बाकी पडे है। पाकिस्तानसे सब हिंदू और सिखोको हटानेकी चेष्टा हो रही है, इसलिए यहासे सब मुसलमानोको हटाया जाय, यह पागलपन है। यहा मुसलमानोकी काफी तादाद रह जाती है। इसलिए मौलाना साहबने लखनऊमे सम्मेलन बुलाया। वहा, कहते है, कम-से-कम सत्तर हजार लोग आ गए थे—काफी तादाद हो गई। इस जमानेमे मुसलमानोकी इतनी बडी सभा नही हुई। उसके बारेमे भली-बुरी बातें निकलती है। उनको मै छोड देता हू। यहां जो मुसलमान पडे है उनके प्रतिनिधि उसमे गए। क्या हम इन मुसलमानोको मार डाले या पाकिस्तान भेज दें? भेजे तो किस वास्ते? यह समझने लायक चीज है। आज मै यही कहूगा कि ऐसा कहना कि मुसलमानोको यहासे हटा दे, मुझको लज्जास्पद बात लगती है। मेरी जबानसे ऐसी चीज निकलनेवाली नही है। इसमे कोई बहादुरी नही है। तो हिंदुस्तानमे साप्रदायिकता फैल गई, ऐसा कहना पडेगा। ऐसा दुनियामें कहा नही है? है, तो भी मुझको परवाह नही है। दुनियाकी बुराइयोकी नकल थोडी करनी है, हमे नेकियोकी नकल करनी है।

आज मेरे पास बहावलपुरके काफी लोग आ गए थे। मीरपुर काश्मीरके लोग भी आ गए थे। वे परेशान है। वे अदबसे बाते करते थे। वे बैठे थे, इतनेमे पडितजी आ गए। तो मैंने पडितजीको कहा कि इनकी बाते सुन ले। मीरपुरवाले पडितजीसे बातचीत कर गए। मेरी उम्मीद है कि कुछ-न-कुछ हो जायगा। पूरा हो जायगा, ऐसा मैं नही समझता हू। आज लडाई छिड तो नही गई है, लेकिन एक किस्मकी चल रही है। तब ऐसा रास्ता निकालना और सबको एकाएक लाना हो नही सकता। जितना हो सकेगा, करेंगे, ऐसा मै मानता हू। इतना करनेपर भी अगर कोई न बच सका, न लाया जा सका तो क्या करे। हमारे पास, जितनी चाहिए, उतनी गाड़िया नही है। आज तो काश्मीरका रास्ता इतना नही खुला है कि लाखो आ-जा सके। है, थोडा-सा रास्ता है, उस रास्तेसे इतनी तादादमें लाना मुश्किल है।

बहावलपुरकी बात सुनने लायक है। वहाके जो लोग आज मुझसे मिले, उन्होंने बताया तो मैंने कहा कि मेरेसे जितना हो सकेगा कोशिश करूगा। वे लोग कहते है और ठीक कहते है कि जो सूबेसे आए वे भी शरणार्थी और बहावलपुर रियासतसे आए वे भी शरणार्थी, लेकिन सूबेसे आए वे तो नौकरीके लिए दरखास्त कर सकते है—ऐसा सिलसिला हो गया है कि नौकरी वगैरा दिलानेके लिए नाम रजिस्ट्री करवाने है—तो हमारा नाम क्यो न उसके लिए दर्ज किया जाय? इतनी तकलीफ हम क्यो गवारा[१] करे? मैं समझता हू कि ऐसा है नही और होना नही चाहिए। लेकिन वे लोग कहते है—अच्छे आदमी है तो मैंने कहा कि पता लगाऊगा। हकूमतमे ऐसे पडे है, उनके पास सब पहुच नही सकते है। मेरे पास तो सब आ सकते है। मै तो इसी कामके लिए पड़ा हू। मेरा दूसरा काम नही है। तो वे सब आ गए थे, सब अदबसे बातचीत करते थे, वहशियाना बात नही करते थे। वे कहते थे कि ऐसा नही है तो ठीक है, लेकिन हम इसको बर्दाश्त नही करेंगे। हम कुछ नही है, क्योकि हम रियासतसे आए और खालसासे आते तो बात दूसरी थी। यह कहाका न्याय है?

---

[१] सहे।

सरहदी सूबा, पंजाब, सिंधसे आते है उनकी दरखास्त ली जाती है, नही तो नहीं। मैने कहा कि ऐसा हो नही सकता। अगर हुआ है तो गलतीसे हुआ है। सरदारने कहा कि ऐसा हो नही सकता और हुक्म भी यह निकाला तब भी नही होता है। है कि नही, मै पता लगाऊगा; लेकिन मुझको लगा कि इतना भी कह दू तो इतमीनान हो जायगा कि चलो, हमारा काम भी चलता है।

: २०३ :

९ जनवरी १९४८

भाइयो और बहनो,

आज बहावलपुरके मदिरके मुखिया मुझसे मिलने आए थे। उन्होने मुझसे बताया कि वहा उस मदिरमे शरणार्थियोको किस तरह मारा गया। उन्होंने कहा कि अब वहाके बचे हिंदुओको लानेके लिए कुछ प्रबध होना चाहिए। तो मैंने कहा कि एक इन्सानसे जितना हो सकता है कर रहा हू। आज हकूमत दो हो गई तो दो राजा हो गए है, इसलिए इस राज्यको उस राज्यमे दखल देनेका ऐसा कोई हक नही है। आजका समय इतना नाजुक है कि लोगोमे धैर्य होना चाहिए और लोगोको मरनेसे डरना नही चाहिए; क्योकि आज नही तो कल आखिर मरना ही है तो बहादुरीके साथ क्यो न मरें? (सत्याग्रही की तरह क्यों न मरें?)

एक भाईका पत्र आया है। वे कहते है कि आप बिडला-भवनमे है तो भी प्रार्थना तो होती ही है; लेकिन गरीब वहा नही जा सकते। पहले भगी बस्ती या वाल्मीकि-बस्तीमें रहते थे, उसमे गरीब भी जाते थे; लेकिन अब उनको बिड़ला-भवनमें जानका मौका नही मिलता। मेरा तो खयाल है कि मै जब य हाआया था तभी इसके बारेमे कह दिया था, लेकिन आज दुबारा कहनेकी आवश्यकता है। मैं अबकी बार जब यहा आया उस समय मार-पीट हो रही थी। दिल्ली स्मशान-सी लगती थी। उस समय भगी-बस्तीमे शरणार्थी भी पडे थे। फिर उस समय कहापर क्या

होगा कोई नही जानता था। तो सरदारने कहा कि हम तुमको वहा नही रखेंगे, विडला-भवनमे रखेंगे, तो मै यहा आ गया। मैंने कहा कि मैने ऐसी कोई शपथ थोडी ले ली है कि मै हर हालतमे वही रहूगा। मुझको किसी जगह एक कमरा देते तो उससे गुजर हो नही सकती, क्योकि मेरे साथ दफ्तर रहता है, रसोई-घर रहता है, और भी लोग रहते है। भगी-वस्तीमे गरीवोके मकान है, फिर उसमे स्कूल है, उसमे एक कमरा मिले तो काम चल नही सकता। इसलिए वहा कैसे जाऊ? मै यह भी नही जानता कि आज वह खाली है या नही। लेकिन मै समझता हू कि वहा रहनेका मेरा धर्म नही है। मै चला जाऊ पीछे शरणार्थी आएं तो उनको कहां रखोगे—रखना तो है ही। मै रहूगा तो कोई निकालेगा नही, निकाले तो अच्छा है। वे कह सकते है कि तुम भाग जाओ, यहा रहनेका तुम्हारा क्या अधिकार है, हम वाहरसे आए है। इसलिए मुझको अपनी मर्यादा समझनी चाहिए। मुझे वहा रहनेका शौक है, लेकिन शौक छोडकर यहा पडा हू। फिर ऐसा नही है कि गरीब यहा नही आ सकते। ऐसी मनाही नही है, लेकिन मै मानता हू कि इतनी दूरसे नही आ सकते। वे अगर आना चाहते है तो पैदल ही आ सकते है, मोटरसे तो गरीब आ नही सकते। अमीर मोटरसे आ सकते है।

फिर आज मै यहा पडा हू तो मुसलमानोको तो कुछ मदद पहुचा सकता हू—उस कामके लिए मेरा यहा रहना बडा मुफीद है। मै यहा रहता हू तो हकूमतके लोगोसे जल्दी मिल सकता हू, क्योकि वे पासमे रहते है—वे मुझको नही वुलाते है, खुद आ जाते है, यह उनकी मेहरबानी है। वे लोग यहा दो मिनटमे आ जाते है। भगी-वस्ती जानेमें दस-पद्रह मिनट लगते है। इसलिए यहा पड़ा हू। मुसलमान भाइयोको भी यहा आनेमे सुविधा है, वहा जानेमे डर रहता है। आज जो रह गए है उनको वचा लें तो अच्छा है। आज तो जिधर सुनता हू उधर ऐसा हो रहा है कि एकाएक लुटेरे निकल आते है और कोई आदमी वाइसिकलमे वैठा हो तो उसको उतार देते है और उसके पास जो कुछ पैसा, रुपया, घड़ी रहती है उसको ले लेते है। कोई मोटरमे रहता है उसको भी रोककर उसके पाससे सब छीन लेते है। हम आज ऐसे वन गए है। यह हमारे हिंदुस्तानके लिए शर्मकी वात है।

: २०४ :

१० जनवरी १९४८

भाइयो और वहनो,

यह देखने लायक वात है कि आज हम कहांतक गिर गए है। साधु होनेका, सयमका, गीता आदि पढ़नेका जो दावा करते है, वे इतना सयम क्यो न रखे? उन्हे एक वार कहनेसे ही वैठ जाना चाहिए[1]। इतनी दलील भी क्यों? आजकल प्रार्थना-सभामे आम तौरसे सव लोग इतनी शांति रखते है, वह अच्छा लगता है।

वहावलपुरके भाइयोकी भी ऐसी ही वात है। अपने दु.खकी वात कहिए, फिर प्रार्थनामे शांत रहिए। मुझसे किसीने कहा था कि वहावलपुर-वाले भाई आज हमला करनेवाले है। प्रार्थनामे चीखते ही रहेगे। मैंने कहा, ऐसा हो नही सकता। उनका नमूना सवके सामने रखता हू। उनके दु खका मै साक्षी हूं। वे इतमीनान रखे कि वहाके सव हिंदू-सिख आ जायंगे। नवाव साहवका वचन है—अगरचे मै नही जानता कि राजा लोगोके वचनपर कितना भरोसा रखा जा सकता है—पर नवाव साहव कहते है, "जो हो चुका सो हो चुका। अव यहांपर हिंदुओ और सिखोंको कोई दिक नही करेगा। जो जाना ही चाहेगे उन्हे भेजनेका इंतजाम होगा। जो रहेगे, उन्हे कोई इस्लाम कवूल करनेकी वात नही कहेगा।" हो सकता है, वहां सव सही-सलामत हों। यहाकी हकूमत भी वेफिकर नही है। मै आशा रखता हूं कि अभी वहां सव लोग आरामसे है। आप कहेगे, वे आज ही क्यो नही आते? आपको समझना चाहिए कि पहले मुल्क एक था। अव हम दो हो गए है। वह भी एक दूसरेके दुश्मन। अपने देशमें परदेशी-से वन गए है। सो जो हो सकता है सो करते है। वहां तो सत्तर हजार हिंदू-सिख पडे है। सिंधमे और भी ज्यादा है। वे वहां सुरक्षित नहीं।

---

[1] भाषणसे पहले साधुके कपड़े पहने हुए एक भाईने जिद की कि वे अपना खत गांधीजीको पढ़कर सुनावेंगे। गांधीजीको काफी दलील करके उन्हें रोकना पड़ा। प्रार्थनाके बाद गांधीजीने भाषण उसीसे शुरू किया।

कराचीसे एक तार आया है। वह मैंने यहां आनेसे पहले पढ़ा। उसमे लिखते है कि अखबारोमे जो आया है, उससे बहुत ज्यादा नुकसान वहां हुआ है। आज ऐसा जमाना है कि हमे शाति और धीरज रखना है। हम धीरज खो दे, तो हम हार जाएंगे। हार शब्द हमारे कोषमे होना ही नही चाहिए। उसके लिए यह जरूरी है कि गुस्सेमे न आवे। गुस्सेसे काम बिगडता है। ऐसे मौकेपर क्या करना चाहिए सो हमे सोचना है। मै तो आपको वह बताता ही रहता हू।

मेरे पास आज ईरानके एलची आए थे। वह यहांकी हकूमतके मेह-मान है। वे मिलने आए और कहने लगे, "कि एक काम है। ईरान और हिंदमें बडी पुरानी दोस्ती रही। ईरानी और हिंदी दोनों आर्य है। हम तो एक ही है।" यह भी ठीक है। जेदावस्ताको देखे, उसमें बहुत सस्कृत शब्द है। हमारा व्यवहार भी साथ-साथ रहा है। वे कहते है, "एशियामें आप सबसे बडे है। आपकी बदौलत हम भी चमक सकते है। हम दिलसे एक होना चाहते है।" गुरुदेव वहां गए थे। वे ईरानको देखकर खुश हो गए। उन्होंने कहा—हमारे ही लोग वहा रहते है।

ईरानके एलचीने कहा, ईरान और हिंदका सबध नही बिगडना चाहिए। मैने कहा, कैसे बिगड़ सकता है? उन्होने बबईका एक किस्सा सुनाया। वहा काफी ईरानी है। चायकी दूकान रखते है। वहा काफी हिंदू, मुसलमान; पारसी, ईसाई जाते हैं। उनकी चायमे कुछ खूबी है। वहा कुछ फसाद हुआ होगा। मै नही जानता। सुनता हू, कुछ ईरानी मारे गए। ईरानी मुसलमान तो है ही। ईरानी टोपी पहनते है। आज हम दीवाने बन गए है। किसीके दिलमे हुआ होगा कि वे मुसलमान है तो काटो उनको। अगर ऐसा हुआ है तो बुरी बात है। मैंने पूछा, वहाकी हकूमतके बारेमें क्या कुछ कहना है? उन्होनें कहा, वहाकी हकूमत तो शरीफ है। उन्होंने जल्दीसे सब ठीक कर लिया। यहाकी हकूमत भी बडी शरीफ है, ऐसा वे कहते थे। यहा जो मुसलमान भाई है, उनके लिए गार्ड रखे गए है। उन्हे आदरसे रखते है। हकूमतसे हमे कोई शिकायत नही है। उन्होने कहा कि ईरानमे भी हिंदू, सिख, मुसलमान सौदागर सब मिल-जुलकर रहते है। हिंदसे बढ़ा-चढ़ाकर

खबरें जाती हैं। उससे आगे क्या होगा, सो पता नहीं। मगर हम इस बारेमें होशियार हैं।

एक भाई लिखते हैं—"अनाज वगैराका अंकुश हटवा दिया और हट-वानेकी कोशिश करते हैं। कई लोग कहते हैं, यह अच्छा है। पर दरअसल ऐसा नहीं। मैं आपको जताए देता हूं।" मैं इन भाईको जानता हूं। मैंने उन्हें लिखा है—आपने कहा तो अच्छा किया; पर मुझतक लिखकर ही मौकूफ रखेंगे तो हारेंगे। एक तरफसे मुझे इतने मुबारकबादीके तार आते हैं, उनको मैं फेंक नहीं सकता। मैं भविष्यवेत्ता नहीं और न मेरे दिव्यचक्षु हैं। जितना इन आंखोंसे देख सकूं, कानोंसे सुन सकूं, वही मेरे पास है। मेरे हाथ, पांव, कान, आंख, सब जनता है। आप अपने विचार सबसे कहें। धन्यवाद देनेवाले बहुत हैं, मगर मैं दूसरा पहलू भी जानना चाहता हूं। मैं कहूं इसलिए आप कोई बात न मानें। अपनी आंखोंसे देखें सो करें; मेरे कहनेसे नहीं। २० महात्मा कहें तो भी नहीं। तजरबेसे गलती करके आप सीखेंगे। जो ठीक लगे सो करें। ऐसा करेंगे तभी आप आजादीको रख सकेंगे और उसके लायक बन सकेंगे।

: २०५ :

११ जनवरी १९४८

भाइयो और बहनो,

अभी एक चीज आई है—वह करुणाजनक है। आंध्रसे दो खत आए हैं। एक तो बूढ़े बुजुर्गका है, मैं उनको पहचानता हूं। वह हमेशा कहांसे खत लिखे, लेकिन इस वक्त लिखा। दूसरा खत एक नौजवान भाईका है, उनको मैं नहीं पहचानता हूं। मेरे पास नाम दोनोंके हैं; लेकिन नामको आप जानते नहीं हैं तब देनेसे क्या फायदा। दोनोंका मतलब यह है कि जबसे पंद्रह अगस्त आया है तबसे लोगोंके दिलमें ऐसा आ गया है कि अभी हमारा क्या है। अंग्रेजोंका डर था वह रहा नहीं, सजाका डर नहीं है, अब किसीका डर नहीं है। भगवानका डर कौन

पहचानता हूँ। आंध्रमे तो लोग तगडे रहते है। जब ऐसे रहते है और आजाद हो जाते है तब काबूके बाहर चले जाते है। तो अब ऐसे बाहर चले गए है कि पेट भरनेका काम करते है, दूसरा नही करते। एक भाई लिखते है कि काग्रेसमे ऐसे-ऐसे लोग थे, जिनका कोई स्वार्थ नही था—हिंदुस्तानको आजाद करनेके लिए बलिदान कर दिया तो क्या इस कारण किया? आज काग्रेस गिरती जा रही है। काग्रेसमे जितने हैं वे सब असेम्बलीके सदस्य बनते है। सदस्य बनकर देशका काम नही करते, अपना करते है। सदस्य बनते है तो कम पैसे नही मिलते—मैं भूल गया हू कि कितना मिलता है, लेकिन काफी मिलता है जिससे सदस्य बननेवालेका पेट भर जाता है। तो वे लिखते है कि इस तरहसे पैसा खाते है। इतना ही नही, सिविल कर्मचारियोको डराते है। कहते है कि नही मानोगे तो तुम्हारा ऐसा हो जायगा। बेचारे पेट भरनेके लिए तो काम करते है, क्या करे। इस तरहसे दोनो तरफसे बिगडते है—हमारे दफ्तरमे पडे है वे बिगड़ते है और प्रतिनिधि कहलाते है वे बिगडते हैं। लोगोको समझना चाहिए कि किसको अपना मत दे, लेकिन आज तो ऐसा है नही। वे दु खसे यह बात लिखते है—दोनो ऐसा लिखते है। बुजुर्ग आदमीको बुरा लगता है तो वे कहते है कि यहा तुम रहो कुछ दिन और देखो—यह अच्छा लगता है। मै आंध्र क्या, सबके बीच रहा हू। मै नही जानता हू कि ऐसा नही है। यह आध्रका है, या मद्रासका है या किसी भी प्रातका है, मुझसे छिपा नही है। मेरे लिए तो सब हिंदुस्तानके है। हिंदुस्तान-मे पडे है, फिर अलग-अलग भाषा है तो उसमे क्या। कोई कहे कि मै तो आंध्रका हू, देशसे मेरा वास्ता नही हो सकता है। तो मुझको भी उनसे वास्ता नही हो सकता। तो मैंने सोचा कि इतना कह तो दू। मेरी आवाज वहांतक पहुचे तो अच्छा है, जिससे वे समझ जाय कि किस तरहसे काम करे।

वे लिखते है कि इस तरहसे हमारा दु:ख है और यह गदगी हमारेमे फैल गई है। इसको मिटानेके लिए ज्यादा भेजें तो ज्यादा गदगी होती है। दूसरा वे कहते एक जगह एक हजार भेजने है तो हजारमे गदगी फैलती है, यह मेरी निगाहमे ऐसा है कि एक ही आदमीको गदा करने दो, उसको हटानेमे दुश्वारी नही होती है, लेकिन अगर एकके बदलेमें एक हजार भेजे

तो ज्यादा विगडता है। तो वे लिखते है कि जितने सदस्य है उन्हे कम तो करो, इससे कम गदगी होगी—पीछे ज्यादा गदे आदमी जा नही सकते—वे सच्चे प्रतिनिधि तो बनते नही है, वे पेट भरते है, यह बुरी बात है। पीछे काग्रेसपर कब्जा करनेकी कोशिश करते है। फिर और दूसरी बाते पड़ी है, कम्यूनिस्ट है, समाजवादी है, ऐसे लोग पडे है। वे भी आपसमे ऐसा कहते है कि हम बडे हो गए, हम सारे हिंदुस्तानपर कब्जा कर लेगे। तो हिंदुस्तान किसपर कब्जा करेगा। कांग्रेसमे भी यही है, समाजवादियोमे भी यही है, कम्यूनिस्टमे भी यही है, तो मै सबसे कहूगा कि हम हिंदुस्तानके बने; हिंदुस्तान हमारा न बने। हिंदुस्तान एक-एकका बने तो हिंदुस्तान कहा जाय। इसलिए हिंदुस्तानको अपनाते है तो अपना पेट भरनेके लिए नही, अपने रिश्तेदारोंको पैसा देनेके लिए नही, अपने रिश्तेदारोको नौकरिया देनेके लिए नही । मै तो कहूगा कि यह काम हमारा पहले दर्जेका होना चाहिए, नही तो हमारा काम बिगड़ जाता है।

बहने बाते कर रही है, यह बुरी बात है। ऐसा करना है तो यहा आकर भाषण दे। मै जो यह कह रहा हू उसे शायद सुनती ही नही है—सुननेके लिए यहा थोडे आती है। इतवार है तो गुनाह हो गया। सब आ जाते है, सुननेको नही, जिसको कुछ काम नही यहा आकर बैठ जाते है।

: २०६ :

मौनवार, १२ जनवरी १९४८

भाइयो और बहनो,

सेहत सुधारनेके लिए लोग सेहतके कानूनोके मुताबिक उपवास करते है। जब कभी कुछ दोष हो जाता है और इन्सान अपनी गलती महसूस करता है तब प्रायश्चित्तके रूपमें भी उपवास किया जाता है। इन उपवासोमे उपवास करनेवालेको अहिसामे विश्वास रखनेकी जरूरत नही, मगर ऐसा मौका भी आता है जब अहिंसाका पुजारी समाजके किसी अन्यायके सामने विरोध प्रकट करनेके लिए उपवास करनेपर मजबूर हो जाता है। वह

ऐसा तब ही करता है, जब अहिंसाके पुजारीकी हैसियतसे उसके सामने दूसरा कोई रास्ता खुला नही रह जाता। ऐसा मौका मेरे लिए आ गया है।

जब ९ सितंबरको मैं कलकत्तेसे दिल्ली आया था तब मैं पश्चिमी पजाब जा रहा था। मगर वहा जाना नसीबमें नही था। खूबसूरत रौनकसे भरी दिल्ली उस दिन मुर्दोंके शहरके समान दीखती थी। जैसे ही मै ट्रेनसे उतरा, मैंने देखा कि हरएकके चेहरेपर उदासी थी। सरदार जो हमेशा हँसी-मजाक करके खुश रहते है, वे उस उदासीसे बचे नही थे। मुझे उस समय इसका कारण मालूम नही था। वे स्टेशनपर मुझे लेनेके लिए आए थे। उन्होंने सबसे पहली खबर मुझे यह दी कि यूनियनकी राजधानीमे झगडा फूट निकला है। मै फौरन समझ गया कि मुझे दिल्लीमे ही करना या मरना होगा। मिलिटरी या पुलिसके कारण आज दिल्लीमें ऊपरसे शाति है, मगर दिलके भीतर तूफान उछल रहा है। वह किसी भी समय फूटकर बाहर आ सकता है। इसे मै अपनी करनेकी प्रतिज्ञाकी पूर्ति नही समझता, जो ही मुझे मृत्युसे बचा सकती है---मृत्युसे, जिसके समान दूसरा मित्र नही। मुझे बचानेके लिए पुलिस और मिलिटरीके द्वारा रखी हुई शाति ही बस नही। मैं हिंदू, सिख और मुसलमानोमे दिली-दोस्ती रखनेके लिए तरस रहा हू। कल तो ऐसी दोस्ती थी। आज उसका अस्तित्व नही है। यह ऐसी बात है कि जिसको कोई हिंदुस्तानी देशभक्त, जो इस नामके लायक है, शातिसे सहन नही कर सकता।

मेरे अदरसे आवाज तो कई दिनोसे आ रही थी, मगर मै अपने कान बंद कर रहा था। मुझे लगता था कि कही यह शैतानकी यानी मेरी कमजोरीकी आवाज तो नही है। मै कभी लाचारी महसूस करना पसद नही करता। किसी सत्याग्रहीको नही करना चाहिए। उपवास तो आखिरी हथियार है। वह अपनी या दूसरोकी तलवारकी जगह लेता है।

जो मुसलमान भाई मुझसे मिलते रहते है उनके इस सवालका कि 'वे अब क्या करें' मेरे पास कोई जवाब नही। कुछ समयसे मेरी यह लाचारी मुझे खाए जा रही है। उपवास शुरू होते ही यह मिट जाएगी। मै पिछले तीन दिनसे इस बारेमे विचार कर रहा हू। आखिरी निर्णय बिजलीकी तरह मेरे सामने चमक गया है और मै खुश हू। कोई भी इन्सान, जो पवित्र

है, अपनी जानसे ज्यादा कीमती चीज कुरबान नही कर सकता। मै आशा रखता हू और प्रार्थना करता हू कि मुझमे उपवास करनेके लायक पवित्रता हो। नमक, सोडा और खट्टे नीबूके साथ या इन चीजोके बगैर पानी पीनेकी मै छूट रखूंगा। उपवास कल सुबह पहले खानेके बाद शुरू होगा।

उपवासका अर्सा[१] अनिश्चित है और जब मुझे यकीन हो जाएगा कि सब कौमोके दिल मिल गए है, और वह बाहरके दबावके कारण नही; मगर अपना-अपना धर्म समझनेके कारण, तब मेरा उपवास छूटेगा।

आज हिंदुस्तानका मान सब जगह कम हो रहा है। एशियाके हृदयपर और उसके द्वारा सारी दुनियाके हृदयपर हिंदुस्तानका रामराज्य आज तेजीसे गायब हो रहा है। अगर इस उपवासके निमित्त हमारी आखे खुल जाय तो यह सब वापिस आ जायगा। मै यह विश्वास रखनेका साहस करता हू कि अगर हिंदुस्तानकी आत्मा खो गई तो तूफानोसे दु खी और भूखी दुनियाकी आशाकी आखकी किरणका लोप हो जायगा।

कोई मित्र या दुश्मन—अगर ऐसे कोई है तो—मुझपर गुस्सा न करे। कई ऐसे मित्र है, जो मनुष्य-हृदयको सुधारनेके लिए उपवासका तरीका ठीक नही समझते। वे मेरी बर्दाश्त करेगे और जो आजादी अपने लिए चाहते है, वह मुझे भी देगे। मेरा सलाहकार एकमात्र ईश्वर है। मुझे किसी औरकी सलाहके बिना यह निर्णय करना चाहिए। अगर मैने भूल की है और मुझे उस भूलका पता चल जाता है तो मै सबके सामने अपनी भूल स्वीकार करूगा और अपना कदम वापस लूगा। मगर ऐसी सभावना बहुत कम है। अगर मेरी अतरात्माकी आवाज स्पष्ट है, और मैं दावा करता हू कि ऐसा है, तो उसे रद नही किया जा सकता। मेरी प्रार्थना है कि मेरे साथ इस बारेमे दलील न की जाय और जिस निर्णयको बदला नही जा सकता, उसमे मेरा साथ दिया जाय। अगर सारे हिंदुस्तान-पर या कम-से-कम दिल्लीपर, ठीक असर हुआ तो उपवास जल्दी भी छूट सकता है। मगर जल्दी छूटे या देरसे छूटे या कभी भी न छूटे, ऐसे नाजुक मौकेपर किसीको कमजोरी नही दिखानी चाहिए।

---

[१] अवधि।

मेरे जीवनमे कई उपवास आए है। मेरे पहले उपवासोके वक्त टीकाकारोंने कहा है कि उपवासने लोगोपर दवाव डाला और अगर मै उपवास न करता तो जिस मकसदके लिए मैंने उपवास किया. उसके स्वतत्र गुण-दोषके विचारसे निर्णय विरुद्ध जानेवाला था। अगर यह सावित किया जा सके कि मकसद अच्छा है तो विरुद्ध निर्णयकी क्या कीमत है। शुद्ध उपवास भी शुद्ध धर्मपालनकी तरह है। उसका फल अपने आप मिल जाता है। मै कोई परिणाम लानेके लिए उपवास नही करना चाहता। मै उपवास करता हूं, क्योकि मुझे करना ही चाहिए।

मेरी सवसे यह प्रार्थना है कि वे शात चित्तसे इस उपवासका तटस्थ वृत्तिसे विचार करें और यदि मुझे मरना ही है तो मुझे शातिसे मरने दें। मै आशा रखता हू कि शाति तो मुझे मिलने ही वाली है। हिंदुस्तानका, हिंदू-धर्मका, सिखधर्मका और इस्लामका वेवस वनकर नाश होते देखना इसकी निस्वत मृत्यु मेरे लिए सुदर रिहाई होगी। अगर पाकिस्तानमे दुनियाके सव धर्मोके लोगोको समान हक न मिले, उनकी जान और माल सुरक्षित न रहे और यूनियन भी पाकिस्तानकी नकल करे तो दोनोका नाश निश्चित है। उस हालतमे इस्लामका तो हिंदुस्तान और पाकिस्तानमे ही नाश होगा—वाकी दुनियामें नही—मगर हिंदू-धर्म और सिख-धर्म तो हिंदुस्तानके वाहर है ही नही।

जो लोग दूसरे विचार रखते है, वे मेरा जितना भी कडा विरोध करेंगे, उतनी मैं उनकी इज्जत करूगा। मेरा उपवास लोगोकी आत्माको जाग्रत करनेके लिए है, उसे मार डालनेको नही। जरा सोचिए तो सही, आज हमारे प्यारे हिंदुस्तानमे कितनी गदगी पैदा हो गई है। तव आप खुश होगे कि हिंदुस्तानका एक नम्र पूत, जिसमे इतनी ताकत है, और शायद इतनी पवित्रता भी है, इस गदगीको मिटानेके लिए ऐसा कदम उठा रहा है, और अगर उसमे ताकत और पवित्रता नही है तव वह पृथ्वीपर वोझरूप है। जितनी जल्दी वह उठ जाए और हिंदुस्तानको इस वोझसे मुक्त करे, उतना ही उसके लिए और सवके लिए अच्छा है। मेरे उपवासकी खवर सुनकर लोग दौड़ते हुए मेरे पास न आवे। सव अपने आसपासका वातावरण सुधारनेका प्रयत्न करे तो वस है।

: २०७ :

१३ जनवरी १९४८

भाइयो और बहनो,

मेरी उम्मीद है कि मैं पद्रह मिनटमे जो कहना है, कह सकूगा। बहुत कहना है, इसलिए शायद कुछ ज्यादा समय भी लगे।

आज तो मै यहां (प्रार्थना-सभामे) आ सका, क्योकि जब कोई फाका करता है तब पहले दिन—चौबीस घटेतक—तो किसीको कुछ लगना न चाहिए। मैंने तो आज साढ़े नौ बजे खाना शुरू किया। उसी समय लोग आते रहे, बात करते रहे तो खाना ग्यारह बजे पूरा कर सका। सो आजके दिनकी तो कीमत नही। इसलिए आज प्रार्थना-सभामे आ सका हू तो किसीको आश्चर्य नही होना चाहिए। आज तो आ-जा सकता हू, बैठ सकता हू और सब काम भी किया है। कलसे डर है। मै यहा आऊ और फिर न बोलू, इससे अच्छा तो वही पडा रहकर विचार कर सकता हू। आखिर भगवानका नाम लेना है तो वही लूगा। कलसे आपके सामने प्रार्थनामे आना मेरे लिए मुश्किल मालूम होता है। मै आना चाहू और न आ सकू, लेकिन प्रार्थना आप सुनना चाहते है तो आप आ सकते है। लडकिया तो प्रार्थना करने आएगी— सब नही तो एक आ जायगी। आप प्रार्थना तो कर सकते है। मेरे यहा आनेकी आशासे तो आपको निराशा हो सकती है।

मैंने उपवास किया तो है, लेकिन कई पूछते है कि आप क्या कर रहे है? मुसलमानने गुनाह किया, हिंदूने गुनाह किया या सिखने गुनाह किया? किसने गुनाह किया? फाका कबतक चलनेवाला है? ठीक है, जो पूछते है कि क्या इल्जाम हमपर है? मै कहता हू कि इल्जाम किसीपर नही है। मै इल्जाम लगानेवाला कौन हू? हां, मैंने सुनाया तो कि हम गुनहगार बन गए है, लेकिन कोई एक आदमी गुनहगार थोडा है! हिंदू मुसलमानको हटाते है तो अपने धर्मका पालन नही करते और आज तो हिंदू और सिख दोनों साथ करते है। लेकिन मै सब हिंदुओं या सब सिखोंपर भी इल्जाम नही लगाता हू, क्योकि सबने थोडे किया।

यह समझने लायक बात है। न समझे तो मेरा काम नही होगा और फाका भी बद नही होगा। अगर मै अपनेको जिदा नही रख सका तो इसका इल्जाम किसीपर नही है। मै नालायक सिद्ध होता हू तो ईश्वर उठा लेगा। मुझको उठा ले तो कौन-सी बडी बात है? तो मुझसे पूछते है कि इसका मतलब यह हुआ कि तुम मुसलमान भाईके लिए करते हो? ठीक कहते है। मै कबूल करता हू कि मैने उनके लिए तो किया। क्यों? क्योकि आज मुसलमान यहा तेजी[1] खो बैठे है—हकूमतका एक किस्मका सहारा था कि इतनी जगह मुसलमानोंकी है, मुस्लिम लीगकी भी यहां चलती है, वह अब रही नही। आज यहा मुस्लिम लीग नही रही, मुस्लिम लीगका सहारा सच्चा नही है— पीछे लडाई करते है, यह बात दूसरी है— बाकी उनकी हकमत नही रही। लीगने दो टुकडे करवा दिए। इसीलिए दो हिस्से बन गए। इसके बाद भी मुसलमान यहा रहते है। मेरा तो हमेशा ऐसा मत रहा है कि जो थोडे रहते है, उनकी मदद की जाय। ऐसा करना मनुष्यमात्रका धर्म है।

यह आत्म-शुद्धिका उपवास है तो सबको शुद्ध होना चाहिए। सबको शुद्ध होना ही नही है तो मामला बिगड जाता है। सबको शुद्ध होना है तो मुसलमानको भी होना है। सबको साफ-सुथरा और शुद्ध बन जाना है और मुसलमान कुछ भी करे, उनका कोई दोष नही निकालना है। आत्म-शुद्धिका उपवास इस तरहसे नही हो सकता। अगर मै कहू कि मैने किसीके सामने गुनाह किया तो वह प्रायश्चित्त है। जिसके सामने हम गुनाह कबूल करते है वह प्रायश्चित्त है।

मै जब कहता हू तब मुसलमानकी खुशामद करने या किसी और दूसरेकी खुशामद करनेके लिए नही कहता हू। मै तो अपनेको राजी रखना चाहता हू। इसका मतलब यह है कि मै ईश्वरको राजी रखना चाहता हू। मै ईश्वरका गुनहगार नही बनना चाहता। मै तो कहूगा कि मुसलमान-को भी शुद्ध बनना है और यहां रहना है। बात ऐसी है कि चुनावमे—सही हो या गलत— हिंदू-सिखने मुस्लिम लीगको मान लिया, उसके पहले भी

---

[1] (गुज०) हिम्मत, उत्साह।

मानते थे और कहते भी थे। मै उसके इतिहासमे नही जाऊगा। इसके बाद देशके हिस्से हो गए—उसके पहले दिलके हिस्से हो गए। उसमे मुसलमानोने भी गलती की। सब गलती उन्हीकी थी, ऐसी बात नही है। हिंदू, सिख, मुसलमान—तीनो गुनहगार थे। अब तीनो गुनहगारोंको दोस्त बनना है। इन तीनोके बीचमे एक चीज पड़ी है। वह है ईश्वरको सब माने, शैतानको नही, तो यह काम बन सकता है। मुसलमान भी काफी पड़े है, जो शैतानकी पूजा करते है, खुदाकी नही। काफी हिंदू भी शैतान-राक्षसकी पूजा करते है, सिख भी गुरु नानक और दूसरे गुरुओंकी पूजा नही करते—ऐसे हम बन गए है। हम तो धर्मके नामपर अधर्मी बन गए। अगर हम तीनो धर्म-पथपर चले तो किसी एकको डरनेकी आवश्यकता नही है।

मैने मुसलमानोके नामसे उपवास शुरू किया है, इसलिए उनके सिरपर जबरदस्त जिम्मेदारी आती है। क्या जिम्मेदारी आती है? उनको यह समझना है कि हम हिंदू सिखके साथ भाई-भाई बनकर रहना चाहते है, इसी यूनियनके है—पाकिस्तानके नही सही—हम वफादार बनकर रहना चाहते है। मै यह नही पूछता हू कि आप वफादार है या नही? पूछकर क्या करना है! मै तो कामोसे देखता हू।

पीछे सरदारका नाम आ जाता है। वे कहते है कि सरदारको हटा दो, तुम अच्छे हो। पीछे सुनाते है कि जवाहर भी अच्छा है। तुम हकूमतमे आ जाओ तो हकूमत अच्छी चले। सब अच्छे है, सरदार अच्छे नही है। तो मै मुसलमानोसे कहूगा कि मुसलमान ऐसा कहेगे तो कोई बात चलनी नही है। क्यो नही? क्योकि आपका हाकिम वह मन्त्रिमंडल है। हकूमतमे न अकेला सरदार है और न जवाहर है। वे आपके नौकर है। उनको आप हटा सकते है। हा, ऐसा है कि सिर्फ मुसलमान तो हटा नही सकते है, लेकिन इतना तो करे कि सरदार जितनी गलती करते है—लोगोमे आपस-आपसमे बात करनेसे निपटता नही है—उनको बताओ। ऐसा नही कि उन्होने यह बात कही, वह बात कही, लेकिन उन्होंने किया क्या, यह बताओ। मुझको बता दो। उनसे मै मिलता रहता हू और सुनता भी हू तो मैं कह दूगा। वही जवाहर, वहीं सरदार दोनों हकूमत चलाते है।

जवाहर तो उनको निकाल सकते है, लेकिन ऐसा नही करते है तो कुछ है। वे उनकी तारीफ करते है। फिर मन्त्रि-मंडल है, वह हकूमत है। सरदार जो कुछ करता है उसके लिए सारी हकूमत जवाबदार है। आप भी जवाबदार है; क्योकि वे आपके नुमायदे है। इस तरहसे हमारा काम चलता है। इसलिए मै कहूगा कि मुसलमानोको बहादुर, निर्भय बनना है। उसीके साथ खुदा-परस्त बनना है। वे ऐसा समझे कि हमारे लिए लीग नही है, काग्रेस नही है, गांधी नही है, जवाहर नही है, कोई नही है, खुदा है। उसके नामपर हम यहां पड़े है। मै चाहता हू कि हरएक मुसलमान इस तरहका बने। हिंदू, सिख चाहे कुछ भी करते है, आप बुरा न माने। मै आपके साथ पडा हू। मै आपके साथ मरना या जिंदा रहना चाहता हूं। मै मरनेकी क्या कोशिश करनेवाला हू ? मै करूगा या मरूगा। अगर आप लोगोंको साथ नही रख सकता हू तो मेरा जीना निकम्मा बन जाता है। इसलिए मुसलमानपर बडी जिम्मेदारी आ जाती है। इसे आप भूले नहीं। ऐसी बात नही करता कि मै मुसलमानकी गलती न निकालू। क्यों न निकालू ?

सरदार सीधी बात बोलनेवाले है। वे बोलते है तो कड़वी लगती है। वह सरदारकी जीभमे है। मैने उनसे कहा कि आपकी जीभसे कोई बात निकली कि काटा हो गई। तो उनकी जीभ ही ऐसी है कि काटा है, दिल वैसा नही है। उसका मै गवाह हूं। उन्होने कलकत्तेमे कह दिया, लखनऊमें कह दिया कि सब मुसलमानोको यहा रहना है, रह सकते हैं। साथ ही मुझको यह भी कहा कि उन मुसलमानोका एतबार नही करता हू, जो कलतक लीगवाले थे और अपनेको हिंदू-सिखका दुश्मन मानते थे— वे जब कलतक ऐसे थे तब आज एक रातमे दोस्त कैसे बन सकते है ? पीछे ऐसा है कि लीग रहेगी तो वे लोग किसकी मानेगे— हमारी हकूमतकी या पाकिस्तानकी ? लीग अभी भी वैसा ही कहती है तो उनको शक होता है। उनको शक करनेका अधिकार है। सबको शक करनेका अधिकार है। सरदारने जो कहा है उसका सीधा अर्थ निकाल ले तो काम बन जाता है। जैसे कोई मेरा भाई है, लेकिन उसपर शक है तो क्या करू ? शक साबित हो तब काटूं, यही मै कर सकता हू। लेकिन मै पहलेसे ही भाईकी बुराई करू, ऐसा कैसे हो सकता

है ? वे कहते हैं कि हमारे दिलमे आज मुस्लिम लीगके मुसलमानोके बारेमे एतवार नही है, उनपर कैसे भरोसा रखे ? मुसलमान सबूत दे कि वे ऐसे नही है । ऐसा करे तो सब अजाम पहुच जाता है । पीछे मुझे यह कहनेका हक मिल जाता है कि हिंदू, सिख क्या करे। इस यूनियनमे सरदार क्या करे, जवाहर क्या करे, उसमे कोई भी क्या करे, मै क्या करू ?

इन लडकियोंने अभी जो गीत सुनाया है वह गुरुदेवका प्रसिद्ध गीत है । नोआखालीमें पैदल चलते थे तब इस गीत [1] को गाते थे । उसमे एक बात है । अकेला जब कोई आदमी चलता है तो किसीको कैसे बुलाते है. आओ ऐ भाई, आओ ऐ भाई, मदद तो दे दो । कोई नही आता है, अधेरा है तो गुरुदेव कहते थे कि अकेला चले तो भी क्या, क्योंकि उसका एक साथी— ईश्वर तो साथ है ही । मैने आज लड़कियोंसे इस गीतको गानेको कहा तो गा दिया, नही तो यहा बगाली गीत क्या गाना था ! हिंदुस्तानी चलता था । उसमे बडा गुण पड़ा है ।

यदि तोर डाक शुने केउ न आसे तबे एकला चलो रे,
एकला चलो, एकला चलो, एकला चलो रे ॥
यदि केउ कथा न कय, ओरे, ओरे, ओ अभागा !
यदि सबाई थाके मुख फिराये, सबाई करे भय—
तबे परान खुले
ओ तूई मुख फूटे तोर मनेर कथा, एकला बोलो रे ।
यदि सबाई फिरे जाय, ओरे, ओरे, ओ अभागा !
यदि गहन पथे जाबार काले, केउ फिरे ना चाय—
तबे पथेर कांटा
ओ तूई रक्तमाखा चरनतले एकला दलो रे ।
यदि आलो ना धरे, ओरे, ओरे, ओ अभागा !
यदि झड़ बादले आंधार राते दुआर देय घरे—
तबे वज्रानले

तो मैंने कहा कि आज इसे गाओ। गुरुदेवका यह प्रिय भजन है। तो मैं कहूंगा कि अगर हिंदू-सिख ऐसा नही बनते है तो सच्चे नही है। उनमें इतनी बहादुरी नही होती कि थोडेवालोंको भी नही रहने दोगे—क्या मारोगे-पीटोगे— मारोगे नही, पीटोगे नही, लेकिन ऐसी हवा पैदा कर दो कि सब मुसलमान जानेको मजबूर हो पाकिस्तान जाय, तो काम कैसे बन सकता है? इसलिए कहता हू कि हिंदू-सिखको यहांतक बहादुर बनना है कि पाकिस्तानमे मुसलमान चाहे कुछ भी करें, चाहे सभी हिंदू और सिखोको मार डाले तो भी यहां ऐसा न हो। मै वहातक जिंदा रहना नही चाहता कि पाकिस्तानकी नकल हो। मै जिंदा रहूगा तो सब हिंदू, सिखको कहूगा कि एक भी मुसलमानको न छूवे, एक भी मुसलमानको मारना बुजदिली है। हमें तो यहा बहादुर बनना है, बुजदिल नही।

फाका छूटनेकी शर्त यह है कि दिल्ली बुलद हो जाय। अगर दिल्ली बुलद हो जाती है तो सारे हिंदुस्तान ही क्या, पाकिस्तानपर भी

आपन बुकेर पांजर ज्वालिये निये एकला जलो रे।

अर्थात्—

यदि तेरी पुकार सुनकर कोई नहीं आता तो तू अकेला ही चल!
अकेला चल, अकेला चल, अकेला ही चल!
यदि कोई बात नहीं करता, अरे, अरे, ओ अभागे!
यदि सभी मुंह मोड़े रहते हैं, सभी डरते हैं,
तो दिल खोल कर तू अपने मनकी बात अकेला ही कह।
यदि तेरे सभी लौट जायं, अरे, अरे, ओ अभागे!
यदि गहन पथमें जाते समय कोई तेरी ओर फिर कर न देखें।
तो राहके कांटोको
लोहू लुहान पैरोंसे अकेले ही दल,
यदि कोई रोशनी नहीं दिखाता
यदि आंधी पानी और अंधकार भरी रात में कोई घरका दरवाजा बंद कर देता है तो वज्राग्नि से अपने हृदय-पंजर को प्रज्वलित करके तू अकेला ही जल।

असर पड़ेगा। अगर दिल्ली ठीक हो जाती है और यहां कोई मुसलमान भी अकेला घूम सकता है तो मेरा फाका छूट जाता है। इसका मतलब यह है कि दिल्ली पायातख्त है। सब दिन यह हिंदुस्तानका पायातख्त रही है। दिल्लीमे सब ठीक नही होता है तो सारे हिंदुस्तान और पाकिस्तानमे ठीक नही हो सकता। यहां कहे कि हम भाई-भाई बन गए है, यहां हिंदू, मुस्लिम, सिख सब एक-दूसरेसे मिलते-जुलते है। पीछे चाहे सुहरावर्दी साहब हो—गुडोके सरदार माने जाते है तो उससे मुझको क्या—अब वह गुडा बने तो गोलीसे उड़ा दे। सुहरावर्दीको मै यहां क्यो नही लाता हू? क्योकि डर है कि उनका कोई अपमान न कर दे। अगर कोई उनका अपमान करता है तो मेरा भी अपमान होगा। आज ऐसा थोड़ा है कि वे दिल्लीकी गलियोमे घूम सकते है। घूमेगे तो काट डाले जायगे। मै तो कहूगा कि उन्हे अंधेरेमे भी घूमनेकी आजादी रहनी चाहिए। ठीक है कि कलकत्तेमे मुसलमानोंपर आ पड़ी तो किया, लेकिन बिगाडना चाहते तो बिगाड़ सकते थे— वे बिगाड़ना नही चाहते थे। कलकत्तेमे जिस चीज-पर मुसलमान कब्जा लेकर बैठ गए थे उनको उन्होंने खीच-खीचकर निकाला और कहा कि मै प्रधान-मत्री था, ऐसा कर सकता हू। मुसलमानोने जिनपर कब्जा किया था वह हिंदुओं और सिखोका था, तो भी उन्होने किया। तो मै कहूगा कि यहा असली शांतिके लिए एक दिनके बदले एक महीना लगे तो क्या, मेरा उपवास बीचमे ही छुड़वानेके लिए कोई ऐसा काम न करे। इससे सारा हिंदुस्तान तो बच जाता है। आज तो गिरा हुआ है। ऐसा करे तो हिंदुस्तान ऊचा जानेवाला है।

तो मै यही चाहता हू कि हिंदू, सिख, पारसी, ईसाई, मुसलमान जो हिंदुस्तानमे पडे है, यही रहे। हिंदुस्तान ऐसा बने कि किसीके जान-मालको नुकसान न पहुचे। तब हिंदुस्तान ऊचा होगा।

: २०८ :

१४ जनवरी १९४८

भाइयो और बहनो,

कल तो मैंने आपको बताया था कि आज मैं यहां आ सकूंगा या नही, इसमे शक है। हो सका तो आज आ गया। कल-परसो ऐसे दिन आनेवाले है कि मैं घूम नही सकूगा। डाक्टर तो ऐसे है कि आजसे ही मनाही करते है। लेकिन मैं तो डाक्टरोके हाथमे नही हूं, ईश्वरके हाथमे पड़ा हूं। मुझे ऐसा मोह नही है कि जिंदा रहू तो ठीक है। जिंदा रखेगा तो वही रखेगा और मारेगा तो वही मारेगा। मेरी प्रार्थना है कि मेरी अटल श्रद्धा कायम रहे और उम्मीद करता हू कि उस श्रद्धामे कोई विघ्न न डाले। आज ऐसा हो गया है कि आदमी दुर्बल पड़ा है। कहता है कि ईश्वर कहां है? ऐसे दुर्बल आदमी पड़े है। तो मैं कहता हूं कि सब सबल बनें, इर्द-गिर्द सबल बनें। तभी आदमी आपत्तिसे निकल सकता है। तो मैंने अपनी रामकहानी कह दी।

मैं तो आज आपको दो-चार चीज कह देना चाहता हूं। सचमुच मैंने अंग्रेजीमे तो लिख डाला है या लिखा दिया है। पीछे ऐसा था कि दिल कैसे चलेगा। नही जानता था। ताकत नही हो तो तर्जुमा करके सुना देगे। ऐसा हो सकता था। पीछे मैंने सोचा कि मैं सुना दू तो अच्छा है। यह आपके लिए ही नही है। इसे रेडियोके जरिये सारे हिंदुस्तानके लाखों आदमी सुन लेते है। वे सुनना चाहते है कि मैं क्या कहता हू, मेरी आवाज कैसी है। मैं तो प्रेमके वसमे हूं। तो मुझको लगा कि आज भी मेरी आवाज सुन ले तो अच्छा है। मै ऐसा मानता हूं कि २६ घटेका उपवास तो कामकी चीज है — शरीरको स्वच्छ करता है। इतनेसे हानि किसीको नही पहुचती है। हां, यह ठीक है कि भविष्यके लिए ताकतको इकट्ठा रखना है, लेकिन वह तो भगवान करा लेगा।

मेरे पास काफी तार आए हैं, मुसलमानोके भी काफी तार आए है हर जगहसे। हिंदुस्तानके बाहरके भी काफी तार आए है। तो मैंने प्यारेलालको कह दिया कि उनमेंसे कामके निकालो। सबको छपवाना थोड़े

है ! उससे फायदा क्या ? कितने ही ऐसे तार आए है। एक किस्मके तार तो ऐसे है कि जिनमेसे लोगोंको शिक्षा मिलेगी। ऐसे भी तार है कि हम सब कर लेगें, उपवास छोड दो। उपवास ऐसे कोई छुट सकता है ? ईश्वरने करवाया हैं, ईश्वर ही छुडवा सकता है। दूसरी कोई ताकत नही। वह ताकत तो वही है जो मैंने लिखा है।

मृदुलाबेनका टेलीफोन आया। वह लाहौरमे पडी है। उसके काफी मुसलमान दोस्त है। वह हिंदू लडकी है। वह तो व्याकुल बन गई है। छोटी थी तबसे मेरी गोदमे पडी थी। अब तो बड़ी हो गई है। हर जगह घूमती है—अकेली। तो कहती है कि सब मुसलमान मुझसे पूछते है, अफसर भी पूछते है—गाधी जो कर रहे है वह हमारे लिए कर रहे है तो पूछो—क्या हमको बता देगे कि हमसे क्या उम्मीद रखते है ? मुझको यह अच्छा लगा। तो उत्तर देनेके लिए कहे देता हू। टेलीफोन वहा पहुचा या नही, एक रातमे क्या होगा, कल तो वहा यह पहुच ही जायगा। और जो तार भेजते है उनको कहूगा कि यह कौन-सी बडी बात है कि आप मेरे बारेमे पूछते है ? पूछनेकी क्या जरूरत है ? यह दिल्लीका यज्ञ तो है, लेकिन सारे देशके लिए भी है। यह यज्ञ अकेलेके लिए है या सबके लिए, ऐसा सवाल ही नही है।

यह उपवास आत्म-शुद्धि करनेके लिए है। जहां आज शैतान बैठा है वहा ईश्वरको बैठा दो कि शैतान उसे हटा न सके। तो उसकी कुछ निशानी होनी चाहिए। इसके लिए सब तो फाका कर नही सकते। यह मेरे शुभ नसीबमे है। सबको ऐसा नसीब मिले तो सब प्रेमसे चले। हिंदू कहता है कि मुसलमानको मारो, मुसलमान हिंदूको मारनेके लिए तैयार होता है, और सिख कहता है कि मुसलमान को मार डालो। इस तरह सिख, हिंदू, मुसलमान झगड़ा करे तो बुरी बात है। यज्ञमे हिस्सा लेना है, लेना चाहते है तो सब भाई-भाई बन जाय, वैर-भावके बदले प्रेम-भाव करे। हिंदू, मुस्लिम, सिख—सब ऐसा बने तो उस जगह शराब नही देखूंगा, अफीम नही देखूगा, व्यभिचारी लोगोको नही देखूगा, व्यभिचारिणी औरतोको नही देखूगा। सब ऐसा समझेंगे कि यह मेरी बहन है या मा है या पत्नी है या लड़की है। सब परहेजसे रहे, साफ-सुथरे रहे तो भी अगर

मैं समझू कि मैं पाकिस्तानका दुश्मन हू, पाकिस्तान पापसे भरा है तो मुझे प्रायश्चित्त करना होगा और कहना होगा कि पाकिस्तान पाप-भूमि नही, पाक-भूमि है। ऐसा वनना है तो अच्छा है। कहनेसे नही वने, करनेसे वने। पाकिस्तानमे जितने मुसलमान पडे है वे ऐसे रहे तो इसका असर इधर भी होगा। पाकिस्तानने हिंदुओके साथ गुनाह किया है यह मैंने कभी छिपाया नही है।

अभी कराचीमे क्या हो गया? वेगुनाह सिख मार डाले गए, जायदाद लूट ली गई। अब सुनता हू कि गुजरातमे भी हो गया। वे वेचारे वन्नूसे या कहासे, मुझको पता नही, आ रहे थे। सव शरणार्थी थे। वहासे जान वचानेके लिए भाग रहे थे यहा आनेके लिए। रास्तेमे काट डाले गए। मै सव किस्सा नही कहना चाहता हू। मै मुसलमानोको कहता हू कि आप-के नामसे पाकिस्तानमे ऐसा वनता रहे तो पीछे हिंदुस्तानके लोग कहा-तक वर्दाश्त करेगे? मेरी तरह सौ आदमी भी फाका करे तो भी नही रुक सकता है। मेरे-जैसे मिस्कीनके फाका करनेसे क्या होगा? तो आप ऐसा करे कि सव अच्छे वन जाय। कोई मुसलमान हो, कवीलेवाले हो तो उनको भी अच्छा वनना है। और कहे कि हम सव सिख, हिंदूको यहा लानेवाले है।

कविने कहा—मैंने यह पढा है—कि अगर आपको जन्नत देखना है, तो यहा है, वाहर नही है। वह तो एक वगीचेके लिए कहा है। लिखनेवाले उस्ताद रहते है। क्या खूवसूरत चीज है, यह उर्दूमे लिखा है। मैंने इसे वर्षो पहले—वचपनमे पढा था। जन्नत ऐसे आता नही है। अगर हिंदू, मुस्लिम, सिख—सव ऐसे शरीफ वने, सव-के-सव भाई-भाई वने तो कहूगा कि वही शेर सव दरवाजेमे लगाए जाय। पीछे कहूगा कि वही नही, यहा भी लगाए जाय। लेकिन कव लगाया जायगा, जव पाकिस्तान पाक हो जायगा। कहना एक और करना दूसरा तो दोजख हो जायगा। दिलको साफ कर लो, उसमे शैतान नही, खुदाको विराजमान करो। ऐसा करोगे तो जन्नत यही है। जन्नत देखना हो तो वहा देखो। अगर वहा ऐसा हो जाय तो हम यहा मुकावला करेगे और उसमे भी आगे वढनेकी कोशिश करेगे। हिंदुस्तानके दो टुकडे है तो क्या, दिल तो एक हो गया है। भूगोलमे टुकडे

रहें तो क्या हुआ, हकूमत अलग है तो उससे क्या? सारी दुनियामें हकूमत अलग-अलग है। हकूमत पचास रहे, पांच-सौ रहे तो क्या? मैं तो कहूंगा कि सात लाख गांव है तो सात लाख हकूमत वनी ऐसा मानो, तो छोटी वह होगी, अच्छी रहेगी। पीछे देहातोका काम, वहनें पड़ी है उनके हाथ छोड़ सकते है। यह ऐसी खूबसूरत चीज है।

मुझसे कहते हैं—कहते-कहते घूट पी लेते हैं—कि यह पागल है। एक छोटी-सी चीजको लेकर फाका कर लेता है; लेकिन मैं क्या करूं? मै वचपनसे ऐसा वना हूं। जव छोटा था तव अखवार भी नही पढ़ता था। मै सच कहता हू कि अखवार नही पढता था। मै अंग्रेजी मुश्किलसे पढ़ सकता था, गुजराती भद्दी जानता था तो मै अखवार कैसे पढ़ सकता था? तवसे मेरा खयाल रहा है कि सारे हिंदुस्तानमे—राजकोटमे ही नही—हिंदू, सिख, पारसी, ईसाई, मुसलमान एक वनकर रहे तो पीछे हम यहां आरामसे रह सकते है। मेरा ऐसा ख्वाव रहा है। अभी जो स्वराज आया है वह निकम्मा है। जवानीमे मैंने जो ख्वाव देखा है वह अगर सच्चा होता है—मैं तो वूढ़ा हो गया हूं, मरनेके किनारे हूं—तो मेरा दिल नाचेगा, वच्चे नाचेगे और देखेगे कि हिंदुस्तानमे सव खैर हो गया, लड़ते-भिड़ते नही, साथ रहते है। आप सव इस काममें मदद करे। पाकिस्तानके लोग सुनेगे तो वे भी नाच उठेगे। सिख, हिंदू, मुस्लिम, पारसी, ईसाई, सव भूल जाय कि हम दुश्मन थे, अलग-अलग थे। अगर हम अपने-अपने धर्ममें कायम रहे और अच्छे वने तो सव धर्म एक साथ चल सकते है। पीछे धर्म नही देखेगे, शरीफ रहेंगे। इस तरहसे दोनों हिंदुस्तान और पाकिस्तान वन जायं तो मै नाचूगा। आपको भी नाचना पडेगा। वह तो एक नशा है—ईश्वर ऐसा नशा देगा और हमे किसीका डर नहीं रहेगा। हम ऐसे नही डरनेवाले है कि यह सिख है या ऊंचा पठान है। हमे तो सिर्फ ईश्वरसे डरना है। मै ऐसा देखना चाहता हू।

आप अपनेको ऐसा वना सकते है। समाज क्या है? आप सवसे समाज वना है। हम उसमे है तो समाज वनता है। समाज हमको नही वनाता है। हम उसको वनाते है। हम सोए हुए पड़े है। इसलिए कहते है कि समाज ऐसा है और हम समाजसे लाचार है। उसी तरह हकूमत है।

हकूमत तो हम है। एक आदमी ऐसा कर सकता है। एक है तो अनेक बनेगा, एक नही तो शून्य है।

आपको पता नही था कि मै आज बोलूगा। कल आनेमे शक है, लेकिन प्रार्थना होगी और लड़किया भजन सुनाएगी।

: २०६ :

१५ जनवरी १९४८

भाइयो और बहनो,

मेरे लिए यह एक नया अनुभव है। मुझको इस तरहसे लोगोंको सुनानेका कभी अवसर नही आया है, न मैं चाहता था। मै इस वक्त जिस जगह प्रार्थना हो रही है वहा नही जा सकता हू। इसलिए प्रार्थनामे जो लोग आए हैं वहातक मेरी आवाज यहासे नही पहुच सकती है। फिर भी मैंने सोचा कि आप लोगोतक, जिधर आप बैठे है, मेरी आवाज पहुच सके तो आपको आश्वासन मिलेगा और मुझको बडा आनद होगा। जो मैंने लोगोके सामने कहनेको तैयार किया है, वह तो लिखवा दिया था। ऐसी हालत कल रहेगी कि नही, मै नही जानता।

आपलोगोसे मेरी इतनी ही प्रार्थना है कि हर एक आदमी दूसरे क्या करते है उसे न देखे, बल्कि अपनी ओर देखे और जितनी आत्म-शुद्धि कर सकते है, करें। मुझे विश्वास है कि जनता बहुत परिमाणमे आत्म-शुद्धि कर लेगी तो उसका हित होगा और मेरा भी हित होगा। हिंदुस्तानका कल्याण होगा और सभव है कि मै जल्दीसे जो उपवास चल रहा है उसे छोड सकू। मेरी फिक्र किसीको नही करनी है, फिक्र अपने लिए की जाय। हम कहातक आगे बढ रहे है और देशका कल्याण कहातक हो सकता है, इसका ध्यान रक्खे। आखिरमे सब इन्सानोको मरना है। जिसका जन्म हुआ है उसे मृत्युसे मुक्ति मिल नही सकती। ऐसी मृत्युका भय क्या? शोक भी क्या करना? मैं समझता हू कि हम सबके लिए मृत्यु एक आनददायक मित्र है, हमेशा धन्यवादके लायक है, क्योकि मृत्युसे अनेक प्रकारके दुखोमेंसे हम एक समय तो निकल जाते है।

(लिखित संदेश)

कल शामकी प्रार्थनाके दो घटे बाद अखबारवालोने मुझे सदेश भेजा कि उन्हे मेरे भाषणके बारेमे कुछ बाते पूछनी है। वे मुझसे मिलना चाहते थे। मगर मैंने दिनभर काम किया था, प्रार्थनाके बाद भी काममें फंसा रहा। इसलिए थकान और कमजोरीके कारण उन्हे मिलनेकी मेरी इच्छा नही हुई। इसलिए मैंने प्यारेलालसे कहा कि उनसे कहो कि मुझे माफ करे और जो सवाल पूछने हों वह लिखकर कल सुबह नौ बजे बाद मुझे दे दे। उन्होने ऐसा ही किया है।

पहला सवाल यह है—"आपने उपवास ऐसे वक्त शुरू किया है जब कि यूनियनके किसी हिस्सेमे कुछ झगडा हो ही नही रहा।" लोग जबरदस्ती मुसलमानोके घरोका कब्जा लेनेकी बाकायदा, निश्चयपूर्वक कोशिश करे, यह क्या झगड़ा नही कहा जायगा ? यह झगड़ा तो यहातक बढा कि फौजको इच्छा न रहते हुए भी अश्रुगैस इस्तेमाल करनी पडी और, भले ही हवामे हो, मगर कुछ गोलिया भी चलानी पड़ी। तब कही लोग हटे। मेरे लिए यह सरासर बेवकूफी होती कि मैं मुसलमानोंका ऐसे टेढ़ी तरहसे निकाला जाना आखिरतक देखता रहता। इसे मैं रुला-रुलाकर मारना कहता हू।

दूसरा प्रश्न यह है—"आपने कहा है कि मुसलमान भाई अपने डरकी और अपनी असुरक्षितताकी कहानी लेकर आपके पास आते है, तो आप उन्हे कोई जवाब नही दे सकते। उनकी शिकायत है कि सरदार जिनके हाथोंमे गृह-विभाग है, मुसलमानोके खिलाफ है। आपने यह भी कहा है कि सरदार पटेल पहले आपकी 'हा-मे-हा' मिलाया करते थे, 'जी-हजूर' कहलाते थे, मगर अब ऐसी हालत नही रही। इससे लोगोके मनपर यह असर होता है कि आप सरदारका हृदय पलटनेके लिए उपवास कर रहे है। आपका उपवास गृह-विभागकी नीतिकी निंदा करता है। अगर आप इस चीजको साफ करेंगे तो अच्छा होगा।"

मै समझता हू कि मै इस बातका साफ-साफ जवाब दे चुका हू। मैंने जो कहा है, उसका एक ही अर्थ हो सकता है। जो अर्थ लगाया गया है,'

वह मेरी कल्पनामे भी नही आया। अगर मुझे पता होता कि ऐसा अर्थ किया जा सकता है तो मै पहलेसे इस चीजको साफ कर देता।

कई मुसलमान दोस्तोने शिकायत की थी कि सरदारका रुख मुसलमानोके खिलाफ है। मैने कुछ दु.खसे उनकी बात सुनी मगर कोई सफाई पेश न की। उपवास शुरू होनेके बाद मैने अपने ऊपर जो रोक-थाम लगाई हुई थी वह चली गई। इसलिए मैने टीकाकारोको कहा कि सरदारको मुझसे और पडित नेहरूसे अलग करके और मुझे और पंडित नेहरूको खामख्वाह आसमानपर चढाकर वे गलती करते है।

इससे उनको फायदा नही पहुच सकता। सरदारके बात करनेके ढगमे एक तरहका अक्खडपन है, जिससे कभी-कभी लोगोका दिल दुख जाता है, अगरचे सरदारका इरादा किसीको दु.खी बनानेका नही होता। उनका दिल बहुत बडा है। उसमे सबके लिए जगह है। सो मैने जो कहा उसका मतलब यह था कि अपने जीवनभरके वफादार साथीको एक बेजा इल-जामसे[1] बरी[2] कर दू। मुझे यह भी डर था कि सुननेवाले कही यह न समझ बैठे कि मै सरदारको अपना 'जी हुजूर' मानता हू। सरदारको प्रेमसे मेरा 'जी हुजूर' कहा जाता था। इसलिए मैने सरदारकी तारीफ करते समय कह दिया कि वे इतने शक्तिशाली और मनके मजबूत है कि वे किसीके 'जी हुजूर' हो ही नही सकते। जब वे मेरे 'जी हुजूर' कहलाते थे तब वे ऐसा कहने देते थे, क्योकि जो कुछ मै कहता था वह अपने आप उनके गले उतर जाता था। वे अपने क्षेत्रमे बहुत बडे थे। अहमदाबाद म्युनिसिपैलिटी-मे उन्होने शासन चलानेमे बहुत काबलियत[3] बताई थी। मगर वह इतने नम्र थे कि उन्होने अपनी राजनैतिक तालीम मेरे नीचे शुरु की। उन्होने उसका कारण मुझे बताया था कि जब मै हिंदुस्तानमे आया था उन दिनो जिस तरहका राज-काज हिंदुस्तानमे चलता था, उसमे हिस्सा लेनेका उन्हें मन नही होता था। मगर अब जब सत्ता उनके गले आ पडी तब उन्होने देखा कि जिस अहिंसाको वे आजतक सफलतापूर्वक चला सके अब वही नहीं चला सकते। मैने कहा है कि मै समझ गया हू कि जिस चीजको मैं

---

[1]अपराध; [2]मुक्त; [3]योग्यता।

और मेरे साथी अहिंसा कहा करते थे वह सच्ची अहिंसा न थी। वह तो नकली चीज थी और उसका नाम है निष्क्रिय प्रतिरोध। हा, किनके हाथोमे निष्क्रिय प्रतिरोध किसी कामकी चीज है ? जरा सोचिए तो सही कि एक कमजोर आदमी जनताका प्रतिनिधि बने तो वह अपने मालिकोकी हँसी और बे-इज्जती ही करवा सकता है। मै जानता हू कि सरदार कभी उन्हे सौपी हुई जिम्मेदारीको दगा नही दे सकते। वे उसका पतन बर्दाश्त नही कर सकते। मै उम्मीद करता हू कि यह सब सुननेके बाद कोई ऐसा खयाल नही करेगे कि मेरा उपवास गृह-विभागकी निंदा करनेवाला है। अगर कोई ऐसा खयाल करनेवाला है तो मै उसको कहना चाहता हू कि वह अपने-आपको नीचे गिराता है और अपने-आपको नुकसान पहुचाता है, मुझे या सरदारको नही। मै जोरदार लफ्जोमे कह चुका हू कि कोई बाहरी ताकत इन्सान-को नीचे नही गिरा सकती। इन्सानको गिरानेवाला इन्सान खुद ही बन सकता है। मै जानता हू कि मेरे जवाबके साथ इस वाक्यका कोई ताल्लुक नही है। मगर यह एक ऐसा सत्य है कि उसे हर मौकेपर दोहराया जा सकता है।

मै साफ लफ्जोंमें कह चुका हू कि मेरा उपवास यूनियनके मुसलमानों-की खातिर है। इसलिए वह यूनियनके हिंदू और सिखो और पाकिस्तानके मुसलमानोके सामने है। इस तरहसे यह उपवास पाकिस्तानकी अकलियत[1] की खातिर भी है। जो विचार मै पहले समझा चुका हू उसीको मै यहा थोडेमें दोहरानेकी कोशिश कर रहा हू।

मै यह आशा नही रख सकता कि मेरे-जैसे अपूर्ण और कमजोर इन्सानका फाका दोनो तरफ की अकलियतोको सब तरहके खतरोंसे पूरी तरह बचानेकी ताकत रखे। फाका सबकी आत्म-शुद्धिके लिए है। उसकी पवित्रताके बारेमे किसी तरहका शक जाना गलती होगी।

तीसरा सवाल यह है, "आपका उपवास ऐसे वक्तपर शुरू हुआ है जब सयुक्त राष्ट्र-सघकी सुरक्षा-समिति बैठनेवाली है। साथ ही अभी ही कराचीमे फिसाद हुआ है और गुजरात (पंजाब) मे कत्लेआम

---

[1] अल्पसंख्यक।

हुआ है। हम नही जानते कि विदेशके अखबारोंमे इन वाकयातकी तरफ कहातक ध्यान दिया गया है। इसमें शक नहीं कि आपके उपवासके सामने यह वाकयात छोटे लगने लगे हैं। पाकिस्तानके प्रतिनिधियोंके पिछले कारनामोंने हम समझ सकते हैं कि वे जरूर इस चीजका फायदा उठाएंगे और दुनियाको कहेगे कि गाधीजी अपने हिंदू अनुयायियोसे, जिन्होंने हिंदुस्तानमे मुसलमानोंकी जिदगी आफतमें डाल रखी है, पागलपन छुड़ानेके लिए उपवास कर रहे है। सारी दुनियाभरमें सच्ची बात पहुंचनेमें देर लगेगी। इस दरमियान आपके उपवासका यह नतीजा आ सकता है कि सयुक्त राष्ट्र-सघपर हमारे विरुद्ध प्रभाव पड़े।" इस सवालका लबा-चौडा जवाब देनेकी जरूरत थी। दुनियाकी हकूमतो और दुनियाके लोगोको जहातक मैं जानता हूं मैं यह कहनेकी हिम्मत करता हूं कि उपवासका असर अच्छा ही हुआ है। वाहरके लोग, जो हिंदुस्तानके वाकयातको निष्पक्षतासे देख सकते हैं, मेरे फाकेका उल्टा अर्थ नहीं लगाएगे। फाका यूनियनके और पाकिस्तानके रहनेवालोंसे पागलपनको छुडानेके लिए है।

अगर पाकिस्तानमें मुसलमानोंकी अकसरियत सीधी तरहसे न चले, वहाके मर्द और औरतें शरीफ न वनें तो यूनियनके मुसलमानोंको बचाया नही जा सकता। मगर मुझे खुशी है कि मृदुला वेनके कलके सवालपर ऐसा लगता है कि पाकिस्तानके मुसलमानोंकी आंखे खुल गई हैं और वे अपना फर्ज समझने लगे हैं।

सयुक्त राष्ट्र-सघ यह जानता है कि मेरा फाका उसे ठीक निर्णय करनेमें मदद देनेवाला है, ताकि वह पाकिस्तान और हिंदुस्तानका उचित पथ-प्रदर्शन कर सके।

: २१० :

१६ जनवरी १९४८

भाइयो और बहनो,

मुझे आशा तो नही थी कि आज भी मै बोल सकूगा, लेकिन यह सुनकर आप खुश होगे कि कल मेरी आवाजमे जितनी शक्ति थी उससे आज ज्यादा महसूस करता हू। इसका मतलब तो यही किया जाय कि ईश्वरकी बडी कृपा है। चौथे रोज मुझमे (पहले) जब मैने फाका किया, तब इतनी शक्ति नही रहती; लेकिन आज तो है। मेरी उम्मीद तो ऐसी है कि अगर आप सब लोग आत्म-शुद्धि करनेका यत्न करते रहेगे तो बोलनेकी मेरी शक्ति आखिरतक रह सकती है। मै इतना तो कहूगा कि मुझे किसी प्रकारकी जल्दी नही है। जल्दी करनेसे हमारा काम नही बनता है। मै परम शातिमे हू। मै नही चाहता कि कोई अधूरा काम करे और मुझे सुना दे कि ठीक हो गया है। सारा-का-सारा जब यहा ठीक होगा तो सारे हिंदुस्तानमे ठीक होगा। इसलिए मै समझता हू कि जब इर्द-गिर्दमे, सारे हिंदुस्तानमे और सारे पाकिस्तानमे, शाति नही हुई है तो मुझे जिंदा रहनेमे दिलचस्पी नही है। यह इस यज्ञके माने है।

(लिखित संदेश)

किसी जिम्मेदार हकूमतके लिए सोच-समझकर किए हुए अपने किसी फैसलेको बदलना आसान नही होता। मगर तो भी हमारी हकूमतने, जो हर मानेमे[1] जिम्मेदार हकूमत है, सोच-समझकर और तेजीसे अपना तय किया हुआ फैसला बदल डाला है।

उनको काश्मीरसे लेकर कन्याकुमारीतक और कराचीसे लेकर

---

[1] पाकिस्तानका जो पचपन करोड़ रुपया निकलता था उसे भारत-सरकारने काश्मीरका मामला तय हो जानेपर दिलानेका निश्चय किया था। गांधीजीके उपवास प्रारंभ करते ही भारत सरकारने उसे दे देनेका फैसला कर लिया।

डिवरूगढतक सारे मुल्कको मुवारकवाद देना चाहिए। मै जानता हू कि दुनियाके सव लोग भी कहेगे कि ऐसा वडा काम हमारी हकूमतके जैसी बडे दिलवाली हकूमत ही कर सकती थी। इसमे मुसलमानोको सतुष्ट करनेकी वात नही है। यह तो अपने आपको सतुष्ट करनेकी वात है। कोई भी हकूमत, जो वहुत वडी जनताकी प्रतिनिधि है, वेसमझ जनतासे तालिया पिटवानेके लिए कोई कदम नही उठा सकती है। जहा चारों तरफ पागलपन फैला हुआ है, वहा आकर वडे-से-वडे नेता वहादुरीसे अपना दिमाग ठडा रखकर जो जहाज चला रहे है क्या उसको डूवनेसे न बचावे?

हमारी हकूमतने क्यो यह कदम उठाया? इसका कारण मेरा उपवास था। उपवाससे उनकी विचारधारा ही वदल गई। उपवासके विना वे, कानून जितना उनसे करवाता, उतना ही करनेवाले थे। मगर हिंदुस्तानकी हकूमतका यह कदम सच्चे मानेमे दोस्ती बढाने और मिठास पैदा करनेवाली चीज है। इससे पाकिस्तानकी भी परीक्षा हो जायगी। नतीजा यह होना चाहिए कि न सिर्फ काश्मीरका, वल्कि हिंदुस्तान और पाकिस्तानमे जितने मतभेद है सवका सम्मानजनक आपस-आपसमे फैसला हो जावे। आजकी दुश्मनीकी जगह दोस्ती ले। न्याय कानूनसे बढ जाता है। अग्रेजीमे एक घरेलू कहावत है, जो सदियोसे चली आई है, उसमे कहा है कि जहा मामूली कानून काम नही देता, वहा न्याय हमारी मदद करता है। वहुत वक्त नही हुआ जव कानूनके लिए और न्यायके लिए वहां अलग-अलग कचहरिया हुआ करती थी। इस तरहसे देखा जाय तो इसमें कोई शक नही कि हिंदुस्तानकी हकूमतने जो किया है वह सव तरहसे ठीक है। अगर मिसालकी जरूरत है तो मेकडॉनल्ड एवार्ड (निर्णय) हमारे सामने है। वह सिर्फ मेकडॉनल्डका निर्णय न था, वल्कि सारे ब्रिटिश मत्रिमडलका और दूसरी गोलमेज परिषद्के अधिकतर सदस्योका भी निर्णय था। मगर यरवदाके उपवासने तो रातो-रात वह निर्णय वदल दिया। मुझे कहा गया कि यूनियनकी हकूमतके इस वडे कामके कारण तो अव मैं अपने उपवासको छोड दू। काश कि मैं अपने दिलको ऐसा करनेके लिए समझा सकता।

मै जानता हूं कि उन डाक्टर लोगोकी चिंता जो अपनी इच्छाने काफी त्याग करके मेरी देख-भाल कर रहे हैं, जैसे-जैसे उपवास लंबा होता जाता है, बढ़ती जाती है। गुरदे ठीक तरहसे काम नही करते। उन्हे इस चीजका इतना खतरा नही कि आज मर जाऊंगा, मगर उपवास लंबा चला तो हमेशाके लिए शरीरकी मशीनको जो नुकसान पहुचेगा, उससे वे डरते हैं। मगर डाक्टर लोग कितने ही होशियार क्यों न हों, मैंने उनकी सलाहसे उपवास शुरू नही किया। मेरा रहनुमा और मेरा हकीम एकमात्र ईश्वर रहा है, वह कभी गलती नहीं करता। वह सर्वशक्तिमान है। अगर उसे मेरे इस कमजोर शरीरसे कुछ और काम लेना होगा तो डाक्टर लोग कुछ भी कहे वह मुझे बचा लेगा। मै ईश्वरके हाथोमे हूं। इसलिए मै आशा करता हू कि आप विश्वास रखेगे कि मुझे न मौतका डर है, न अपंग होकर जिंदा रहनेका। मगर मुझे लगता है कि अगर देशको मेरा कुछ भी उपयोग है तो डाक्टरोकी इस चेतावनीके परिणामस्वरूप लोगोंको तेजीके साथ मिलकर काम करना चाहिए। इतनी मेहनतसे आजादी पानेके बाद हमे बहादुर तो होना ही चाहिए। बहादुर लोग, जिनपर दुश्मनीका शक होता है उनपर भी विश्वास रखते है। बहादुर लोग अविश्वासको अपनी शानके खिलाफ समझते है। अगर दिल्लीके हिंदू, मुसलमान और सिखोमे ऐसी एकता स्थापित हो जाय कि हिंदुस्तान और पाकिस्तानके बाकी हिस्सोमें आग भड़के तो भी दिल्ली शांत रहे तब मेरी प्रतिज्ञा पूरी हो जायगी। खुश-किस्मतीसे हिंदुस्तान और पाकिस्तान दोनों तरफके लोग अपने-आप समझ गए लगते है कि उपवासका अच्छे-से-अच्छा जवाब यही है कि दोनों उपनिवेशोमे ऐसी दोस्ती पैदा हो कि हर धर्मके लोग दोनों तरफ बिना किसी खतरेके आ-जा सके और रह सके। आत्म-शुद्धिके लिए इतना तो कम-से-कम होना ही चाहिए।

हिंदुस्तान और पाकिस्तानके लिए दिल्लीपर बहुत ज्यादा बोझ डालना ठीक न होगा। यूनियनके रहनेवाले भी आखिर तो इन्सान हैं। हमारी हकूमतने लोगोके नामसे एक बहुत बड़ा उदार कदम उठाया है और उसको उठाते समय उसकी कीमतका खयालतक नही किया। इसका जवाब पाकि-स्तान क्या देगा ? इरादा हो तो रास्ते तो बहुत है। मगर क्या इरादा है ?

: २११ :

१७ जनवरी १६४८

भाइयो और वहनो,

ईश्वरकी ही कृपा है कि आज पाचवा दिन है तो भी मै वगैर परिश्रमके आपको दो शब्द कह सकता हू। जो मुझको कहना है वह तो मैने लिखवा दिया है, जिसे प्रार्थना-सभामे सुशीला वहन सुना देगी।

इतना है कि जो कुछ भी आप करे, उसमे परिपूर्ण शक्ति होनी चाहिए। अगर यह नही है तो कुछ भी नही है। अगर आप मेरा खयाल रखें कि इसे कैसे जिदा रखा जाय तो वड़ी भारी गलती करनेवाले है। मुझको जिदा रखना या मारना किसीके हाथमे नही है। वह ईश्वरके हाथमें है। इसमें मुझे कोई शक नही है। किसीको भी शक नही होना चाहिए।

इस उपवासका मतलव यह है कि अतःकरण स्वच्छ हो और जाग्रत हो। ऐसा करे तभी सवकी भलाई है। मुझपर दयाकर आप कुछ न कीजिए। जितना दिन उपवासका काट सकता हू काटूगा। ईश्वरकी इच्छा होगी तो मर जाऊगा।

मै जानता हू कि मेरे काफी मित्र दुःखी है, और सव कहते है कि आज ही उपवास क्यो नही छोडा जाय। आज मेरे पास ऐसा सामान नही है। ऐसा मिल जाय तो नही छोडनेका आग्रह नही करूगा। अहिंसाका नियम है कि मर्यादापर कायम रहना चाहिए, अभिमान नही करना चाहिए। नम्र होना चाहिए। मै जो कह रहा हू उसमे अभिमान नही है। शुद्ध प्यारसे कह रहा हू। ऐसा जो जानता है वही रहनेवाला है।

(लिखित संदेश)

मै पहले भी कह चुका हू और फिरसे दोहराता हू कि फाकेके दवावके नीचे कुछ भी न किया जाय। मैने देखा है कि फाकेके दवावके नीचे कई वाते कर ली जाती है और फाका खत्म होनेके वाद मिट जाती है। अगर ऐसा कुछ हुआ तो वहुत वुरी वात होगी। ऐसा कभी होना ही

नही चाहिए। आध्यात्मिक उपवास एक ही आशा रखता है, वह है दिलकी सफाई। अगर दिलकी सफाई ईमानदारीसे की जाय तो जिस कारणसे सफाई की गई थी वह कारण मिट जानेपर भी सफाई नही मिटती। किसी प्रियजनके आनेके कारण कमरेमे सफेदी की जाती है तो जब वह आकर चला जाता है तो सफेदी मिट नही जाती। यह तो जड वस्तुकी बात है। कुछ अर्सेके बाद सफेदी मिटने लगती है और फिरसे करवानी पडती है। दिलकी सफाई तो एक दफा हो गई तो मरनेतक कायम रहती है। फाके-का दूसरा कोई योग्य मकसद नही हो सकता।

राजा, महाराजा और आम लोगोके तारोका ढेर बढ रहा है। पाकिस्तानसे भी तार आ रहे है। वे अच्छे है, मगर पाकिस्तानके दोस्त और शुभचिंतककी हैसियतमे मैं पाकिस्तानके रहनेवालो और जिनको पाकिस्तानका भविष्य बनाना है उनको कहना चाहता हू कि अगर उनका जमीर[१] जाग्रत न हुआ और अगर वह पाकिस्तानके गुनाहको कबूल नही करते तो पाकिस्तानको कभी कायम नही रख सकेगे। इसका यह मतलब नही कि मै यह नही चाहता कि हिंदुस्तानके दोनो टुकडे अपनी खुशीसे फिरसे एक हो। मगर मैं यह साफ कर देना चाहता हू कि जबरदस्तीसे मिटानेका मुझे खयालतक नही आ सकता। मै उम्मीद रखता हू कि मृत्यु-शय्यापर पडे मेरे यह वचन किसीको चुभेगे नही। मै उम्मीद रखता हू कि सब पाकिस्तानी यह समझ जायगे कि अगर कमजोरीकी वजहसे या उनका दिल दुखानेके डरसे मै उसके सामने अपने दिलकी सच्ची बात न रखू तो मै अपने प्रति और उनके प्रति झूठा साबित होऊगा। अगर मेरे हिसाबमे कुछ गलती रही हो तो मुझे बताना चाहिए। मै वायदा करता हू कि अगर मै गलती समझ गया तो अपना वचन वापस लेलूगा। मगर जहातक मै जानता हू, पाकिस्तानके गुनाहके बारेमे दो विचार हो ही नही सकते।

मेरे उपवासको किसी तरहसे भी राजनैतिक न समझा जाय। यह तो अतरात्माकी जबरदस्त आवाजके जवाबमे धर्म समझकर किया

---

[१] विवेक।

गया है। महायातना भुगतनेके वाद मैंने फाका करनेका फैसला किया। दिल्लीके मुसलमान भाई इस वातके साक्षी हैं। उनके प्रतिनिधि करीव-करीव रोज मुझे दिनभरकी रिपोर्ट देने आते है। इस पवित्र मौकेपर मेरा उपवास छुडवानेके हेतु मुझको धोखा देकर राजा, महाराजा, हिंदू, सिख और दूसरे लोग न अपनी खिदमत करेंगे, न हिंदुस्तानकी। वे सव समझ ले कि मैं कभी इतना खुश नही रहता, जितना कि आत्माकी खातिर उपवास करते वक्त। इस फाकेसे मुझे हमेशासे ज्यादा खुशी हासिल हुई है। किसीको इसमें विघ्न डालनेकी जरूरत नही है। विघ्न इसी शर्तपर डाला जा सकता है कि ईमानदारीसे आप यह कह सकें कि आपने सोच-समझकर शैतानकी तरफसे मुह फेर लिया है और ईश्वरकी तरफ चल पडे है।

: २१२ :

१८ जनवरी १९४८

भाइयो और वहनो,

मैंने थोडा तो लिखवा दिया है। वह सुशीला वहन आप लोगोको सुना देगी।

आजका दिन मेरे लिए तो है, आपके लिए भी मगल-दिन माना जाय। कैसा अच्छा हे कि आज ही गुरु गोविंदसिंहकी जन्म-तिथि है। उसी शुभ तिथिपर मैं आपलोगोकी दयासे फाका छोड़ सका हू। जो दया आप लोगोसे—दिल्लीके निवासियोसे, दिल्लीमे जो दु खी शरणार्थी पड़े हैं, उनसे, यहाकी हकूमतके सव कारोवारसे —मुझे मिली है उसे, मुझे लगता है, कि मैं जिंदगीभर भूल नही सकूगा। कलकत्तेमे ऐसे ही प्रेमका अनुभव मैंने किया। यहांपर मै कैसे भूल सकता हू कि शहीद साहवने कलकत्तेमें वडा काम किया। अगर वह नही करते तो मै ठहरनेवाला नही था। शहीद साहवके लिए हम लोगोके दिलमें वहुत शकूक[1] थे। अभी भी है। उससे हमको

---

[1]संदेह।

क्या ? आज हम सीखें कि कोई भी इन्सान हो, कैसा भी हो, उससे हमको दोस्ताना तौरसे काम करना है। हम किसीके साथ किसी हालतमें दुश्मनी नहीं करेंगे, दोस्ती ही करेंगे। शहीद साहब और दूसरे चार करोड़ मुसलमान पड़े हैं। वे सब-के-सब फरिश्ते तो हैं ही नहीं। ऐसे ही सब हिंदू और सिख भी फरिश्ते थोड़े ही हैं ! अच्छे और बुरे हममें हैं; लेकिन बुरे कम हैं। हमारे यहां जिसको हम जरायम पेशा जातियां कहते हैं, वे भी पड़ी हैं। हमारे यहां जिनको जंगली जातियां कहते हैं, वे भी पड़ी हैं। उन सबके साथ मिल-जुलकर रहना है।

मुसलमान बड़ी कौम है, छोटी कौम नहीं है। यहीं नहीं है, सारी दुनियामें पड़ी है। अगर हम ऐसी उम्मीद करें कि सारी दुनियाके साथ हम मित्र-भावसे रहेंगे, दोस्ताना तौरसे रहेंगे तो क्या वजह है कि हम यहांके जो मुसलमान हैं उनसे दुश्मनी रखें ?

मैं भविष्यवेत्ता नहीं हूं। फिर भी मुझे ईश्वरने अक्ल दी है, मुझको ईश्वरने दिल दिया है। उन दोनोंको टटोलता हूं और आपको भविष्य सुनाता हूं कि अगर हम किसी-न-किसी कारणसे एक दूसरेसे दोस्ती न कर सके, वह भी यहांके ही नहीं, पाकिस्तानके और सारी दुनियाके मुसलमानोंसे दोस्ती न कर सके, तो समझ लें, इसमें मुझे कोई शक नहीं है कि हिंदुस्तान हमारा नहीं होगा, पराया हो जायगा, गुलाम हो जायगा। पाकिस्तान गुलाम होगा, यूनियन भी गुलाम होगा और जो आजादी हमने पाई है उसे हम खो बैठेंगे।

आज इतने लोगोंने आशीर्वाद दिए हैं। सुनाया है कि हम सब हिंदू, सिख, मुसलमान भाई-भाई बनकर रहेंगे और किसी भी हालतमें, कोई भी कुछ कहे, दिल्लीके हिंदू, सिख, मुसलमान, पारसी, ईसाई सब जो यहांके बाशिंदे हैं और सब शरणार्थी हैं वे भी दुश्मनी नहीं करनेवाले हैं। यह थोड़ी बात नहीं है। इसके माने यह हैं कि अबसे हमारी कोशिश यह रहेगी कि सारे हिंदुस्तान और पाकिस्तानमें जितने लोग पड़े हैं वे सब एक मिलकर रहेंगे। हमारी कमजोरीके कारण भले ही हिंदुस्तानके दो टुकड़े हो गए, लेकिन वे भी दिलसे मिलाने हैं। अगर इस फाकेके छूटनेका यह अर्थ नहीं है तो बड़ी नम्रतासे कहूंगा कि यह फाका छुड़वाकर आपने

कोई अच्छा काम नही किया है, कोई काम ही नही किया। अभी फाकेकी आत्माका भलीभाति पालन होना चाहिए। भेद क्यो हो ? जो दिल्लीमे हो, वही सारे यूनियनमे हो और जो सारे यूनियनमे होगा तो पाकिस्तानमे होना ही है, इसमे आप शक न रखे। आप न डरे, एक बच्चेको भी डरनेका काम नही। आजतक हम, मेरी निगाहमे, शैतानकी ओर जाते थे। आजसे मै उम्मीद करता हू कि हम ईश्वरकी ओर जाना शुरु करते है। लेकिन हम तय करे कि एक वक्त हमने अपना चेहरा, मुह ईश्वरकी ओर रखा तो वहासे कभी नही हटेगे। ऐसा हुआ तो सारे हिंदुस्तान, पाकिस्तान, दोनो मिलकर इस सारी दुनियाको ढाक सकेगे, सारी दुनियाकी सेवा कर सकेगे और सारी दुनियाको ऊची ले जा सकेगे। मै और किसी कारणसे जिंदा रहना नही चाहता हू। इन्सान जिंदा रहता है तो इन्सानियतको ऊचा उठानेके लिए। ईश्वर और खुदाकी तरफ जाना ही इन्सानका फर्ज है। जबानसे ईश्वर, खुदा, सतश्री अकाल कुछ भी नाम लो, वह झूठा है अगर उनके दिलमे वह नाम नही है। सब एक ही हस्ती है तो फिर कोई कारण नही है कि हम उस चीजको भूल जायं और एक दूसरेको दुश्मन माने।

आज तो मै आपसे ज्यादा कुछ कहनेवाला नही हू, लेकिन आजके दिनसे हिंदू निर्णय कर ले कि लडेगे नही। मै चाहूगा कि हिंदू कुरान पढे, जैसे वे भगवद्गीता पढते है। सिख भी वही करे। और मै चाहूगा कि मुस्लिम भाई-बहन भी अपने घरोमे ग्रथ साहब पढे, उनके माने समझे। जैसे हम अपने धर्मको मानते है, वैसे दूसरेके धर्मको भी माने। उर्दू-फारसी किसी जबानमें भी बात लिखी हो, अच्छी बात तो अच्छी बात है। जैसे कुरान शरीफ वैसे गीता और ग्रथ साहब है। मेरा मकसद यही है। चाहे आप मानें या न माने, अभीतक मै ऐसा करता रहा हू। मै आपको कहूगा और दावेसे कहूंगा कि मै पत्थरकी पूजा नही करता हू। मगर मैं सनातनी हिंदू हू। पत्थरकी पूजा करनेवालोंसे मै नफरत नही करता। खुदा पत्थरमें भी पडा है। जो पत्थरकी पूजा करता है वह उसमे पत्थर नही, खुदा देखता है। पत्थरमे ईश्वर न माने तो कुरान शरीफ खुदाई किताब है, यह क्यो माना जायगा ?

तो यह क्या बुतपरस्ती नही है ? दिलोंमे भेद न रखे तो हम सब यह सीख सकते है। ऐसा हो तो फिर यह नही होगा कि यह हिंदू है, यह सिख है, यह मुसलमान है। सब भाई-भाई है, मिल-जुलकर रहनेवाले है। ऐसा होना चाहिए। फिर ट्रेनमे आज जो अनेक किस्मकी परेशानी होती है—लड़का फेंक दिया जाता है, आदमी फेंक दिया जाता है, औरते फेंक दी जाती है, वह सब मिट जायगा, हर कोई आसानीसे हर जगह रह सकेंगे, कही किसीको डर न होगा। यूनियन ऐसा बने। पाकिस्तान भी ऐसा होना चाहिए। मुझको तबतक परम शाति नही होनेवाली है जबतक यहाके शरणार्थी, जो पाकिस्तानसे दुखी होकर आए है, अपने घरोको वापस न जा सके और जो मुसलमान यहासे हमारे डरसे, मार-पीटसे भागे है और जो वापस आना चाहते है वे आरामसे यहा न रह सके।

बस इतना ही कहूगा। ईश्वर हम सबको, सारी दुनियाको अच्छी अक्ल दे, सन्मति दे, होशियार करे और अपनी ओर खीच ले, जिससे हिंदुस्तान और सारी दुनिया सुखी हो।

(लिखित संदेश)

मैने यह उपवास सत्यके, जिसका परिचित नाम ईश्वर है, नामपर किया था। जीते-जागते सत्यके बिना ईश्वर कही नही है। ईश्वरके नामपर हम झूठ बोले है, हमने बेरहमीसे लोगोकी हत्याए की है और इसकी भी परवाह नही की कि वे अपराधी है या निर्दोष, मर्द है या औरतें; बच्चे है या बूढे! हमने अपहरण व बलात् धर्म-परिवर्तन किए है और हमने यह सब बेहयाईसे किया है। मै नही समझता कि किसीने यह काम सत्यके नामपर किए हों। इसी नामका उच्चारण करते हुए मैने उपवास तोडा है। हमारे लोगोका दु ख असह्य था। राष्ट्रपति राजेन्द्र बाबू हिंदुओ, मुसलमानो व सिखो, हिंदू महासभा, राष्ट्रीय स्वयसेवक सघ व शरणार्थियोके सौसे अधिक प्रतिनिधियोको लेकर मेरे पास आए। इन प्रतिनिधियोके दलमे पाकिस्तानके हाई कमिश्नर जाहिदहुसैन साहब, दिल्लीके कमिश्नर व डिप्टी कमिश्नर और आजाद हिंद फौजके जनरल शाहनवाज भी शामिल थे। नेहरूजी भी एक मूर्तिकी तरह चुपचाप मेरे पास बैठे हुए थे और ऐसे

ही मौलाना आजाद। राजेन्द्र बाबूने एक दस्तावेज[1] पढ़कर सुनाया, जिसपर

---

[1] वह शांति-प्रतिज्ञा, जिसपर हिंदुओं, सिखों व मुसलमानोंके सौसे अधिक प्रतिनिधियोंने हस्ताक्षर किए और जिसपर गांधीजीने उपवास समाप्त किया, इस प्रकार है—

हम यह घोषित करना चाहते हैं कि हमारी दिली ख्वाहिश है कि हिंदू, मुसलमान और सिख और दूसरे धर्मके सब माननेवाले फिरसे आपसमें मिलकर भाई-भाईकी तरह दिल्लीमें रहें और हम उनसे यह प्रतिज्ञा करते हैं कि मुसलमानोंकी जान, धन और धर्मकी हम रक्षा करेंगे और जिस तरहकी घटनाएं यहां पहले हो गई हैं, उनको फिर न होने देंगे।

१. गांधीजीको हम इत्मीनान दिलाना चाहते हैं कि जिस तरह ख्वाजा कुतुबुद्दीनके उर्सका मेला पहले हुआ करता था, वैसे ही अब भी होगा।

२. जिस तरह मुसलमान दिल्लीके सभी मुहल्लोंमें और खास तौर-पर सब्जीमंडी, करौलबाग और पहाड़गंजमें आया-जाया करते थे, वैसे ही बेखटके और बेखतरे फिरसे आ-जा सकेंगे।

३. उन मस्जिदोंको, जिनको मुसलमान छोड़कर चले गए हैं, या जो हिंदुओं और सिखोंके कब्जेमें हैं, वापिस दे देंगे। जिन जगहों-को खास मुसलमानोंके बसनेके लिए गवर्नमेंटने रख छोड़ा है, उनपर जोर-जबर्दस्तीसे कब्जा करनेकी कोशिश नहीं की जायगी।

४. जो मुसलमान दिल्लीसे बाहर चले गए हैं, वे अगर वापिस आना चाहें तो हमारी तरफसे कोई बाधा न दी जायगी और मुसलमान अपने कारबार जिस तरहसे करते थे, करने पाएंगे। हम यह इत्मीनान दिलाना चाहते हैं कि ये सब चीजें अपनी कोशिशसे पूरी करेंगे और सरकारी पुलिस या फौजकी ताकत इसकी खातिर इस्तेमाल करनेकी जरूरत नहीं पड़ेगी।

५. महात्माजीसे हमारा अनुरोध है कि वे हमारी बातोंपर विश्वास करके अपना उपवास छोड़ दें और जिस तरह आजतक देशके रहनुमा रहे हैं, बने रहें।

आगत प्रतिनिधियोंके हस्ताक्षर थे। इस दस्तावेजद्वारा मुझसे कहा गया कि उनपर अधिक चिंताका दबाव न डाला जाय और मैं अपना उपवास तोड़-कर उनके दुखका अंत कर दूं। पाकिस्तान व भारतीय यूनियनसे भी मेरे पास तार-पर-तार आए थे कि मैं उपवास तोड दूं। मैं इन सब मित्रोंकी सलाहका विरोध न कर सका। मैं उनकी इस प्रतिज्ञापर अविश्वास नहीं कर सका कि हर हालतमें हिंदुओं, मुसलमानों, सिखों, ईसाइयों या पारसियों व यहूदियों सबमें मित्रता रहेगी और इस मित्रताको कभी भंग नहीं किया जायगा। इस दोस्तीको तोड़नेका मतलब राष्ट्रको तोड़ना होगा।

जब मैं यह लिख रहा हूं, मेरे पास सेहत और दीर्घ जीवनकी कामनावाले तारोंका तांता लगा हुआ है। ईश्वर मुझे काफी सेहत और विवेक दे जिससे मैं मानव-जातिकी सेवा कर सकूं। यदि यह आश्वासन, जो आज मुझे दिया गया है, पूरा हो जाता है तो मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि मैं चौगुनी शक्तिसे प्रार्थना करूंगा कि वह मुझे अपनी पूरी जिंदगी जीने दे और मैं अंततक मानव-जातिकी सेवा करूं। विद्वानोंका मत है कि पूरी उम्र कम-से-कम १२५ वर्ष है और कुछ लोग १३३ वर्ष कहते हैं। मेरी प्रतिज्ञा पूरी होनेमें जितना समय लगनेकी आशा थी वह दिल्लीके नागरिकोंकी, जिनमें हिंदू महासभा और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघके नेता भी सम्मिलित हैं, सद्भावनाके कारण उससे पहले पूरी हो गई। मुझे पता चला है कि कलसे हजारों शरणार्थी और दूसरे लोग भी मेरी सहानुभूतिमें उप-वास कर रहे हैं। तो ऐसी हालतमें इसका परिणाम दूसरा निकल ही नहीं सकता था। हजारों व्यक्तियोंने मेरे पास लिखित आश्वासन भेजे हैं कि लोगोंके दिलोंमें परिवर्तन हो गया है और वे सबको भाई मानते हैं। सारी दुनियासे मेरे पास आशीर्वादके तार आए हैं। क्या इस बातका इससे अच्छा कोई सबूत हो सकता है कि मेरे इस उपवासमें ईश्वरका हाथ था? लेकिन मेरी प्रतिज्ञाके शब्दोंके पालनके बाद उसकी आत्मा भी है, जिसके पालनके बिना शब्दोंका पालन बेकार हो जाता है। मेरी प्रतिज्ञाका उद्देश्य यूनियन तथा पाकिस्तानमें हिंदू, मुस्लिम, सिखमें मित्रता स्थापित करना है। यदि यूनियन (हिंदुस्तान) में ऐसा हो जाता है तो जैसे रातके बाद दिन होता है वैसे ही पाकिस्तानमें भी ऐसा होना ही चाहिए। यदि यूनियनमें अंधेरा

हो तो पाकिस्तानमे उजालेकी आशा करना मूर्खता है, किंतु यदि यूनियनमे रात मिट जानेका कोई शक नही रह जाता तो पाकिस्तानमे भी रात मिट-कर ही रहेगी। पाकिस्तानसे बहुतसे सदेश आए है। उनमेसे एकमे भी इस बातका विरोध नही किया गया है। ईश्वरसे मेरी प्रार्थना है कि जिस तरहसे इन छ दिनोतक हमारा पथ-प्रदर्शन किया है उसी तरह आगे भी हमारा पथ-प्रदर्शन करता रहे।

: २१२ :

१६ जनवरी १६४८

भाइयो और वहनो,

सारी दुनियासे हिंदुस्तानियो और दूसरे लोगोने मेरी सेहतके बारेमें चिंता और शुभेच्छा बतानेवाले अनेक तार भेजे है। उनके लिए मै उन सब भाई-बहनोका आभार मानता हू। ये तार जाहिर करते है कि मेरा कदम ठीक था। मेरे मनमे तो इस बारेमें कोई शक था ही नही। जिस तरहसे मेरे मनमे कोई शक नही कि ईश्वर है और उसका सबसे तादृश्य नाम सत्य है, उसी तरहसे मेरे दिलमे कोई शक नही है कि मेरा फाका सही था। अब मुबारकबादके तारोका ताता लगा है। चिंताका बोझ हल्का होनेसे लोग आरामकी सास लेने लगे है। मित्रगण मुझे क्षमा करेंगे कि मै सबको अलग-अलग पहुच नही भेज सकता, ऐसा करना नामुमकिन है। मै यह भी आशा रखता हू कि तार भेजनेवाले पहुचकी आशा भी नही रखते होंगे।

तारोके ढेरमेसे मै दो तार यहा देता हू। एक पश्चिमी पजाबके प्रधान मत्रीका है और दूसरा भोपालके नवाब साहबका। उन लोगोका आज लोग काफी अविश्वास करते है। तार तो आप सुनेंगे ही। उस बारेमे मै कुछ कहना नही चाहता। अगर ये तार उनके दिलोके सच्चे भावको जाहिर करनेवाले न होते तो क्यो वे उपवास जैसे पवित्र और गभीर मौके-पर मुझे तार भेजनेकी तकलीफ उठाते?

भोपालके नवाब साहब अपने तारमे लिखते है .

"सब कौमोके दिली मेलके लिए आपकी अपीलको हिंदुस्तानके दोनो हिस्सोंके सब शातिप्रिय लोग जरूर मानेगे। इसी तरहसे, हिंदुस्तानके दोनों हिस्सोंमे दोस्ती और समझौता होने की इस अपीलको भी सब लोग जरूर मानेगे। खुशकिस्मतीसे इस रियासतमे, पिछले सालमे हमारी कठिनाइयों-का सामना हम सब कौमोके समझौते, प्रेम और मेलके उसूलपर कर सके है। नतीजा यह है कि इस रियासतमे शाति-भग करनेवाला एक भी किस्सा नही बना। हम आपको यकीन दिलाते है कि हम अपनी पूरी ताकतसे इस मेल-जोल और मित्र-भावको बढानेकी कोशिश करेंगे।"

पश्चिमी पजाबके प्रधान मन्त्रीका तार भी मै पूरा-पूरा देता हू। वे लिखते है .

"आपने एक भले कामको बढानेके लिए जो कदम उठाया है, पश्चिमी पजाबकी वजारत[1] उसकी तहेदिलसे[2] तारीफ करती है और सच्चे हृदयसे उसकी कदर करती है। इस वजारतने अकलियतोकी जान-माल और इज्जत बचानेके लिए, जो भी हो सके वह करनेका उसूल[3] हमेशा अपने सामने रखा है। यह वजारत मानती है कि अकलियतोको अन्य नागरिकोके बराबर हकु मिलने चाहिए। हम आपको यकीन दिलाते है कि यह वजारत इस नीतिपर अब और दुगने जोरसे अमल करेगी। हमे यही फिकर है कि हिंदुस्तानके भूखण्डमे एक जगह फौरन हालत सुधरे, ताकि आप अपना उपवास छोड़ सके। आपके-जैसी कीमती जिंदगीको बचानेके लिए इस सूबेमे हमारी कोशिशमे कोई कसर नही रहेगी।"

आजकल लोग बिना सोचे-समझे नकल करने लगते है। इसलिए मुझे चेतावनी देनी होगी कि कोई इतने ही समयमे इस तरहके परिणामकी आशा रखकर इस तरहका उपवास शुरू न करे। अगर कोई करेगा तो उसे निराश होना पडेगा और ऐसे अचूक और शाश्वत उपायकी बदनामी होगी। उपवासकी शर्ते कडी है। अगर ईश्वरमे जीता-जागता विश्वास नही है और अतरात्मासे आवाज, ईश्वरीय हुकम नही निकलता है तो

---

[1] मंत्रि-मंडल; [2] हृदयसे; [3] सिद्धांत।

उपवास करना फिजूल है। तीसरी शर्त भी लगानेकी इच्छा होती है, मगर इसकी जरूरत नही है। ईश्वरका हुकम तभी मिल सकता है जब उपवासका मकसद सच्चा हो, सही हो और बामौका[1] हो। इसमेंसे यह भी निकलता है कि ऐसे कदमके लिए पहलेसे लंबी तैयारी करनी पड़ती है, इसलिए कोई झटसे उपवास करने न बैठे।

दिल्लीके शहरियोके सामने और पाकिस्तानसे आए हुए दु.खी लोगोके सामने बहुत बड़ा काम है। उनको चाहिए कि पूरे विश्वासके साथ आपस-आपसमे मिलनेके मौके ढूढे।

कल बहुत-सी मुसलमान बहनोंसे मिलकर मुझे निहायत खुशी हुई। मेरे साथकी लडकियोने मुझे बताया कि वे बिरला हाउसमे बैठी हुई हैं, मगर जानती नही कि अदर आए या न आएं। उनमेंसे अधिकतर पर्देमे थीं। मैंने उन्हें लानेके लिए कहा और वे आई। मैंने उनसे कहा कि वे अपने पिता और भाईके सामने पर्दा नही रखती तो मेरे सामने क्यो? फौरन हरएकने पर्दा निकाल दिया। यह पहला मौका नही है कि मेरे सामने पर्दा निकाला गया है। मैं इस बातका जिकर यह बतानेके लिए करता हू कि सच्चा प्रेम—और मैं दावा करता हू कि मेरा प्रेम सच्चा है—क्या कर सकता है।

हिंदू और सिख बहनोको मुसलमान बहनोके पास जाना चाहिए और उनसे दोस्ती करनी चाहिए। खास-खास मौकोपर, त्योहारोपर, उनको निमत्रण देना चाहिए और उनका निमत्रण स्वीकार करना चाहिए। मुसलमान लड़के-लडकियां आम स्कूलोकी तरफ खिचे, सांप्रदायिक स्कूलोकी तरफ नही, वे स्कूलोके खेलोमे हिस्सा ले।

मुसलमानोका बहिष्कार नही होना चाहिए। इतना ही नही, बल्कि उन्हें अनुरोध करना चाहिए कि वे जो धधे करते थे उन्हे फिरसे करने लगे। मुसलमान कारीगरको खोकर दिल्लीने नुक्सान उठाया है। हिंदू और सिखोंके लिए यह ख्वाहिश रखना कि वे मुसलमानोसे उनकी रोटी कमानेका जरिया छीन ले, बहुत बुरी कंजूसी होगी। एक तरफसे तो कोई

---

[1] समयानुसार।

चीज या कामपर किसी एकका इजारा नही होना चाहिए, दूसरी तरफसे किसीको बाहर करनेकी कोशिश नही होनी चाहिए। हमारा देश बड़ा है, उसमे सबके लिए जगह है।

जो शाति-कमेटिया बनी है वे सो न जाय। सब मुल्कोंमे बहुत-सी कमेटिया दुर्भाग्यसे सो जाया करती है। आप लोगोके बीच मुझे जिंदा रखनेकी शर्त यह है कि हिंदुस्तानकी सब कौमे शातिसे साथ-साथ रहे। और वह शाति तलवारके जोरसे नही, मगर मुहब्बतके जोरसे हो। मुहब्बतसे बढकर जोड़नेवाली चीज दुनियामे दूसरी कोई नही है।

: २१४ :

२० जनवरी १९४८

भाइयो और बहनो,

पहली बात तो मैं आपसे यह कह दू कि जिन लोगोने दस्तखत किए उन्होंने, मेरी उम्मीद है, सत्यरूपी ईश्वरको साक्षी रखकर दस्तखत किए है, तो भी कलकत्तेसे ऐसी आवाज आ रही है कि यहा जो काम हुआ है उसमे भी कुछ घोटाला न हो। अगर दिल्लीके निवासी और दिल्लीमे जो दु खी आ गए है, वे सब साबित कदम रहेगे चाहे बाहरमे कुछ भी हो—हिदुस्तानके और हिस्सेमे कुछ भी हो, पाकिस्तानमे कुछ भी हो—तो मेरा दृढ मत है कि आप हिंदुस्तानको बचा लेगे और पाकिस्तानको भी बचानेवाले है। आखिर दिल्ली आजकलका नही, पुराना शहर है। आज दिल्लीमे जो काम हो गया है—इतना बडा काम, जो सत्यमय और अहिंसामय है—उसका प्रभाव सारे हिंदुस्तानमे, सारे पाकिस्तानमे और सारी दुनियामे पडेगा।

सरदारने बबईमे क्या कहा, उसे गौरसे पढे तो पता चल जायगा कि सरदार और पडित नेहरू दूर नही है, अलग-अलग नही है। कहनेका तरीका अलग हो सकता है, लेकिन करते एक ही चीज है। वे हिंदुस्तान या मुसलमानके दुश्मन नही हो सकते। जो मुसलमानका दुश्मन है वह

हिंदुस्तानका भी दुश्मन है, इसमे मुझे कोई शक नही । इसलिए मै कहूगा कि हम कम-से-कम इतना तो सीख लें । सारी दुनियामे लोग सीख चुके है । हा, अमरीका एक ऐसा मुल्क है, जहा हब्शी लोगोको मार डाला जाता है । वहां काफी ऐसे गोरे लोग है जो बुरा नही मानते, उनके लिए दिलमे शर्म नही है, लेकिन दुनियाके दूसरे लोग इसे पसद नही करते । उसको हम वहशियाना मानते है । हमारे ही अखबारोने लिखा है कि वे लोग कितने वहशियाना काम करते है । अमरीकाके लोग इतने सुधारक है, तो भी ऐसा करते है । हम ऊचे है, हम ऐसा कर नही सकते । वह तो है, लेकिन आज क्या होता है । तो मै कहूगा कि आप सब बता दे कि गैर-इन्साफ, बाहर हो या यहा, उसका बदला हम न लेंगे, हकूमतपर छोड़ देंगे । कम-से-कम इतना करे, तब लोग आरामसे आ-जा सकते है ।

मैने कहा कि मुमकिन है, मै यहासे पाकिस्तान जाऊं, लेकिन पाकिस्तानको तब जाऊंगा जब हकूमत बुलाएगी और कहेगी कि तू तो भला आदमी है, ख्वाबमे भी मुसलमानोका बुरा नही कर सकता, हिंदुओका भी बुरा नही करता, सिखोका भी बुरा नही करता । हर हालतमे तेरी हाजिरी पाकिस्तानमे चाहते है । या तो एक-एक हकूमत कहे—तीन हकूमते है, बलूचिस्तानको छोड दो—या पाकिस्तानकी मरकजी[1] हकूमत है वह कहे तो जा सकता हू । तब आप समझे कि मै चला गया । हा, डाक्टर कहते है कि फाकेसे जिस्मको इतना नुक्सान पहुचा है कि पद्रह दिन कही नही जा सकता— सूखी चीज भी नही खा सकता—तुमको तो पानी ही पीना है । पीछे पानीमे दूध आ जाता है, फलका रस आ जाता है । दूधसे तो आदमी जिंदगीभर रह सकता है ।

दूसरी बात यह है । यहां जितने दुखी लोग है, उनके लिए तो पडितजी—उनको मै बहुत पहचानता हू—ऐसे है कि दूसरोको सुलाकर सोनेवाले है । मानो एक ही बिछौना है, जो सूखा है, बाकी गीला है, तो वह सूखेमें दुखीको सुलाएगे खुद चाहे घूमते रहे । मै यह पढकर बहुत खुश हुआ । वे कहते है कि उनके घरमे जगह नही है, दूसरे आदमी भी चले आते है,

---

[1] केन्द्रीय ।

इसलिए जगह नही रहती है। वह तो मुख्य प्रधान है। तो मिलनेवाले जाते है, दोस्त है, अग्रेज भी जाते है तो क्या वहासे उनको निकाल दे ? तो भी कहते है कि मेरी तरफसे एक कमरा या दो कमरा, जितना निकल सकता है निकालूगा और दु खी लोगोको रखूगा। फिर दूसरे मुख्य प्रधान भी करे, फिर फौजके अफसर है वे भी ऐसा करे। इस तरहसे सव अपने धर्मका पालन करे तो कोई दु.खी नही रहेगा। ऐसा जो जवाहरने किया, उसे देखा तो मै उनको और आपको धन्यवाद देता हूं कि हमारे यहा एक रत्न है। पीछे कहते है कि दूसरे धनिक लोग जैसे विड़ला या दूसरे है, उनको भी यही करना है। जव प्रधान ऐसा करता है तो और भी क्यो न ऐसा करे ? वडी तेजीसे दु.खी लोगोके दु खको दूर करनेकी कोशिश हो रही है। इससे हम सीखें कि हम मुसलमानोसे दुश्मनी नही करेगे।

एक खत आया है। मेरा फाका चलता था तव १५ जनवरीको आया था। लोगोमे वदमाश भी पडे है। उन्होने सोचा कि व्यापार करो। उन्होने वडे-वडे नोट निकाल दिए और गरीबोको बेचने लगे। सस्ते मिलते है, इसलिए गरीव वेचारे ले लेते है। लेकिन इन नोटोकी तो कोई कीमत नही, आखिर मामूली कागजके ही होते है। ऐसे नोट निकालने-वालोसे मै हाथ जोडकर कहूगा कि ऐसा मत करो। क्या सच्चा मार्ग नही मिलता है, जिससे अपना काम चला सके ? मै गरीवोको भी, जो भोले है, कहूगा कि कहातक ऐसे भोले रहोगे ! करोडो भोले रहेगे तो काम नही चलेगा।

मुझको एक तार लाहौरसे आया है। वे भाई काश्मीर स्वातन्त्र्य लीग-के अध्यक्ष है। वे लिखते है कि आप जो कर रहे है वह वहुत बुलद काम है, लेकिन उसमे कामयावी नही मिल सकती, जबतक काश्मीरका जो मसला है उसका फैसला नही हो जाता। इसके लिए तुमको ऐसा करना चाहिए कि भारत-सरकारने वहां जो फौज भेजी है उसको हटाले, क्योकि उस फौजने काश्मीरमे हमला किया है। और काश्मीर जिसका है उसको दे दो तव फैसला होगा। इससे मुझको दु ख होता है। क्या काश्मीरका फैसला नही होता है तो आज ऐसा ही रहेगा—क्या मुसलमान हिंदू-सिखके, दुश्मन रहेगे और हिंदू-सिख मुसलमानके दुश्मन रहेगे, सिर्फ काश्मीर-

के लिए ? पीछे लिखा क्या है उसे समझना चाहिए। मै तो ऐसा नही मानता हू कि हमारी हकूमतने जो फौज भेजी है वह हमला करनेके लिए है। काश्मीरकी सकटकालीन सरकारके प्रधान शेख अब्दुल्लाने लिखा और महाराजाने लिखा कि हमको इमदाद[1] भेजो, नही तो काश्मीर गया—वह तो उनकी निगाहसे है, लिखनेवालेकी निगाहसे नही सही। तो मै उस भाईको और ऐसे जितने है उन सबको कहूगा कि वे ऐसा न करें। हा, यह ठीक है कि जिसका है उसको दे दो। तो जितने बाहरसे आए है—अफरीदी हो या कोई भी हो—हट जाय। पुछके लोग बागी बने है तो मुझको शिकायत नही है, वे रहे तो भी बागी बनकर समूचे काश्मीरको ले लें, यह अच्छा नही है। वहासे बाहरके सब लोग निकल जाय, बाहरसे कोई गोलमाल न करें, शिकायत न करे और बाहरसे भीतरवालोको मदद न करे तो मै समझ सकता हू; लेकिन कहे कि हम रहेगे और उनको निकाल दो तो बात बनती नही है। पीछे यह कहना कि काश्मीर जिसका है उसको दे दो, तो किसका है ? मै कहूगा कि अभी तो काश्मीर महाराजाका है, क्योकि महाराजा तो वहा है। आज हमारी निगाहमे, हकूमतकी निगाहमे, महाराजाको निकाल नही सकते। हा, ऐसा समझे कि महाराजा बदमाश है, रैयतके लिए कुछ करता नही है तो मेरा खयाल है कि हकूमतका हक है कि उसे निकाल दे, लेकिन अभी ऐसी बात तो है नही। वहा जो मुसलमान है वे कहे कि हमे महाराजा नही चाहिए, हम सीधा-सीधा पाकिस्तान या हिंदुस्तानमें जाना चाहते हैं तो इसमे कोई शिकायत नही हो सकती। मैं तो फाका करके उठा हूं। मै किसीका दुश्मन नही हू तो मुसलमानका दुश्मन कैसे हो सकता हू ! मेरे पास आए और समझाए कि मेरी क्या गलती है। समझा सको तो मै मान जाऊगा।

पीछे एक भाई ग्वालियरसे लिखते है—तार रतलामसे आया है, मुसलमान भाईका है। सही क्या है, मै नही जानता हू। तो वे लिखते हैं कि हमारे वहा ग्वालियर रियासतमे कोई देहात है—हम वहा मजबूर हो गए तब हिंदुओने हमें ले तो लिया, लेकिन मारना शुरू कर दिया–एक-दो

---

[1] मदद।

मारे गए, अनाज वगैरा लूट लिया। मकानोको जला दिया। पंद्रह-सोलह जनवरीको लिखा। उन दिनो मेरा फाका चलता था। फाकासे उसको क्या मतलब हो सकता है? अगर यह सही है तो मै ग्वालियरके हिंदुओंसे कहूगा कि दिल्लीमे जो बन गया है उसको आप लोग विगाडनेवाले है। वे कहते है कि जो हकूमत चलानेवाले है वे भी इमदाद नही देते है। ऐसा कैसे हो सकता है? हिंदुस्तानके एक कोनेमे भी ऐसा हो तो मै कहूगा कि हकूमतको शर्मिदा होना है और हमको भी शर्मिदा होना है। मेरी उम्मीद है कि ऐसा हुआ हो तो आखिरमे उसको ठीक कर दिया जायगा।

मैने सुना है, अखबारोमे पढ़ा है कि काठियावाड़के जितने राजा है—काफी हैं, दो सौसे ज्यादा है—उन सबने मिलकर इकरार कर लिया है कि हम सब एक रियासत बनाएगे और असेम्बली बना लेगे, प्रजाका भी काम करेगे और अपना भी काम करेगे। अगर अखबारोमे जो बात आई है वह सही है तो बडी चीज है। इसके लिए काठियावाडके सब राजाओको और वहाके लोगोंको मै धन्यवाद देता हू। भावनगरमे सब सत्ता प्रजाके हाथ सौप दी और राजा प्रजाका सेवक बन गया। इस बड़े कामके लिए मै उनको धन्यवाद देना चाहता हू।

: २१५ :

२१ जनवरी १९४८

भाइयो और बहनो,

पहले तो मै माफी मांग लू कि मै १० मिनिट देरसे आया हूं। बीमार हू, इसलिए समयपर नही आ सका।

कलके बम फूटनेकी बात कर लू। लोग मेरी तारीफ करते है और तार भी भेजते है। पर मैने कोई बहादुरी नही दिखाई। मैने तो यही समझा था कि फौजवाले कही प्रैक्टिस[1] करते है। बादमे सुना कि

---

[1] अभ्यास।

वम था। मुझसे कहा गया कि आप मरनेवाले थे, पर ईश्वरकी कृपासे बच गए। अगर सामने वम फटे और मैं न डरू, तो आप देखेंगे और कहेंगे कि वह वमसे मर गया, तो भी हँसता ही रहा। आज तो मैं तारीफके काबिल नही हू। जिस भाईने यह काम किया, उससे आपको या किसीको नफरत नही करनी चाहिए। उसने तो यह मान लिया कि मैं हिंदू-धर्मका दुश्मन हू। क्या गीताके चौथे अध्यायमे यह नही कहा गया है कि जहा कही दुष्ट धर्मको नुकसान पहुचाते है, वहां उन्हे मारनेके लिए भगवान किसीको भेज देता है। उसने वहादुरीसे जवाब दिया। हम सब ईश्वरसे प्रार्थना करे कि वह उसे सन्मति दे। जिसे हम दुष्ट मानते है और वह दुष्ट है, तो उसकी खवर ईश्वर लेगा।

वह नौजवान शायद किसी मस्जिदमे वैठ गया था। जगह नही थी, तो वह हकूमतको दोषी ठहरावे, पर पुलिसका या किसीका कहना न माने, यह तो ठीक नही।

इस तरह हिंदू-धर्म नही वच सकता। मैंने बचपनसे हिंदू-धर्मको पढा और सीखा है। मै छोटा-सा था और डरता था, तो मेरी दाई कहती थी कि डरता क्यों है, राम-नाम ले। फिर मुझे ईसाई, मुसलमान, पारसी सब मिले, मगर मै जैसा छोटी उमरमे था, वैसा ही आज भी हू। अगर मुझे हिंदू-धर्मका रक्षक बनना है तो ईश्वर मुझे बचावेगा।

कुछ सिखोंने आकर मुझसे कहा कि हम नही मानते कि इस काममें कोई सिख शामिल था। सिख होता तो भी क्या? हिंदू या मुसलमान होता, तो भी क्या? ईश्वर उसका भला करे। मैंने इसपेक्टर जनरलसे कहा है कि उस आदमीको सताया न जाय। उसका मन जीतनेकी कोशिश की जाय। उसे छोड़नेको मै नही कह सकता। अगर वह इस वातको समझ ले कि उसने हिंदू-धर्म, हिंदुस्तान, मुसलमानों और सारे जगतके सामने अपराध किया है तो उसपर गुस्सा न करे, रहम करे। अगर सवके मनमें यही है कि बूढेका फाका निकम्मा था, पर इसे मरने कैसे दें, कौन उसका इलजाम ले, तो आप गुनहगार है न कि वम फेकनेवाला नौजवान। अगर ऐसा नही है, तो उस आदमीका दिल अपने आप वदलेगा ही; क्योकि इस जगतमें पाप कभी अपने आप रह नही सकता। वह किसीके सहारे ही टिक

सकता है। सिर्फ भगवान और भगवानके भक्त ही अपने सहारे रह सकते हैं। इसीमेसे हमारा असहयोग निकला। अहिंसात्मक असहयोग यहा भी ठीक है।

आप भी भगवानका नाम लेते हैं। हमला हो, कोई पुलिस भी मददपर न आवे, गोलियां भी चले और तव भी मैं स्थिर रहू और राम-नाम लेता और आपसे लिवाता रहू, ऐसी शक्ति ईश्वर मुझे दे, तव मैं धन्यवाद-के लायक हूं।

कल एक अनपढ़ वहनने इतनी हिम्मत दिखाई कि वम फेकनेवालेको पकडवा दिया। यह मुझे अच्छा लगा। मैं मानता हू कि कोई मिस्कीन हो, अनपढ हो, या पढ़ा-लिखा हो, मन है तो सव कुछ है। मन चगा तो भीतरमे गगा। मुझपर तो सवने प्रेम ही वरसाया है।

वहावलपुरवालोंने लिखा है कि हमे जल्दी निकालो, नही तो सव मरनेवाले हैं। मैं कहता हू कि वे घवराए नही। वहाके नवाव साहवने आज भी मुझे तार दिया है कि वे सव कोशिश करेंगे। मैं उस चीजको भूल नही गया हू।

वंवईके सिंधी सिख भाइयोंकी तरफसे एक तार आया है। वे कहते हैं कि सिंधमे १५००० सिख हैं। कुछको तो मार डाला है। ये १५००० इधर-उधर पड़े हैं। उनकी जान और उनका ईमान खतरेमे है। उन्हे वहासे निकालनेकी तजवीज कीजिए—हवाई जहाजसे ही कोशिश कीजिए। मैं यहा जो कहता हूं, वह वात उन तक जल्दीसे पहुचेगी। तार देरसे पहुचते हैं। मुझसे यह वरदाश्त नही होगा कि १५००० सिख काटे जायं, या उनके ईमान-इज्जतपर हमला हो। तो मैं एक इन्सान जो कर सकता है वह करूगा। दूसरे, पडितजी तो सवका ध्यान रखते ही है। सिंध और पाकिस्तानकी हकूमतको मैं कहूगा कि वे सिखोको इतमीनान दिला दे कि जवतक वे वहा हैं, उनको किसी तरहका खतरा नही। अगर वे यह नही कर सकते, तो सवको एक जगह रखे या हिफाजतके साथ भेज दे। सिख वहादुर हैं। उनके ईमानपर हमला कौन करनेवाला है। तो सिख भाई इतमीनान रखे। मैंने कुछ पारसी भाई वहा देखनेको भेजे है।

एक भाई लिखते हैं कि जव आप १९४२ मे जेलमे थे तव हमने हिंसाका भी काम कर लिया था। उपवासमे अगर केही आपका अत हो

गया तो देशमे ऐसी हिंसा फूटेगी कि आपका ईश्वर भी रो उठेगा। इसलिए आपका उपवास हिंसक होगा। आप उपवास छोड़ दीजिए। यह बात प्रेमसे लिखी है और अज्ञानसे भी। यह सही है कि मेरे जेल जानेके बाद हिंसा हुई। उसीका यह नतीजा है। उस वक्त सारा हिंद अहिंसक रहता तो उसका आजका हाल कभी न होता। मेरे मरनेसे सब आपस-आपसमे लड़ेगे, इस बारेमे भी मैने सोच लिया है। ईश्वरको बचाना होगा तो बचा-वेगा। अहिंसासे भरा आदमी मरता है तो उसका नतीजा अच्छा ही होगा। पर कृष्ण भगवानके मरनेके बाद यादव ज्यादा भले या पवित्र नही हुए। सब कट-कटकर मर गए। तो मै उसपर रोनेवाला नही। भगवानने इरादा कर लिया है कि इन्हे मरने दो, तो ऐसा होगा। लेकिन मै दीन, मिस्कीन आदमी हू। मेरे मरनेसे क्या लड़ना मारना? पर भगवान मिस्कीनको भी निमित्त बनाकर न मालूम क्या-क्या कर सकता है? कहते है, अब यहाके हिंदू-मुसलमान नही लड़ेगे। मुसलमान औरते भी दिल्लीमे घरसे बाहर आने लगी है। मुझे खुशी है। मै सबसे कहता हू कि अपने-अपने दिलको भगवानका मदिर बना लो।

: २१६ :

२२ जनवरी १९४८

भाइयो और बहनो,

आप देखते है कि आहिस्ता-आहिस्ता ईश्वरकी तरफसे मुझमे ताकत आ रही है। उम्मीद है कि जल्दी पहले-जैसा हो जाऊगा। पर यह ईश्वरके हाथोमे है।

एक भाई लिखते है कि जवाहरलालजी, दूसरे वजीर और फौजी अफसर वगैरा सब अपने-अपने घरोमेसे कुछ जगह शरणार्थियोके लिए निकाले तो भी उनमे कितने लोग बस सकेगे? कहनेवाले ज्यादा है, करनेवाले कम।

ठीक है, कुछ हजार ही उनमे रह सकेगे। काम इतना बड़ा नही,

पर करनेवाले एक मिसाल कायम करेंगे। इगलैंडके राजा कुछ भी त्याग करे, एक प्याली शराव भी छोड़े, तो भी उनकी कद्र होती है। सव सभ्य देशोमे ऐसा होता है। सब दुःखी लोगोपर अच्छा असर होता है। अगर दूसरे लोग भी उनकी तरह करेगे, तो उनके लिए मकान वगैरा वनानेवालोंको तसल्ली मिलेगी। अगर नतीजा यह होगा कि दूसरी जगहसे भी लोग दिल्ली आने लगें, तो काम विगड़ेगा। लोगोंने समझा कि दिल्लीमे हमारी पूछ-ताछ ज्यादा होगी।

दूसरी कठिनाई यह है—लोग कहते है कि पहले काग्रेसको एक लाख रुपये जमा करनेमे भी मुसीवत होती थी। लोग देते तो थे, पर हम भिखारी थे। आज करोड़ो रुपये हमारे हाथमे आ गए है। करोडो लेनेकी ताकत भले आई, पर खर्च तो वही अग्रेजी जमानेवाला है। जितना रुपया उडाना है, उडावे। शानसे न रहें, तव उसका असर देशसे वाहर भी पड़ेगा। उन्हें समझना चाहिए कि पैसा शौकके लिए खर्चना चाहिए या देशके कामके लिए? यदि यह बात ठीक है कि हम इगलैडके साथ मुकाबला करें तो कर सकते है, पर वहा एक आदमीकी जो आमदनी है, उससे यहा वहुत कम है। ऐसा गरीब मुल्क दूसरे मुल्कोके साथ पैसेका मुकावला करे तो वह मर जावेगा। दूसरे देशोमे हमारे प्रतिनिधि भी यह बात समझे। अमेरिकाका मुकाबला रहने दो। खानेमे, पीनेमे और पार्टियां देनेमें वे जो दावा करते थे कि हमारी हकूमत आवेगी तो हमारा भी रग-ढग बदल जायगा वह उन्हें झुठला देना चाहिए। हमारे त्यागी काग्रेसवाले भी ऐसी गलती करें तो यह सोचनेकी बात है।

फिर लोग कहते है कि ये लोग इतने पैसे लेते है, तब हम हकूमतकी नौकरी करे, तो हमे भी ज्यादा पैसे मिलने चाहिए। सरदार पटेलको अगर १५०० रुपए मिले, तो हमे ५०० तो मिलने ही चाहिएं। यह हिंदुस्तानमे रहनेका तरीका नही है। जब हरएक आत्म-शुद्धिका प्रयत्न करता हो, तव यह सब सोचना कैसा? पैसेसे किसीकी कीमत नही होती।

ग्वालियर रियासतके एक गांवमे मुसलमानोपर जो गुजरी है उसे वतानेवाले तारकी बात मैने की थी। उस बारेमें मुझे वहांके एक कार्यकर्ताने सुनाया कि आपको मै एक खुशखबरी देने आया हू। ग्वालियरके

महाराजाने सब सत्ता प्रजाको दे दी है। थोडी जो रखी है उसमे भी हमारा बहुमत होगा। उन्होने मुझसे कहा कि लोगोंको जो सत्ता मिलनी चाहिए वह मिली, यह सुनकर आप खुश होगे। हां, मगर प्रजा-मडलवालोमे भेद-भाव आ जाय और वे मुसलमानोको निकाले, तो मुझे क्या खुशी ? अगर आप कहें कि भेदभाव नही होगा, क्या हिंदू, क्या मुसलमान, क्या पारसी, क्या ईसाई, किसीके साथ वैर नही करेगे, तब तो वह मेरा ही काम हुआ। उसमे मेरा धन्यवाद और आशीर्वाद मिलेगा ही। महाराजाको लोगोका सेवक बनना है। इस आत्म-शुद्धिके यज्ञमें राजा-प्रजा सबको अच्छी तरह भाग लेना है। तब तो हम सारी दुनियाके सामने खडे रह सकते हैं। अगर हमे दुनियाकी चालको ठीक रखना है और उसके रक्षक बनना है तो इसके सिवा दूसरा कोई रास्ता नही है।

: २१७ :

२३ जनवरी १९४८

भाइयो और बहनो,

आज मेरे पास काफी चीजे पड़ी है। जितना हो सकेगा उतना कहूंगा।

आज सुभाषबाबूकी जन्म-तिथि है। मैंने कह दिया है कि मै तो किसीकी जन्म-तिथि या मृत्यु-तिथि याद नही रखता। वह आदत मेरी नही है। सुभाष बाबूकी तिथिकी मुझे याद दिलाई गई। उससे मैं राजी हुआ। उसका भी एक खास कारण है। वे हिंसाके पुजारी थे। मै अहिंसाका पुजारी हू। पर इसमे क्या ? मेरे पास गुणकी ही कीमत है। तुलसीदासजीने कहा है न :

"जड-चेतन गुन-दोंपमय विश्व कीन्ह करतार।
सत-हस गुन गहहि पय परिहरि वारि विकार।।

हंस जैसे पानीको छोड़कर दूध ले लेता है, वैसे ही हमे भी करना चाहिए। मनुष्यमात्रमे गुण और दोष दोनो भरे पड़े है। हमे गुणोको ग्रहण

करना चाहिए। दोषोंको भूल जाना चाहिए। सुभाषबाबू बड़े देश-प्रेमी थे। उन्होने देशके लिए अपनी जानकी बाजी लगा दी थी और वह करके भी बता दिया। वह सेनापति बने। उनकी फौजमे हिंदू, मुसलमान, पारसी, सिख सब थे। सब बगाली ही थे, ऐसा भी नही था। उनमे न प्रातीयता थी, न रगभेद, न जातिभेद। वे सेनापति थे, इसलिए उन्हे ज्यादा सहूलियत लेनी या देनी चाहिए, ऐसा भी नही था।

एक बार एक सज्जन, जो बड़े वकील थे, उन्होंने मुझसे पूछा कि हिंदू-धर्मकी व्याख्या क्या है ? मैंने कहा, मैं हिंदू-धर्मकी व्याख्या नही जानता। मैं आप-जैसा वकील कहा हू ? मेरे हिंदू-धर्मकी व्याख्या मैं दे सकता हू। वह यह है कि जो सब धर्मोको समान माने वही हिंदू-धर्म है। सुभाषबाबूने सबका मन हरण करके अपना काम किया। इस चीजको हम याद रखें।

दूसरी चीज---ग्वालियरसे खबर आई है कि रतलामसे जो आपको एक गावके झगड़ेके बारेमे खबर मिली थी, वह सर्वथा ठीक नही है। वहा कुछ दगा हुआ तो सही; लेकिन आपस-आपसमे उसमे हिंदू-मुसलमानकी कोई बात न थी। मुझे इससे बड़ी खुशी होती है। उसपरसे मै मुसलमान भाइयोको जाग्रत करना चाहता हू। मै तो, जो चीज मेरे सामने आती है, उसे जनताके सामने रख देता हू। अगर ऐसी बनी-बनाई बात कहते रहेंगे, तो सबके दिलमे गलतफहमी हो जायगी। कोई भी चीज बढाकर न बतावें। अपनी गलती बढाकर बता दे, दूसरोंकी कम करके। तब यह माना जायगा कि हम आत्मशुद्धिके नियमका पालन करते है।

मैसूरसे तार आया है कि आपने जो व्रत लिया उसका मैसूरकी जनतापर असर नही पड़ा। वहा झगडा हो गया है। मै मैसूरके हिंदू-मुसलमानोको जानता हू। जिनके हाथमे हकूमत है उनको भी जानता हूं। मैंने मैसूर सरकारको लिखा है कि वे, जो कुछ हुआ है, उसे साफ-साफ दुनियाको बता दे।

जूनागढसे मुसलमान भाइयोका तार आया है। वे लिखते है कि जबसे कमिश्नर और सरदारने हकूमत ले ली है, तबसे यहा हमे न्याय ही मिल रहा है। अब कोई भी हममे फूट नही डाल सकेगा। यह मुझे बड़ा अच्छा लगता है।

मेरठसे एक तार आया है। उसमे लिखा है कि आपके उपवासका नतीजा ठीक आ रहा है। यहांपर जो नेशनलिस्ट[1] मुसलमान है, उनसे हमें कोई नफरत नही है। पर लीगी मुसलमान सीधे हो गए है या हो जाएगे, ऐसा मानोगे तो आपको पछताना पडेगा। आपकी अहिंसा अच्छी है, मगर राजनीतिमे नही चल सकती। फिर भी हम आपको कहना चाहते है कि आजकी जो हकूमत है वह अच्छी है, इसमें किसी तरहकी तबदीली नही होनी चाहिए।

मै तो नही समझता कि तबदीलीका सवाल उठता कहां है। मगर तबदीलीकी गुंजाइश हो तो जिनके हाथमे हकूमत है, उन्हें निकालना आपके हाथोमे है। मै तो इतना जानता हूं कि उनके बिना आज आप काम नही चला सकेगे।

आज यह कहना कि राजनीतिमे अहिंसा चल नही सकती, निकम्मी बात है। आज जो काम हम कर रहे है, वह हिंसाका है। मगर वह चल नही सकता। मेरठके मुसलमानोने आजादीकी लड़ाईमे काफी हिस्सा लिया है। आजकलकी राजनीति अविश्वाससे चल ही नही सकती। इसलिए हमें मुसलमानोंपर विश्वास रखना ही होगा। यदि हमने तय कर लिया है कि भाई भाई बनकर रहना है, तो फिर हम किसी मुसलमानपर खामखाह अविश्वास न करेगे, फिर भले वह लीगी हो। मुसलमान कहे कि हिंदू-सिख बदमाश है, तो यह निकम्मी बात है। ऐसे ही हरएक लीगीके लिए यह मान लेना भी बुरा है। अगर कोई लीगी या दूसरा कोई भी बुरी बात करता है, तो आप उसकी खबर सरकारको दे। हमारा परम धर्म मैंने सबको बता दिया है कि न्याय हकूमतके हाथोमे रहने दे, अपने हाथमे न ले लें। वह वहशियाना काम होगा। मेरे पास बहुतसे तार आ रहे है। सबका जवाब नही दे सकता, इसलिए सभाके मारफत मै आप सबका अहसान मानता हूं। आपकी दुआ सफल हो।

---

[1] राष्ट्रीय।

: २१८ :

२४ जनवरी १९४८

भाइयो और वहनो,

मैंने आपसे प्रार्थना की है कि सव लोगोको प्रार्थना-सभामे शात रहना चाहिए। आज तो मैंने प्रार्थनाके आरभमे भी कहा था कि सव शात हो जाए। तव तो आप शात हो गए, लेकिन वादमे जव प्रार्थना चलती थी तव कुछ वहने आपसमे वाते भी करती थी और वच्चे चीखते रहते थे। वह कोई अच्छा नही लगता था। मै वार-वार यही कहता हूं कि सवको जव वच्चे चीखते हो या रोते हों, तो उनको वाहर ले जाना चाहिए। उन्हे भीतर लेकर वैठनेकी हिम्मत नही होनी चाहिए, अगर वे सभ्यता सीखना चाहती है तो।

आज एक तार मेरे पास है। इसकी वात तो मै कल ही करना चाहता था, लेकिन नही कर सका। वहुत लवा तार है; लेकिन उसमे इतना लिखा है कि दोनो हकूमतोमे यह समझौता तो हो गया है कि जो कैदी एक हकूमतमे हो गए थे, उनको दूसरी हकूमतमे भेज देना। जैसा कि अगर पश्चिमी पजावमे या कहो पाकिस्तानके पजावमे, जो आदमी कैदमे है, वे तो हिंदू और सिख ही हो सकते है, कोई अन्य और तरहसे हो, वह दूसरी वात है। इसी तरहसे जो पूर्वी पजावमे है, वे मुसलमान कैदी है। उनमे वे लडकियां भी है जिन्हे लोग भगा ले गए थे। तारमे वे कहते है कि ऐसा समझौता हो तो गया, लेकिन थोड़े अर्सेतक चला। अभी वह टूट गया है और कहा यह जाता है कि जो टूटा उसका कारण यह है कि पश्चिमी पजावकी जो हकूमत है उसने कैदियोको रख लिया और कहा कि यह तभी हो सकता है जव कि पूर्वी पजावमे जितनी रियासते है, या राजा है और जहातक उनका कार-वार चलता है, वहा भी जो कैदी है, वे वापिस आने चाहिए और वहा जो लडकिया है उनको भी वापिस करना चाहिए।

मुझे तो इसमे कोई दिक्कत नही हो सकती है। ऐसे ही पश्चिमी पजावकी जो रियासते है, वहासे होना चाहिए। वहा कम रियासते है और यहां ज्यादा है, उससे क्या हुआ? कही भी हो, इस वारेमे समझौता हो

जाना चाहिए। इसमे दिक्कत आती है, यह तो सही है। पूर्वी पंजाबसे जब यह समझौता कर लिया था तब तो यह नही था, ऐसा मैं अखबारोसे समझता हूं। नही था, तो भी क्या ? जितनी लड़कियां उठा ले गए है, इधर या उधर, वे सब वापिस होनी चाहिएं। मेरी निगाहमे तो यह नहीं होता कि पश्चिमी पंजाबसे दस लड़की आती हैं तो पूर्वी पजाबसे भी दस ही जानी चाहिएं, ग्यारहवी नही जा सकती। जितनी लड़कियां पूर्वी पंजाबमें पड़ी हैं, औरतें हैं, पुरुष है या दूसरे कैदी है, उन सबको वापस कर देना चाहिए और यह सब बिना शर्त होना चाहिए। लेकिन आज ऐसा नही होता है, क्योकि वैमनस्य भरा हुआ है। वे ऐसा करनेमे कठिनाई महसूस करते हैं। लेकिन यह तो होना ही चाहिए कि पूर्वी पजाबसे तो सबको वापस कर दे। उसमें क्या होगा ? माना कि कुछ ज्यादा तादादमे पश्चिमी पंजाबमें और थोड़ी तादादमे पूर्वी पजाबमे है। मैंने कहा है कि मुझको तो इसकी परवा नही है। सब गलती ही हैं, एकको ले गए वह गलती है और सौको ले गए वह भी गलती है। ज्यादा नही ले सके, उसका कोई दूसरा सबब नही है। दिलमें तो ऐसा नही था कि एक ही लडकीको ले जाएं या इतने पुरुष ही कैद रखें। जब सब बिगड़ा तो उसमे पीछे मुकाबला क्या करना था! जो चलता रास्ता है उसमे तो रुकावट नही होनी चाहिए। मैं तो कहता हूं कि दूसरी चीजे भी करे, समझौता करके। अगर दोनो हकूमत दोस्ताना तरीकेसे करें और यह समझे कि लड़ाई हम आपस-आपसमे नहीं करना चाहते है, तो फिर रास्ता सीधा और साफ हो जाता है। इसीलिए मैं दोनो हकूमतोसे बड़े अदबसे कहूंगा कि जो कुछ भी हो गया है उसे भूलकर अब भी दुरुस्त हो जाएं। दिलको दुरुस्त करना है और अगर दिल दुरुस्त हो गया तो ठीक है और नही हुआ तो फिर हमे तो अपने धर्मका पालन करना ही है, लेकिन झगड़ेका सबब तो रह ही जाता है, फिर चाहे मुझको आप तार भेजते रहे कि हमारे झगड़ोका कारण कोई रहता ही नही। ये सारी चीजें आत्मशुद्धिमे आ जाती है। आत्मशुद्धिके माने यही हैं कि हम अपने दिलोको साफ करे।

लेकिन मेरे पास इल्जाम तो यह आ रहा है कि पश्चिमी पंजाबमें जो औरतोको उठा ले गए है उनको वे उतनी तादादमें वापस नहीं करते।

ऐसी शिकायत पूर्वी पजावके वारेमे भी करते है। मैने तहकीकात तो नही की है कि कौन झूठा है और कौन नही। मै तो जानता नही हूं, लेकिन पश्चिमी पजावके वारेमें अगर यह शिकायत सही है तो शर्मकी वात है, पूर्वी पजावके वारेमे भी ऐसा ही है। लेकिन पश्चिमी पजावके वारेमे तो यह शिकायत भी है कि वे कहते है एक चीज, और करते है दूसरी। मै इस वारेमे इतना ही कह सकता हू कि यह सव दुरुस्त होना चाहिए। नही होता है तो वड़े शर्मकी वात है। और पीछे मै तो यही कहू कि मैने जो फाका किया उसके अक्षरोंपर तो दिल्लीमे अमल हो भी गया, लेकिन उसमे जो भेद या रहस्य है, उसका पालन नही हुआ।

: २१६ :

२५ जनवरी १९४८

भाइयो और वहनो,

अभी हमारेमे दिलका समझौता हो गया है, ऐसा लोग कहते है। मै मुसलमानोसे पूछता हू और हिंदुओसे भी। सव यही कहते है कि हम सव समझ गए है कि अगर आपस-आपसमे लड़ते रहेगे तो काम हो नही सकेगा। इसलिए आप अव वेफिक्र रहे। मै यह पूछना तो नही चाहता हूं कि इस सभामे कितने मुसलमान है। मगर मै सवको भाई-भाई वननेको कहूगा। किसी भी मुसलमानको अपना दोस्त वना ले, या यह मानो कि जो मुसलमान हमारे सामने आता है वह हमारा दोस्त है और उससे कहो कि चलो, वहा आरामसे वैठो। यहां किसीसे नफरत तो है ही नही। दो दिनसे तो यहां काफी आदमी आ रहे है। अगर सव अपने साथ एक-एक मुसलमान लाते है तो वहुत वड़ा काम हो जाता है। इससे हम यही वता सकते है हम भाई-भाई है।

महरौलीमे जो दरगाह है, वहा कलसे मुसलमानोंका उर्सका मेला शुरू होगा। वैसे तो वह हर वर्ष होता है, लेकिन इस वर्ष तो हमने उसको ढहा दिया था या विगाड़ दिया था। जो पत्थरकी चित्रकारीका काम

था वह भी ढहा दिया था। अब कुछ ठीक कर लिया है, इसलिए उर्स जैसा पहले मनता था ऐसा ही अब मनेगा। वहां कितने मुसलमान आते हैं इसका मुझको कुछ पता नही है। लेकिन इतना तो मुझे मालूम है कि वहां दरगाहमे मुसलमान भी काफी जाते थे और हिंदू भी। मेरी तो उम्मीद है सब हिंदू इस बार भी शांतिसे और पक्की भावनासे जाएं तो बड़ा अच्छा है। मुझको पता तो लग जायगा कि कितने हिंदू गए थे और कितने नहीं। लेकिन वे जो मुसलमान वहा जाते हैं उनका मजाक न करें और किसी तरहकी निंदा न करें। पुलिसके लोग वहा होगे तो सही, लेकिन कम-से-कम रहने चाहिए। आप सब पुलिस बन जाएं और सब काम ऐसी खूबीसे हो कि वह चीज सारी दुनियामें चली जाए। इतना तो हो गया कि आप बडे मशहूर हो गए हैं। अखबारोमे भी आता है और मेरे पास तो तार और खत दुनियाके हर हिस्सेसे आ रहे हैं। चीनसे तथा एशियाके सब हिस्सोसे आ रहे है और अमरीका तथा यूरोपसे भी। दुनियाका कोई भी देश बाकी नही बचा है और सब यही कहते है कि यह तो बहुत बुलद काम हो गया है। हम तो ऐसा मानते थे कि अंग्रेज तो वहांसे आ गए, अब वे तो जाहिल आदमी है और जानते नही हैं कि अपना राज कैसे चलाना चाहिए और आपस-आपसमे लड़ते-भिड़ते थे। १५ अगस्तको यह सारी चीज तो हो गई और हम तारीफ भी कर रहे थे कि हम तलवारके जोरसे नही लड़े। हमने शांतिसे लड़ाई की या ठडी ताकत की लड़ाई की, और उसका नतीजा यह हुआ कि हमारी गोदमे आकर आजादी देवीने रमण करना शुरू कर दिया। ऐसी घटना १५ अगस्तको हो गई।

मैं २ फरवरीको वर्धा चला जाऊंगा। राजेंद्र बाबू भी मेरे साथ जाएंगे; लेकिन मै वहासे जल्दी ही लौटनेकी कोशिश करूंगा। अखबारोंमें प्रकाशित यह समाचार गलत है कि मै वहां एक महीनेतक ठहरूंगा। लेकिन मै वर्धा तभी जा सकता हू जब आप लोग आशीर्वाद देगे और यह कहेंगे कि अब आप आरामसे जा सकते हैं, हम यहां आपसमे लड़नेवाले नही हैं।

उसके बादमे मै पाकिस्तान भी जाऊंगा, लेकिन उसके लिए पाकिस्तान सरकारको कहना है कि तू आ सकता है और अपना काम कर सकता है।

अगर पाकिस्तानकी एक भी सूबेकी हकूमत बुलाएगी तो भी मैं वहां चला जाऊंगा।

जब-जब कांग्रेसकार्य-समितिकी बैठक मेरी उपस्थितिमें होती है, तब-तब मैं आपको उसके बारेमें कुछ-न-कुछ बता देता हूं। आज कार्य-समितिकी दूसरी बैठक हुई और उसमें काफी बातें हुईं। सब बातोंमें तो आपकी दिलचस्पी भी नहीं होगी, लेकिन एक बात तो आपके बताने लायक है। कांग्रेसने २० सालसे यह तय कर लिया था कि देशमें जितनी बड़ी-बड़ी भाषाएं हैं उतने प्रांत होने चाहिएं। कांग्रेसने यह भी कहा था कि हकूमत हमारे हाथमें आते ही ऐसे प्रांत बनाए जायंगे। वैसे तो आज भी ९ या १० प्रांत बने हुए हैं और वे एक मरकजके मातहत[1] हैं। इसी तरहसे अगर नए प्रान्त बने और सब दिल्लीके मातहत रहे तबतक कोई हर्जकी बात नहीं। लेकिन अगर वे सब अलग-अलग होकर आजाद हो जाएं और एक मरकजके मातहत न रहे तो फिर वह एक निकम्मी बात हो जाती है। अलग-अलग प्रांत बननेके बाद वे यह न समझ लें कि बंबईका महाराष्ट्रसे कोई संबंध नहीं, महाराष्ट्रका कर्नाटकसे और कर्नाटकका आंध्रसे कोई संबंध नहीं। तब तो हमारा काम बिगड़ जाता है। इसलिए सब आपसमें भाई-भाई समझें। इसके अलावा अगर भाषावार प्रांत बन जाते हैं तो प्रांतीय भाषाओंकी भी तरक्की होती है। वहांके लोगोंको हिंदुस्तानीमें तालीम देना तो वाहियात है और अंग्रेजीमें देना तो और भी वाहियात है।

: २२० :

२६ जनवरी १९४८

भाइयो और बहनो,

आज २६ जनवरी स्वतंत्रताका दिन है। जबतक हमारी आजादीकी लड़ाई जारी थी और आजादी हमारे हाथमें नहीं आई थी, तबतक इसका

---

[1] अधीन।

उत्सव मनाना जरूर मानी रखता था। किंतु अब आजादी हमारे हाथमे आ गई है और हमने इसका स्वाद चखा है तो हमे लगता है कि आजादीका हमारा स्वप्न एक भ्रम ही था जो कि अब गलत साबित हुआ है। कम-से-कम मुझे तो ऐसा लगा है ।

आज हम किस चीजका उत्सव मनाने बैठे है ? हमारा भ्रम गलत साबित हुआ, इसका नही। मगर अपनी इस आशाका उत्सव हमे मनानेका जरूर हक है कि काली-से-काली घटा अब टल गई है और हम उस रास्तेपर है कि जिसपर आते-जाते हुए तुच्छ-से-तुच्छ ग्रामवासीकी गुलामीका अत आएगा और वह हिंदुस्तानके शहरोका दास बनकर नही रहेगा; बल्कि देहातोके विचारमय उद्योगोके मालकी विज्ञप्ति और बिक्रीके लिए शहरके लोगोका उपयोग करेगा। वह यह सिद्ध करेगा कि वह सचमुच हिंदुस्तानकी भूमिका जायका[1] है।

इस रास्तेपर आगे जाते हुए अंतमे सब वर्ग और संप्रदाय एक समान होगे। यह हर्गिज न होगा कि बहुसख्या अल्पसख्यापर—चाहे वह कितनी ही कम या तुच्छ क्यो न हो—अपना प्रभुत्व जमाए या उसके प्रति ऊच-नीचका भाव रखे। हमे चाहिए कि इस आशाके फलीभूत होनेमे हम ज्यादा देरी न होने दे कि जिससे लोगोके दिल खट्टे हो जाए।

दिन-प्रतिदिनकी हडतालो और तरह-तरहकी बदअमनी जो देशमे चल रही है वह क्या इसी चीजकी निशानी नही कि आशाएं पूरी होनेमें बहुत देर लग रही है ? यह हमारी कमजोरी और रोगकी सूचक है। मजदूर-वर्गको अपनी शक्ति और गौरवको पहिचानना चाहिए। उनके मुकाबिलेमे वह शक्ति या गौरव पूजीपतियोमे कहां है, जो कि हमारे श्रामवर्गमे भरा है! सुव्यवस्थित समाजमे हड़तालोका बदअमनीके लिए अवसर या अवकाश ही नही होना चाहिए। ऐसे समाजमे न्याय हासिल करनेके लिए काफी कानूनी रास्ते होगे। खुली या छुपी जोराबरीके लिए स्थान ही न होगा। कानपुर या कोयलेकी खानोमे या और कही भी हड़ताले होनेसे सारे समाज और खुद हड़तालियोको आर्थिक नुक्सान उठाना-

---

[1] स्वाद—व्यंजन।

पड़ता है। मुझे यह याद दिलाना निकम्मा होगा कि यह लंबा लेक्चर मेरे मुहमे शोभा नही देता, जब कि मैने खुद इतनी सफल हडतालें करवाई है। अगर कोई ऐसे टीकाकार है तो उन्हे याद रखना चाहिए कि उस वक्त न तो आजादी थी और न इस किस्मके कानूनी जाव्ते थे जो कि आजकल है। कई वार तो मुझे ताज्जुव होता है कि क्या हम सचमुच ताकतकी सियासी शतरज और सत्तापर चुगल[1] मारनेकी वबा (बीमारी) से, जो कि पूर्व और पाश्चात्यके सव देशोमे फैल रही है, वच सकते है। इससे पहले कि मै इस विषयको यहा छोडू, मै यह आशा प्रकट किए विना नही रह सकता कि यद्यपि भौगोलिक व राजनैतिक दृष्टिसे हिंदुस्तान दो भागोमे बट गया, पर हमारे दिल जुदा नही हुए और हम हमेशाके दोस्त वनकर भाइयोंकी तरह एक दूसरेकी मदद करते रहेगे और एक दूसरेको इज्जतकी निगाहसे देखेंगे। जहातक दुनियाका ताल्लुक है हम एक ही रहेंगे।

कपड़ेपरसे अकुश उठानेके फैसलेका सव तरफसे स्वागत किया गया है। कपडेकी कमी कभी थी ही नही, और हो भी कैसे सकती है, जब कि देशमे इतनी रुई, और कातनेवाले और बुननेवाले मौजूद है। कोयले और जलानेकी लकड़ीपरसे अकुश उठनेपर भी इतना ही सतोष प्रकट किया गया है। यह वड़ी देखनेकी चीज है कि अव वाजारमे गुड़ जरूरतसे ज्यादा आकर जमा हो रहा है, और गुड ही गरीब आदमीकी खुराकमे गर्मी देनेवाली चीजके अशको पूरा कर सकता है। गुड़के इन जमा हुए ढेरोको घटाने या जहा गुड वनता है वहासे गुड पहुचानेकी कोई सूरत नही, अगर तेजीसे सामान ढोनेका वदोवस्त न हो। एक मित्र, जो इस विषयको खूब समझते है, एक पत्रमे लिखते है, वह ध्यान देने लायक है :

"यह कहनेकी जरूरत नही कि अकुश उठानेकी नीतिकी सफलताका ज्यादा आधार इस चीजपर ही है कि रेलगाड़ी या सडकसे सामानकी नकली हरकत[2] का ठीक-ठीक वदोवस्त किया जाए। अगर रेलसे माल इधर-उधर ले जानेके तत्रमे सुधार न हुआ तो देशभरमे कहत[3] फैलने और

---

[1] चुंगल (गुजराती) पंजा;	[2] हरकत (गुज०) अड़चन।
[3] अकाल।

अकुश उठानेकी सब योजना अस्त-व्यस्त हो जानेका डर है। आज जिस तरहसे माल ले जानेका हमारा तत्र चल रहा है उससे दोनो, अकुश चलाने और उठानेकी नीति, सख्त खतरेमे है । हिंदुस्तानके जुदा-जुदा हिस्सोमे भावोंमे इतना भयकर फर्क होनेकी वजह भी माल उठानेके साधनोकी यह कमी ही है। अगर गुड रोहतकमे आठ रुपए मन और बबईमे पचास रुपए मनके हिसाब विकता है तो यह साफ बताता है कि रेलवे तत्रमे कही सख्त गड़बड है। महीनोंतक मालगाडीके डिब्बोमेंसे सामान नही उतारा जाता, डिब्बों और कोयलेकी कमी और तरह-तरहके मालको तरजीह[1] देनेके वहाने, मालगाडीके डिब्बोपर माल लादनेमे सख्त वेईमानी और घूसका बाजार गर्म है। एक डिब्बेको किरायेपर हासिल करनेके लिए सैकडों रुपए खर्च करने पडते है और कई-कई दिनोतक स्टेशनोपर झक मारनी पड़ती है। डिब्बोंकी माग पूरी करने और डिब्बोको चलते रखनेमे ट्रासपोर्ट-के मत्रीकी भी अभीतक कुछ चली नही। अगर अकुश उठानेकी नीतिको सफल बनाना है तो ट्रासपोर्टके मत्रीको रेल और सडककी सारी ट्रासपोर्ट-व्यवस्थाकी फिरसे जाच-पडताल करनी होगी । तभी यह नीति जिन गरीव लोगोको राहत देनेके लिए चलाई जा रही है, उनको फायदा पहुचा सकेगी। आज इस ट्रासपोर्टके कसूरसे लाखो और करोडो देहातियोको सख्त तकलीफ उठानी पडती है और उनका माल मडीतक पहुचने ही नही पाता।"

जैसा मैं पहले लिख चुका हू, पेट्रोलका राशनिंग वद करना ही चाहिए और सडकसे सामान ढोनेके साधनोका इजारा[2] और परमिटका तरीका बिल्कुल वद होना चाहिए। इजारेमे थोड़ी ट्रासपोर्ट कपनियोंका ही लाभ होता है और करोड़ो गरीवोका जीवन दूभर हो रहा है। अकुश उठानेकी नीतिकी ९५ फी सदी सफलता उपरोक्त शर्तोपर ही निर्भर है। जो सूचनाए ऊपर दी गई है उनपर अमल हुआ तो परिणामस्वरूप देहातोसे लाखो टन खाद्य पदार्थ और दूसरा माल देशभरमे आने लगेगा। वेईमानी और घूसखोरीका विषय कोई नया नही है, केवल अब वह पहलेसे बहुत ज्यादा बढ गया है। वाहरका अकुश तो कुछ रहा ही नही है। इसलिए यह

[1] विशेषता; [2] (गुज०) ठेका।

घूसखोरी तबतक बंद न होगी जबतक जो लोग इसमे पड़े है वे समझ न ले कि वे देशके लिए है, न कि देश उनके लिए। इसके लिए जरूरत होगी एक ऊचे दर्जेके नैतिक शासनकी। उन लोगोकी तरफसे, जो खुद घूसखोरीके इस मर्जसे बचे हुए है और घूसखोर अमलदारोंपर जिनका प्रभाव है, ऐसे मामलोमे उदासीनता दिखाना गुनाह है। अगर हमारी संध्याकालकी प्रार्थनामे कुछ भी सचाई है तो घूसखोरीके इस दौरको खत्म करनेमे उससे काफी मदद मिलनी चाहिए।

: २२१ :

२७ जनवरी १९४८

(आज गाधीजीकी प्रार्थना-सभामे एक ही मुसलमान उपस्थित था। गाधीजीने कहा कि मै इतनेसे ही सतुष्ट नही हू। प्रार्थनामे आनेवाले सब हिंदू और सिख भाई-बहन अपने साथ एक-एक मुसलमान लाए।

इसके बाद गाधीजीने महरौलीकी दरगाह शरीफमे मुसलमानोंके उर्सके मेलेका जिक्र किया जिसे वे स्वय आज सवेरे देखने गए थे। उन्होने कहा .)

किसीको वहां आने-जानेमे झिझक नही थी। मैने जान-बूझकर मुसलमानोसे पूछा कि हमेशा जितने आते थे उतने तो नही आ सके होगे, तो उन्होने कहा कि कुछ डर तो रहा होगा ही। हमारेमे ऐसे लोग भी है न, कि जो डर-सा बता देते है। वे कहते है कि इलाहाबादमे भी कुछ हो गया है, वही यहा हुआ तो हिंदू क्या करेगे। इन्सान इन्सानसे डरे, यह तो हमारे लिए शर्मकी बात है। लेकिन कम-से-कम इतना तो मैने पाया कि जितनी तादाद मुसलमानोकी थी उतनी ही तादाद हिंदुओकी थी और सिख भी काफी थे। पीछे एक दु खद बात भी मैने देखी। वह दरगाह तो बादशाही जमानेकी है, कोई आजकी थोडे ही है। बहुत पुराने जमानेकी है। अजमेरकी दरगाह शरीफसे दूसरे नबरपर है, तो जो मुख्य वस्तु है वह तो वहा नक्काशीका काम ही था और बडा खूबसूरत था। वह सब तो

नही, लेकिन काफी ढहा दिया है और जो नक्काशीकी जालियां थी वे भी काफी तोड़ डाली। मुझको तो यह देखकर बहुत दु:ख हुआ। मैं तो उसे वहशियाना चीज ही कह सकता हूं। क्या हम इतने गिर गए है कि एक जगहपर किसी औलियाकी कब्र बनाई गई है और कब्र भी बहुत आलीशान, हजारो रुपया उसपर खर्च किया है—उसको हम इस तरह नुक्सान पहुंचाए, माना कि इससे भी बदतर पाकिस्तानमे हुआ है। यहा एक गुना हुआ और वहा दस गुना हुआ, इसका हिसाब मैं नही कर रहा। मेरे नजदीक तो चाहे थोडा गुनाह करो या ज्यादा, इसकी कोई तुलना मैं नही करता। वह शर्मनाक बात है। अगर सारी दुनिया शर्मनाक बात करती है तो क्या हम भी करे? नही करना चाहिए, ऐसा आप भी मानेंगे।

मुझको पता चला कि दरगाहमे हिंदू और मुसलमान दोनों काफी तादादमे आते है और मिन्नत भी करते है। उसका बड़ा दर्जा वे रखते है और जो औलिया हो गए है, यहा या अजमेर शरीफमें, उनके दिलमें भी हिंदू, मुसलमानका कोई भेदभाव नही था। यह तो एक ऐतिहासिक बात थी और सच तो है ही। झूठ बतानेमे तो उनका कोई फायदा नही होता। ऐसे जो औलिया हो गए उनका आदर होना ही चाहिए। पाकिस्तानमे क्या होता है, उस तरफ हम न देखे।

आज ही मैंने अखबारोमे देखा है कि पाकिस्तानमे एक जगह १३० हिंदू और सिख कत्ल हो गए है। और पीछे वहा लूटपाट भी हुई। किसने उनको कत्ल किया? सरहदी सूबेके ऊपर जो छोटी-छोटी कौमे मुसलमानोकी रही है, उन्होने बस उनपर हमला किया और उन्हे मार डाला। कोई गुनाह उन्होने किया था ऐसा कोई नही कहता। पाकिस्तानकी हकूमतने जो कुछ लिखा है उसमे यह भी है कि हकूमतने कई हमलावरोको मार डाला। मार डाला या नही मार डाला, लेकिन जब वे कहते है तो हमे मान ही लेना चाहिए। इसपर हम गुस्सा करे और हम भी यहा मारना शुरू कर दे तो वह एक वहशियाना चीज होगी। आज तो आप भाई-भाई होकर मिलते है, लेकिन दिलमें अगर गदगी रखते है और वैर या द्वेष करते है तो फिर आपने जो यह प्रतिज्ञा की थी कि हम दिलमे भी ऐसा नही रखेंगे, उसे आप झुठला देते है। पीछे हम सबका खाना खराब होनेवाला

अंतमे एक और बात मैं कहना चाहता हू और वह है मीरपुरके बारेमें। एक दफा तो थोड़ा-सा मैंने कह भी दिया था। मीरपुर काश्मीरमें है। अब वह हमलावरोके हाथमे चला गया है। वहा हमारी काफी बहने थी। उनको वे उठा ले गए है। उनमें बुड्ढी भी है और नौजवान भी। वे उनके कब्जेमें पड़ी है और उनको वे बेआबरू भी कर लेते है, इसमे मेरे दिलमे कोई शक नही है। खाना भी उनको बुरा दिया जाता है। चद बहने तो पाकिस्तानके इलाकेमे है। गुजरात[1] जिलेमें झेलमतक तो शायद पहुची होंगी ही।

मैं तो कहूगा कि जो हमलावर हमला कर रहे है, उसमे कुछ भी तो मर्यादा या कुछ हद तो होनी ही चाहिए। मैं इन हमलावरोसे कहता हू कि आप इस्लामको बिगाडनेके लिए यह काम कर रहे है और कहते ये हैं कि आजाद काश्मीरके लिए करते है।

कोई खानेके लिए लूटपाट करे वह मैं समझ सकता हू, लेकिन जो छोटी लड़कियां है, उनको बेइज्जत करना, उनको खाने और पहननेको न देना, वह भी क्या आपको कुरान शरीफने सिखाया है? और जो पीछे पाकिस्तानमें लडकियोको उठाकर चले गए है, उनके बारेमे मैं पाकिस्तान हकूमतसे मिन्नत करूगा कि इस तरहसे जो भी कोई लड़कियां है, उनको वापस करो और उन्हें अपने घरोपर जाने दो।

बेचारे मीरपुरके लोग मेरे पास आए है। काफी तगडे है और शर्मिदा होते है। मुझको वे सुनाते भी है कि क्या वजह है कि हमारी इतनी बड़ी भारी हकूमत पडी है, वह इतना काम भी नही कर सकती। मैंने समझानेकी कोशिश तो की। जवाहरलालजी खुद कोशिश कर रहे है और बहुत दु खी है। लेकिन उनके दु.खी होनेसे और उनके कोशिश करनेसे भी क्या है! जो लोग लुट गए है, बरबाद हो गए है और जिन्होने अपने रिश्तेदारोंको गवा दिया है, उनको कैसे सतोष दिलाया जाय? आज जो आदमी आया उसके पद्रह आदमी वहां कत्ल हो गए। उसने कहा कि अभी जो वहा बाकी पड़े है उनका क्या हाल होनेवाला है? मैंने सोचा कि

---

[1] पंजाबमें 'गुजराना' नामका एक शहर है।

दुनियाके नामसे और ईश्वरके नामसे वे जो हमलावर पड़े है, उनको और पीछे पाकिस्तानको भी मैं यह कहू कि आपको वगैर मागे हुए और शोहरत-के साथ उन वहनोको वापिस कर देना चाहिए। यह उनका धर्म है। मै इस्लामको काफी जानता हू और काफी पढा भी है। वह कभी नही सिखाता कि औरतोंको उठा ले जाओ और उनको इस तरहसे रखो। वह धर्म नही, अधर्म है। वह शैतानकी पूजा है, ईश्वरकी पूजा नही।

: २२२ :

२८ जनवरी १९४८

(आरभमे गांधीजीने वहावलपुरसे आए हुए कुछ लोगोकी शिकायतका जिक्र किया कि उन्हे उनसे मिलनेका समय नही दिया गया। गाधीजीने उनके लिए कुछ समय निकालनेका वचन दिया और उन्हे विश्वास दिलाते हुए कहा :) उनके लिए जो भी किया जा सकता है वह हो रहा है। डा० सुशीला नायर और श्री लेसली क्रास वहावलपुर चले गए है और नवाव साहवने उनकी पूरी सहायता करनेके लिए कहा है। भगवानकी कृपासे यूनियनकी राजधानी दिल्लीमे तीनो जातियोमे फिरसे शाति कायम हो गई है। इससे सारे हिंदुस्तानमें हालत जरूर सुधरेगी।

आप जानते है कि दक्षिण अफ्रीकामे हमारे लोग अपने हकोके लिए लड़ रहे है। यहां तो कोई ऐसे हक छीनते नही है कि लोग कही जमीन न रख सके या कही भी रहना चाहते है, वहा न रह सके। हरिजनोका तो हमने जरूर ऐसा हाल कर दिया है, वाकी हिदुस्तानमे ऐसा कुछ है ही नही। लेकिन दक्षिण अफीकामे तो ऐसा है, इसका मै गवाह हूं। इसलिए वे वहा हिंदुस्तानका मान रखनेके कारण और हिंदुस्तानके हकके लिए लड़ रहे है। वहुत तरीकोंसे वे लड़ सकते है, लेकिन वे तो सत्याग्रही होनेका दावा करते है। इसलिए सत्याग्रहकी लडाई लड रहे है। उनके तार भी आ जाते है। वे विना परवानेके कही जा भी नही सकते—जैसे नेटाल, ट्रासवाल, हिल स्टेट, केप कोलोनी वगैरा, ऐसा सिलसिला

वहा रहा है। दक्षिण अफ्रीका एक खड जैसा है, कोई छोटा-मोटा मुल्क नही है। बहुत बड़ा है। नेटालसे अगर परवाना मिले तो वे ट्रासवाल जाएं, नही तो नही। तो उन सबने कहा कि यह हमारा भी मुल्क है, तब क्यों हमारे इधर-उधर आनेमे किसी तरहकी रुकावट हो? बहुतसे तो वहां चले भी गए और मुझको यह तो कहना ही पडेगा कि वहाकी हकूमतने इस वक्त तो कुछ शराफत बताई है। उनको अभीतक पकडा नही। ट्रासवालका जो पहला शहर आता है फाकसेस, वहा वे चले गए है। पीछे कही उनको पकड सकते है, लेकिन अभीतक पकडा नही है। हकूमतके सिपाही तो वहा मौजूद थे, लेकिन वे सब देखते रहे और उनको कुछ नही कहा। वहा तो उन्हे मोटर भी खडी मिली और उसमें बैठकर वे आगे चले गए और वहापर उनका जलसा हुआ, जिसमे उनका स्वागत-सत्कार किया गया। वह सब हुआ। मैंने सोचा कि आपको इतनी खबर तो दे दू। यह एक बडी बहादुरीका काम है। वहा हिंदुस्तानी छोटी तादादमे है, लेकिन छोटी तादादमे रहते हुए भी अगर सब हिंदी सत्याग्रही बन जाए तो उनकी जय ही है। कोई रुकावट उनके आगे नही ठहर सकती। लेकिन ऐसा तो नही बना है। हर किस्मके लोग वहा रहते है जैसे यहां भी रहते है। वहा थोडे हिंदू भी है और मुसलमान भी है। वे सब मिल-जुलकर यह काम करते है। वे जानते है कि इसमे कोई गमानेकी बात नही है। और अकेले आदमियोसे तो यह लडाई लडी भी नही जाती। इसलिए वे जोहान्सबर्गमे पहुच तो गए है, लेकिन आखिरतक तो अलग नही रह सकते, ऐसा मेरा खयाल है। उनको चलते ही जाना है, आखिर तक भी जाना है जबतक कि पकडे न जाय। पकडनेका वहाकी हकूमतको हक है, क्योकि सत्याग्रहमे यह चीज तो पडी है कि जब कानून भग किया है तो उनको पकडें और जेलके भीतर जाकर भी वे कानूनकी पाबदी करते है। मै तो इतना ही कहूगा कि हमारी तरफसे धन्यवाद तो उनको मिलना ही चाहिए और वह है ही, क्योकि मै जानता हू कि इसमे कोई दूसरी आवाज निकल ही नही सकती। वहाकी हकूमतसे भी मै कहता हू कि जो लोग ऐसे लड़ते है और इतनी शराफतसे लड़ते है उनको हलाक क्या करना है! उनकी चीजको समझ लें और फिर आपसमे समझौता क्यो न कर ले? ऐसा

क्यों हो कि जिसकी सफेद चमड़ी है वह काली चमड़ीवालेके साथ कुछ वहस नही कर सकता ? या हिन्दुस्तानियोंको जो संतोष देना है या इन्साफ करना है तो उसके लिए उनको लड़ना क्यों पड़े ? अगर हिंदुस्तानी भी उसी जगहमे रहें तो उन्हे (गोरोंको) कौन-सा कष्ट हो सकता है ? उन्हें कोई कष्ट नही होना चाहिए। दक्षिण अफ्रीकाकी हकूमतको उनके साथ सलाह-मशवरा करके सलूकसे रहना चाहिए और उनको संतोष दिलाना चाहिए। आज हम भी आजाद है और वे भी आजाद है और एक ही हकूमतमे हिस्सेदारकी हैसियतसे रहते है। अर्थात् दक्षिण अफ्रीका भी एक डोमीनियन[1] है, इंडियन यूनियन भी डोमीनियन है और पाकिस्तान भी डोमीनियन है। तब सब भाई-भाई जैसे बनकर रहे, यह सब उनके गर्भमें पड़ा है। इसके विपरीत वे आपस-आपसमें लड़ें और हिंदुस्तानको अपना दुश्मन मानें—हिंदुस्तानियोंको जब वहां शहरी हक भी न मिलें तो फिर वे दुश्मन नही है तो और क्या हुए ? तो यह समझमें न आ सके, ऐसी चीज है। क्यो ऐसा माना जाय कि जो काली चमड़ीवाले है वे निकम्मे हैं या वे जो उद्यम कर सकते हैं और थोड़े पैसेमें रह सकते है, तो क्या यह कोई गुनाह है ? लेकिन वह गुनाह बन गया है। इसलिए इस सभाकी मार्फत मैं दक्षिण अफ्रीकाकी हकूमतको कहता हूं कि वह सही रास्तेपर चले। मैं भी वहां २० वर्षतक रहा हूं। इसलिए मेरा भी वह मुल्क बन गया है, ऐसा मैं कह सकता हूं। यह सब कहना तो मुझको कल ही चाहिए था, लेकिन कह नही पाया।

मैसूरके मुसलमानोने कुछ दिन पहले एक पत्र भेजा था कि तुम्हारे उपवासका वहां कोई असर नही पड़ा और मुसलमानोंको हलाक किया जा रहा है। इसके बारेमें मैंने कुछ कहा भी था। उसके उत्तरमे मैसूरके गृह-मंत्रीकी ओरसे एक तार मिला जिसमें पहले तारका खंडन किया गया और यह बताया गया है कि वहा मुसलमानोंके साथ इन्साफ करनेकी पूरी कोशिश की जा रही है। जैसे मैं सबसे कहता हूं वैसे मैं मैसूरके उन मुसलमान भाइयोंसे कहूंगा कि वे किसी बातमें भी अतिशयोक्ति न करें।

---

[1] उपनिवेश।

ऐसा कहनेसे मेरे हाथ-पैर बंध जाते है और मै कुछ काम नही कर सकता। मै पहले भी कह चुका हू और फिर मुसलमान भाइयोंसे कहता हू कि वे किसी चीजको ज्यादा बढाकर न बताए। अगर कर सकते है तो कम करे। यही रास्ता है हिंदू, मुसलमान और सिखोके मिल-जुलकर तथा भाई-भाई बनकर रहनेका। मै तो इतना बूढा हो गया हूं, तो भी सारी दुनियामे दूसरा कोई रास्ता मैने नही पाया।

हमारे लोग इतने भोले है कि डाकमे ही पैसा भेज देते है। मुझे अपने बापके समयसे तजुर्बा है। उनके पास कुछ जेवर था। एक छोटा-सा मोती था। लेकिन था कीमती। उसे उन्होने डाकसे भेज दिया। तबसे मै जानता हू कि ऐसा करना नही चाहिए। उसमे कोई चोरी तो नही थी, लेकिन खतरा तो लेना पड़ता ही है। कोई डाकमे देख ले और खोल ले तो फिर मोती कोई छुपा थोडे ही रह सकता है। और पैसे तो फिर भी देने ही पडे, क्योकि उसकी पहुचका तार मगवाया। तो मेरे पिताको इस चीजका दु ख हुआ। लेकिन आज भी मेरे पिताके जैसे भोले आदमी है। समझ लेते है कि पैसेको भेजना है, तो कौन बीचमे उसको छुएगा? आजतक तो खैर ऐसे ही पैसे आते रहे। एक भाईने तो एक हजारसे ऊपरके नोट बद करके भेज दिए। उसकी रजिस्टरी भी नही कराई और न बीमा। जो लिफाफेपर मामूली टिकट लगते है वे लगाकर भेज दिया। आजकल तो सब लोग बहुत बिगड गए है, पैसे खा जाते है और रिश्वत भी लेते है। तब यह तो अच्छी बात है और हमारे पोस्ट-आफिसके लिए यह कोई छोटी बात नही है कि इस तरहसे इतने सुरक्षित पैसे भी आ जाते है। उसे वे देखना भी नही चाहते कि उसमे क्या भेजा है। ऐसे जब वे मुझको सब कुछ सुरक्षित भेज देते है तो दूसरोको भी इसी तरहसे भेज देते होगे। लेकिन जो लोग पैसा भेजते है वे चाहे इतना पैसा कम करके भेजे, लेकिन तो भी इस तरहसे खतरेमे नही पडना चाहिए; क्योकि कोई बदमाश भी तो रहते है। डाकको खोल ले तब मेरे और जिन हरिजनोके लिए पैसा भेजा है उनके क्या हाल होनेवाले है और जो दान देनेवाले है उनका क्या हाल होगा? लेकिन डाकखानेमे जो आदमी काम करते है उनको तो मै मुबारकबाद देता हू कि इस

तरहसे काम करते है कि कोई घूस नही लेते। बाकी जो सब महकमे है वे भी सब ऐसा ही करे कि जो लोगोका पैसा हो उसकी हिफाजत करे, किसीसे रिश्वतका पैसा न ले, तो हम बहुत आगे बढ जाते है। ऐसा लालच किसीको होना ही नही चाहिए। इसलिए मै इन दानियोंसे कहूगा कि आप मनिआर्डर भेज दे। उसमे कितना पैसा लगता है? ऐसा भी न करे तो रजिस्टरी करा दे। इसमे कुछ थोडा-सा पैसा ज्यादा भी लगता है तो वह खैरियतसे तो पहुच जाता है। ऐसा आप न करे कि मामूली डाकसे हजारो रुपयेके नोट भेज दिए।

: २२३ :

२६ जनवरी १६४८

भाइयो और बहनो,

मेरे सामने कहनेको चीज तो काफी पडी है, उनमेसे जो आजके लिए चुननी चाहिए, वे चुन ली है। छ. चीजे है। पद्रह मिनटमे जितना कह सकूगा, कहूगा।

एक बात तो देख रहा हू कि थोडी देर हो गई है—यह होनी नही चाहिए थी। सुशीला बहन बहावलपुर चली गई है। बहावलपुरमे दुःखी आदमी है उनको देखनेके लिए चली गई है—दूसरा अधिकार तो कोई है नही और न हो सकता था। फ्रेड्स सर्विसके लेसली क्रॉसके साथ चली गई है। फ्रेड्स यूनिटमे से किसीको भेजनेका मैंने इरादा किया था, ताकि वह वहा लोगोको देखे, मिले और मुझको वहाके हाल बता दे। उस वक्त सुशीला बहनके जानेकी बात नही थी, लेकिन जब सुशीला बहनने सुन लिया तो उसने मुझसे कहा कि इजाजत दे दो तो मै क्रास साहबके साथ चली जाऊ। वह जब नोआखालीमे काम करती थी तबसे वह उनको जानती थी। वह आखिर कुशल डाक्टर है और पजाबके गुजरातकी है, उसने भी काफी गवाया है; क्योकि उसकी तो वहा काफी जायदाद है, फिर भी दिलमे कोई जहर पैदा नही हुआ है। तो उसने बताया कि मै वहां

क्यो जाना चाहती हू, क्योकि मै पजाबी बोली जानती हूं, हिंदुस्तानी जानती हू, उर्दू और अग्रेजी भी जानती हू तो वहा मै क्रास साहबको मदद दे सकूगी। तो मै यह सुनकर खुश हो गया। वहा खतरा तो है, लेकिन उसने कहा कि मुझको क्या खतरा है, ऐसा डरती तो नोआखाली क्यो जाती ? पजाबमे बहुत लोग मर गए है, बिल्कुल मटियामेट हो गए है; लेकिन मेरा तो ऐसा नही है, खाना-पीना सब मिल जाता है, ईश्वर सब करता है। अगर आप भेज दे और क्रास साहब मेरेको ले जाय तो मै वहाके लोगोको देख लूगी। तो मैने क्रास साहबसे पूछा कि क्या आपके साथ सुशीला बहनको भेजू ? तो वे खुश हो गए और कहा कि यह तो बड़ी अच्छी बात है। मै उनके मारफत दूसरोंसे अच्छी तरह बातचीत कर सकूगा। मित्रवर्गमे हिंदुस्तानी जाननेवाला कोई रहे तो वह बड़ी भारी चीज हो जाती है। इससे बेहतर क्या हो सकता है ? वे रेडक्रासके है। रेड क्रासके माने यह है कि लडाईमे जो मरीज हो जाते है उनको दवा देनेका काम करना। अब तो दूसरा तीसरा भी काम करते है। तो डाक्टर सुशीला क्रास साहबके साथ गई है या डाक्टर सुशीलाके साथ क्रास साहब गए है यह पेचीदा प्रश्न हो जाता है। लेकिन कोई पेचीदा है नही, क्योकि दोनो एक दूसरेके दोस्त है और दोनों एक दूसरेको चाहते है, मोहब्बत करते है। वे सेवा-भावसे गए है, पैसा कमाना तो है नही। वे जो देखेगे मुझे बताएगे और सुशीला बहन भी बताएगी। मै नही चाहता कि कोई ऐसा गुमान रखे कि वह तो डाक्टर है और क्रास साहब दूसरे है। कौन ऊचा है कौन नीचा है, ऐसा कोई भेदभाव न करें, लेकिन क्रास साहब, उनके साथ औरत है तो औरतको आगे कर देते है और अपनेको पीछे रखते है। आखिर वे उनके दोस्त है। मै एक बात और कह देना चाहता हू कि नवाब साहब तो मुझको लिखते रहते है। मुझको कई लोग झूठ बात भी लिखते है तो उसे माननेका मेरा क्या अधिकार है। मैने सोचा कि मुझको क्या करना चाहिए। तो बहावलपुरके जो आए है उनको बता दू कि वे वहासे आएगे तो मुझको सब बात बता देगे।

अभी बन्नूके भाई लोग मेरे पास आ गए थे—शायद चालीस आदमी थे। वे परेशान तो है, लेकिन ऐसे नही है कि चल नही सकते थे।

हां, किसीकी अगुलीमे घाव लगे थे, कही कुछ था, कही कुछ था, ऐसे थे। मैंने तो उनका दर्शन ही किया और कहा कि जो कुछ कहना है बृजकिशनजीसे कह दे, लेकिन इतना समझ ले कि मैं उन्हे भूला नही हू। वे सब भले आदमी थे। गुस्सेसे भरे होना चाहिए था, लेकिन फिर भी वे मेरी बात मान गए। एक भाई थे, वे शरणार्थी थे या कौन थे, मैंने पूछा नही। उसनें कहा कि तुमने बहुत खराबी तो कर ली है, क्या और करते जाओगे? इससे बेहतर है कि जाओ। बडे है, महात्मा हैं तो क्या, हमारा काम तो बिगाड़ते ही हो। तुम हमको छोड दो, भूल जाओ, भागो। मैंने पूछा, कहा जाऊ? उन्होने कहा, तुम हिमालय जाओ। तो मैंने डाटा। वे मेरे-जितने बुजुर्ग नही है—वैसे बुजुर्ग है, तगड़े है, मेरे-जैसे पाच-सात आदमीको चट कर सकते है। मै तो महात्मा रहा, घबराहटमे पड़ जाऊं तो मेरा क्या हाल होगा। तो मैंने हँसकर कहा कि क्या मै आपके कहनेसे जाऊ, किसकी बात सुनू? क्योकि कोई कहता है कि यही रहो, कोई तारीफ करता है, कोई डाटता है, कोई गाली देता है। तो मै क्या करू? ईश्वर जो हुक्म करता है वही मै करता हू। आप कह सकते है कि आप ईश्वरको नही मानते है तो इतना तो करे कि मुझे अपने दिलके अनुसार करने दे। आप कह सकते है कि ईश्वर तो हम है। मैंने कहा तो परमेश्वर कहां जायगा? ईश्वर तो एक है। हां, यह ठीक है कि पच परमेश्वर है, लेकिन यह पंचका सवाल नही है। दु:खीका बेली[१] परमेश्वर है, लेकिन दु:खी खुद परमात्मा नही। जब मै दावा करता हू कि जो हरएक स्त्री है, मेरी सगी बहन है, लडकी है तो उसका दु ख मेरा दु ख है। आप ऐसा क्यो मानते है कि मै दुखको नही जानता, आपके दु खोंमे मै हिस्सा नही लेता, मै हिंदुओ और सिखोका दुश्मन हू और मुसलमानोका दोस्त हू। उसने साफ-साफ कह दिया। कोई गाली देकर लिखता है, कोई विवेकसे लिखता है कि हमको छोड़ दो, चाहे हम दोजखमे जाय तो क्या? तुमको क्या पड़ी है, तुम भागो? मै किसीके कहनेसे कैसे भाग सकता हू? किसीके कहनेसे मैं खिदमतगार नही बना हू, किसीके कहनेसे मै मिट नही सकता हू, ईश्वरके चाहनेसे

[१] (गुज०) मुरव्वी, सहायता करनेवाला।

मैं जो हू बना हू । ईश्वरको जो करना है सो करेगा । ईश्वर चाहे तो मुझको मार सकता है । मैं समझता हू कि मै ईश्वरकी बात मानता हू । एक डांटता है, दूसरे लोग मेरी तारीफ करते है तो मैं क्या करू । मैं हिमालय क्यो नही जाता ? वहा रहना तो मुझको पसद पडेगा । ऐसा नहीं है कि मुझको वहा खाने-पीने-ओढनेको नही मिलेगा—वहा जाकर शाति मिलेगी, लेकिन मैं अशातिमेंसे शाति चाहता हू, नही तो उस अशातिमे मर जाना चाहता हू । मेरा हिमालय यही है । आप सब हिमालय चले तो मुझको भी आप लेते चले ।

मेरे पास शिकायते आती है—सही शिकायते है—कि यहा शरणार्थी पडे है, उनको खाना देते है, पीना देते है, पहननेको देते है, जो हो सकता है सब करते है, लेकिन वे मेहनत नही करना चाहते है, काम नहीं करना चाहते है । जो उनकी खिदमत करते है उन लोगोने लबा-चौडा लिखकर दिया है, उसमेसे मै इतना ही कह देता हू । मैंने तो कह दिया है कि अगर दु.ख मिटाना चाहते है, दु खमेंसे सुख निकालना चाहते है, दु खमे भी हिंदुस्तानकी सेवा करना चाहते है, साथमे अपनी भी सेवा हो जाती है, तो दु खियोको काम तो करना ही चाहिए । दु.खीको ऐसा हक नही है कि वह काम न करे और मौज-शौक करे । गीतामे तो कहा है, 'यज्ञ करो और खाओ'—यज्ञ करो और शेष रह जाता है उसको खाओ । यह मेरे लिए है और आपके लिए नही है ऐसा नही है—सबके लिए है । जो दु खी है उनके लिए भी है । एक आदमी कुछ करे नही, बैठा रहे और खाय तो ऐसा हो नही सकता । करोडपति भी काम न करे और खावे, तो वह निकम्मा है, पृथ्वीपर भार है । जिस आदमीके घर पैसा भी है वह भी मेहनत करके खाए तब बनता है । हा कोई लाचारी है—पैर नही चल सकता है या अधा है, या वृद्ध हो गया है तो बात दूसरी है, लेकिन जो तगडा है, वह क्यो न काम करे ? जो काम कर सकता है वह काम करे । शिविरमे जो तगडे पडे है वे पाखाना भी उठाए । चर्खा चलाए । जो काम बन सकता है करे । जो काम नही जानते है वे काम लडकोको सिखाए, इस तरहमे काम ले । लेकिन कोई कहे कि केम्ब्रिजमें जैसे सिखाते है वैसे सिखाए । मैं, मेरा बाबा तो केम्ब्रिजमें सीखा था तो लडकोको भी वहा भेजे, तो यह

कैसे हो सकता है ? मै तो इतना ही कहूगा कि जितने शरणार्थी है वे काम करके खाएं। उन्हें काम करना ही चाहिए ।

आज एक सज्जन आए थे । उनका नाम तो मै भूल गया। उन्होने किसानोकी बात की। मैंने कहा, मेरी चले तो हमारा गवर्नर-जनरल किसान होगा, हमारा बडा वजीर किसान होगा, सब कुछ किसान होगा, क्योंकि यहाका राजा किसान है। मुझे बचपनसे सिखाया था—एक कविता है, "हे किसान, तू बादशाह है।" किसान जमीनसे पैदा न करे तो हम क्या खाएगे ? हिंदुस्तानका सचमुच राजा तो वही है। लेकिन आज हम उसे गुलाम बनाकर बैठे है। आज किसान क्या करे ? एम० ए० बने ? बी० ए० बनें ?—ऐसा किया, तो किसान मिट जायगा। पीछे वह कुदाली नही चलाएगा। जो आदमी अपनी जमीनमेसे पैदा करता है और खाता है, सो जनरल बने, प्रधान बने, तो हिंदुस्तानकी शकल बदल जाएगी। आज जो सडा पड़ा है, वह नही रहेगा ।

मद्रासमे खुराककी तगी है। मद्रास सरकारकी तरफसे दूत यह कहनेके लिए श्रीजयरामदासके पास आए थे कि वे उस सूबेके लिए अन्न देनेका बंदोबस्त करे। मुझे मद्रासवालोंके इस रुखसे दु.ख होता है। मै मद्रासके लोगोको यह समझाना चाहता हूं कि वे अपने ही सूबेमे मूगफली नारियल और दूसरे खाद्य पदार्थोके रूपमें काफी खुराक पा सकते है। उनके यहा मछली भी काफी है, जिन्हे उनमेसे ज्यादातर लोग खाते हैं। तब उन्हे भीख मागनेके लिए बाहर निकलनेकी क्या जरूरत है ? उनका चावलका आग्रह रखना—वह भी पालिश किया हुआ चावल, जिसके सारे पोषक तत्त्व मर जाते है—या चावल न मिलनेपर मजबूरीसे गेहू मजूर करना ठीक नही है। चावलके आटेमे वे मूगफली या नारियलका आटा मिला सकते है और इस तरह अकालके भेड़ियेको आनेसे रोक सकते है। उन्हे जरूरत है आत्म-विश्वास और श्रद्धाकी। मद्रासियोको मै अच्छी तरहसे जानता हूं और दक्षिण अफ्रीकामे उस प्रातके सभी भाषावाले हिस्सोके लोग मेरे साथ थे। सत्याग्रह-कूचके वक्त उन्हे रोजानाके राशनमे सिर्फ डेढ पौंड रोटी और एक औंस शक्कर दी जाती थी। मगर जहा कही उन्होंने रातको डेरा डाला, वहा जगलकी घासमेसे खाने लायक चीजे चुनकर

और मजेसे गाते हुए उन्हे पकाकर उन्होने मुझे अचरजमे डाल दिया। ऐसे सूझ-बूझवाले लोग कभी लाचारी कैसे महसूस कर सकते है? यह सच है कि हम सब मजदूर थे। और, ईमानदारीसे काम करनेमे ही हमारी मुक्ति और हमारी सभी आवश्यक जरूरतोकी पूर्ति भरी है।

: २२४ :

पुण्यदिवस, ३० जनवरी १९४८

हे राम[1]!

---

[1]आज सायंकाल ५ बजकर १० मिनटपर प्रार्थनाके लिए आते समय प्रार्थना-स्थलपर गांधीजीके तीन गोलियां लगीं और वहीं उनका स्वर्गवास हो गया। मरनेसे पहले "हे राम!" उनके मुहसे निकला।